Uttarakhand Open University, Haldwani - 263139
Toll Free : 1800 180 4025
Operator : 05946-286000
Admissions : 05946-286002
Book Distribution Unit : 05946-286001
Exam Section : 05946-286022
Fax : 05946-264232
Website : http://uou.ac.in

ISBN. : 978-93-84813-78-9
MMC-102-1(002147)

MMC-102

पत्रकारिता का इतिहास एवं समसामयिक परिप्रेक्ष्य

MMC-102

पत्रकारिता का इतिहास एवं समसामयिक परिप्रेक्ष्य

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

MMC-102

पत्रकारिता का इतिहास एवं समसामयिक परिप्रेक्ष्य

Uttarakhand Open University, Haldwani - 263139
Toll Free : 1800 180 4025
Operator : 05946-286000
Admissions : 05946-286002
Book Distribution Unit : 05946-286001
Exam Section : 05946-286022
Fax : 05946-264232
Website : http://uou.ac.in

अध्ययन समिति :

प्रो. एचपी शुक्ल
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

प्रो. आनंद प्रधान
भारतीय जनसंचार संस्थान, दिल्ली

प्रो. गोपाल सिंह
बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश

प्रो. हर्ष डोभाल
दून विश्वविद्यालय, देहरादून

भूपेन सिंह
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

संयोजन **और संपादन** :

भूपेन सिंह
समन्वयक, पत्रकारिता विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल

इकाई लेखन :

डॉ. गोविन्द पन्त राजू
वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ

डॉ. भुवन शर्मा
डी0 एस0 बी0 परिसर
कुमाऊँ विश्वविद्यालय

श्री आनन्द बल्लभ उप्रेती
वरिष्ठ पत्रकार, हल्द्वानी, नैनीताल

डॉ0 राकेश रयाल
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

सहयोग:

राजेंद्र सिंह क्वीरा

पूर्व संयोजन:

राकेश रयाल

प्रकाशन वर्ष : सितम्बर 2011 पुनः प्रकाशन – 2019

ISBN No: 978-93-84813-78-9

कापीराइट : © उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

संस्करण : सीमित वितरण हेतु पूर्व प्रकाशन प्रति

प्रकाशक : कुलसचिव, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी– 263139 (नैनीताल)

इस सामग्री के किसी भी अंश को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में अथवा मिमियोग्राफी चक्रमुद्रण द्वारा या अन्यत्र पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

मुद्रकः सहारनपुर इलैक्ट्रिक प्रैस, बोमनजी रोड, सहारनपुर (उ०प्र०) प्रतियाँ : 100

MMC-102
पत्रकारिता का इतिहास एवं समसामयिक परिप्रेक्ष्य

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

खण्ड 1
पत्रकारिता का इतिहास

इकाई –01 पत्रकारिता : परिचय, स्वरूप व विभिन्न आयाम	05–22
इकाई –02 विश्व पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास एवं विदेशों में पत्रकारिता	23–38
इकाई –03 भारतीय पत्रकारिता : हिन्दी पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में	05–22
इकाई –04 स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता	59–72
इकाई –05 स्वतंत्रता के बाद भारतीय पत्रकारिता	73–86
इकाई –06 उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास	87–116

खण्ड 2
समसामयिक परिप्रेक्ष्य

इकाई –07 उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप एवं कैरियर की संभावनाएं	117–131
इकाई –08 समसामयिक, राजनैतिक एवं आर्थिक पत्रकारिता	132–146
इकाई –09 सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता	147–158
इकाई –10 लोकतंत्र, सामाजिक आन्दोलन और मीडिया (उत्तराखण्ड के विशेष संदर्भ में)	159–172

BLANK
PAGE

इकाई –01

पत्रकारिता : परिचय, स्वरूप व विभिन्न आयाम

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 पत्रकारिता एक परिचय

1.4 पत्रकारिता की प्रकृति

1.5 पत्रकारिता का स्वरूप व विभिन्न आयाम

1.6 सारांश

1.7 शब्दावली

1.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.9 संदर्भ ग्रन्थसूची

1.10 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

1.11 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना :

पत्रकारिता आज एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में सामने आया है जिसकी उपयोगिता समाज में बहुत बढ़ गयी है। पत्रकारिता का सामान्य व व्यवहारिक शूक्ष्म ज्ञान यदि पत्रकारिता के छात्र रखते भी होंगे, लेकिन विषय की मूल प्रकृति व स्वरूप को विस्तृत रूप से समझना इनके लिए आवश्यक है।

इस इकाई में पत्रकारिता का परिचय, पत्रकारिता की प्रकृति, पत्रकारिता का स्वरूप एवं इसके विभिन्न आयामों का अध्ययन किया गया है। पत्रकारिता के बढ़ते आयामों से पत्रकारिता के छात्रों को परिचित कराना आवश्यक हो जाता है।

पत्रकारिता की विस्तृत जानकारी व इसकी अन्य विधाओं का अध्ययन आगे आने वाली इकाईयों में किया जायेगा।

1.2 उद्देश्य :

विश्व की पत्रकारिता में तीव्रता से हुये विकास के परिणामस्वरूप आज पूरा विश्व एक गांव के रूप में दृष्टिगत होता है। आज पत्रकारिता का महत्व हमारे दैनिक जीवन में बहुत बढ़ गया है। पत्रकारिता के उत्पाद अखबार हों या टेलीविजन न्यूज हमारे दैनिक जीवन को काफी हद तक प्रभावित करने लगे हैं। इसलिए ऐसे विषय को समझना व उसकी जानकारी रखना आवश्यक हो जाता है। इस इकाई का उद्देश्य पत्रकारिता से विद्यार्थियों का परिचय कराना और उन्हें पत्रकारिता की बारीकियों तक ले जाने का प्रयास करना है। इसके अलावा पत्रकारिता के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुये इसके स्वरूप व आयामों को विद्यार्थियों के सामने रखना भी इस इकाई का उद्देश्य है ताकि वे पत्रकारिता से परिचित हो सकें।

इस इकाई के जरिए छात्र समझ सकेंगे कि –

- पत्रकारिता क्या है?
- पत्रकारिता पर विभिन्न विद्धानों के क्या विचार हैं?
- पत्रकारिता के मूल उद्देश्य क्या है? और
- पत्रकारिता के विभिन्न विषय क्या हैं?

1.3 पत्रकारिता एक परिचय :

पत्रकारिता समाज का आईना है। वह मनुष्य की आस्थाओं, विचारों, मूल्यों को सही रूप में जनता के सामने रखती है। ऐसे में पत्रकारिता का लक्ष्य क्या हुआ? इसका उत्तर होगा साहित्यिक–कलात्मक रुझान को बढ़ाना, नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना, भौतिकवादी दुनिया में सही मार्ग दिखाना, सुखी जीवन के द्वार खोलना आदि।

पत्रकारिता जन सेवा का सशक्त माध्यम है। वर्तमान में आधुनिक तकनीकी विधाओं की प्रतिक्रिया स्वरूप संचार माध्यमों ने पत्रकारिता को एक नई दिशा दी है, जिसके चलते वह चुनौतीपूर्ण अभियान कम, उद्यम ज्यादा बन गई है। वस्तुतः पत्रकारिता का प्रथम व प्रमुख कर्तव्य अन्याय का उद्घाटन करना, विसंगतियों का सुधार करना, परामर्श देना, समाज का मार्गदर्शन करना तथा व्यक्ति/परिवार/समाज व राष्ट्र का बहुआयामी उत्थान करना होता है।

पत्रकारिता आधुनिक युगबोध, राष्ट्रीय चेतना, जन जागरूकता एवं व्यापक जन संवेदना को संप्रेषित करने का सर्वसुलभ उन्नत जन माध्यम है। यह लोक मानस की सामुदायिक सहभागिता की वह जीवन्त विधा है, जिसमें जनता की आत्मा के स्वर, उसके सुख–दुःख, जय–पराजय, आशा, आकांक्षा तथा सामयिक एवं सनातन सत्य मुखर हो उठते हैं।

विभिन्न विचारकों के मत :

लैक्सिकन यूनिवर्सल एनसाइक्लोपीडिया, भाग–2, पृष्ठ 453–454 के अनुसार ''परम्परागत रूप में पत्रकारिता का कार्य समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में समाचार एकत्रित करके लिखना,

सम्पादित करके प्रकाशित करना या समाचारों पर टिप्पणी देना माना जाता है, किन्तु पत्रकारिता का क्षेत्र इस कथन से आगे भी कुछ है। उसमें सामुदायिक या लोकार्षक सामग्री का विविध संचार माध्यमों द्वारा प्रसारण भी सम्मिलित है। जिसमें मुख्य रूप से रेडियो और दूरदर्शन आते हैं। इन्हें सामान्यतया इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता कहा जाता है।

वर्तमान पत्रकारिता के अन्तर्गत तत्कालीन समाचारों/विचारों का लिपिबद्ध मुद्रित प्रकाशन अर्थात् इसमें पत्र–पत्रिकाएं ही सम्मिलित नहीं हैं, बल्कि रेडियो, दूरदर्शन तथा अन्य इलेक्ट्रानिक जनसंचार माध्यमों द्वारा भव्य प्रस्तुति एवं आकर्षक मौखिक प्रसारण भी समाहित है। पत्रकारिता के विषय एवं स्वरूप जीवन के सर्वांग पक्षों से सम्बद्ध हो गये हैं। चैम्बर्स एनसाइक्लोपीडिया ने पत्रकारिता को इस प्रकार परिभाषित किया है–''पत्रकारिता शायद सबसे अधिक रोमांचक अथवा जोखिमों से भरपूर व्यवसायों में से एक है, जिसमें पत्रकारों को देश के दैनिक जीवन के कार्यकलापों का ही नहीं, वरन वायुयानों की उड़ानों, युद्ध और खोज जैसे विषयों को भी समेटना होता है।''

इससे स्पष्ट होता है कि आज के सन्दर्भ में पत्रकारिता लोकतांत्रिक शासन प्रणाली का अविभाज्य अंग बन गई है। ब्रिटिश राजनीतिज्ञ बर्क ने प्रेस को राज्य के चौथे स्तम्भ की संज्ञा दी है। बर्क का कहना था कि जिस गैलरी में समाचार पत्रों के संवाददाता बैठते हैं, वह फोर्थ स्टेट के समकक्ष है। इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि एक लोकतांत्रिक देश में प्रेस का महत्व संसद के बाद आता है। वास्तव में देखा जाय तो समाचार पत्र प्रतिदिन चलने वाली संसद है और संसद तथा प्रेस दोनों ही लोकतांत्रिक सरकारों के स्तम्भ हैं।

पत्रकारिता जनमत की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं लोकप्रिय साधन भी है, क्योंकि यह समस्त मुद्दों को जनता के सामने बड़ी कलात्मकता के साथ रखती है। कटु सत्यों को निर्भीकता के साथ प्रस्तुत करती है, ताकि जनता का सही मार्गदर्शन हो सके। किसी भी प्रशासन प्रणाली को सुचारू रूप से चलाने के लिए प्रेस की आजादी और उसका सम्यक गठन एक अनिवार्य आवश्यकता है। जन हितार्थ कार्य करते हुए पत्रकारिता देश में एक स्वस्थ वातावरण का सृजन करना अपना मुख्य ध्येय समझती है। समाज की कुरीतियों, आडम्बर पूर्ण कार्यों, असामाजिक तत्वों तथा विघटनकारी शक्तियों का पर्दाफाश कर सरकार को उसके दायित्व का बोध कराती है।

इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता आधुनिकता की एक विशिष्ट उपलब्धि है। आधुनिकता उस सांस्कृतिक संचेतना का नाम है, जिसने वैज्ञानिक आलोक से मानवीय धरातल के विभिन्न स्तरों को उजागर किया है। अंग्रेजी में पत्रकारिता को जर्नलिज्म **(Journalism)** कहा जाता है। जर्नलिज्म शब्द लैटिन भाषा के द्युर्नालिस **(Diurnalis)** से लिया गया है, जो फ्रेंच भाषा में जरनल **(Journal)** हो गया तथा जिसका शाब्दिक अर्थ है– दैनिक **(Daily)**। इसे एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ने इन शब्दों में कहा है– "Journal in a word which came in to English from Latin-Diurnalis, through French, journal, with the original meaning of Daily.....Published journal may be daily, monthly, quarterly or

even annual. Diurnal and journal were both used for periodicals in 17th-18th Centuries" -Ency. Br.,vol.13, p.94, 1963 ed.

पत्रकारिता के बारे में पं0 पराड़कर कहते हैं–'पत्रकारिता यानी तलवार की धार पर धावना है।' पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' कहते हैं– 'मेरी राय में पत्रकार बनने से पूर्व आदमी को समझ लेना चाहिए कि यह मार्ग त्याग का है, जोड़ का नहीं। जिस भाई या बहन को भोग–विलास की लालसा हो, वह और धंधा करे। रहम करे, इस राम रोजगार पर मेरा आदर्श पत्रकार, ईमानदार पादरी, पीर, परमहंस सा नजर आता है।' गणेश शंकर विद्यार्थी के लिए पत्रकारिता का एक मात्र ध्येय लोक सेवा एवं जनहित था। बालगंगाधर तिलक पत्रकारिता को जनजागरण का प्रमुख हथियार मानते थे।

'मेरी राय में पत्रकार बनने से पूर्व आदमी को समझ लेना चाहिए कि यह मार्ग त्याग का है, जोड़ का नहीं। जिस भाई या बहन को भोग–विलास की लालसा हो, वह और धंधा करे। रहम करे, इस राम रोजगार पर मेरा आदर्श पत्रकार, ईमानदार पादरी, पीर, परमहंस सा नजर आता है।'

: पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

पं0 जवाहरलाल नेहरू कहते थे ' पत्रकारिता राष्ट्रीयता का चिन्तन तथा न्याय विरुद्ध शक्तियों को अवरुद्ध करने और नए राष्ट्र के निर्माण का सबसे सशक्त माध्यम है।' टर्नर केटलिज के अनुसार 'समाचार कोई ऐसी चीज है, जिसे आप कल (बीते) तक नहीं जानते थे।' जबकि मैस फील्ड कहते हैं ''घटना समाचार नहीं है, बल्कि वह घटना का विवरण है, जिसे उनके लिए लिखा जाता है, जिन्होंने उसे देखा नहीं है।'

जेम्स मैकडोनाल्ड के मुताविक 'पत्रकारिता को मैं रणभूमि से भी अधिक बड़ी समझता हूँ। यह कोई पेशा नहीं है, बल्कि पेशे से कोई ऊंची चीज है। यह एक जीवन है, जिसे मैंने अपने को स्वेच्छा पूर्वक समर्पित किया है।' हार्थर लीच और जॉन कैरोल के अनुसार 'पत्रकारिता विज्ञान, कला और शिल्प की पावन त्रिवेणी है, जिसका स्नातक समाज सेवा तथा जन मानस के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करना है।'

डॉ0 अर्जुन तिवारी ने एनसाइक्लोपिडिया ऑफ ब्रिटेनिका के आधार पर इसकी व्याख्या इस प्रकार की हैं– ''पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में 'जर्नलिज्म' शब्द व्यवहृत होता हैं जो 'जर्नल' से निकला हैं, जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' हैं। दिन–प्रतिदिन के क्रिया–कलापों, सरकारी बैठकों का विवरण 'जर्नल' में रहता था। 17वीं एवं 18वीं शती में पीरियाडिकल के स्थान पर लैटिन शब्द 'डियूनरल' और 'जर्नल' शब्दों के प्रयोग हुए। 20वीं सदीं में गम्भीर समालोचना और विद्वत्तापूर्ण प्रकाशन को इसके अन्तर्गत माना गया। 'जर्नल' से बना 'जर्नलिज्म अपेक्षाकृत व्यापक शब्द हैं। समाचार पत्रों एवं विविधकालिक पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्सम्बन्धी कार्यों को पत्रकारिता के अन्तर्गत रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन–प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता हैं। समसामयिक गतिविधियों के संचार से सम्बद्ध सभी साधन चाहे वे रेडियो हो या टेलीविजन इसी के अन्तर्गत समाहित हैं।

डॉ0 बद्रीनाथ कपूर के अनुसार ''पत्रकारिता पत्र–पत्रिकाओं के लिए समाचार लेख आदि एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाशन आदेश आदि देने का कार्य हैं। **रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर** के अनुसार ''ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुंचाना ही पत्रकला हैं। **सी. जी. मूलर** सामयिक ज्ञान के व्यवसाय को पत्रकारिता मानते हैं। इस व्यवसाय में आवश्यक तथ्यों की प्राप्ति, सावधानी पूर्वक उनका मूल्यांकन तथा उचित प्रस्तुतिकरण होता है। **विखेमस्टीड** ने पत्रकारिता को कला, वृत्ति और जन सेवा माना हैं।

न्यू वेब्स्टर शब्दकोश ने प्रकाशन, सम्पादन, लेखन अथवा प्रसारण सहित समाचार माध्यम के संचालन के व्यवसाय को पत्रकारिता माना हैं। 'जर्नलिज्म' फ्रैंच शब्द 'जर्नी' से व्युत्पन्न है जिसका तात्पर्य है प्रतिदिन के कार्यो अथवा घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करना। पत्रकारिता मोटे तौर पर प्रतिदिन की घटनाओं का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत करती है।

प्रायः पत्रकारिता माध्यम, प्रेस, जन माध्यम, जन संचार को एक ही अर्थ में ग्रहण किया जाता हैं, पर सूक्ष्म दृष्टि से इन सभी शब्दों का अपना एक विशिष्ट अर्थ है। **पत्रकारिता** समाचारों के संकलन, चयन, विश्लेषण तथा सम्प्रेषण की प्रकिया हैं। **प्रेस** तकनीकी रूप से समाचार पत्र को संकेतित करता है। **जन संचार** में जन माध्यम के सभी साधनों के अतिरिक्त टेलीफोन, टेलीग्राफ, डाक सेवा इत्यादि सम्मिलित हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– पत्रकारिता का प्रमुख कर्तव्य क्या है?

प्रश्न 2 – प्रेस के बारे में ब्रिटिश राजनीतिज्ञ बर्क ने क्या कहा है?

प्रश्न 3– जर्नलिज्म शब्द किस भाषा से अया है?

प्रश्न 4– पत्रकारिता के बारे में पण्डित नेहरू के क्या विचार थे?

1.4 पत्रकारिता की प्रकृति :

पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सूचना देना, शिक्षित करना तथा मनोरंजन करना है। इन तीन उद्देश्यों में सम्पूर्ण पत्रकारिता का सार तत्व समाहित किया जा सकता है। अपनी बहुमुखी प्रवृतियों के कारण पत्रकारिता व्यक्ति और समाज के जीवन को गहराई तक प्रभावित करती है। पत्रकारिता देश की जनता की चित्तवृत्तियों, अनुभूतियों और आत्मा से साक्षात्कार करती हुई मानव मात्र को 'जीने की कला' सिखाती है। सत्य की खोज में रत रहते हुए समाज में उदार मूल्यों की स्थापना की दिशा में पत्रकारिता की भूमिका विशेष उल्लेखनीय है। इसका मूल लक्ष्य ही अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना, दोषों का परिहार, असहाय और पीड़ितों की रक्षा एवं सहयोग तथा जनता का पथ प्रदर्शन करना है।

संक्षेप में यहां पत्रकारिता के तीन प्रमुख उद्देश्यों की चर्चा की जा रही है –

1. सूचना देना – पत्रकारिता जन–जन को विश्व रंगमंच पर घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी कराती हैं। इसके माध्यम से जनता को सरकार की नीतियों तथा गतिविधियों के बारे में जानकारी मिलती रहती हैं। एक प्रकार से यह जन हितों की संरक्षिका है।

2. शिक्षित करना – सूचना के अतिरिक्त पत्रकारिता का प्रमुख कार्य शिक्षित करना भी है। पत्रकार जनता के आंख तथा कान होते हैं। पत्रकार जो देखता है, सुनता है उसे मुद्रित तथा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से जनता तक पहुंचाता है। पत्रकारिता सूचना के साथ–साथ जनमत निर्धारित करने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार भूमि तैयार करती है। सम्पादकीय स्तम्भों, अग्रलेखों, पाठकों के पत्र, परिचर्चाओं साक्षात्कारों इत्यादि विविध तरीकों के द्वारा जनता को सामयिक तथा महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी देकर उनकी मानसिक खुराक की पूर्ति की जाती है। देश की वैचारिक चेतना को पत्रकारिता ही उद्वेलित करती है। इस प्रकार पत्रकारिता जन शिक्षण का प्रमुख माध्यम है।

3. मनोरंजन करना –मनोरंजन रेडियो तथा दूरदर्शन का प्रमुख कार्य है। इसके अतिरिक्त समाचार पत्र–पत्रिकाएं भी इस दृष्टि से काफी स्थान पाठकों के मनोरंजन सम्बन्धी सामग्री के लिए सुरक्षित कर रही है। मनोरंजन सामग्री पाठकों को स्वाभाविक रूप से आकृष्ट भी करती है। मनोरंजन में कई बार शिक्षा का मार्मिक सन्देश भी छिपा रहता है। उदाहरणार्थ राजनैतिक कार्टून तथा ऐसे ही हास्य–व्यंग्य के स्तम्भ एवं चुटकले। इनके मूल में सामाजिक–राजनैतिक जीवन में स्वस्थ भावों का संचार करना ही होता है।

मनोरंजन की दृष्टि से पत्र–पत्रिकाएं जहां मनोरंजक समाचारों के प्रकाशन में रूचि प्रदर्शित करती है वहीं फीचर लेखों के माध्यम से इस कार्य को विशेष रूप से किया जाता है। मनोरंजन मानवीय रूचि का महत्वपूर्ण पक्ष है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– पत्रकारिता का मूल उद्देश्य क्या है ?

प्रश्न 2– पत्रकारिता का मूल लक्ष्य क्या है ?

प्रश्न 3– मनोरंजन का पत्रकारिता में क्या महत्व है ?

1.5 पत्रकारिता का स्वरूप व विभिन्न आयाम :

इससे पूर्व कि पत्रकारिता के वर्तमान स्वरूप व इसमें निहित सम्भावनाओं पर विचार किया जाए, पत्रकारिता की उस बुनियाद पर चर्चा किया जाना जरूरी है जिसकी बदौलत आज पत्रकारिता बुलंदियों को छू रही है। यह विषय अलग है कि विश्व में पत्रकारिता कब से और किस रूप में प्रारम्भ हुई किन्तु अधिकांश हिन्दी पत्र स्वतंत्रता प्राप्ति की संकल्प भावना, समाज सुधार अथवा साहित्यश्री की अभिवृद्धि की कामना से ही प्रारम्भ हुए थे। वह पत्रकारिता का शैशव था। उनके जनकों को अपने आत्मजों के लालन–पालन का अनुभव भी नहीं था। दासता के विषाक्त वातावरण में विदेशी शासकों ने क्षय के कीटाणु छोड़ रखे थे। अधिकांश पत्र अपने जन्म के कुछ

काल बाद ही रोगी हो जाते थे। राजाराम मोहनराय ने पत्रकारिता प्रारम्भ करने का कारण बताया– ''मुझे लगा कि यदि मैंने अपनी आत्मा की व्यग्रता को समाचार के माध्यम से कोटि–कोटि बन्धुओं तक नहीं पहुंचाया तो विवशता की घुटन मुझे आत्मसात कर लेगी।''

अदालत में पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में लोकमान्य तिलक ने घोषणा की थी कि ''मेरा समाचार पत्र निकालने का उद्देश्य धन अर्जन करना या यश प्राप्ति की लिप्सा नहीं है। मैंने उसके अक्षर–अक्षर में उस क्रान्ति के बीज बोए हैं जो विदेशी शासन के प्रासाद को धूल–धूसरित कर देगी। शासन के प्रति विद्रोह ही मेरी पत्रकारिता का पहला और अन्तिम उद्देश्य है। इसी तरह पं. प्रताप नारायण मिश्र ने ब्राह्मण के एक सम्पादकीय में कहा था– ''सामाजिक कुरीतियां राजनैतिक दासता को बल देती हैं। सम्पूर्ण समाज से इन कुरीतियों को दूर करने का कार्य मेरे और सक्षम भाई करेंगे। हां, एक सीमित वर्ग के जीवन में आमूल परिवर्तन लाना मेरे इस पत्र का उद्देश्य है।'' प्रबल मनोयोग और महती आकांक्षाओं में पालित यह पत्र–पत्रिकायें, अधिकांशतः अल्पजीवी रहीं। विदेशी सरकार के निर्मम प्रहार, ग्राहकों की शून्यता, प्रकाशन, प्रसारण और मुद्रण की कठिनाई तथा सुरुचिपूर्ण सफल पत्रकारों का अभाव, इन सब तथ्यों पर ही अधिकांश पत्रों को आत्मसात करने का दायित्व है। हां, कुछ पत्रों का सौभाग्य रहा कि उन्हें जनता जनार्दन का वह सक्षम वरदहस्त मिला जिसने उन्हें विषम परिस्थितियों में भी सुरक्षित रखा।

''मेरा समाचार पत्र निकालने का उद्देश्य धन अर्जन करना या यश प्राप्ति की लिप्सा नहीं है। मैंने उसके अक्षर–अक्षर में उस क्रान्ति के बीज बोए हैं जो विदेशी शासन के प्रासाद को धूल–धूसरित कर देगी। शासन के प्रति विद्रोह ही मेरी पत्रकारिता का पहला और अन्तिम उद्देश्य है।''

: एक ब्रिटिश अदालत में लोकमान्य तिलक का बयान

हिन्दी पत्रों का जीवन संकल्प की दृढ़ता पर निर्भर रहा है। व्यक्तिगत प्रचार की आकांक्षा तथा संस्थापक सम्पादक के स्थान पर अपना नाम मुद्रित देखने की कामना रखने वाले महानुभाव पत्रकारिता के पोषक नहीं शोषक होते हैं। कुछ दूसरे संस्थापक समाचार पत्रों को एक अस्त्र के रूप में प्रयुक्त कर शासन–सत्ता में पैठ बनाने का प्रयास करते हैं। वे रोमांचकारी नामों व रोमांचकारी समाचारों में रुचि रखते हैं।

सम्भवतः इन सब प्रत्यक्ष अनुभवों से प्रभावित होकर ही पत्रकारों के जनक पराढ़कर जी ने कहा था– 'लोकमंगल के प्रति निष्ठा पत्रों की जीवनशक्ति है। उसके अभाव में पत्र सांसें भरते हैं, जीवित नहीं रहते। संसार में दीर्घजीवी पत्रों का यही रहस्य है।'

सरकार जनता के हित के लिए है और समाचार पत्र भी प्रायः यही काम करते हैं। फिर दोनों में संघर्ष कैसा और प्रतिबंधक कानून किस लिए। उत्तर स्पष्ट है। सरकार स्थायी व्यवस्था है और जन–जन का हित साधन व संरक्षण उसका लक्ष्य है। अधिकांश पत्र अपनी पावनता निभाने में असफल रहते हैं।

यह हिन्दी पत्रकारिता का दुर्भाग्य है कि जब उसके पास विचार था तब समाचार नहीं था और जब समाचार आया तो विचार नदारद हो गया। संकेत आजादी के पहले की पत्रकारिता और

आजादी के बाद 20–25 वर्षों तक की पत्रकारिता की तरफ है। वह सामान्य समय की पत्रकारिता नहीं थी न उसका कोई मजबूत व्यावसायिक आधार था। अतः हिन्दी के समाचार पत्र भौतिक दृष्टि से दरिद्र थे। उनमें आवश्यक समाचार नहीं होते थे। उनकी जरूरत से ज्यादा क्षतिपूर्ति विचारों से की गई। स्वतंत्र भारत में हिन्दी के समाचार पत्रों की व्यावसायिक जमीन मजबूत होने लगी। आर्थिक दृष्टि से वे घाटे का सौदा नहीं रह गए। लेकिन इसके साथ ही विचार और विश्लेषण के मोर्चे पर मानो सांप सूंघ गया। इस सन्नाटे को तोड़ने का काम किया राजेन्द्र माथुर जैसे अनेक पत्रकारों ने। खबर निश्चय ही महत्वपूर्ण है, लेकिन उसका अर्थ और भी महत्वपूर्ण है। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है वह अर्थ जो विभिन्न खंड–अर्थों को एक साथ रखने पर पर पैदा होता है।

पत्रकारिता को अंतरिक्ष की ऊंचाइयों तक ले जा रही वर्तमान पीढ़ी के लिए यह जानना भी जरूरी है कि आज से बीस–पच्चीस साल पहले किस तरह के अक्षरों को जोड़–जोड़ कर समाचार पत्र बनाया जाता था, कितना श्रमसाध्य था वह काम। समाचारों का त्वरित प्रेषण भी आसान नहीं था। टेलीग्राफ तथा टेलीप्रिंटर द्वारा समाचारों के प्रेषण से आसानी जरूर बढ़ी किन्तु यह सर्वसुलभ साधन नहीं बन सका। जिन्होंने उन हालातों को झेला है वे इन अर्थों में पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत आशान्वित हैं। जीवन के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर के प्रवेश ने सुविधाएं बढ़ा दी हैं और सम्भावनाओं में कई गुना बढ़ोतरी कर दी है। उस पीढ़ी के लिए वर्तमान बुलंदियां आश्चर्य में डालने वाली ही हैं। इसी पीढ़ी के पत्रकारों के लिए पत्रकारिता में आए बदलाव भी आश्चर्य में डालने वाले ही हैं। मिशन भावना की पत्रकारिता के रस में डूबी वह पीढ़ी वर्तमान में हवा और पानी को भी व्यवसाय बनते युग में पत्रकारिता में व्यावसायिकता के प्रवेश पर चिन्तित हैं। किन्तु विश्व समाज में हो रहे बदलावों से पत्रकारिता भी अछूती नहीं रह सकती है। पत्रकारिता का प्रारम्भिक स्वरूप, इसका इतिहास, उसकी मूल भावना अदि तमाम विषय महत्वपूर्ण होते हुए भी अपना एक अलग अस्तित्व रखते हैं।

पत्रकारिता के प्रारम्भिक दौर में गुलामी के खिलाफ संघर्ष, सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष और साहित्य सृजन को प्रमुख स्थान मिला। इसमें व्यावसायिकता के बजाए जोखिम अधिक था और इसी जोखिम में जीना लेखकों–पत्रकारों ने अंगीकार किया। किन्तु अब पत्रकारिता ने भी जीवन के तमाम व्यवहारों के साथ व्यावसायिकता में प्रवेश कर लिया है। अब हम इसे व्यावसायिकता से हटाकर नहीं देख सकते हैं और इसमें हमें अपनी मनोवृत्ति, क्षमता, रुचि के अनुसार सम्भावनायें तलाशनी ही होंगी। पूर्व में जनकल्याण की भावना प्रमुख थी और समझा जाता था कि पत्रों के दीर्घजीवी होने का कारण जनकल्याण की भावना में ही निहित है किन्तु इसके विपरीत अब पत्रों का दीर्घजीवी होना इसके सफल व्यवसाय पर निर्भर है। यह विषय भी बिल्कुल अलग है कि इस भावना का समाज और अन्ततः विश्व में क्या प्रभाव पड़ेगा। किन्तु आज जब हम इस क्षेत्र में प्रवेश कर रहे होते हैं, तो इससे पूर्व इसमें निहित सम्भावनाओं पर निश्चित रूप से विचार करते हैं।

आज पत्रकारिता केवल प्रकाशित होने वाले समाचारपत्रों व पत्र–पत्रिकाओं तक ही सीमित नहीं रह गई है, प्रिंट मीडिया के अलावा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, इंटरनेट और यहां तक कि मोबाइल

सेवा में भी पत्रकारिता का हस्तक्षेप शुरू हो गया है। इससे भी आगे जहां तक अभी हमारी सोच व नजर नहीं पहुंची है, पत्रकारिता के विस्तार की सम्भावनायें बढ़ी हैं, जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि पूर्व में मिशन भावना से शुरू हुई पत्रकारिता जहां सामाजिक, राजनैतिक आदि समाचारों का संकलन, साहित्य का सृजन आदि तक ही सीमित थी वहीं अब पत्रकारिता के साथ जुड़ी व्यावसायिकता और विज्ञान के बढ़ते चरणों ने सम्भावनाओं को भी विस्तार दे दिया है। अपनी मनोवृत्ति, अभिरुचि के अनुसार इस क्षेत्र में सबके लिए द्वार खुले पड़े हैं। क्योंकि पत्रकारिता के साथ वाणिज्य–व्यापार और व्यवसाय से जुड़े तमाम विषय, खेल, संस्कृति, भाषा, कला, सिनेमा, फोटोग्राफी, कार्टून, साहित्य, सामान्य राजनीति, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, कूटनीति, विश्वव्यापी हलचलें, पर्यावरण, पर्यटन व साहसिक पर्यटन सहित आदि विषय जुड़ गए हैं। पूर्व में युद्ध के समाचारों का संकलन बहुत बड़े जोखिम का काम था। आज भी जोखिम के रहते हुए उसमें तकनीक भी जुड़ गई है।

जाहिर है पत्रकारिता के क्षेत्र में आए इस विस्तार ने व्यक्तित्व के विकास की सम्भावनाओं में भी नए आयाम जुड़े हैं और अपनी क्षमता और अभिरुचि के अनुरूप सम्भावनायें तलाशने का अवसर बढ़ा है। प्रिंट मीडिया हो अथवा इलैक्ट्रॉनिक मीडिया अब इनमें समाचार सहित तमाम अन्य विषयों के साथ विज्ञापनों का महत्व प्रमुख हो गया है यानी विज्ञापन कला भी पत्रकारिता से अलग नहीं की जा सकती है। पूर्व में जहां संवाद व विज्ञापन दो विपरीत कार्य समझे जाते थे अब इन दोनों का आपस में घालमेल हो गया है। विज्ञापन के क्षेत्र में आम लोगों को आकर्षित करने की तकनीक का भी विकास हुआ है और इसमें बहुत कुछ नया करने, तलाशने की सम्भावनायें विद्यमान है। किसी भी समाचार पत्र या पत्रिका में छपे समाचार की ओर पाठक का ध्यान सबसे पहले उसमें छपे चित्र में जाता है। यह चित्र समाचार का एक प्रकार से प्राण बन जाता है और जीवन्तता ला देता है। चित्र का हमारे मन मस्तिष्क में प्रथम दृष्ट्या प्रभाव पड़ता है। लेखन के साथ अथवा पृथक से फोटो पत्रकारिता का अपना एक अलग ही स्थान बनता जा रहा है। यह फोटो पत्रकारिता स्टूडियो में फोटो बनाने अथवा शादी–व्याह के फोटो लेने से अलग है। इस अन्तर को भी समझने की जरूरत है और इस तरह की पत्रकारिता के लिए एक अलग दृष्टि की जरूरत होती है। फोटो जर्नलिस्ट प्रेस रिपोर्टर के साथ कदम से कदम मिलाकर चलता है, कहानी के अनुसार फोटो लेता है। घटना को कैमरे में कैद करने के लिए चीते की जैसी फुर्ती होनी चाहिए, क्योंकि अगर चूक गए तो वह मौका फिर कभी न मिलेग। हर पब्लिशिंग हाउस में फोटो डिपार्टमेंट मैनेजमेंट की संरचना अलग–अलग होती है। बड़े संस्थानों में फोटोग्राफी के लिए अलग एडीटर नियुक्त होता है, जिसका काम फोटो सम्पादन की एक टीम तैयार कर लगातार देखरेख करते रहना होता है। फोटो पत्रकारिता का काम अब केवल फोटो खींचने तक ही सीमित नहीं रह गया है। डिजीटल कैमरे से अथवा अन्य तकनीक के प्रयोग से कम्प्यूटर में लोड करना, एडिट करना, स्कैन करना और उसे उचित कलर देना आदि बातें भी शामिल हैं। यानी पत्रकारिता के हर क्षेत्र में उसके विविध आयामों की पहचान और समझ का होना बहुत जरूरी हो गया है।

पूर्व में जहां समाचार संकलन और समाचारों का प्रेषण कठिन था वहीं अब इस तकनीक में भी नए–नए प्रयोग हो रहे हैं और पत्रकारिता करने वालों के सामने प्रतिस्पर्धा के दरवाजे खुले

हैं। देश–दुनिया की हर पल की खबरें और उन खबरों से पड़ने वाले प्रभावों पर विस्तृत चर्चा भी पत्रकारिता में शामिल हो गई है। यानी कि पत्रकारिता में सम्भावनायें खोजने वालों के सामने बहुत सारे विकल्प पड़े हैं। किन्तु यह ध्यान देने की बात है कि इस व्यापकता के साथ इस पेशे से जुड़ी सीमाओं को भी महत्व दिया जाना जरूरी है। हमें अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है किन्तु यह स्वतंत्रता दूसरे की स्वतंत्रता का अतिक्रमण न करे यह ध्यान देना भी महत्वपूर्ण है।

पत्रकारिता थाना, कचहरी, अस्पताल, हत्या, बलात्कार के समाचार लाने तक ही नहीं सिमटी है। इसका स्वरूप व्यापक हो गया है। वर्तमान में समाचार पत्रों का एक समूह व पत्रकार इसी तरह के समाचारों तक सिमट कर रह गए हैं और इसमें उन्होंने स्टिंग आपरेशन या खोजी पत्रकारिता का घालमेल कर दिया है। इसी लिए समाचार पत्र आलोचना के घेरे में भी आ रहे हैं। हम क्यों दिनमान, रविवार, धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान सरीखी पत्रिकाओं व रघुबीर सहाय, राजेन्द्र माथुर, सुरेन्द्र प्रताप सिहं जैसे पत्रकारों को याद करते हैं? इसीलिए कि उन्होंने आजादी के बाद की पत्रकारिता की गौरवशाली परम्परा का निर्वहन किया और पाठकों को बहुत कुछ दिया। पत्रकारिता में आए ह्रास और गिरते स्तर के लिए व्यावसायिकता को जिम्मेदार ठहराया जाता रहा है लेकिन कौन सा ऐसा व्यवसाय या व्यवहार वर्तमान में रह गया है जिसमें व्यावसायिकता की घुसपैठ नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय जैसे कल्याणकारी व लोकहित के कार्यों को भी व्यवसाय ने जकड़ लिया है। किन्तु पत्र और मीडिया अपनी पाठक संख्या में तभी बढ़ोत्तरी भी कर सकता है जब वह अलग–अलग लोगों की जरूरतों और इच्छाओं के अनुरूप उन तक अपनी पहुंच बनाए और समाचार पत्रों को उनके जीवन का आवश्यक हिस्सा बना डाले। अर्थ व्यवस्था व वाणिज्य के क्षेत्र में भी पत्रकारिता ने अपना विशेष स्थान बना लिया है। समाचार पत्रों में पूरा स्थान अर्थ सम्बंधी समाचारों, समस्याओं, सम्भावनाओं आदि को दिया जाता है और इस क्षेत्र में महारथ हासिल लोगों का अच्छा दबदबा बना हुआ है। इसी तरह जहां पूर्व में खेल समाचार पत्रों में नहीं के बराबर होते थे अब इस क्षेत्र में रुचि रखने वाले लेखकों, समीक्षकों के साथ पाठकों का एक बहुत बड़ा वर्ग जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र में काम करने वाले पत्रकारों को खेल की बारीकियों से पूरी तरह परिचित होना चाहिए। इसी तरह सिनेमा जगत ने भी अपना दबदबा पत्रकारिता में बना डाला है। कोई भी पत्र वर्तमान में सिने जगत के समाचारों और उसके साथ जुड़े ग्लैमर से अलग नहीं है। ग्लैमर में जहां विस्तृत सम्भावनायें तलाशी जा रही हैं वहां निश्चित रूप से उस ग्लैमर को सामने लाने में मीडिया ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। सिने जगत की पत्रकारिता के लिए जरूरी है कि पत्रकार उन बारीकियों का ज्ञान रखे जो इस क्षेत्र में जरूरी हैं। आर्किटैक्चर, कला और संस्कृति के साथ रेखा चित्रों, कार्टूनों का भी अपना विशेष महत्व है। कानून की जानकारियां और उसके दांव–पेंचों के साथ सही जानकारियों को भी पत्रकारिता में स्थान मिला है। कृषि और कृषि से सम्बंधित व्यवसाय, तकनीक व अन्य जानकारियों पर अभिरुचि रखने वालों के लिए भी पत्रकारिता के क्षेत्र में भरपूर अवसर है। व्यंग लेखन, राजनैतिक समीक्षा, सामाजिक विश्लेषण तमाम ऐसे विषय है जिनमें अभिरुचि और क्षमता के अनुरूप प्रवेश के द्वार खुले हैं। समाचार पत्रों में मालिकाना हस्तक्षेप और शोषण की बढ़ती प्रवृत्ति

को आम देखा जा रहा है और स्थापित पत्रकार भी असुरक्षित महसूस करने लगे हैं, किन्तु स्वतंत्र रूप से इस क्षेत्र में काम करने के लिए भी व्यापक सम्भावनायें बढ़ती जा रही हैं।

जहां हम व्यावसायिकता की ओर वढ़ते पत्रकारिता के चरणों से कभी–कभी भयभीत व आतंकित हो उठते हैं और इसे घातक लक्षण बताते हैं वहीं पत्रकारिता के व्यवसाय में प्रवेश करते ही उसके लिए अब कोई भी क्षेत्र पहुंच से बाहर नहीं रह गया है, जरूरत सिर्फ दृष्टि की रह गई है। घातक तो हर व्यवसाय तब बनता है जब उसमें माफिया, राजनीति व ब्यूरोक्रेसी का गठजोड़ हावी होने लगता है और वह उस व्यवसाय की आत्मा को मजबूर हो जाने या बिक जाने के लिए विवश कर देता है। पर्यावरण व सामाजिक प्रदूषण पैदा करने वाली साम्राज्यवादी शक्तियों के बढ़ते षड़यंत्र, जिनके कारण मानव जीवन संकटग्रस्त होने लगा है, साहित्य, कला, संस्कृति शिक्षा और वैज्ञानिक शोध के क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का कसता शिकंजा, लगता है रोजगार की सम्भावनाओं के असंख्य द्वार खोलता जा रहा है लेकिन उसके दुष्परिणामों को देखने की शक्ति–सामर्थ्य होना बदलती पत्रकरिता के स्वरूप के बावजूद भी जरूरी है और यही पत्रकारिता का मूल मंत्र भी है। शिक्षा के क्षेत्र में राज्य के अपने हाथ खींच लेने और उसके स्थान पर निजीकरण को खुली छूट दिए जाने के फलस्वरूप आम आदमी की पहुंच से शिक्षा का बाहर हो जाना समाज में असमानता और विसंगतियां पैदा करता जा रहा है, जिसके परिणाम अच्छे संकेत नहीं देते। बढ़ती असमानताओं और विसंगतियों से नजरअंदाज किया जाना भी पत्रकारिता की मूल भावना से आंख मूंद लेना ही कहा जाएगा। जहां पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्भावनायें बढ़ी हैं, व्यापकता पैदा हुई है वहीं उसमें व्यापक, सम्यक और दूरगामी सोच का समावेश भी नितान्त जरूरी हो गया है।

पत्रकारिता का एक नया क्षेत्र खोजी पत्रकारिता का है। किसी भी घटना चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो, राजनैतिक या अपराध परक, दुर्घटना सम्बंधी हो, साधरणतया वह कब, कहां, क्यों, कैसे, कौन जैसे समाचार के मूल सिद्धान्तों के आधार पर समाचार बनती है, किन्तु हर घटना के पीछे बहुत कुछ छिपा रहता है। उस सच्चाई को खोजबीन के बाद सामने लाना अन्वेषणात्मक या पत्रकारिता है। अन्वेषणात्मक पत्रकारिता का अपना एक विशेष स्थान बन गया है। इस प्रकार की पत्रकारिता मुख्यतः विवादास्पद तथ्यों या घटनाओं के उपर सच्चाई को जानने के लिए की जाती है।

पत्रकारिता के कुछ विशेषज्ञ क्षेत्रों में खेल पत्रकारिता और पर्यटन पत्रकारिता भी शामिल हैः

खेल पत्रकारिता : खेल पत्रकारिता ने आज विश्व में अपना एक अलग स्थान बना लिया है। एक समय था जब खेलों को पत्रों में स्थान नहीं मिल पाता था किन्तु अब खेल पत्रिकाओं के अलावा समाचार पत्रों में पृथक से खेल समाचारों को स्थान दिया जाता है। टेलीविजन के बाजार में आने से पूर्व रेडियो पर कमेंट्री सुनने के लिए भीड़ जुट जाया करती थी और आज टेलीविजन पर भी खेल का आखों देखा हाल देखने लोग उमड़ पड़ते हैं। खेलों में भी अलग–अलग अभिरुचियों के अनुसार पत्रकारिता के लिए द्वार खुले हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में तो खेल पत्रकारों का महत्व

बहुत अधिक माना जाता है, लेकिन खेल पत्रकारिता के लिए खिलाड़ियों से भी अधिक पैनी नजर और विश्लेषण की क्षमता पत्रकार को जुटानी होती है।

पर्यटन पत्रकारिता : तीर्थाटन और पर्यटन बहुत पुरानी परम्परा है। ह्वेनसांग की यात्रा हो, इब्नेबतूता की यात्रा हो, फाहियान की यात्रा हो, इत्सिंग की यात्रा हो, मार्कोपोलो की यात्रा हो, वास्कोडिगामा की यात्रा हो, कोलम्बस की यात्रा हो, राहुल सांकृत्यायन की यात्रा हो या पं0 नैनसिंह किशनसिंह की, इनका रोचक वर्णन हमें इतिहास में मिलता है और यह रोचकता हमें बहुत बड़े ज्ञान की उपलब्धि कराती है। तत्कालीन राजनीतिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, भौगोलिक स्थिति आदि सबका ज्ञान इन यात्राओं के वर्णनों में समेटा गया है। इनके अलावा धर्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, तिजारती व सर्वेक्षण–अन्वेषण यात्राओं का वर्णन भी हमें बहुत कुछ देता है। यद्यपि अब तीर्थाटन, पर्यटन व खोज का स्वरूप बदल गया है किन्तु पुरातन को समेटते हुए वर्तमान के लिए अनेक दरवाजे उसके सामने खुले हैं। पर्यटन सम्बंधी समाचारों ने पत्रकारिता को और अधिक रोचक बना डाला है। इस तरह पर्यटन के साथ पत्रकारिता को जोड़कर चलना और उसमें नईं दृष्टि पैदा करना पर्यटन पत्रकारिता को अधिक आकर्षक बना सकता है। एवरेस्ट की ऊंची चोटी से लेकर समुद्र की गहराइयों और दक्षिण ध्रुव अभियान के समाचार और इन अभियान दलों के यात्रा वृत्तांत भी रोचकता लिए होते हैं।

संसदीय पत्रकारिता : संसद और विधानसभा में जब भी कोई कार्यवाही होती है उसकी सम्पूर्ण जानकारी आम लोगों तक पहुंचाना इस पत्रकारिता के अन्दर आता है। संसदीय कार्यवाही को अब न केवल समाचार पत्रों में दिया जाता है बल्कि रेडियो और दूरदर्शन पर भी प्रसारित किया जाता है, लेकिन यह काम बहुत जिम्मेदारी पूर्ण है।

अनुसंधनात्मक पत्रकारिता : उन विषयों को उजागर करना जो पहले से विद्यमान हैं किन्तु प्रकाश में नहीं आए हैं या जिन विषयों पर नए अनुसंधान किए जा रहे हैं। ऐसे विषयों पर गहन अध्ययन व विषय वस्तु की जानकारी होना जरूरी है। इस तरह के विषयों में विज्ञान, कृषि, इतिहास, भूगर्भीय तथा इसी तरह की विविध विषय वस्तुयें हो सकती हैं।

फिल्म पत्रकारिता : वर्तमान समय में अधिकांश पत्र–पत्रिकायें फिल्म समाचारों के बिना अधूरी सी जान पड़ती हैं। कुछ पत्रिकायें तो केवल फिल्मी समाचारों के लिए ही प्रकाशित होती हैं। रेडियो और दूरदर्शन तो फिल्म जगत से ही जुड़ा लगता है। पत्रकारिता का यह स्वरूप इतना लोक प्रिय हुआ है कि समाचर पत्रों के मुख पृष्ठों में भी फिल्म जगत से जुड़े लोगों के चित्र छपने लगे हैं। इसके अलावा विज्ञापनों में भी फिल्मी अभिनेताओं–नेत्रियों को विशेष महत्व दिया जाने लगा है। कई महत्वपूर्ण संदेश तक इन्हीं के माध्यम से दिए जाने लगे हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के कारण भी फिल्म पत्रकारिता का बाजार बड़ा हो गया है। लेकिन फिल्मी पत्रकारिता के लिए कला की समझ और इसे अभिव्यक्त कर सकने वाली दृष्टि होनी जरूरी है।

कार्टून कला : मर्म को छू जाने वाली बात जो एक साधारण से कार्टून के माध्यम से कही जा सकती है वह पन्ने दर पन्ने लिख डालने के बाद भी कभी–कभी नहीं कही जा सकती है। एक अच्छे कार्टूनिस्ट के लिए चित्रकला की जानकारी होना तो जरूरी है ही, उसे पात्रों की

भावभंगिमाओं से पैदा होने वाले प्रभाव की भी जानकारी होनी चाहिए, साथ ही उसके साथ का कथन भी दमदार होना चाहिए। चित्र अच्छा हो और कथन दमदार न हो या कथन दमदार हो और चित्र अच्छा न हो तो वह प्रभावोत्पादक नहीं रह जाता है। समाचार पत्रों में कार्टून का अपना एक विशेष महत्व पाठक का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए है। इसके अलावा इस शैली में कई कार्टून पत्रिकायें भी प्रकाशित होती हैं। बच्चों को कार्टून अथवा चित्रमय पत्रिकायें अधिक अच्छी लगती हैं। बच्चों के ज्ञानवर्द्धन के लिए नईं–नईं व आकर्षक चित्रकथायें कार्टूनों के माध्यम से बनाई जा सकती हैं। समाचार पत्रों में प्रायः राजनैतिक विषयों पर चुटीले कटाक्ष अक्सर देखने को मिलते हैं। जिन समाचार पत्रों में चुटीले कार्टून हुआ करते हैं, उनमें पाठक पहले कार्टून को ही तलाशता है।

व्यंग्य लेखन : व्यंग्य लेखन आम लेखन कला से भिन्न है। साधारण सी बात को अनूठे व्यंग्यात्मक और चुटीले अंदाज में कह देने पर पाठक सहज में ही विषय का आनन्द लेने लगता है। आज से कुछ साल पहले जब नवभारत टाइम्स में शरद जोशी का अन्तिम पृष्ठ के शीर्ष में 'प्रति–दिन' नामक कालम छपता था तो पाठक नवभारत टाइम्स का मुख पृष्ट देखने से पहले अन्तिम पृष्ट में छपे इस कालम को पढ़ता था। विषय की दुरूहता और गम्भीरता को भी सहज, सामान्य व गुदगुदाने वाले अंदाज में जब मर्म को छूने वाली शैली में पाठक के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है तो पाठक उसका अभ्यस्त हो जाता है। लेकिन सहज होते हुई भी यह शैली आसान नहीं है। जैसे कविता हर कोई नहीं लिख सकता है उसी तरह व्यंग्य लेखन भी सबके सबके बूते का नहीं। हां जो इस विधा को विकसित कर लेता है वह लोकप्रियता हासिल कर लेता है। व्यंग्य राजनीति के अलावा तमाम सामाजिक विषयों पर लिखे जा सकते हैं तथा तात्कालिक घटनाओं पर लिखे गए व्यंग्य अधिक पसंद किए जाते हैं।

स्तम्भ लेखन समाचार पत्रों में कई स्तम्भ होते हैं। सम्पादकीय पृष्ठ पर ही तात्कालिक विषयों पर कई आलेख प्रकाशित हुआ करते हैं। इसके अलावा राजनीति, वैश्विक विषयों पर परिचर्चा, खेल, सिनेमा, व्यापार–वाणिज्य, कानून, फैशन, सांस्कृतिक, धर्मिक, वैज्ञानिक, पर्यटन, ज्योतिष, योग सम्बंधी, आध्यात्मिक आदि विषयों पर अपनी–अपनी अभिरुचि के अनुसार लिखने वाले विषय विशेषज्ञों, विचारकों को अच्छा स्थान मिलता है और एवज में अच्छा पारिश्रमिक भी दिया जाता है। इंटरनेट के माध्यम से यह कार्य अब और भी आसान होता जा रहा है। पत्र–पत्रिकाओं के लिए भी कई महत्वपूर्ण व प्रासंगिक जानकारियां तत्काल मिल रही हैं।

महिला पत्रकारिता : महिला विषयों पर कई पत्रिकायें व समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। इनके अलावा तमाम पत्र पत्रिकाओं में महिलाओं से सम्बंधित समाचार तथा अय सामग्रियां प्रकाशित होती हैं। महिलायें इन विषयों को और अच्छी तरह व्याख्यायित कर सकती हैं। महिलाओं की स्वास्थ्य, शैक्षिक, कानूनी, शिक्षा, साजसज्जा, सौन्दर्य प्रसाधन, खानपान आदि सम्बंधी जानकारियां इसमें समेटी जा सकती हैं इसके अलावा महिला जागरूकता के सवालों और दायित्वों पर विषय सामग्री समेटी जा सकती है।

बाल पत्रकारिताः बच्चों के अभिरुचि के विषयों और समाचारों को समाचार पत्र अपने विशेष संस्करणों में दिया करते हैं। इनके अलावा भी कई पत्र पत्रिकायें बच्चों के ज्ञान व मनोरंजन के लिए प्रकाशित होती हैं। इस विषय पर अभिरुचि रखने वालों के लिए भी एक अच्छा विषय है। रेडियो और टेलीविजन में भी बच्चों के कार्यक्रमों को रोचकता के साथ प्रसारित किया जाता है। इन कार्यक्रमों को तैयार करना भी आसान नहीं है। बाल मन को टटोलना और उसकी भावनाओं को प्रदर्शित करना बहुत श्रमसाध्य है।

कृषि पत्रकारिता : कृषि अनुसंधान केन्द्रों, कृषि विश्वविद्यालयों में कृषि सम्बंधी कई पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं। कृषि के सम्बंध में नईं खोजों, उनमें लगने वाली बीमारियों और उनका उपचार, प्रौद्योगिकी की जानकारी आदि विषयों को इनमें लिया जाता है। कृषि के क्षेत्र में जानकारी रखने वाले यदि पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश करें तो वे आसानी से कृषि सम्बंधी विषयों पर काम कर सकते हैं। इसके अलावा भी किसानों और खेतीबाड़ी सम्बंधी कई पत्र–पत्रिकायें भी अलग से प्रकाशित होती हैं। केवल कृषि सम्बंधी ही नहीं बाजार भाव और कृषि उत्पादों में आ रहे उतार–चढ़ाव आदि भी इसमें समेटा जाता है। इस तरह की पत्रिकाओं में ग्रामीण परिवेश पर चर्चा, कानूनी जानकारी, विकास के विविध आयामों की चर्चा को भी समेटा जा सकता है ताकि ग्रामीण पाठकों के लिए आकर्षण की विषयवस्तु तैयार की जा सके।

इंटरनेट पत्रकारिता : रेडियो पत्रकारिता और टेलीविजन पत्रकारिता के बाद अब जमाना इंटरनेट पत्रकारिता का जमाना आ गया है। इंटरनेट ने पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है। टेलीविजन और कम्प्यूटर के विकास की कहानी के साथ इंटरनेट का भी अपना इतिहास है। कहा गया है कि तकनीकी संगठनात्मक और सामाजिक सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास मैसाचुसेस्ट तकनीकी संस्थान के जे.सी.आर. लिकप्लाइडर द्वारा लिखे गए ज्ञापनों के रूप में सामने आए। उन्होंने कम्प्यूटर की ऐसी विश्वव्यापी अंतरसंबंधित श्रृंखला की कल्पना की थी, जिसके माध्यम से वर्तमान इंटरनेट की ही तरह आंकड़ों और कार्यक्रमों को तत्काल प्राप्त किया जा सके। 1972 में अन्तर्राष्ट्रीय कम्प्यूटर संचार सम्मेलन में बोब कैहन ने पहली बार नेटवर्क का सार्वजनिक प्रदर्शन किया। सूचना क्रांति के इस दौर में इंटरनेट ने जो स्थान बना लिया है उससे तो समूचा पत्र जगत कभी–कभी भयभीत होने लगता है, क्योंकि तमाम सूचनाओं की और वह भी तत्काल जानकारी इंटरनेट के माध्यम से लोगों तक पहुंचने लगी है। यह विषय बहुत ही विस्तृत है और दिन प्रतिदिन इसमें नये प्रयोग परिवर्तन आते जा रहे हैं। जीवन की तीव्र होती जा रही रफ्तार के साथ नेट पत्रकारिता के लिए भी नए दरवाजे खोल दिए हैं।

अतः निसंदेह यह कहा जा सकता है कि आने वाला कल, नेट पत्रकारिता का है और मोवाइल पत्रकारिता भी उसके साथ कदम से कदम मिला कर चलने वाली है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1 – राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता शुरू करने के बारे में क्या कहा था ?

प्रश्न 2 – तिलक ने अदालत में अपनी पत्रकारिता के बारे में क्या कहा था ?

प्रश्न 3 – वर्तमान में खेल पत्रकारिता का क्या महत्व है ?

प्रश्न 4 – कार्टून क्यों अधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं ?

1.6 सारांश :

पत्रकारिता का जो श्रीगणेश हुआ है उसका मूल कारण मानव की जिज्ञासा वृत्ति रही हैं। जिज्ञासा की यह प्रवृत्ति का मूलभूत गुण है। मनुष्य न सिर्फ अपने आस–पास के परिवेश से परिचित होना चाहता है वरन् दुनिया के दूसरे क्षेत्रों में क्या घटित हो रहा है– यह भी जानना चाहता है। समस्त संसार के दैनन्दिन घटनाक्रम से मनुष्य को यथाशीघ्र परिचित कराने के प्रयासों की होड़ में पत्रकारिता अपने विविध रूपों में विकसित होने लगी। आज पत्रकारिता में दैनिक पत्रों से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक आदि सभी पत्रिकाएं तथा रेडियो, दूरदर्शन, जन सम्पर्क व जन संचार से सम्बन्धित विभिन्न विधाओं में विकसित हो गयी है।

पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम है जो समाज में संवाद कायम तो रखता ही है साथ ही समाज को जागृत करना व मनोरंजन करना भी इसका उद्देश्य है। आज समाज जिस अवस्था में है पत्रकारिता की सक्रियता का ही परिणाम है।

पत्रकारिता समाज की विभिन्न गतिविधियों का दर्पण है। सम–सामयिक घटना–चक्र का शीघ्रता में लिखा गया इतिहास 'पत्रकारिता' कहा जाता हैं। समाचारों के संकलन और उनके मात्र प्रस्तुतीकरण के प्रारम्भिक स्तर से लेकर आज तक पत्रकारिता के स्वरूप में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए है। पत्रकारिता का जन्म एक कला और विज्ञान के रूप में हुआ, यहीं पत्रकारिता के उस आदर्श और दायित्व की नींव पड़ी जिसने पत्र और पत्रकारिता को 'चतुर्थ सत्ता' का आसन प्रदान किया।

1.7 शब्दावली :

खोजी पत्रकारिता : किसी भी घटना चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक हो, राजनैतिक या अपराध परक, दुर्घटना सम्बंधी हो, साधारणतया वह कब, कहां, क्यों, कैसे, कौन जैसे समाचार के मूल सिद्धान्तों के आधार पर समाचार बनती है, किन्तु हर घटना के पीछे बहुत कुछ छिपा रहता है। उस सच्चाई को खोजबीन के बाद सामने लाना ही खोजी पत्रकारिता या अन्वेषणात्मक पत्रकारिता है।

संसदीय पत्रकारिता : जनसंचार माध्यमों व समाचार पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से संसदीय कार्यवाही को जनता तक पहुंचाने को संसदीय पत्रकारिता कहते हैं। संसद व विधान सभा के सदनों में पत्रकारों के बैठने के लिए अलग दीर्घा बनी होती हैं।

व्यंग्य लेखन : साधारण सी बात को अनूठे व्यंग्यात्मक और चुटीले अंदाज में कह देने व लिख लेने पर पाठक सहज में ही विषय का आनन्द लेने लगता है। आज से कुछ साल पहले जब नवभारत टाइम्स में शरद जोशी का अन्तिम पृष्ठ के शीर्ष में 'प्रति–दिन' नामक कालम छपता था तो पाठक नवभारत टाइम्स का मुख पृष्ठ देखने से पहले अन्तिम पृष्ठ में छपे इस कालम को पढ़ता था। व्यंग्य राजनीति के अलावा तमाम सामाजिक विषयों पर लिखे जा सकते हैं तथा तात्कालिक घटनाओं पर लिखे गए व्यंग्य अधिक पसंद किए जाते हैं।

स्तम्भ लेखन : सम्पादकीय पृष्ठ पर राजनीति, वैश्विक विषयों पर परिचर्चा, खेल, सिनेमा, व्यापार–वाणिज्य, कानून, फैशन, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, पर्यटन, ज्योतिष, योग सम्बंधी, आध्यात्मिक आदि विषयों पर अपनी–अपनी अभिरुचि के अनुसार विषय विषेषज्ञों, विचारकों द्वारा लिखे जाने वाले लेख स्तम्भ लेख कहलाते हैं।

ए0बी0सी0 : ऑडिट ब्यूरो ऑफ सरकुलेशन –यह एक ऑडिट संस्था है जिसका कार्य समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं की प्रसार संख्यां की जांच करना होता है।

1.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

उत्तर 1.3

उत्तर 1– पत्रकारिता का प्रथम व प्रमुख कर्तव्य अन्याय का उद्घाटन करना, विसंगतियों का सुधार करना, परामर्श देना, समाज का मागदर्शन करना और व्यक्ति से राष्ट्र तक का बहुआयामी उत्थान करना है।

उत्तर 2– बर्क ने प्रेस को राज्य के चौथे स्तम्भ की संज्ञा दी है। बर्क का कहना था कि जिस गैलरी में समाचार पत्रों के संवाददात बैठते हैं वह फोर्थ स्टेट के समकक्ष हैं।

उत्तर 3– जर्नलिज्म शब्द लैटिन भाषा से आया है।

उत्तर 4– नेहरू कहते थे पत्रकारिता राष्ट्रीयता का चिन्तन तथा न्याय विरुद्ध शक्तियों को अवरूद्ध करने और नये राष्ट्र के निर्माण का सबसे सशक्त माध्यम है।

उत्तर 1.4

उत्तर 1– पत्रकारिता का मूल उद्देश्य सूचना देना, शिक्षित तथा मनोरंजन करना है।

उत्तर 2– दूसरा मूल लक्ष्य अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना, दोषों का परिहार, असहाय और पीड़ितों की रक्षा एवं सहयोग तथा जनता का पथ प्रदर्शन करना है।

उत्तर 3– मनोरंजन मानवीय रुचि का महत्वपूर्ण पक्ष है। काटूर्न व व्यंग्य के जरिये मनोरंजन के साथ गहरा संदेश भी पाठक या दर्शक तक पहुंच जाता है।

उत्तर 1.5

उत्तर 1– राजाराम मोहन राय ने कहा था कि मुझे लगा कि यदि मैंने अपनी आत्मा की व्यग्रता को समाचार के माध्यम से कोटि–कोटि बंधुओं तक नहीं पहुंचाया तो विवशता की घुटन मुझे आत्मसात कर लेगी।

उत्तर 2– तिलक ने कहा था मेरा समाचार पत्र निकालने का उद्देश्य धन अर्जन करना या यश प्राप्ति की लिप्सा करना नहीं है। मैंने उसके अक्षर–अक्षर में उस क्रान्ति के बीज बोए हैं जो विदेशी शासन के प्रासाद को धूल–धूसरित कर देगी।

उत्तर 3– वर्तमान में खेल पत्रकारिता का महत्व बहुत बढ़ गया है।जनरुचि, बाजार और विज्ञापन से सीधे जुड़े होने के कारण समाचार पत्र–पत्रिकाओं में तो खेल पत्रकारिता का दर्जा ऊपर उठा ही है इलेक्टानिक मीडिया ने उसे बहुत अधिक ऊंचाई दे दी है।

उत्तर 4– जो बात कई पन्ने लिख कर भी नहीं कही जा सकती उसे काटूर्न के जरिए सिर्फ चित्र या दो–चार शब्दों के द्वारा कह दिया जाता है। इसलिए अखबारों के पाठक सबसे पहले अच्छे काटूर्न पर नजर डालते हैं।

1.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. रयाल, राकेश चंद्र : पत्रकारिता एक परिचय, भाग–1, विंन्शर पब्लिकेशन, देहरादून, उत्तराखण्ड।
2. राव एम. चेलापति : समाचार पत्र, (अनुवाद. वासुदेव शर्मा)
3. वाजपेयी, अम्बिका प्रसाद : समाचार पत्रों का इतिहास
4. वार्ष्णेय, लक्ष्मी सागर : आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका
5. वैदिक, वेद प्रताप : हिन्दी पत्रकारिता के 150 वर्ष,, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 23 मई, 1976
6. शर्मा, रामविलास : भारतेन्दु युग
7. हिन्दी समाचार पत्र : निर्देशिका, 1956

1.10 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री :

1. पत्रकारिता एवं जनसंचार, डॉ0 राकेश रयाल, विनसर प्रकाशन, देहरादून।
2. पत्रकारिता एवं सम्पादनकला, एन0 सी0 पन्त, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. पत्रकारिता के मूल तत्व, डा0 आशाराम डंगवाल, प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
4. इंटरनेट

1.11 निबन्धात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1– बेचन शर्मा उग्र ने भारतीय पत्रकारिता के बारे में क्या कहा है ?

प्रश्न 2– बीस–पच्चीस वर्ष पहले अखबारी पत्रकारिता क्यों अधिक श्रम साध्य थी ?

प्रश्न 4– पत्रकारिता के तीन प्रमुख उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए ?

प्रश्न 5– वर्तमान में पत्रकारिता के विषयों का किस प्रकार विस्तार हो गया है ?

प्रश्न 6– पर्यटन पत्रकारिता के बारे में आप क्या जानते हैं ?

प्रश्न 7– व्यंग्य लेखन की कला क्या है ? पत्रकारिता में इसका क्या महत्व है ?

प्रश्न 8– नेट पत्रकारिता क्या है और इसका भविष्य कैसा है ?

इकाई –02

विश्व पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास एवं विदेशों में पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 विश्व पत्रकारिता का इतिहास

2.4 विदेशों में पत्रकारिता

2.5 आजादी से पूर्व विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता

2.6 सारांश

2.7 शब्दावली

2.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

2.10 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

2.11 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना :

पिछली इकाई में पत्रकारिता की प्रकृति, स्वरूप व आयामों का अध्ययन किया गया है, जिसमें पत्रकारिता की विस्तृत जानकारी छात्रों को देने की कोशिश की गई। पत्रकारिता विषय का विस्तार दिन–प्रति–दिन बढ रहा है।

विश्व की पत्रकारिता को समझना व जानना इसलिए आवश्यक है कि भारत की पत्रकारिता भी विश्व की पत्रकारिता से जुड़ी है, क्योंकि भारत भी विश्व का एक अंग है। विश्व की पत्रकारिता का इतिहास और विश्व में पत्रकारिता का उद्भव सर्वप्रथम कहां और कैसे हुआ इस बात की जानकारी अपने आप में काफी रोचक है। जिसका अध्ययन इस इकाई में किया जा रहा है।

पत्रकारिता के विकास में यूरोप का अच्छा योगदान रहा है। ब्रिटेन, फ्रांस, हालेंड, जर्मनी आदि देशों ने अपनी–अपनी तरह से पत्रकारिता का विकास किया और इसने समूचे विश्व की पत्रकारिता को प्रभावित किया। विश्व के अनेक जन संघर्षो और क्रांतियों ने विश्व पत्रकारिता को नई उर्जा और नए तेवर दिये।

2.2 उद्देश्य :

भारतीय पत्रकारिता के विकास की यात्रा की कहानी विश्व पत्रकारिता की विकास यात्रा से जुड़ी है। भारतीय पत्रकारिता को जानने–समझने के लिए विश्व पत्रकारिता को भी जानना समझना जरूरी है। प्रभाव और विस्तार में आप भारतीय पत्रकारिता का फलक बहुत विस्तृत हो गया है, लेकिन इसने विश्व की पत्रकारिता से बहुत कुछ सीखा–जाना है। इस इकाई में विश्व की पत्रकारिता का इतिहास का अध्ययन करने का उद्देश्य विश्व में पत्रकारिता का उद्भव कैसे हुआ और और आज विश्व में पत्रकारिता की स्थिति कैसी है। भारत की पत्रकारिता का इतिहास विश्व की पत्रकारिता से जुड़ा है इसलिए भारत की पत्रकारिता का इतिहास को जानने से पहले विश्व की पत्रकारिता का इतिहास व विश्व की पत्रकारिता को जानना आवश्यक होगा। इस इकाई में हम विश्व की पत्रकारिता का इतिहास को जानने के साथ–साथ विदेशों की पत्रकारिता से भी परिचित कराने की कोशिश की जाएगी।

इस इकाई से हम जान सकेंगे कि–

- विश्व में पत्रकारिता का विकास किस तरह हुआ?
- विश्व के प्रारम्भिक अखबार कैसे थे?
- विश्व में जनक्रांतियों का पत्रकारिता के विकास में किस तरह का प्रभाव पड़ा।
- ब्रिटेन और अमेरिका में पत्रकारिता के महत्वपूर्ण पक्ष क्या हैं? और
- विश्व में हिन्दी पत्रकारिता की क्या स्थिति है?

2.3 विश्व पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास :

पत्रकारिता का जन्म मनुष्य की सतत जिज्ञासा और साहित्य के प्रति उसके स्वाभाविक अनुराग के संयोग से हुआ माना जाता है। अपनी विकास यात्रा में पत्रकारिता ने तटस्थता और विश्वसनीयता के बूते पर ऐसा मुकाम हासिल कर लिया कि उसे लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण अवयव माना जाने लगा। आजादी का दूसरा नाम पत्रकारिता माना जाने लगा। अंग्रेजी के महत्वपूर्ण साहित्यकार एडीसन ने पत्रकारिता के बारे में कहा था, 'पत्रकारिता से अधिक मनोरंजक, अधिक चुनौतीपूर्ण, अधिक रसमयी और अधिक जनहितकारी कोई दूसरी बात मुझे दिखाई नहीं देती। एक स्थान पर बैठकर प्रतिदिन हजारों–लाखों लोगों तक पहुंच जाना, उनसे अपने मन की बात कह देना, उन्हे सलाह देना, शिक्षा देना–परामर्श देना, उन्हें विचार देना, उनका मनोरंजन करना, उन्हें जागरूक बनाना सचमुच बेहद आश्चर्यजनक होता है।'

कागज और मुद्रण का आविष्कार सबसे पहले चीन में हुआ और फिर यह कला चीन से यूरोप में पहुंची। यह माना जाता है कि चीन में ही सबसे पहला समाचार पत्र निकला जिसका नाम 'पेकिंग गजट' अथवा तिंचाओ था। यूरोप में पहली प्रेस की स्थापना सन् 1440 में हुई। जर्मनी के गुटेनबर्ग नामक एक ईसाई ने इस प्रेस को स्थापित किया था और उसी ने सबसे पहले बाइबिल को छापा। यह भी माना जाता है कि इंग्लैंड में कैक्सटन ने 1477 में प्रेस स्थापित की।

कुछ लोग यह भी मानते हैं कि इंग्लैंड का पहला समाचार–पत्र 1603 में प्रकाशित हुआ था और इसका आकार बहुत छोटा था। इसमें विदेश की खबरें ही छपती थीं। स्वदेश की खबरें छापने की तब अनुमति नहीं थी। सन् 1666 में लंदन गजट प्रकाशित हुआ। यह सप्ताह में दो बार छपता था। सत्रहवीं शताब्दी के अंत में एकाएक लेखकों और पत्रकारों की संख्या में वृद्धि हुई और टैटलर, स्पेक्टेटर, एग्जामिनर, गार्जियन, इंग्लिश मैन, लवर आदि अनेक साप्ताहिक प्रकाशित हुए। ग्रब जर्नल उस समय का सबसे अधिक प्रसिद्व पत्र था।

'पत्रकारिता से अधिक मनोरंजक, अधिक चुनौतीपूर्ण, अधिक रसमयी और अधिक जनहितकारी कोई दूसरी बात मुझे दिखाई नहीं देती। एक स्थान पर बैठकर प्रतिदिन हजारों–लाखों लोगों तक पहुंच जाना, उनसे अपने मन की बात कह देना, उन्हे सलाह देना, उन्हे शिक्षा देना–परामर्श देना, उन्हें विचार देना, उनका मनोरंजन करना, उन्हें जागरूक बनाना सचमुच बेहद आश्चर्यजनक होता है।'

: एडीसन

सबसे पहला समाचारपत्र यूरोप से निकला। हालेंड में 1526 में पहला समाचारपत्र प्रकाशित हुआ । इसके बाद 1610 में जर्मनी में, 1622 में इंग्लैंड में, 1660 में अमेरिका में, 1703 में रूस में, और 1737 में फ्रांस में पहला पत्र निकला। इंग्लैड में पोस्टमैन नाम से पहला साप्ताहिक समाचार पत्र 21 सितंबर 1622 को लन्दन सें निकला। उसके 80 साल बाद लंदन से ही 11 मार्च 1702 को पहला दैनिक पत्र प्रकाशित हुआ। जिसका नाम डेली करेंट था।

पत्रकारिता का क्षेत्र न केवल विविधात्मक है बल्कि व्यापक भी है। जीवन का कोई भी विषय, कोई भी पक्ष ऐसा नहीं है जो पत्रकारिता से अछूता हो। आज हर विषय से जुड़ी पत्र पत्रिकाएं बाजार में उपलब्ध है। विशेषज्ञ जानकारी देने वाली पत्रिकाओं से लेकर जनसामान्य तक के लिए अपनी पंसद के हिसाब से पत्र पत्रिकाएं उपलब्ध हैं। यह जानना काफी रोचक है कि लगभग साढ़े तीन सदी में पत्रकारिता की विकास यात्रा ने इतनी लम्बी दूरी तय कर ली है कि आज प्रारम्भिक दौर की पत्र पत्रिकाएं किसी दूसरी दुनिया के लोगों का काम नजर आती हैं । कुछ सूचनाओं, कुछ किस्सों, कुछ गपों और कुछ जानकारियों के साथ शुरू पत्रकारिता आज विशेषज्ञता के चरम उत्कर्ष तक पहुंच चुकी है। इस यात्रा में तकनीक के विकास का भी बेहद अहम रोल है मगर असल योगदान पत्रकारिता को दिशा देने वाले पत्रकारों का हैं, जिन्होने तमाम व्यक्तिगत कष्ट झेलते हुए भी पत्रकारिता के आदर्शो की स्थापना की, उसके मूल्यों को जीवित बनाए रखा।

आधुनिक विश्व में तमाम जन क्रान्तियों में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा। चाहे अमेरिका की आजादी की लड़ाई हो या भारत का स्वाधीनता संग्राम, अफ्रीका में जातीय स्वतंत्रता का मोर्चा हो या एशियाई देशों के आंतरिक मसले, हर जगह पत्रकारिता ने राष्ट्रीयता से उपर उठकर वैश्विक दृष्टिकोण को सामने रखा और जन अभिव्यक्ति का साथ दिया।

कुछ सूचनाओं, कुछ किस्सों, कुछ गपों और कुछ जानकारियों के साथ शुरू पत्रकारिता आज विशेषज्ञता के चरम उत्कर्ष तक पहुंच चुकी है। इस यात्रा में तकनीक के विकास का भी बेहद अहम रोल है मगर असल योगदान पत्रकारिता को दिशा देने वाले पत्रकारों का हैं, जिन्होने तमाम व्यक्तिगत कष्ट झेलते हुए भी पत्रकारिता के आदर्शो की स्थापना की, उसके मूल्यों को जीवित बनाएं रखा।

एक दौर था जब यह माना जाता था कि पत्रकारिता वास्तव में एक चुनौती है, जिसके आवश्यक तत्व हैं–उत्तरदायित्व, अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना, सभी दबावों से परे रहना, सत्य प्रकट करना, निष्पक्षता और समान एवं सभ्य व्यवहार। आज के दौर में बाजारीकरण के दबाव के चलते पत्रकारिता के इन तत्वों में कुछ बदलाव जरूर हो गया है लेकिन अभी भी यह माना जाता है कि पत्रकारिता एक पेशा नहीं बल्कि एक जीवन शैली है और इस राह पर चलने वाले की रीढ़ मजबूत होनी जरूरी है।

पत्रकारिता यानी समाचार पत्रों को आज की स्थिति तक पहुंचने में बहुत से पड़ावों से गुजरना पड़ा है। वर्तमान की बात यदि हम छोड़ दें तो छापेखाने से समाचार पत्रों का सीधा सम्बंध है। लेखन के लिए कागज का निर्माण चीन में 105 ई0 में हुआ था। यद्यपि इससे पूर्व मिश्र में पेपीरस के उत्पादन का प्रमाण मिलता है। भारत में भोजपत्र और ताड़ पत्रों का प्रयोग लेखन के लिए किया जाता था। चीन में पांचवी या छठी शताब्दी में लकड़ी के ठप्पों से छपाई का कार्य आरम्भ हुआ। 11वी शताब्दी में पत्थर के ठप्पों का प्रयोग होने लगा। 1390 ई0 में कोरिया में धातु के टाइप का प्रयोग करके पहली पुस्तक छापी गई थी। इसके बाद चीन के माध्यम से यह कला यूरोप पहुंची। सन् 1400 ई. में मेनज नगर में जन्मे जोहान गुटेनबर्ग ने टाईप (अक्षरों का टाइप फेस) तैयार किया और 1445 में पहली बार इस टाईप से पुस्तक छपी। 1458 में इटली के मैसोफिनी ग्वेरा ने तांबे पर खुदाई करके छपाई का काम आरम्भ किया। 1477 ई0 में इंग्लैंड में विलियम कैक्सटन ने अपने छापेखाने से पुस्तकें छापनी आरम्भ की। इंग्लैण्ड में सन् 1561में 'न्यूज आउट ऑफ केंट' नामक एक पृष्ठ का पत्र और 1575 ई0 में 'न्यू न्यूज' का प्रकाशन हुआ माना जाता है। 1620 में हालेंड के एमस्टर्डम से नियमित निकलने वाला अंग्रेजी पत्र प्रकाशित हुआ।

अमेरीका में पहला पत्र 'पब्लिक अकरेंसेस बोथ फारेन एण्ड डोमेस्टिक' नाम से प्रकाशित हुआ। 1609 में असवार्ग से जर्मन भाषा में 'अविश' और 'जीटुंग' और स्टासवर्ग से 'रिलेशन' नामक पत्र प्रकाशित हुए। 1776 में प्राग से एलोयस सेने फेल्डर ने छपाई की एक नई प्रणाली लिथोग्राफी प्रारम्भ की।

स्वीडन में पहला पत्र 'और्डिनरी पोस्ट टिजडेंटर' नाम से 1665 में प्रकाशित हुआ। चैकोस्लोवाकिया में जर्मन प्रकाशक जे0 अर्नाल्ट ने जर्मन भाषा में 1672 में एक पत्र प्रकाशित किया। चैक भाषा का प्रथम समाचार पत्र 1719 में कारेल फैटीसेक रोजनमूलर ने 'चेस्की पोस्टीलियन नेवोलिजिट्टू नोविनी चेस्के' नाम से प्रकाशित किया।

लंदन के 'दि टाइम्स' पत्र की स्थापना 1785 में हुई। 1881 में 'गार्जियन' की शुरूआत हुई, जो 'मैनचेस्टर गार्जियन' के नाम से विख्यात था 'डेली टेलीग्राफ' की 1855 में, 'ईवनिंग न्यूज; 1881 में, 'फाइनेंशियल टाइम्स' 1888 में, 'डेली मेल' 1896 में, 'डेली एक्सप्रेस' 1900 में, 'डेली मिरर' 1903 में शुरू हुए। रविवारीय पत्रों में 'आब्जर्वर' 1791 में, 'न्यूज ऑफ दि वर्ड' 1853 में, 'संडे टाइम्स' 1822 में, 'संडे पीपल' 1881 में शुरू हुए। पत्रकारिता के एक रूप को रोमन गणराज्य के जन्म के साथ विकसित हुआ माना जा सकता है।

रोमन साम्राज्य में संवाद लेखकों की व्यवस्था के प्रमाण मिलते हैं। ईसा से पांचवीं शताब्दी पूर्व ये संवाद लेखक हाथ में लिख कर समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाया करते थे। इसके उपरांत जूलियस सीजर ने 60 ई. पू. 'एक्टा डोएना' नाम से दैनिक बुलेटिन निकाला जो राज्य की जरूरी सूचनाओं का एक हस्तलिखित पोस्टर होता था। भारतीय इतिहास में अशोक ने सुदृढ़ शासन व्यवस्था को कायम रखने के लिए विशेष प्रयत्न किए। राजकार्य के कुशल संचालन के लिए उपयोगी सूचनायें विभिन्न स्रोतों से प्राप्त करने हेतु व्यवस्था की थी साथ ही शिला लेखों की परम्परा ने भी इसे आगे बढ़ाया। आज से करीब 1350 वर्ष पूर्व चीन में विश्व का पहला पत्र 'तिंचाओं' शुरू हुआ था। यह हस्तलिखित पत्र था। विश्व का सबसे पुराना नियमित समाचार पत्र स्वीडन का 'पोस्ट ओच इनरिक्स ट्रिडनिंगर' था जिसे रायल स्वीडिश अकादमी ने 1644 में छापना शुरू किया था। विश्व का सबसे पुराना व्यावसायिक समाचार पत्र 8 जनवरी 1658 को हालेंड में 'बीकेलिक कूरंत बात यूरोप' नाम से शुरू हुआ था। आज इसका नाम 'हार्लेक्स दोगब्लेडे हारलमेशे कूरंत' है। छापेखाने के आविष्कार के बाद प्रारम्भिक मुद्रक एक कागज पर समाचार छाप कर फेरी वालों को मुफ्त में दे देते थे। विश्व का पहला दैनिक समाचार पत्र 'मार्निंग पोस्ट' था, जो 1772 में लंदन से प्रकाशित होना शुरू हुआ था। इसके कुछ ही दिनों बाद लन्दन से ही 'टाइम्स' नामक समाचार पत्र प्रकाशित होना शुरू हुआ।

सोलहवी और सत्रहवीं शताब्दी में फ्रांस में 'सोलोन' और ब्रिटेन में काफी हाउस इस बात के लिए लोकप्रिय हो गए थे कि वहां लेखक व बुद्धिजीवी एकत्र होते थे और समाचारों का आदान–प्रदान करते थे। हमारे देश में भी प्राचीन काल से ही लोग गांवों की चौपालों में बैठ कर समाचारों, विचारों का आदान–प्रदान किया करते थे। आज भी कमोवेश यह क्रम जारी है।

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना के साथ ही संवाद सेवा के युग का आरम्भ हुआ। मुगलों ने संचार सेवाओं के लिए सूचनाधिकारियों की नियुक्ति की। औरंगजेब (1658–1707) ने शासकीय व्यवस्था को चौकस रखने के लिए सूचनाओं के आदान–प्रदान का प्रबंध किया। संवाद लेखकों की वाकियानवीस व खुफियानवीस के तौर पर नियुक्ति की। 18वीं शदी के पहले चरण में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भी इन संवाद लेखकों की सेवायें हासिल की। हमारे देश में पत्रकारिता अंग्रेजों ने शुरू की। जेम्स आगस्टस हिकी और विलियम ड्यूएन जैसे पत्रकारों ने तत्कालीन कम्पनी सरकार की काली करतूतों का भंडाफोड़ किया। वारेन हेस्टिंग्ज (1772–1785) जैसे तानाशाहों को मजबूर कर दिया कि वह या तो उन्हें जेल भिजवा दे या हिन्दुस्तान से निर्वासित कर दे। यद्यपि ये झगड़े उनके आपसी थे, जनहित से उनका कोई सरोकार नहीं था, फिर भी पत्रकारिता में निर्भीकता के उदाहरण समझे जाते हैं।

भारत में तत्कालीन अंग्रेज शासकों का भारतीय पत्रकारों और पत्रकारिता के प्रति क्या दृष्टिकोण था, यह टॉमस मुनरो (19वी शताब्दी के तीसरे दशक में मद्रास के गवर्नर) के इस कथन से स्पष्ट होता है– ''हमने हिन्दुस्तान में अंग्रेजों के साम्राज्य की नीव इस नीति पर रखी है कि हमने अपनी प्रजा को न तो कभी प्रेस की आजादी दी है और न देंगे। यदि यहां की पूरी जनता हमारी तरह अंग्रेज होती तो मैं प्रेस की स्वतंत्रता की मांग स्वीकार कर सकता था, लेकिन ये तो

हमारे उपनिवेश के रहने वाले यहां के नेटिव हैं। इनको प्रेस की आजादी देना हमारे लिए खतरनाक है। दोनों एक साथ नहीं चल सकते हैं।''

हिन्दुस्तानी, प्रेस यानी छपाई की मशीन का प्रयोग सीख कर कहीं अखबार छापना शुरू न कर दें और ब्रिटिश साम्राज्य को एक नया खतरा पैदा न हो जाए, अंग्रेजी सरकार इस बात से डरती थी। कहा जाता है कि हैदराबाद निजाम के दरबार में नियुक्त ईस्ट इंडिया कम्पनी के एजेंट ने निजाम को मुद्रित पत्र का एक नमूना उपहार में दिया, तो कम्पनी सरकार ने उस एजेंट की भर्त्सना की कि ऐसी खतरनाक मशीन निजाम को क्यों दिखाई। नतीजा यह हुआ कि एजेंट ने अपने कारिन्दों से उस मशीन को तुड़वाकर फिंकवा दिया।

यूरोप में पुनर्जागरण तथा अमेरिका में लोकतंत्र की स्थापना, फ्रांस की क्रांति के बाद शुरू हुई औद्योगिक क्रांति से लोगों का जन जीवन धीरे–धीरे पेचीदा व जटिल होता गया। पूंजीवाद के विकास के साथ साम्यवाद ने भी पैर पसारने शुरू कर दिए। विज्ञान ने एक साथ ढेर सारी तरक्की कर ली और संचार के साधन विकसित हो गए। इन परिवर्तनों से पत्रकारिता भी प्रभावित हुई। सबसे पहले प्रभाव यह हुआ कि परिवर्तनों तथा शिक्षा के फैलाव से लोगों में जागृति आने लगी और वे दुनिया में तेजी से आ रहे बदलाव तथा घटित हो रही घटनाओं को जल्द से जल्द जानने के लिए उत्सुक रहने लगे। इस प्रवृत्ति के कारण जहां एक ओर समाचार पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन में वृद्धि हुई, वहीं उनकी प्रसार संख्या भी बढ़ी। प्रसार संख्या बढ़ने के साथ–साथ अब पत्र–पत्रिकाओं में खेल जगत, अर्थजगत, शिक्षा, विज्ञान, फोटोग्राफी, फिल्म उद्योग, साहित्य सृजन आदि क्षेत्रों को भी पत्रकारिता ने अपना अभिन्न अंग बना लिया। अब पत्रकारिता को चलाना मात्र मिशन नहीं रह गया, बल्कि प्रसार संख्या बढ़ने, नये–नये विषयों के समावेश, डाक के द्वारा पत्र–पत्रिकाओं को दूरस्थ स्थानों को भेजे जाने आदि ने पत्रकारिता को व्यवसाय बना दिया। वर्तमान में यह व्यवसाय खूब–फल–फूल रहा है। नये–नये औद्योगिक और व्यापारिक संस्थान उभरने लगे हैं। अब समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में अपने उत्पादन को विश्व बाजार में पनपाने के लिए विज्ञापनों की भरमार देखने को मिलती है। दूल्हा चाहिए, दुल्हन चाहिए, शिक्षाविद् चाहिए, वैज्ञानिक चाहिए आदि के इस कम्प्यूटराइज्ड युग ने पत्र–पत्रिकाओं की पृष्ठ संख्या बढ़ाने में मदद दी है और इस सब का परिणाम है बड़े–बड़े व्यवसायियों द्वारा उच्चकोटि के लेखकों व सम्पादकों को खरीदा जाना ताकि पत्र–पत्रिकाएं सम्पादक की नीति के अनुसार नहीं, मालिक की नीति के अनुसार प्रकाशित हों।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न –1 विश्व में पत्रकारिता का श्रीगणेश सर्वप्रथम कहां हुआ ?

प्रश्न –2 अंग्रेजी के प्रसिद्ध साहित्यकार एडीसन ने पत्रकारिता के बारे में क्या कहा था ?

प्रश्न –3 मध्यकालीन भारत में राजा और नवाब अपने राज्यों से खबरें एकत्रित करने के लिए क्या करते थे ?

प्रश्न 4– पोस्टमैन कब और कहां से प्रकाशित हुआ था?

2.4 विदेशों में पत्रकारिता :

भारत में पत्रकारिता प्रारम्भ होने के पूर्व विश्व के कुछ देशों में पत्रकारिता का प्रारम्भ हो चुका था। आज विश्वभर में पत्रकारिता का समाज में महत्वपूर्ण स्थान हो गया है। कुछ देश ऐसे हैं जहां पत्रकारिता पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है। वहां अभिव्यक्ति की पूर्ण आजादी है। दूसरी ओर ऐसे भी देश हैं जहां प्रेस पर सरकार का कठोर नियंत्रण है। वर्तमान में दैनिक पत्रकारिता के आंकड़े देखे जाएं तो विदित होगा कि अमेरिका में इसका प्रसार सात करोड़ से अधिक है तो जापान में यह संख्या 4.5 करोड़ है।

यूरोप के व्यक्ति विश्व भर के दैनिक समाचार पत्रों का चालीस प्रतिशत खरीदते हैं तथा उत्तरी अमेरिका के 25 प्रतिशत। अफ्रीका, एशिया तथा दक्षिण अमेरिका में यह प्रतिशत 35 है। उल्लेखनीय है कि विश्व जन–संख्या का सत्तर प्रतिशत यहां निवास करता है। यूनेस्को ने यह सुझाव दिया है कि प्रति 100 व्यक्तियों पर दैनिक पत्रों की न्यूनतम दस प्रतियां होनी चाहिए।

तकनीकी विकास के साथ सामाचार पत्र जगत में भी नवीन क्रान्ति का सूत्रपात हुआ है। यहां विश्व के कुछ प्रमुख राष्ट्रों की पत्रकारिता पर संक्षेप में चर्चा की जा रही है।

1. ब्रिटेन की पत्रकारिता : 'डेली हैराल्ड' के पूर्व सम्पादक फ्रांसिस विलियम ने लिखा है कि इंग्लैंड का व्यक्ति समाचार पत्रों को पढ़ने के लिए जितना लालायित रहता है उतना विश्व का अन्य कोई व्यक्ति नहीं। इंग्लैण्ड के प्रायः प्रत्येक वयस्क शिक्षित कम से कम एक राष्ट्रीय समाचार पत्र अवश्य पढ़ता है। पत्रकारिता की दृष्टि से यह देश अत्यन्त विकसित है। इंग्लैण्ड में पत्रकारिता का इतिहास चार शताब्दियों से भी अधिक पुराना है।

ब्रिटेन में पत्रकारिता का प्रारम्भिक स्वरूप 16 वीं शताब्दी में इस दिशा में किये गये प्रयत्नों में स्पष्ट देखा जा सकता है। शुरू में 'न्यूज लेटर' के रूप में इधर–उधर की बातों व समाचारों को संग्रहित कर विभिन्न स्थानो पर भेजा जाता था। ये न्यूजलेटर अधिकांशतः हाथ से लिखे जाते थे। प्रारम्भिक प्रयत्नों की दृष्टि से सन् 1561 में 'न्यूज आउट ऑफ केंट' 1675 में अनियतकालीन पत्र 'न्यू न्यूज' आदि प्रमुख है। सन् 1621 में एक–एक तथा दो–दो पृष्ठों के दो समाचार पत्रों के प्रकाशन के उल्लेख मिलते हैं। सन् 1621 में आर्चर ने 'डच न्यूज शीट' का प्रकाशन प्रारम्भ किया और उसे इस 'दुस्साहस' के लिए दण्डित भी किया गया। 23 मई, सन् 1622 को बोर्ने व आर्चर ने 'वीकली न्यूज' का प्रकाशन किया।

वर्तमान समय में ब्रिटेन के प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों में डेली एक्सप्रेस, डेली मेल, डेली मिरर, डेली स्कैच, डेली टेलीग्राफ, डेली वर्कर, न्यूज क्रानिकल, द टाइम्स, फाइनेन्शियल टाइम्स, मोर्निंग एडवर्टाइजर, द गार्जियन आदि हैं।

इनमें अधिकांश राष्ट्रीय पत्रों की प्रसार संख्या तीस से चालीस लाख तक की है। सांध्यकालीन पत्रों में ईवनिंग न्यूज, स्टार तथा ईवनिंग स्टेण्डर्ड प्रमुख हैं। रविवारीय पत्रों में द आब्जरवर, द सण्डे टेलीग्राफ, सण्डे टेलीग्राफ, सण्डे एक्सप्रेस, न्यूज ऑफ द वर्ल्ड तथा पीपुल आदि प्रमुख हैं।

2. अमेरिका में पत्रकारिता : अमेरिका में पत्रकारिता का श्रीगणेश करने का श्रेय एक अंग्रेज व्यक्ति बैंजामिन हैरिस को जाता है। हैरिस लन्दन का प्रमुख पुस्तक व्यवसायी तथा प्रकाशक था। हैरिस लन्दन छोड़कर सन् 1686 में अमेरिका के प्रमुख नगर बोस्टन में आ गया था। यहां से सन् 1690 में उसने एक पत्र का प्रकाशन किया। इस पत्र का नाम था– 'पब्लिक अकरन्सेस बोथ फारेन एण्ड डोमेस्टिक'।

24 अप्रेल, 1704 को विधिवत रूप में पहले अमेरिकी समाचार पत्र 'बोस्टन न्यूज लेटर' का प्रकाशन हुआ। यह प्रकाशन जॉन कैपेबेल के द्वारा हुआ। 'बोस्टन न्यूज लेटर' का आकार हैरिस के पत्र से थोड़ा सा बड़ा था। यह पत्र दोनों ओर छपता था। मगर कैपेबेल को इस प्रकाशन में पर्याप्त जन सहयोग नहीं मिला और यह जल्दी बंद हो गया।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में पुलिट्जर और हर्स्ट का उदय अमेरिकी पत्रकारिता में विशेष महत्व रखते हैं। पुलिट्जर अमेरिका में 'नई पत्रकारिता' के जनक माने जाते हैं।

कालांतर में अमेरिका में पत्र प्रकाशन के व्यवसाय में तेजी से वृद्धि होने लगी और अमरीकी पत्र राष्ट्रीय समस्याओं और राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप जनचेतना विकसित करने की ओर उन्मुख हुए। इससे पुलिट्जर का कारोबार तेजी से बढ़ने लगा और पुलिट्जर का 'संडेवर्ल्ड' अमेरिका का सर्वाधिक लोकप्रिय अखबार बन गया। 1917 में पुलिट्जर के नाम पर पुलिट्जर पुरस्कार स्थापित किया गया जो आज पत्रकारिता और कथा–साहित्य का सर्वोच्च सम्मान माना जाता है।

अमेरिका के वर्तमान प्रमुख पत्रों के नाम हैं– न्यूयार्क टाइम्स, न्यूयार्क पोस्ट, वाशिंगटन पोस्ट, डेली न्यूज, क्रिश्चियन साइन्स मानीटर आदि।

स्वतंत्रता की इस व्यापकता के साथ अमेरिका में भी पत्रकारिता को पांच जिम्मेदारियों बांटी गयी हैं–

1. घटनाओं का सच्चा एवं बोधगम्य विवरण देना।
2. आलोचना एवं विचारों के आदान–प्रदान का माध्यम बनाना ।
3. समाज के विभिन्न वर्गों के बारे में सही और उचित जानकारी देना।
4. समाज की मान्यताओं और लक्ष्यों को प्रस्तुत करना।
5. पाठकों को बौद्धिक एवं तर्कसंगत खुराक प्रदान करना।

3. फ्रांस में पत्रकारिता : फ्रांस के प्रथम नियमित पत्र का प्रकाशन मई, सन् 1631 में थियोफ्रास्टे रैंदो द्वारा प्रकाशित किया गया। लॉ गजट नामक इस पत्र में विभिन्न देशों के समाचार प्रकाशित किये जाते थे। इसके बाद लाइसेन्स लिए बिना समाचार पत्रों के प्रकाशन को रोक दिया गया। पत्र प्रकाशन के लिए लाइसेन्स सिर्फ साहित्यिक अथवा वैज्ञानिक विषयक पत्रों को ही दिये जाते। इस प्रकार राजनैतिक पत्रकारिता के विकास को नियन्त्रित करने का प्रयास किया गया।

फ्रांस में सन् 1789 की क्रान्ति के समय घोषित मानवीय अधिकारों के घोषणा–पत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को भी सम्मिलित किया गया। इस कारण पत्रों के प्रकाशन में तेजी से वृद्धि होने लगी। सन् 1789 से 1800 के मध्य 1,350 पत्रों का प्रकाशन हुआ। शासन ने पुनः सेन्सरशिप के द्वारा समाचार–पत्रों को नियन्त्रित करने का प्रयास किया। सन् 1815 में लुईस अठारहवें ने प्रेस को स्वतन्त्रता दी। इसके उत्तराधिकारी लुईस फिलिप ने भी प्रेस स्वातन्त्र्य को मान्यता दी। लेकिन इसके बावजूद विपक्षी समाचार–पत्रों पर कई मुकदमे चले तथा स्वतंत्रता को प्रतिबन्धित करने वाले अध्यादेश भी जारी किये गये। सन् 1881 के प्रेस एक्ट के प्रावधानों द्वारा फ्रांस में प्रेस को काफी स्वतन्त्रता दी गयी। इस एक्ट के अनेक प्रावधान आज भी लागू हैं।

फ्रांस में 1958 के संविधान द्वारा औपचारिक रूप से प्रेस को स्वतन्त्रता दी गयी। इसकी प्रस्तावना में 1789 के मानवीय अधिकारों के घोषणा–पत्र का सन्दर्भ दिया गया है। इसकी एक धारा में कहा गया है कि विचार एवं चिन्तन का स्वतन्त्र संप्रेषण व्यक्ति का महत्वपूर्ण अधिकार है। प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र बोल सकता है, लिख सकता है तथा सूचना दे सकता है, इसके अतिरिक्त स्वतन्त्रता के दुरूपयोग के लिए कानूनी रूप से वह स्वयं जिम्मेदार होगा।

फ्रांस के कुछ प्रमुख प्रकाशन गृह और उनके पत्रों का विवरण इस प्रकार है–

1. फ्रांस एडीशन्स एट पब्लिकेशन ग्रुप– इस पत्र समूह के नियन्त्रण में ये पत्र हैं –फ्रांस सोइर, पेरिस प्रेस, लॉ जर्नल ड्यू डिमेन्शे, फ्रांस–डिमेन्शे, इल्ले इत्यादि।
2. अमारी ग्रुप– इस समूह के पत्रों में– ले पार्शियन लिबरे, केरे फोर, पाइण्ट ड्यू व्यू इमेजेस् ड्यू मंडे आदि हैं।
3. प्रोवोस्ट समूह– पैरिस –मेच, मेरी क्लेयर इत्यादि।
4. डेलडूका ग्रुप – नोस ड्यूडक्स इंटीमिटी, लॉ आई एन फ्लेयर आदि।

इनके अतिरिक्त विशेष विषयों पर आधारित समाचार–पत्रों का भी प्रकाशन फ्रांस में हो रहा है। इनमे 'लास इकोस' आर्थिक विषयों का, 'लॉ नो व्यू जर्नल' आर्थिक तथा स्टॉक एक्सचेंज का तथा –ल इक्व' खेलकूद विषयों के प्रमुख पत्र है।

एजेन्सी फ्रांस प्रेस यानी एफपी फ्रांस की प्रमुख संवाद समिति है। इस समिति का विश्वव्यापी नेटवर्क है।

4. चीन में पत्रकारिता : चीन में भी पत्रकारिता पर सरकार का प्रत्यक्ष तथा पूर्ण नियन्त्रण है। चीन के साम्यवादी दल का मुख पत्र 'पीपुल्स डेली' है। 'पीपुल्स डेली' की प्रसार संख्या चीन में सर्वाधिक है। समाचार संग्रह के कार्य के लिए वहां की प्रमुख समाचार समिति 'नव चीन' समाचार समिति हैं। 'लिबरेशन आर्मी डेली' तथा 'जिन्ह मिन्ह पाओ' भी चीन के अन्य प्रमुख दैनिक हैं। 1949 में साम्यवादी शासन की स्थापना के बाद विरोधी समाचार पत्रों को समाप्त कर दिया गया। अब भी चीनी समाचार जगत कड़े सरकारी नियंत्रण में है और पत्रकारिता पर कई तरह के नियंत्रण लागू हैं।

5. आस्ट्रेलिया में पत्रकारिता : आस्ट्रेलिया में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को महत्वपूर्ण स्थापित मूल्य के रूप में स्वीकार किया गया है। युद्ध तथा आपातकाल की अवधि में ही प्रेस को नियन्त्रित करने तथा सेन्सरशिप लागू करने की व्यवस्था इस देश में की गई है। समाचार पत्र प्रकाशन में सरकार किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करती है।

आस्ट्रेलिया में 600 से अधिक प्रमुख समाचार पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। यहां प्रति हजार व्यक्तियों पर 500 से अधिक समाचार पत्रों की प्रतियों का अनुपात है। आस्ट्रेलिया के प्रमुख पत्र हैं– सन न्यूज–पिक्टोरियल मेलबर्न, हेरल्ड मेलबर्न, डेली टेलीग्राफ, सिडनी मार्निंग हेराल्ड, द सन, डेली मिरर आदि।

आस्ट्रेलिया में समाचार पत्रों का विधिवत प्रकाशन सन 1803 से शुरू हुआ। इसी वर्ष एक सरकारी प्रिन्टर ने चार पृष्ठीय सिडनी गजट का प्रकाशन किया था। 1824 में द आस्ट्रेलियन के रूप में पहले स्वतन्त्र समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। यह पत्र 26 वर्ष तक जीवित रहा। आस्ट्रेलिया में तीन प्रमुख समाचार पत्र प्रकाशन समूह हैं जो लगभग 17 दैनिक पत्रों का प्रकाशन राजधानियों से कर रहे हैं। प्रान्तीय पत्रों में न्यूकसेल से प्रकाशित न्यूकसेल मार्निंग हेराल्ड नामक पत्र का प्रसार सबसे अधिक है। आस्ट्रेलियन एसोसियेटेड प्रेस आस्ट्रेलिया की प्रमुख संवाद समिति है।

6. जर्मनी में पत्रकारिता : जर्मनी में पत्रकारिता का प्रारम्भ सत्रहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हुआ। सरकारी नियन्त्रणों के कारण जर्मनी में पत्रकारिता के प्रारम्भिक प्रयासों को विशेष प्रोत्साहन नहीं मिल सका। जर्मनी के प्रारम्भिक पत्रों में जीटुंग था।

सन् 1729 में फ्रेडरिक विलियम प्रथम ने विज्ञापन को राजकीय एकाधिकार में करके विज्ञापन–समाचार–पत्र के प्रकाशन का आदेश दिया। ये पत्र 'इंटेलिजुंआंग' कहलाते थे। कालान्तर में ये 'इंटेलिजुंआंग' विज्ञापन के साथ–साथ सरकारी तथा कानूनी घोषणाओं के माध्यम भी बने।

19 वीं शताब्दी में राजनैतिक, मनोरंजक तथा अन्य सूचना प्रधान समाचार पत्रों के प्रकाशन में तेजी आई। इस शताब्दी के प्रारम्भिक चरण में कुछ पत्रिकाएं प्रकाशित हुई। ये सेन्सर के दायरे से बाहर थी क्योंकि इन्हें 'पुस्तकों' की श्रेणी में माना गया। धीरे–धीरे अन्य विषयों की पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन का सिलसिला प्रारम्भ हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मनी में प्रेस का तेजी से विकास हुआ। वहां सबसे बड़ा समाचार–पत्र एक्ल जीसर स्प्रिगंर है। बिल्ड–जीटुंग जर्मनी का सर्वाधिक प्रसार वाला पत्र है। जर्मनी में अधिकांश समाचार पत्र प्रातः कालीन हैं। बिल्डेम सेन्ट्रग तथा वेल्ट एम सोनट्ग रविवार को विशेष रविवारीय संस्करण प्रकाशित करते हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– स्वीडन का पहला पत्र कौन था और वह कब शुरू हुआ?
प्रश्न 2– अमेरिका के पहले पत्र का नाम क्या था?
प्रश्न 3– लॉ गजट किस देश का पहला पत्र था?
प्रश्न 4– यूरोप में विश्व के दैनिक समाचार पत्रों का कितना प्रतिशत भाग खरीदा जाता है?

2.5 आजादी से पूर्व विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता :

भारत में हिन्दी पत्रकारिता जिस प्रकार विभिन्न चरणों में विकसित हुई, उसी तरह विदेशों में भी प्रवासी भारतीयों द्वारा इसके विकास के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए।

विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता का जन्म सन् 1883 में माना जाता है। कहा जाता है कि लन्दन से 'हिन्दुस्तान' नामक त्रैमासिक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ था। इसके संस्थापक राजा रामपाल सिंह थे। यह त्रिभाषी रूप में प्रकाशित होता था और इसमें हिन्दी के साथ उर्दू तथा अंग्रेजी का अंश भी रहता था। दो वर्ष तक वहां से प्रकाशित होने के बाद 1885 में यह पत्र कालाकांकर (अवध) से प्रकाशित होना शुरू हुआ। 1887 में इसका स्वरूप दैनिक हो गया। अमृतलाल चक्रवर्ती, शशिभूषण चक्रवर्ती, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, गोपाल राम गहमरी, लालबहादुर, गुलाब चन्द चौबे, शीतल प्रसाद उपाध्याय, रामप्रसाद सिंह तथा शिवनारायण सिंह इसके सम्पादक रहे।

1857 के गदर का प्रभाव आप्रवासी भारतीयों पर भी पड़ा। ओरोगन राज्य के पोर्टलैंड में भारतीयों ने 'हिन्दी एसोसिएशन' नाम की एक संस्था बनाई। प्रसिद्ध क्रान्तिकारी लाला हरदयाल ने इस संकल्प की पहल की। 1857 की क्रांति को जीवित रखने के लिए अमेरीका से विभिन्न भारतीय भाषाओं का एक अखबार 'गदर' नाम से 1 नवम्बर 1913 में प्रकाशित हुआ। इस पत्र ने ब्रिटिश राज्य के शोषण का कच्चा चिट्ठा खोलते हुए सशस्त्र क्रान्ति का आह्वान किया। 'गदर' के प्रकाशन से पूर्व अमेरीका से ही एक छात्र तारकनाथ दास ने 1908 में 'फ्री हिन्दुस्तान', 1909 में गुरूदत्त कुमार ने पंजाबी में 'स्वदेश सेवक' नामक पत्रों का प्रकाशन किया।

कालान्तर में लन्दन से शान्ता सोनी द्वारा सम्पादित 'नवीन' उल्लेखनीय है। एस.एन. गौरीसरीया के सम्पादन में 'सन्मार्ग' का प्रकाशन हुआ। पेंडर्स ने 'केसरी', सुकुमार मजूमदार ने 'प्रवासी', जगदीश कौशल ने 'अमरदीप' दैनिक आज के लन्दन स्थित प्रतिनिधि धर्मेन्द्र गौतम ने 'प्रवासिनी' का प्रकाशन किया। 1972 में 'सोवियत संघ' नाम से एक हिन्दी पत्रिका मास्को से प्रकाशित हुई।

मारीशस से प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं में 'हिन्दुस्तानी', 'जनता', 'कांग्रेस', 'हिन्दू धर्म', 'दर्पण', 'इंडियन टाइम्स', 'अनुराग', 'महाशिवरात्रि', 'आभा' आदि कई पत्र प्रमुख रहे हैं। मारीशस से प्रकाशित हिन्दी का पहला पत्र 'हिन्दुस्तानी' था। इसका प्रकाशन 1909 में हुआ इसके प्रथम सम्पादक मणिलाल थे। सूरीनाम से प्रकाशित होने वाले हिन्दी पत्रों में दैनिक 'कोहिनूर', साप्ताहिक 'प्रकाश', 'विकास', 'शान्तिदूत' प्रमुख हैं।

नेटाल (दक्षिण आफ्रिका) से 1910 में 'अमृतसिन्धु' मासिक भवानी दयाल के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। डरबन शहर से 1916 में 'धर्मवीर' साप्ताहिक का प्रकाशन हुआ। डरबन से ही 'हिन्दी' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई। 1950 में त्रिनिनाद से शिवप्रसाद के सम्पादन में 'आर्यसंदेश' का प्रकाशन हुआ। 1904 में डरबन से ही 'इंडियन ओपीनियन' मदनजीत के सम्पादन

में प्रकाशित हुआ। यह पत्र भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता रहा।

बर्मा से 'प्रखर प्रकाश', 'जागृति', 'ब्रह्म भूमि' का प्रकाशन हुआ था।

अविभाजित भारत में ढाका से 1871 में 'विहार बंधु' 1880 में 'धर्मनीति', 1888 में 'विद्या धर्म दीपिका', 1904 में 'नारद', 1905 में 'नागरी हितैषी', 1911 में 'तत्वदर्शन', 1939 में 'मेल मिलाप' प्रमुख रहे हैं। इसी क्रम में जैसोर से 'अमृत बाजार पत्रिका' के संस्करण का प्रकाशन उल्लेखनीय है।

अविभाजित भारत में लाहौर किसी समय हिन्दी, संस्कृत और पत्रकारिता का गढ़ रहा, यहां से 'भारतीय', 'विश्वबंधु', 'आर्य वन्धु', 'आर्य', 'आर्य जगत', 'शांति', 'सुधकर', 'क्षत्रिय', 'मित्र विलास', 'बूढ़ी दर्पण', 'आकाशवाणी' आदि पत्र प्रकाशित हुए। 1914 में श्री सन्तराम के सम्पादन में 'आर्यप्रभा' का प्रकाशन हुआ। 1914 में ही लाहौर से एक पत्रिका श्री सन्तराम के सम्पादन में 'उषा' का प्रकाशन हुआ। 1927 में 'हिन्दी मिलाप' का प्रकाशन शुरू हुआ। 23 सितम्बर 1949 में 'मिलाप' पुनः जालंधर से शुरू हुआ। इनके अलावा आज भी कई लोग विदेशों में रह कर हिन्दी पत्रों का प्रकाशन कर रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता का जन्म कब हुआ?

प्रश्न 2– अमेरिका में गदर का प्रकाशन कब शुरू हुआ?

प्रश्न 3– अमृत सिन्धु कहां से प्रकाशित हुआ था?

प्रश्न 4– वर्मा (म्यांमार) के हिन्दी अखबार कौन–कौन थे?

2.6 सारांश :

मानव की विकास यात्रा में पत्रकारिता की एक अहम् भूमिका है आज इसी का नतीजा है कि विश्व एक गांव के रूप में नजर आता है। प्राचीन से लेकर वर्तमान विश्व मे तमाम जनक्रांतियों में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। चाहे अमेरिका की आजादी की लड़ाई हो या भारत का स्वाधीनता संग्राम, अफ्रीका में जातीय स्वतंत्रता का मोर्चा हो या एशियाई देशों के आंतरिक मसले, हर जगह पत्रकारिता ने राष्ट्रीयता से उपर उठकर वैश्विक दृष्टिकोण को सामने रखा और जन अभिव्यक्ति का साथ दिया। प्रारम्भिक पत्रकारिता जहां स्थानीयता के प्रभाव में थी, स्थानीय मुद्दे उस पर हावी थे लेकिन जैसे –जैसे सूचना और समाचार उपलब्ध होने का तंत्र विकसित होता चला गया वैसे–वैसे विश्व पत्रकारिता का आयाम भी राष्ट्रीय, बहुराष्ट्रीय और वैश्विक होता चला गया। आज तो हर माइने में विश्व पत्रकारिता वैश्विक पत्रकारिता हो गयी है। अफगानिस्तान का युद्ध हो या अफ्रीका में हुई कोई विमान दुर्घटना, चीन की बाढ़ हो या रूस के जंगलों की आग, हर मुद्दा विश्व के हर जनसंचार माध्यम की पकड़ में होता है। हर कहीं उसे प्रकाशित–प्रसारित किया जा सकता है। पत्रकारिता के इसी वैश्वीकरण का परिणाम है कि आज ग्लोबल वार्मिंग प्रकृति एवं वन्य जीवन कुपोषण एवं भुखमरी, अशिक्षा, महिलाओं और बच्चों की

बदतर स्थिति जैसे तमाम मुद्दे दुनिया के हर देश की पत्रकारिता की चिन्ता के मुद्दे बन गये हैं। और इन अर्थों में पत्रकारिता ने दुनिया की दूरियां कम करने में बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पत्रकारिता की इस विकास यात्रा में तकनीकी विकास का भी बेहद अहम रोल है मगर असल योगदान पत्रकारिता को दिशा देने वाले पत्रकारों का हैं, जिन्होने तमाम व्यक्तिगत कष्ट झेलते हुए भी पत्रकारिता के आदर्शो की स्थापना की, उसके मूल्यों को जीवित बनाए रखा।

2.7 शब्दावली :

गुटेन बर्ग : गुटेन बर्ग जर्मनी का एक इसाई पादरी था जिसने सर्व प्रथम 1440 में जर्मनी में एक प्रेस स्थापित कर बाइबिल को मुद्रित किया था।

मुद्रण कला : लिखित रूप में पाठकों के लिए जो सूचना या जानकारी प्रस्तुत की जाती है उसे मुद्रण कला कहते हैं। पत्रकारिता की भाषा में इसे प्रिन्ट मीडिया भी कहा जाता है।

'पीपुल्स डेली' : चीन में भी पत्रकारिता पर सरकार का प्रत्यक्ष तथा पूर्ण नियन्त्रण है। चीन के साम्यवादी दल का मुख पत्र 'पीपुल्स डेली' है।

लॉ गजट : 'लॉ गजट' नाम का फ्रांस का प्रथम नियमित पत्र था जिसका प्रकाशन मई, सन् 1631 में थियोफ्रास्टे रैंदो द्वारा किया गया। इस पत्र में विभिन्न देशों के समाचार प्रकाशित किये जाते थे।

पुलिट्जर : पुलिट्जर को अमेरिका में नई पत्रकारिता का जनक माना जाता है। उनका जन्म 1847 में हंगरी में हुआ था। बाद में वे न्यूयार्क आ गए। पत्रकारिता में उल्लेखनीय सेवाओं के कारण 1917 में उनके नाम पर पुलिट्जर पुरस्कार शुरू किया गया जो अब पत्रकारिता और कथा साहित्य का एक प्रतिष्ठित पुरस्कार माना जाता है।

इंटेलिजुंआंग : जर्मनी के फेडरिक विलियम प्रथम ने विज्ञापन को राज्य के अधिकार में करके 1729 में विज्ञापन समाचार पत्रों का प्रकाशन शुरू कराया था। ये पत्र 'इंटेलिजुंआंग' कहलते थे। बाद में ये पत्र विज्ञापन के साथ–साथ सरकारी और कानूनी घोषणाओं के माध्यम भी बने।

हिन्दी एसोसिएशन : 1857 की भारतीय क्रांन्ति से प्रभावित होकर अमेरिका के ओरोजन राज्य के भारतीयों ने भारत के सवालों पर बातचीत के लिए एक संस्था बनाई थी, जिसका नाम हिंदी एसोसिएशन था। इसी संस्था की प्रेरणा से 1913 में अमेरिका से 'गदर' के नाम से विभिन्न भारतीय भाषाओं में एक अखबार भी प्रकाशित हुआ था।

2.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

उत्तर 2.3

उत्तर 1– विश्व में कागज और मुद्रण का आविष्कार सर्वप्रथम चीन में हुआ और फिर यह कला चीन से यूरोप में पहुंची। यह माना जाता है कि चीन में ही सबसे पहला समाचार पत्र निकला जिसका नाम पेकिंग गजट अथवा तिंचाओ था।

उत्तर 2– अंग्रेजी के महत्वपूर्ण साहित्यकार एडीसन ने पत्रकारिता के बारे में कहा था, कि 'पत्रकारिता से अधिक मनोरंजक, अधिक चुनौतीपूर्ण, अधिक रसमयी और अधिक जनहितकारी कोई दूसरी बात मुझे दिखाई नहीं देती।

उत्तर 3– मध्यकालीन में भारतीय राजा और नवाब अपने राज्य के प्रत्येक जनपद और नगर की खबरे एकतित्रत करने के लिए वाकियानवीस नियुक्त करते थे।

उत्तर 4– पोस्टमैन लन्दन से 21 सितम्बर, 1622 में प्रकाशित हुआ था।

उत्तर 2.4

उत्तर 1– स्वीडन का पहला पत्र आर्डिनरी पोस्ट टिजडेंटर के नाम से 1665 में प्रकाशित हुआ था।

उत्तर 2– अमेरिका के पहले पत्र का नाम 'पब्लिक अकरेसिस फारेन एण्ड डोमेस्टिक' था।

उत्तर 3– लॉ गजट फ्रांस का सर्वप्रथम प्रकाशित होने वाला पत्र था जो मई, सन् 1631 में थियोफ्रास्टे रैंदो द्वारा प्रकाशित किया गया था।

उत्तर 4– विश्वभर में दैनिक समाचार पत्रों का 40 फीसदी युरोप के लोगों द्वारा खरीदा जाता है।

उत्तर 2.5

उत्तर 1– विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता का जन्म 1883 में माना जाता है।

उत्तर 2– अमेरिका में 1 नवम्बर 1913 में गदर का प्रकाशन शुरू हुआ।

उत्तर 3– अमृत सिंन्धु मासिक 1910 नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) से प्रकाशित हुआ था।

उत्तर 4– म्यामांर (बर्मा) से प्रकाशित हिन्दी अखबार प्रखर प्रकाश, जागृति और ब्रह्म प्रकाश था।

2.9 संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. तिवारी, अर्जुन : आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणशी, 1994।
2. तिवारी, रामचंन्द्र : पत्रकारिता के विविध रूप, आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. निगम, कैलास : स्वाधीनता संग्राम मे पत्रकारो का योगदान, (हिन्दी पत्रकारिता पुस्तक)।
4. भानावत, संजीव : पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर, तृतीय संस्करण, 2000।
5. वाजपेयी, अम्बिका प्रसाद : समाचार पत्रों का इतिहास।
6. वार्ष्णेय, लक्ष्मी सागर : आधुनिक हिन्दी साहित्य की भूमिका।

7 वैदिक, वेद प्रताप : हिन्दी पत्रकारिता के 150 वर्ष,, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, 23 मई, 1976।

8. M. Chalapathi Rau : The press.

9. Emey, Edwin : The press & America .

2.10 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री :

1. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, डॉ0 संजीव भानावत, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर।

2. समाचार पत्रों का इतिहास, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी।

2.11 निबन्धात्मक प्रश्न :

प्रश्न–1 एडीसन ने पत्रकारिता के बारे में क्या कहा था विस्तार रूप से लिखिए?

प्रश्न–2 पत्रकारिता के आवश्यक तत्व क्या हैं? प्रत्येक को समझाइये।

प्रश्न–3 बिट्रेन की पत्रकारिता के बारे में आप क्या जानते हैं वर्णन किजिए?

प्रश्न–4 भारतीय पत्रकारिता एवं फ्रांस की पत्रकारिता किस तरह भिन्न हैं? वर्णन किजिए।

प्रश्न–5 आजादी से पूर्व विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता के बारे में आप क्या जानते हैं ? विस्तार पूर्वक लिखिए।

इकाई –03

भारतीय पत्रकारिता : हिन्दी पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य में

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 भारतीय पत्रकारिता : हिन्दी पत्रकारिता के सन्दर्भ में

3.4 उन्नीसवीं सदी में हिंदी पत्रकारिता

3.5 बंगभूमि और हिंदी पत्रकारिता

3.6 बीसवीं सदी के उत्तरार्ध की हिंदी पत्रकारिता

3.7 बीसवीं सदी की हिंदी पत्रकारिता

3.8 स्वातंत्रयोत्तर हिंदी पत्रकारिता

3.9 भूमण्डलीकरण और हिंदी पत्रकारिता

3.10 सारांश

3.11 शब्दावली

3.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.13 संदर्भ ग्रंथसूची

3.14 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

3.15 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना :

इस प्रश्नपत्र की पिछली इकाईयों में पत्रकारिता का स्वरूप, प्रकृति व आयामों के साथ–साथ विश्व व विदेशों में पत्रकारिता के इतिहास का विस्तृत अध्ययन किया गया है। जिससे छात्र पत्रकारिता के इतिहास को जान सके।

हिन्दी पत्रकारिता का अपना एक चूनोतीपूर्ण व महत्वपूर्ण दौर रहा है। हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव उस काल में हुआ जिस काल में भारत गुलामी से मुक्ती की जंग लड़ रहा था। जिसके चलते हिन्दी पत्रकारिता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इस इकाई में भारतीय

पत्रकारिता की विस्तृत जानकारी दी गयी है, जिसे हिन्दी पत्रकारिता के विशेष सन्दर्भ में समझने की कोशिश की गई।

आगे आने वाली इकाईयों में भारतीय पत्रकारिता को विस्तृत रूप से जानने के लिए स्वतंन्त्रता से पूर्व व स्वतन्त्रता के बाद दो खण्डों में बांट कर अध्ययन किया जायेगा। जिससे छात्र ये समझ सकेंगे कि स्वतन्त्रता से पूर्व भारतीय पत्रकारिता का स्वरूप क्या था? तथा बाद में क्या है?

3.2 उद्देश्य :

विश्व की पत्रकारिता में तीव्रता से हुये विकास के परिणामस्वरूप आज पूरा विश्व एक गांव के रूप में दृष्टिगत होता है। इसलिए ऐसे विषय को समझना व उसकी जानकारी रखना आवश्यक हो जाता है। इस इकाई का उद्देश्य पत्रकारिता से विद्यार्थियों का परिचय कराना, उन्हें पत्रकारिता की बारीकियों तक ले जाने का प्रयास करना है। इसके अलावा पत्रकारिता के सभी पहलुओं पर प्रकाश डालते हुये इसके स्वरूप व आयामों को विद्यार्थियों के सामने रखना भी इस इकाई का उद्देश्य है ताकि वे पत्रकारिता से परिचित हो सकें।

इस इकाई से छात्र जान सकेंगे कि –

- भारतीय पत्रकारिता का इतिहास क्या है? और भारतीय पत्रकारिता में हिन्दी पत्रकारिता का क्या योगदान है?
- भारतीय पत्रकारिता व हिन्दी पत्रकारिता का भारत के विकास में क्या योगदान रहा?
- हिन्दी पत्रकारिता में भारतेन्दु युग की भूमिका और विदेशों में हिंदी पत्रकारिता की स्थिति।

3.3 भारतीय पत्रकारिता का इतिहास :

पहला दैनिक पत्र लंदन से 11 मार्च 1702 को प्रकाशित हुआ। जिसका नाम डेली करेंट था। डेली करेंट के 78 साल के बाद भारत में कोलकाता से कैलकेटा पब्लिक एडवरटाइजर नाम का पहला पत्र प्रकाशित हुआ। इसी के बाद कोलकाता से 1785 में बंगाल जर्नल और 1791 में इंडियन वर्ल्ड का प्रकाशन हुआ। राजा राममोहनराय के प्रयास से 1821 में संवाद कौमुदी तथा मिरातुल–अखबार भी कोलकाता से ही शुरू हुए। वैसे भारत में छापाखाना स्थापित करने का श्रेय पुर्तगालियों को है।

भारत में पुर्तगाली मिशनरियों ने 1550 में यूरोप से तीन प्रेस मंगवाए। पहला प्रेस गोवा में स्थापित किया गया और 1557 में मलयालम में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए यहां से एक पुस्तक प्रकाशित की गई। दूसरा प्रेस तमिलनाडु में 1558 और तीसरा मालाबार में 1602 में स्थापित किया गया। लेकिन प्रेस लगाने के बावजूद किसी पुर्तगाली ने समाचार पत्र का प्रकाशन नहीं किया।

वस्तुतः उनका मुख्य उद्देश्य अपने धर्म का प्रचार करना था। 1696 में प्रकाशित फ्रांसिस डी सोजाने की पुस्तक यीशु द्वारा पूर्व की खोज से यह बात प्रमाणित होती है। जर्मनी के गुटेनबर्ग ने भी धार्मिक भावना से प्रेरित होकर ही टाइप के जरिए छपाई का काम शुरू किया था और बाइबिल छापी थी।

हालांकि भारत में प्रेस स्थापित करने का श्रेय पुर्तगालियों को जाता है किंतु पत्रकारिता की शुरूआत करने का श्रेय अंग्रेजों को है। पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज सभी भारत में व्यापार करने आए थे। उनमें वर्चस्व की लड़ाई भी चलती थी और इस लड़ाई में अन्ततः अंग्रेज विजयी हुए। 1674 में हेनरी मिल्स एक प्रेस, टाइप और कागज लेकर भारत आए। लेकिन उसका उपयोग नहीं किया जा सका। अग्रेजों के प्रयासों से 1779 में कोलकाता में पहली सरकारी प्रेस स्थापित की गई जिसके प्रबंधक चार्ल्स विलकिंस थे, वे टाइप भी बनाना जानते थे। उन्होंने पंचानन कर्मकार नामक एक भारतीय की मद्द से बांग्ला लिपि के टाइप तैयार करवाए। यह प्रेस श्रीरामपुर में लगाई गई थी।

कृष्ण बिहारी मिश्र के अनुसार, पहला प्रेस स्थापित करने का श्रेय श्रीरामपुर बंगाल के बैपटिस्ट मिशन के प्रचारक कैरे को जाता है। 1800 में वार्ड कैरे और मार्शमैन ने कोलकाता से थोड़ी दूर श्रीरामपुर में डैनिश मिशन की स्थापना की। कैरे ने पंचानन कर्मकार और मनोहर की मदद से देवनागरी लिपि की ढलाई की और प्रेस खोला। श्रीरामपुर से ही दो पत्र प्रकाशित हुए। समाचार दर्पण और दिग्दर्शन।

हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत की दिशा में बैपटिस्ट मिशनरियों का यह एक अलग कदम था। उन्होंने सर्वप्रथम बांग्ला भाषा में पुस्तक प्रकाशित करने के उद्देश्य से टाइप तैयार करवाए थे लेकिन सही मायने में डच मूल के विलियम बोल्ट्स ने भारतीय पत्रकारिता की शुरूआत की। भारत की ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों से किसी बात पर से उनका मतभेद हो गया। इस पर उन्होंने कंपनी के कर्मचारियों के विरोध में कंसीडरेशंस आन इंडियन अफेयर्स नाम से दो भागों में एक पुस्तक प्रकाशित की थी। उन्होंने सन् 1768 में कौंसिल के फाटक पर एक नोटिस चिपकाया था जिसमें लिखा था–

सर्वसाधारण को मैं यह बताना चाहता हूं कि हस्तलेख में मेरे पास सबको बताने के लिए बहुत सी बातें हैं जिनका यहां के प्रत्येक मनुष्य से गहरा संबंध है। जिसमें जानने की उत्सुकता हो वह बोल्ट्स के घर आकर उसे पढ़ सकता है।' या नकल कर सकता है।

डा. रामचंद्र तिवारी के अनुसार विलियम बोल्ट्स ने यह नोटिस सितंबर 1768 में चिपकाया था। इससे नाराज होकर लिस्बन निवासी बोल्ट्स को अंग्रेजों ने यूरोप वापस भेज दिया था क्योंकि अंग्रेज अधिकारी नहीं चाहते थे कि अंग्रेजों के कुकृत्यों के बारे में आम जनता को कुछ पता चल सके। इस तरह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के दमन की शुरूआत भारतीय पत्रकारिता के जन्म से ही हो गई थी। बोल्ट्स ने अपने नोटिस में इस बात का उल्लेख किया था कि वह अखबार निकालने में कोलकाता निवासी उस व्यक्ति की मद्द कर सकता है और प्रेस भी उपलब्ध

करा सकता है, जो अखबार निकालने का इच्छुक हो। लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं मिलता कि बोल्टास की मद्द से किसी ने अखबार निकाला हो।

पहला भारतीय पत्र जेम्स आगस्टन हिकी नामक एक अंग्रेज ने प्रकाशित किया था। हिकीज बंगाल गजट या कैलकटा जनरल एडवरटाइजर नामक यह पत्र 29 जनवरी 1780 को प्रकाशित हुआ। यह पत्र 2 पृष्ठों का था और 12 इंच लंबा और 8 इंच चौड़ा था। तीन कालमों में प्रकाशित इस पत्र में अंग्रेज अधिकारियों के भ्रष्टाचार, ईस्ट इंडिया कंपनी के कारोबार आदि के बारे में विवरण दिए गए थे। हिकी ने तत्कालीन गर्वनर वारेन हेस्टिंग को भी नहीं छोड़ा, जिस कारण हिकी को जेल भेज दिया गया। हिकी गजट के बाद जो पत्र प्रकाशित हुए उनमें इंडिया गजट नवंबर 1780, कैलकेटा गजट फरवरी 1784, ओरिएंटल मैग्जीन 1785 और मासिक पत्र कैलकटा एम्यूजमेंट 1785 प्रमुख हैं।

सन् 1791 मे विलियम हम्फ्रीज नामक अमरिकी ने इंडियन वर्ल्ड का प्रकाशन प्रारंभ किया, वे बंगाल जर्नल का भी संपादन कर रहे थे। हम्फ्रीज के संपादन में 1795 में मद्रास से इंडियन हेरेल्ड निकला और 1818 में जेम्स सिल्क बकिंघम के संपादन में कलकत्ता जर्नल नामक अर्धसाप्ताहिक पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ।

अठारहवीं सदी के अंत में कुछ और पत्र प्रकाशित हुए जिन्होने भारतीय पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया जैसे मद्रास कूरियर 23 अक्तूबर 1785, मद्रास गजट जनवरी 1795, इंडिया हेरेल्ड 2 अप्रैल 1795, बांबे हेरेल्ड 1789, बांबे कूरियर 1790, बांबे गजट 1791। बांबे गजट और बांबे हेराल्ड 1793 में मिलकर एक हो गए। मद्रास कूरियर सरकार के नेतृत्व में निकलता था जबकि इंडियन हेरेल्ड बिना लाइसेंस के निकलता था। सरकार ने इस पर शासन और प्रिंस ऑफ वेल्स के विषय में आपत्तिजनक लेख प्रकाशित करने का आरोप लगाकर इसके संपादक हम्फ्रीज को वापस इंग्लैंड भेज दिया। यहां पर यह ध्यान देने योग्य है कि भारतीय पत्रकारिता के उदय के साथ उसके इतिहास में दो महत्वपूर्ण चीजें जुड़ गई। पहला सरकार और सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार की आलोचना करने वाले निर्भीक और तेजस्वी पत्रों का दमन और दूसरा संपादकों का उत्पीड़न। फिर भी इन विषम परिस्थितियों के बावजूद पत्र निकलते रहे और भारतीय पत्रकारिता विकसित होती गई।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– भारत में पहला प्रिटिंग प्रेस कहां स्थापित हुआ था ?

प्रश्न 2– 29 जनवरी 1780 को प्रकाशित भारत के पहले पत्र का आकार–प्रकार कैसा था?

प्रश्न 3 – इण्डियन हेरेल्ड अखबार क्यों बन्द हो गया ?

3.4 उन्नीसवीं सदी में हिंदी पत्रकारिता :

भारत के इतिहास में 19वीं सदी का स्थाई महत्व है। यह सदी आधुनिक भारत की नींव कही जा सकती है । बंगाल को छोड़कर पूरे भारत में नवजागरण इसी सदी में प्रारंभ हुआ।

बंगाल में नवजागरण और आधुनिक युग का आरंभ 1775 से माना जाता है। इसी समय पलासी का युद्व भी हुआ था और इस युद्व में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला की पराजय के बाद अंग्रेजों का आधिपत्य हो गया था लेकिन बंगाल में आई इस चेतना का विकास संपूर्ण भारत में नहीं हो पाया था। बंगाल को छोड़कर भारत के अन्य हिस्सों में नवजागरण और स्वातंत्रत्य चेतना का विकास 19 वीं सदी में ही हुआ। रेल, तार– डाक, शिक्षा, प्रेस और समाचार पत्रों की शुरुआत इसी सदी में हुई।

प्रेस और पत्रकारिता से एक ओर जहां विचार स्वातंत्र्य की नींव पड़ी वहीं आधुनिक व्यवस्थाओं और आधुनिक शिक्षा की व्यवस्था में जनजागृति आई। उपनिवेश विरोधी चेतना का विकास भी हुआ।

सन् 1857 के बाद पूरे भारत पर अंग्रेजों का शासन हो गया और भारत ईस्ट इंडिया कंपनी के हाथों से निकलकर विक्टोरिया के हाथों में आ गया। परिणाम स्वरूप दमनकारी नीतियों में इजाफा हुआ और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नई तरह के खतरों में पड़ गई।

उपनिवेशवाद से जहां भारत आर्थिक रूप से कमजोर हुआ वहीं दूसरी तरफ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक दृष्टि से प्रगति की ओर अग्रसर भी हुआ।

19 वीं सदी में भारत में पत्रकारिता जातीय चेतना और उपनिवेश विरोधी चेतना का पर्याय बन गई। पत्रकारिता की ताकत से अंग्रेज परिचित थे इसीलिए सरकार और सरकारी अधिकारियों की आलोचना करने वाले पत्रों पर अंकुश लगाने के लिए उन्होंने कई कड़े नियम बनाए। लार्ड वेलेजिली के समय पहला प्रेस संबंधी कानून बनाया गया जिसमें एक शर्त यह भी थी कि सरकारी अधिकारी के निरीक्षण के बिना कोई भी पत्र प्रकाशित नहीं किया जाएगा। इस प्रेस एक्ट का उद्देश्य साफ था। अंग्रेज भारतीयों को अंधेरे में रखना चाहते थे। वेलेजली के बाद आए लार्ड हेस्टिंग्स ने प्रेस एक्ट में कुछ संशोधन किया पर नियम फिर भी कड़े थे। हेस्टिंग्स के बाद एडम ने कमान अपने हाथ में ली, वह और भी कठोर था। 14 मार्च 1823 को उसने नए प्रेस कानून लागू किए जिनके मुताबिक कोई भी व्यक्ति बिना लाइसेंस के कोई पत्र नहीं निकाल सकता था। इस प्रेस एक्ट के विरोध में राजा राममोहन राय ने एक याचिका दायर की। प्रेस एक्ट के खिलाफ यह किसी भारतीय का पहला विरोध था और इसके कारण 4 अप्रैल 1823 को उन्हे अपना मिरातुल अखबार बंद कर देना पड़ा । लार्ड विलियम बैंटिंग के काल में आए चार्ल्स मैटकाफ ने भारतीय पत्रकारिता की आजादी के लिए काफी सक्रियता दिखाई। मैटेकाफ के प्रयासों से भारतीय समाचार पत्रों पर लगी सभी पाबंदिया हटा दी गई। हालांकि 1857 में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद फिर प्रेस संबंधी कानून और कड़े हो गए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– उन्नीसवीं सदी भारतीय पत्रकारिता में क्यों महत्वपूर्ण है ?

प्रश्न 2– पहला प्रेस एक्ट क्या था ?

3.5 बंगभूमि और हिंदी पत्रकारिता :

हिंदी का पहला पत्र उदन्त मार्तन्ड कोलकाता से ही प्रकाशित हुआ। उसके प्रकाशक कानपुर निवासी पं जुगल किशोर कोलकाता के न्यायालय में क्लर्क थे जो बाद में वकील हो गए थे। साप्ताहिक पत्र निकालने के लिए उन्होंने लाइसेंस हेतु भारत सरकार में दरख्वास्त दी थी। 16 फरवरी 1826 को सरकार ने उन्हें पत्र प्रकाशित करने की अनुमति दे दी। इसके बाद 37 नंबर आमड़ातला गली, कोल्हूटोला से 30 मई 1826 को पं जुगल किशोर ने उदन्त मार्तन्ड नामक पहला पत्र प्रकाशित किया। मगर आर्थिक दबावों के कारण इस पत्र को जल्द ही बंद करना पड़ा। इसका आखिरी अंक 4 दिसंबर 1827 को निकला।

कोलकाता से ही बंगदूत का प्रकाशन 10 मई 1829 को हुआ। यह भी साप्ताहिक पत्र था और हिंदू हेरेल्ड प्रेस से निकलता था। इसके पहले संपादक नील रतन हालदार थे। यह प्रति रविवार प्रकाशित होता था। इस पत्र से राजा राममोहनराय भी जुड़े थे यह बांग्ला, अंग्रेजी, फारसी और हिंदी में प्रकाशित होता था। यह पत्र भी एक साल नहीं चल सका। समाचार दर्पण के 21 जून 1834 के अंक की एक विज्ञप्ति में अंग्रेजी और हिंदुस्तानी में प्रकाशित होने वाले प्रजामित्र की सूचना तो मिलती है पर इसके बारे में कोई और जानकारी नहीं है।

उत्तर प्रदेश से प्रकाशित होने वाला पहला समाचार पत्र बनारस अखबार था। 1845 में यह अखबार बनारस से प्रकाशित होता था इसके संपादक गोविंद नारायण थे जो मराठी भाषी थे। यह पत्र नाममात्र को हिंदी का पत्र था क्योंकि इसमें नाममात्र को ही हिंदी होती थी। इसमें अरबी, फारसी, शब्दों का भरमार थी जिनको समझना साधारण लोगों के लिए कठिन था। इसके मालिक राजा शिव प्रसाद सितारेहिंद थे जो हिंदुस्तानी के हिमायती थे। बनारस से ही सुधाकर का प्रकाशन 1850 में हुआ इसके प्रकाशक तारा मोहन मैत्रेय थे। बनारस से प्रकाशित होने वाला यह अखबार बांग्ला और हिंदी में निकलता था। भाषा की दृष्टि से इसे उत्तर प्रदेश का पहला हिंदी का अखबार कहा जा सकता है। 1853 से यह केवल हिन्दी में ही प्रकाशित होने लगा। बुद्धि प्रकाश का प्रकाशन 1852 में हुआ। आगरा से निकलने वाले इस समाचार पत्र के संपादक लाला सदासुखलाल थे। पत्रकारिता और भाषा शैली की दृष्टि से इसका विशेष महत्व है। समाचार सुधावर्षण हिंदी का पहला दैनिक पत्र था। यह जून 1854 में कोलकाता से प्रकाशित हुआ इसके संपादक श्याम सुंदर सेन थे। इस पत्र के 1868 तक निकलने के प्रमाण हैं। यह 4 पन्नों का समाचार पत्र था जिसके 2 पृष्ठ हिंदी के और दो बांग्ला के थे। इसी अवधि में कुछ और पत्र भी प्रकाशित हुए जिनमें मार्तड 1846, ज्ञानदीप 1846, मालवा अखबार 1848, जगदीपक भाष्कर 1849, सामदन्त मार्तंड 1853, सर्वहितकार 1855, प्रजाहितैषी 1855, और पयामे आजादी 1857 प्रमुख हैं। मार्तंड 11 जून 1846 को प्रकाशित हुआ। यह इंडियन सन प्रेस कोलकाता से प्रकाशित होता था। 10 पृष्ठों का यह पत्र अंग्रेजी, बांग्ला, फारसी और हिंदी में प्रकाशित होता था । ज्ञानदीप का प्रकाशन भी 1846 में हुआ पर इसका अधिक विवरण उपलब्ध नहीं है। मालवा अखबार 1848 मे इंदौर से हिंदी– उर्दू में निकला। हिंदी का पहला पत्र प्रकाशित करने वाले पं युगल किशोर

शुक्ल ने एक बार फिर पत्र निकालने का साहस किया और 1850 में कोलकाता से सामदन्त मार्तंड नामक पत्र निकाला। 1855 में शिवनारायण ने सर्वहितकारक का प्रकाशन शुरू किया।

19वीं सदी के पूवार्द्ध में निकलने वाले पत्रों पर एक नजर डालने के बाद यह स्पष्ट हो जाता है कि अब तक बंगाल से शुरु होकर हिंदी पत्रकारिता हिंदी प्रदेश में पहुंच गई थी और यहां इसने हिंदी पत्रकारिता के विकास के लिए एक ठोस जमीन तैयार की।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– बंगदूत क्या था ?

प्रश्न 2– उत्तर प्रदेश से प्रकाशित होने वाले पहले अखबार का नाम क्या था ?

3.6 उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध की पत्रकारिता और भारतेन्दु युग :

1857 की क्रांति, भारतीय इतिहास, समाज, साहित्य और संस्कृति में एक नया मोड़ लाने वाली घटना थी। बंगाल और महाराष्ट्र को छोड़कर पूरे भारत में इसी क्रांति के फलस्वरूप चेतना का विकास हुआ। संपूर्ण भारत में उपनिवेश विरोधी चेतना और स्वतंत्रता प्राप्ति की चेतना जाग गई। 1857 के बाद 10–12 सालों तक हिंदी पत्रकारिता में कोई विशेष बदलाव तो नहीं आया मगर हिंदी पत्रकारिता में उपनिवेश विरोधी स्वर तेज हो गया था। हिंदी के पत्रकार अंग्रेजों की मंशा को अच्छी तरह से समझ गए थे इसीलिए वह जनता को अंग्रेजों के दमन के लिए आगाह कर रहे थे। 1859 में धर्मसभा नामक पत्र प्रकाशित हुआ यह सनातन धर्म का समर्थक पत्र था । 1867 में यह पत्र आगरा से हिंदी और संस्कृत में प्रकाशित हुआ इसके संपादक थे ज्वाला प्रसाद। 1861 में आगरा से सूरजप्रकाश नामक पत्र निकला। इसके संपादक गनेशीलाल थे। इसी साल आगरा से शिव नारायण ने उर्दू और हिंदी में अखबार निकाला। मुफीद उल खलाइक नामक पत्र उर्दू में् प्रकाशित होता था इसके हिंदी भाग का नाम सर्वोपकारक था। 4 साल बाद 1865 में सर्वोपकारक स्वतंत्र हो गया। 1861 में अजमेर से प्रकाशित खैरख्वाहे खलाइक नामक पत्र के सम्पादक सोहनलाल बने। हकीम जवाहरलाल ने इटावा से पप्रजाहित पाक्षिक पत्र प्रकाशित किया उसके अंग्रेजी और उर्दू संस्करण भी प्रकाशित हुए। 1863 ई. में सिकंदरा, आगरा से लोकमित्र का प्रकाशन हुआ, यह ईसाइयों का पत्र था। लेकिन इसकी हिंदी बहुत शुद्ध थी। पं अंबिका प्रसाद वाजपेयी ने लिखा है कि चाहे स्वार्थवश हो या किसी अन्य कारण से ईसाइयों की हिंदी वास्तव में हिंदी ही होती थी । यह बात बाइबिल के हिंदी अनुवाद या ईसाइयों द्रारा समय समय पर प्रकाशित हिंदी पुस्तकों से भी प्रमाणित होती है। 1864 में आगरा से भारत खंडामृत प्रकाशित हुआ, इसका उर्दू नाम आबेहयात था इसके संपादक पं.बशीधर थे। 1859 में तत्वबोधिनी पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ और इसके संपादक गुलाब शंकर थे। सत्यदीपक 1866 में बंबई से प्रकाशित हुआ । 1867 में वृतांतविलास और विद्याविलास प्रकाशित हुए। इसी साल आगरा से सर्वजनोपकारक और रतलाम से रत्नप्रकाश प्रकाशित हुए। सर्वजनोपकारक के संपादक पं पूर्णचंद्र थे और रतनप्रकाश के किशोरलाल नागर। हिंदी की मशहूर मासिक पत्रिका कविवचन सुधा का प्रकाशन 1868 में बनारस से हुआ इसके संपादक प्रकाशक भारतेंदु हरिश्चंद्र थे। कृष्ण बिहारी मिश्र

ने कविवचनसुधा को पहले दौर की पत्रकारिता में शामिल किया है उनकी राय में हिंदी पत्रकारिता का दूसरा दौर 1877 में शुरू हुआ। दूसरे दौर की हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत भारतमित्र से हुई। 1857 के बाद हिंदी पत्रकारिता मे तेजी से परिवर्तन आया। कविवचनसुधा एक मानक तैयार करने में सफल रही। भारतेंदु हरिश्चंद ने कई पत्रिकाओं का संपादन किया साथ ही उन्होंने अनेक ऐसे पत्रकारों को भी तैयार किया, जिन्होने आगे चलकर उनकी सोच को बढ़ाया।

15 अगस्त 1867 को प्रकाशित कविवचनसुधा के जरिए हिंदी पत्रकारिता में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। पहले यह मासिक साहित्यिक पत्रिका थी। बाद में पाक्षिक हो गई । धीरे–धीरे इसमें राजनैतिक लेख भी प्रकाशित होने लगे। 1875 में यह साप्ताहिक हो गई और 1885 में अंग्रेजी में भी निकलने लगी। लेकिन इसी साल यह बंद भी हो गई। 1873 में बनारस से ही हरिश्चंद्र मैग्जीन का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। 1874 में इस मैग्जीन का नाम बदलकर हरिश्चंद्र चंद्रिका रख दिया गया। 1880 में इसे मोहन चंद्रिका के साथ मिला दिया गया। भारतेंदु ने स्त्री शिक्षा के प्रचारार्थ बालाबोधिनी नामक पत्रिका भी प्रकाशित की । यह 1874 में निकलनी शुरू हुई। भाषाशैली की दृष्टि से यह पत्रिका महत्वपूर्ण थी। इसके अलावा हिंदी प्रदीप, ब्राह्मण, हिन्दुस्थान, भारतमित्र, सारसुधानिधि और उचित वक्ता इस दौर के कुछ अन्य प्रमुख पत्र हैं। हिंदी प्रदीप 1877 में प्रकाशित हुआ यह भारतेंदु युग का महत्वपूर्ण पत्र था जिसके संपादक बालकृष्ण भट्ट थे। ब्राह्मण नामक पत्र 1883 में निकला और इसके संपादक प्रताप नारायण मिश्र थे। यह कानपुर से निकलता था और इसका बड़ा महत्व था। भारतेंदु युग की तीसरी सबसे महत्वपूर्ण पत्रिका 'आनंद कादम्बिनी' थी इसके संपादक और प्रकाशक बद्री नारायण चौधरी प्रेमघन थे। भारतेंदु युग की अन्य प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में 17 मई 1878 को प्रकाशित भारत मित्र प्रमुख है इसके प्रकाशक संपादक छोटू लाल मिश्र और प्रबंध संपादक दुर्गाप्रसाद मिश्र थे। भारत मित्र के अन्य संपादकों में पं रुद्रदत्त शर्मा, अमृतलाल चक्रवर्ती, बालमुकुन्द गुप्त, बाबूराव विष्णु पराड़कर, अंबिकाप्रसाद बाजपेयी और लक्ष्मीनारायण गर्दे के नाम उल्लेखनीय हैं।

सारसुधानिधि अपने युग का तेजस्वी पत्र था यह 1879 को प्रकाशित हुआ। भारतमित्र से अलग होने के बाद दुर्गादत्त मिश्र ने इसे सदानंद मिश्र के सहयोग से निकाला 1890 में यह पत्र बंद हो गया। दुर्गाप्रसाद मिश्र ने आगे चलकर 1880 में उचितवक्ता नामक पत्र भी निकाला, इसके संपादक वही थे।

इस दौर में भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता निरंतर विकसित होती गई और यह सामाजिक और राष्ट्रीय हितों से जुड़ी भी रही। आजादी की लड़ाई में इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस युग में बहुत सारे पत्र निकले, पर कभी आर्थिक अभाव तो कभी सरकार के कोपभाजन बनने के बाद बंद हो गए, लेकिन पत्रों का निकलना बंद नहीं हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अनेक जातीय, साम्प्रदायिक, धार्मिक पत्र भी निकले पर कहीं न कहीं वे सब देशप्रेम की भावना से जुड़े हुए थे। स्त्री शिक्षा पर केंद्रित बालाबोधनी ने स्त्रियों को अधिकार दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उसके बाद महिलाओं से जुड़ी कई अन्य पत्रिकाएं भी निकलीं। जिसमें भारत भगनी, सुगृहणी और अबलाहितकारक प्रमुख हैं।

इस काल में प्रकाशित होने वाली प्रायः सभी पत्रिकाओं से भारतेन्दु किसी ने किसी प्रकार सम्बद्ध अवश्य रहे। भारतीय जनमानस को इन पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा भारतेन्दु ने चिन्तनशील तथा उदार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। राम रतन भटनागर के शब्दों में भारतेन्दु हरिशचन्द्र हिन्दी साहित्य के ही जन्मदाता नहीं हैं, वह हिन्दी पत्र सम्पादन कला के भी जन्मदाता हैं।

भारतेन्दु के समय देश में नवीन राजनैतिक–सामाजिक चेतना का उदय होना प्रारम्भ हो गया था। पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित समाचारों तथा लेखों पर जन–सामान्य अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने लगा तथा उनमें व्यक्त विचारों से उद्वेलित भी होने लगा। ब्रह्म समाज, प्रार्थना सभा, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसायटी जैसे समाज सुधारक संगठनों के सुधारवादी आन्दोलनों ने जनमानस के चिन्तन को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया और यह प्रभाव तत्कालीन पत्र–पत्रिकाओं में भी उभर कर सामने आया।

पं0 झाबरमल शर्मा की धारणा है कि भारतेन्दु युग रानजैतिक दृष्टि से एक कठिन परीक्षाओं का युग था। वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट सम्पादकों के सिर पर नंगी तलवार की भांति लटका रहता था, पत्रों के मार्ग मे अनेक कठिनाइयां थीं।

डॉ0 राजेन्द्र शर्मा का मत है कि हिन्दी पत्रकार कला का प्रारम्भ यों तो विद्धान् 30 मई, सन् 1826 (सम्वत् 1883) से मानते है जिस दिन हिन्दी का प्रथम समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' निकला, किन्तु हिन्दी पत्रकार कला का वास्तविक प्रारम्भ सन् 1868 से माना जाना चाहिए, जबकि भारतेन्दु द्वारा सम्पादित 'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इससे पूर्व हिन्दी में जितने भी पत्र निकलते थे उनकी कोई निश्चित शैली नहीं थी।

ब्रिटिश सरकार भी कविवचन सुधा की सौ कापियां खरीदती थी। जब उक्त पत्र पाक्षिक होकर राजनैतिक सम्बन्धी और दूसरे लेख स्वाधीनता भाव से लिखने लगा तो बड़ा आन्दोलन मचा।.....हरिशचन्द्र के ललित लेखों ने लोगों के जी में ऐसी जगह कर ली थी कि कविवचन सुधा के हर नम्बर के लिए लोगों को टकटकी लगाए रहना पड़ता था।..... 'मरसिया' नाम का एक लेख उक्त पत्र में छपा था, तो लोगों ने सर विलयम म्योर को समझाया कि यह आप की ही खबर ली गई हैं। इस पर पत्रिका को मिलने वाली सरकारी सहायता बन्द हो गई। 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' और 'बालाबोधनी' नामक दो मासिक पत्रिकाओं की सौ–सौ कापियां प्रान्तिय गवर्नमेंट लेती थी वह भी बन्द हो गई।

स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात : स्वदेशी आन्दोलन को प्रारम्भ करने का श्रेय भी भारतेन्दु को ही हैं। 23 मार्च, 1874 को 'कवि वचन सुधा' के माध्यम से उन्होंने देश की जनता से देश–हित के लिए स्वदेशी वस्त्र पहनने का आह्वान किया–

''हम लोग सर्वन्तिदासी सत्र स्थल में वर्तमान सर्वद्रष्टा और नित्य सत्य परमेश्वर को साक्षी देकर यह नियम मानते हैं और लिखते हैं कि हम लोग आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा नहीं पहनेंगे और जो कपड़ा पहिले से मोल ले चुके हैं और आज की मिति तक हमारे पास हैं

उनके जीर्ण हो जाने तक काम में लावेंगे पर नवीन मोल लेकर किसी भांति का भी विलायती कपड़ा न पहिनेंगे। हिन्दुस्तान का ही बना कपड़ा पहिनेंगे। हम आशा रखते हैं कि हमको बहुत ही क्या प्रायः सब लोग स्वीकार करें और अपना नाम इस श्रेणी में होने के लिए श्रीयुत बाबू हरिश्चन्द्र की अपनी मनीषा प्रकाशित करेंगे और सब देश हितैषी इस उपाय के वृद्धि में अवश्य उद्योग करेंगे।''

'हरिश्चन्द्र मैगजीन' : परिष्कृत हिन्दी गद्य की प्रेरक : 15 अक्टूबर, 1873 को भारतेन्दु ने 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। यह डिमाईचौपेजी के 24 पष्ठों में निकलता था। जून, 1874 में आठ अंकों के प्रकाशन के बाद यह पत्रिका 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' हो गई। इसके मुख पृष्ठ पर अंग्रेजी में लिखा रहता था–

HARIS CHANDRA'S

MAGAZINE

A Monthly Journal

Published in connection with the Kavi Vachan Sudha containing articles on literary, scientific, political and religious subjects, antiquities, reviews dramas, history, novels, poetic selections, gossip, humour and wit edited by

HARISCHANDRA

इस प्रकार भारतेन्दु इस पत्रिका को साहित्य, विज्ञान, धर्म विषयक लेखों, पुरातत्व, पुस्तक समीक्षा, नाटक, इतिहास, उपन्यास, पद्य, गद्य, हास–परिहास और व्यंग्य विषयक विविध सामग्री से युक्त सर्वविषय पत्रिका बनाना चाहते थे।

'हरिश्चन्द्र चंद्रिका के रूप में प्रकाशित होने पर इसके शीर्ष पर यह श्लोक तथा छन्द छपता था–

विद्वत्कुलामलस्वांत कुमुदामोददायिका।

आर्याज्ञानतमोहंत्री श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका।।

कविजन कुमुद गन हिय विकसि चकोर रसिकन सुख भरै।

प्रेमिन सुधा सो सींचि भारतभूमि आलम तम हरै।।

उद्यम सु औषधि पोखि बिरहिन तापि खल चौरन दरै।

हरिचन्द्र की यह चन्द्रिका परकासि जग मंगल करे।।

सन् 1880 में उदयपुर के मोहनलाल विष्णुलाल पण्डेय, जो भारतेन्दु के घनिष्ठ मित्र थे, के अनुरोध पर भारतेन्दु ने यह पत्रिका उन्हें दे दी और उन्होंने इसका प्रकाशन काशी से ही 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका' नाम से किया। इसके मुख पृष्ठ पर भी उक्त श्लोक तथा छन्द प्रकाशित होता रहा। सन् 1881 में संस्कृत का मासिक पत्र 'विद्यार्थी' भी इसमें मिल गया। इसका प्रकाशन नाथद्वारा से होता था। इस पत्रिका का नाम अब 'विद्यार्थी'

सम्मिलित हरिश्चन्द्र चन्द्रिका और मोहन चन्द्रिका' हो गया जिसके सम्पादक दामोदर शास्त्री थे। यहीं इसका प्रकाशन भी बन्द हो गया।

सन् 1884 में भारतेन्दु ने इसे 'नवोदिता हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' के नाम से पुनः प्रकशित किया पर उनके असामयिक निधन से इस पत्रिका के मात्र दो ही अंक प्रकाशित हो सके।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– कवि वचन सुधा क्या थी ?

प्रश्न 2– भारत मित्र का क्या महत्व हैं ?

प्रश्न 3– कवि वचन सुधा का प्रकाशन कब हुआ था ?

प्रश्न 4 – कवि वचन सुधा के प्रकाशन का उद्देश्य क्या था?

3.7 बीसवीं सदी की हिंदी पत्रकारिता और गांधी युग :

बीसवीं सदी का प्रारंभ नए संकटों के बीच चेतना जाग्रत होने से हुआ। लार्ड कर्जन ने भारत में जातीय शक्ति और चेतना को खंडित करने के लिए दमन नीति का सहारा लिया। उसने 1905 में बंगाल का विभाजन कर दिया क्योंकि वह बंगालियों की संघशक्ति से आतंकित था। उसकी दमन नीति का जमकर विरोध हुआ और बंगाल के लोग एकजुट हो गए। राष्ट्रीय आंदोलन और गहरा हो गया। बंगाल भारतीय राजनीति का अग्रदूत हो गया था। सुरेंद्रनाथ बनर्जी, विपिन चंद्र पाल और रविंद्रनाथ ठाकुर आदि लोग स्वतंत्रता आंदोलन के साथ साथ आध्यात्मिक पुर्नजागरण में भी सक्रिय हो गए।

बींसवी सदी के प्रथम चरण, 1900 से 1918 को हिंदी पत्रकारिता का तीसरा दौर भी माना जाता है। हिंदी साहित्य में इसे द्विवेदी युग के नाम से भी जाना जाता है कुछ लोग इसे तिलक युग भी कहते हैं। स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है का नारा देने वाले बाल गंगाधर तिलक ने इस दौर में केसरी और मराठा नामक पत्र निकाले। केसरी का स्वर उग्र था और मराठा का नरम।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी साहित्य और पत्रकारिता का नव निर्माण किया उन्होंने लगभग 20 सालों तक सरस्वती का संपादन किया। इस तरह तिलक और द्विवेदी जी के प्रभाव से हिंदी पत्रकारिता की दिशा में सकारात्मक बदलाव आए। इस दौर के हिंदी केसरी, भारतमित्र, नृसिंह, मारवाड़ी बंधु ,अभ्युदय, कर्मयोगी, प्रताप, कर्मवीर आदि सभी पत्र देशप्रेम से प्रेरित पत्र थे।

हिदीं पत्रकारिता के विकास का अगला दौर 1920 से शुरु होता है । हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में इसे गांधी युग कहा जाता है। गांधी जी कुशल पत्रकार भी थे। उन्होंने यंग इंडिया नवजीवन और हरिजन नामक पत्रों का संपादन किया। गांधी जी ने नवजीवन गुजराती में निकाला। हिंदी में इसका नाम हिंदी नवजीवन था। यह 1921 में प्रकाशित किया गया । हरिजन का नाम हिंदी में हरिजन सेवक था जो 1933 में निकला। इसी तरह यंग इंडिया का हिंदी संस्करण तरुण भारत नाम से हिंदी में निकला। इन पत्रों में विज्ञापन नहीं छपते थे। इन सभी पत्रों

ने भारत में सामाजिक चेतना के साथ–साथ राजनीतिक चेतना के विकास में भी अहम भूमिका निभाई।

भारतीय राजनीति में गांधी जी के प्रवेश के साथ ही एक नये युग की शुरूआत हुई और इस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में भी एक नए विचार का प्रवेश हुआ। इस युग का कार्यकाल 1920 से 1947 तक का रहा। इसमें कोई दो मत नहीं कि गांधी जी ने अपनी गहरी समझ, दृढ़ इच्छा शक्ति, सत्याग्रह की अद्‌भुत क्षमता तथा निःस्वार्थ त्याग के द्वारा अपने युग का कुशल नेतृत्व करके हमारे स्वतंत्रता आंदोलन को एक व्यापक जनाधार दिया। इस कालखण्ड की पत्रकारिता में गांधी जी की अहिंसा का भी प्रमाण यहां देंगें। पत्रकारिता के उग्र तेवरों में सयंम का समावेश होने लगा।

5 सितम्बर, 1920 को बनारस से 'आज' का प्रकाशन शुरू हुआ, जिसे हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में एक युगान्तकारी घटना माना जाता है। पत्र के प्रथम अंक में लिखा गया कि– भारत के गौरव की बृद्धि और उसकी राजनैतिक उन्नति 'आज' का विशेष लक्ष्य होगा। आज के प्रकाशन के साथ ही हिन्दी पत्रकारिता में दैनिक पत्रों के प्रकाशन का एक नया युग शुरू हुआ। इसी क्रम में गांधीवादी आदर्शों की स्थापना हेतु कानपुर से 'वर्तमान' निकलने लगा। जिसके मुख पृष्ठ पर 'वन्दे मातरम्' शब्द अंकित रहता था। 23, नवम्बर 1920 से प्रताप का भी दैनिक संस्करण निकलने लगा। इस समय के अधिकांश समाचार पत्रों ने देश को तथा युवकों को असहयोग में शिरकत करने के लिए आमंत्रित किया।

बंगाल विभाजन और जलियांवाला बाग जनसंहार के कारण हिन्दी पत्रकारिता अत्यधिक उग्र हो गई थी किन्तु उन पर बापू के विचारों का इतना व्यापक प्रभाव था कि क्रांतिकारी पत्रों तक ने अहिंसा के प्रति अपनी श्रद्धा कायम रखी। प्रताप जैसे उग्र समाचार पत्र ने सितम्बर 1921 के एक अंक में लिखा कि 'हमारे सिरों पर प्रहार होते हों तो हों। बिजलियां गिरती हों तो गिरें, परन्तु हमारे व्यवहार में न गरमी आए और न कोई शिथिलता ही। हम डटे रहें वहीं पर, जहां पर हम डटे हुए हैं। हमारी दृष्टि रहे उसी लक्ष्य पर जिस पर वह लगी हुई है। प्रहारों की मार से इनमें कोई अंतर न पड़े और अन्त में प्रहारों के करने वाले हाथ में शिथिलता आयेगी और उसके साथ ही निश्चित रूप से आयेगी हमारी अंतिम विजय की सूचना।'

इस दौरान जहां एक ओर समाचार पत्रों का स्वरूप गांधी जी की अहिंसा से मेल खाता था वहीं दूसरी ओर उनका स्वर क्रांतिकारी था। पं0 सुन्दर लाल, गणेश शंकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे सम्पादकों ने क्रान्तिकारी भावनाओं को उद्वेलित करने वाली कवितायें लिखीं। इस समय 'देश भक्त', 'हम क्रान्ति करेंगे', 'जीवन संग्राम', 'घबराते क्यों हैं', 'विजय', 'मां' जैसे अनेक क्रान्तिकारी शीर्षकों से लेख, सम्पादकीय और कवितायें लिखी गयीं। क्राान्तिकारी गतिविधियों और क्रांतिकारियों के जीवन आदि पर लेख आदि प्रकाशित हुए। 'स्वदेश' का विजय अंक, 'चांद' का फांसी अंक 'प्रभा' का झण्डा सत्याग्रह अंक ऐतिहासिक महत्व के हैं।

20वीं सदी के प्रारम्भ में जब समाचार पत्रों की संख्या कुछ अधिक होने लगी और सरकारी प्रतिबंध कड़े होने लगे, तब मिलकर मुकाबला करने के लिए सम्पादकों ने संगठित होने की

जरूरत महसूस की। हालांकि इस उद्देश्य से पत्रकारों का पहला संगठन सन् 1894 में 'हिन्दी उद्धरिणी प्रतिनिधि सभा' के नाम से बना था, किन्तु इसका सही रूप 1915 में जब आया, जब प्रेस एसोसिएशन ऑफ इंडिया का गठन हुआ। इसके बाद से अनेक संगठन बने तथा सम्पादक सम्मेलनों के भी आयोजन किए जाने लगे। इसका महत्वपूर्ण प्रभाव यह हुआ कि पत्रकार संगठनों के गठन के बाद उनमें एकजुट होकर सरकार से सीधी टक्कर लेने की क्षमता पैदा हुई और इस प्रकार पत्र–पत्रिकाओं का स्वर और अधिक आन्दोलनात्मक हो सका और इससे हिन्दी पत्रकारिता का स्तर ऊँचा उठा तथा उनकी स्वतंत्रता काफी कुछ सीमा तक अपेक्षाकृत सुनिश्चित हुई। निश्चित रूप से इससे उपनिवेशवादी ताकत पर एक अंकुश लगा।

भारत छोड़ो आन्दोलन के समय भी हिन्दी पत्रकारिता ने हालांकि अपने दायित्व को उठाया, किन्तु जबर्दस्त सरकारी प्रतिबंधक नीति ने इसे दबोच लिया। यहां तक कि गांधी जी के पत्र 'हरिजन' की प्रतियां जब्त कर ली गयीं। 'आज', 'प्रताप' जैसे अनेक समाचारपत्रों को अपने प्रकाशन स्थगित करने पड़े। वर्षों तक हिन्दी पत्रकारिता हुकूमत की भारी जंजीरों में जकड़ी रही। फिर भी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों की पत्रिकाओं के माध्यम से जनता और विशेषकर नवयुवकों और विद्यार्थियों को जागृत रखने का काम जारी रहा। लखनऊ विश्वविद्यालय की पत्रिका के सन् 1942 के अंक में सम्पादक लिखता है 'वह साहित्यिकार या कलाकार जो अन्याय के विरुद्ध नहीं उठ सकता, वह कला के नाम को दूषित करता है।'

सन् 1945 में जब समाचार पत्रों पर से सेंसर हटाया गया, तब पुनः अपनी ऊर्जा के साथ समाज के सामने आए। इसके बाद के पत्रों ने आजाद हिंद फौज पर अनेक महत्वपूर्ण रचनायें प्रकाशित की और इस प्रकार देश को 1947 की सफलता तक पहुंचाने में एक सचेत सैनिक की भूमिका निभाई।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– हिन्दी पत्रकारिता का तीसरा दौर क्या है ?

प्रश्न 2– हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में गांधी युग कब शुरू हुआ ?

प्रश्न 3 – हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में गांधी युग कब से कब तक माना गया है ?

3.8 स्वातंत्रयोत्तर हिंदी पत्रकारिता :

1947 में स्वतंत्रता मिली और उसके साथ ही पत्रकारिता का नया संघर्षमय दौर शुरू हो गया। आजादी मिलने के बाद नई चुनौतियां सामने आईं जिनका सामना पत्रकारिता को भी करना पड़ा। स्वातंत्रयोत्तर भारत का नेहरु युग राष्ट्रीय–सामाजिक विकास के लिए नई जमीन तलाश रहा था। भारतीय संविधान ने सबको अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की, जिससे सूचना पाने और देने का अधिकार सबको मिल गया। इन परिस्थितियों में हिंदी पत्रकारिता का तेजी से विकास हुआ। हिंदी प्रदेशों में साक्षरता दर बढ़ी और इस वजह से समाचार पत्रों की प्रसार संख्या भी बढ़ी। समाचार पत्र तकनीक की दृष्टि से भी उन्नत हुए और मुद्रण की स्थिति भी पहले अच्छी हुई। कुछ पूंजीपति पत्रकारिता के क्षेत्र में आगे आए। इससे हिंदी पत्रकारिता का विकास हुआ

लेकिन धीरे–धीरे लोगों ने इसका गलत फायदा उठाया और भ्रष्टाचार बढ़ने लगा। इमरजेंसी के दौर में एक बार फिर अभियक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा। 1977 में इमरजेंसी खत्म होते ही फिर से पूंजीपतियों और राजनीति का खेल शुरू हो गया। सनसनीखेज खबरों की वजह से विश्लेषणात्मक खबरें कम लिखी जाने लगी। आठवें दशक तक आते आते अफसर और मंत्रियों के बीच लेनदेन की खबरें आने लगी। संपादक भी अखबार मालिकों के नौकर बन गए, उनकी स्वायत्तता कम होती चली गई। पूंजीपतियों के नौकर बन गए। लेकिन इसी दौर में धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी, रघुवीर सहाय, राजेंद्र माथुर, सुरेन्द्र प्रताप सिंह और कमलेश्वर जैसे संपादक भी आए जिन्होने पूंजीनियंत्रित समाचारपत्रों को विकृत होने से बचाया। उन्हें सत्ता का खिलौना नहीं बनने दिया।

इस दौर का एक और सकारात्मक पहलू यह भी है कि टैक्नोलॉजी के जरिए समाचार पत्रों का रंगरुप ही बदल गया। खबरें पहले से ज्यादा तेजी से, आकर्षक और कलात्मक तरीके से प्रस्तुत की जाने लगी। कम्प्यूटर के उपयोग ने पत्रकारिता की दुनिया में क्राति ही कर दी। साजसज्जा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। लेकिन .यह दुर्भाग्य है कि आज की पत्रकारिता पाठकों के भरोसे न चलकर विज्ञापन के भरोसे चल रही है । विषय की दृष्टि से भी काफी बदलाव आ गया है। अब धर्म और टैक्नोलॉजी से लेकर स्वास्थ्य और श्रृंगार, कानून से लेकर मनोरंजन तक हर क्षेत्र की खबरें समाचार पत्रों में होती हैं। खबरों के साथ फीचर भी होते हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– इमरजेंसी के बाद के कुछ प्रमुख महत्वपूर्ण हिन्दी सम्पादकों के नाम बताइए ?

प्रश्न 2– स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता का सबसे सकारात्मक पहलू क्या है?

3.9 भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी पत्रकारिता :

भूमंडलीकरण के इस दौर में समाचार पत्रों की प्रस्तुति में ही नहीं सामग्री के स्तर मे भी बदलाव आया है। आज ऐसे विषयों पर जोर दिया जा रहा है जो बाजार से प्रभावित हों । यह बात इस ढ़ंग से भी कही जा सकती है कि विज्ञापन से प्रेरित समाचार ज्यादा प्रमुखता से छपते हैं। समाचार को बेचने की होड़ ज्यादा है इसीलिए जो बिकता है वह दिखता है। समाचार पत्रों के लिए विज्ञापन धन कमाने का साधन है और इसे प्राप्त करने के लिए वे कोई भी हथकंडा अपनाने के लिए तैयार हैं। फिर चाहे वह किसी उत्पाद की प्रशंसा में लिखी खबर हो या फिर फीचर। कंपनियां इसी बात का फायदा उठाती है। पेड न्यूज यानी पैसा देकर न्यूज छपवाना आम बात होती जा रही है। यही नहीं देश के सबसे प्रतिष्ठित अखबारों में अब एडिट स्पेस तक का भी दाम लगाया जाने लगा है।

अखबारों में स्थानीय संस्करणों की मांग इतनी बढ़ गई है कि एक जिले की खबर दूसरे जिले में नहीं दिखाई देती है। इससे अखबारों की व्यापकता कम हो गई है। यह समय प्रिंट पत्रकारिता के लिए सावधान होने का भी है क्योंकि अधिकांश खबरें अब लाइव होने लगी हैं। ऐसे समय में वही अखबार टिक सकेगा जिसका विचारपक्ष महत्वपूर्ण होगा। मोबाइल में भी रेडियो की

सुविधा आ जाने से खबरे प्राप्त करने के माध्यम बढ़ गए हैं। ब्लाग के जरिए भी समाचार दिए जा रहे हैं। हिंदी के ब्लाग भी हिंदी पत्रकारिता में क्रांति ला सकते हैं । वह भी अब बाजार की रणनीति को समझ रहे हैं और ब्लाग के जरिए विज्ञापन जुटाना बहुत कठिन नहीं रह गया है। बहुत सारे ब्लागों को विज्ञापन मिल भी रहे हैं।

भूमंडलीकरण में अंतर्विरोध निहित हैं। भूमंडलीकरण सबसे पहले आजादी और आत्मनिर्भरता को छीनता है। लोकतंत्र को समाप्त करता है। परिणाम यह होता है कि इच्छाओं का वस्तुकरण होने लगता है। जीवनशैली, खानपान, प्रतीकों और चिन्हों के जरिए हम बाजार को पाठकों के सामने लाते हैं न कि समस्याओं को। पहले जितने भी समाचार पत्र निकले, वह प्रजा के हितों के लिए निकाले गए पर आज बाजार में मौजूद सामान को बेचने के लिए निकाले जा रहे हैं। आज के समय में फैशन, लाइफस्टाइल, फूड, ट्रेवल, ब्यूटी जैसे विषय प्रमुखता से छपते हैं और सामाजिक सरोकार से जुड़ी खबरों के लिए एक कालम भी जगह नहीं होती। संवाददाताओं को भी विज्ञापन लाने के लिए कहा जाता है। एक वह समय था जब गांधी जी के किसी भी अखबार में चाहे वह हिंदी में हो या अंग्रेजी में कोई विज्ञापन नहीं छपता था और आज विज्ञापन के अखबार कुछ भी करने को तैयार हैं। कभी विज्ञापन के दबाव में खबरें हटा दी जाती है तो कभी विज्ञापन के लिए पृष्ठ संख्या भी बढ़ा दी जाती है या फिर लेख हटा दिए जाते हैं। संपादन और लेखन की जानकारी न होते हुए भी समाचार पत्र के मालिक संपादक बन जाते हैं। जैसे–जैसे कमाई बढ़ रही है हर कोई अखबार निकालना चाहता है क्योंकि यह मुनाफे का सौदा भी साबित हो रहा है और सत्ता को प्रभावित तथा नियंत्रित करने का भी ।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– भूमंडलीकरण के दौर में हिन्दी पत्रकारिता में क्या बदलाव आया है ?

प्रश्न 2– विषय वस्तु की दृष्टि से वर्तमान पत्रकारिता में क्या परिवर्तन आए हैं?

3.10 सारांश :

आधुनिक पत्रकारिता का इतिहास अभी 400 वर्ष पुराना नहीं हुआ है, लेकिन पत्रकारिता ने विश्व के इतिहास को बदल डाला है। यह कथन अतिशयोक्ति लगता है लेकिन जरा भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास पर नजर डालिये तो पता लग जाएगा कि हमारी आजादी का हर बड़ा नायक किसी न किसी रूप में पत्रकार था। किसी ने सम्पादक के रूप मे तो किसी ने लेखक पत्रकार के रूप में अपनी कलम के जरिए आजादी की आवाज को बुलन्द किया। कहा गया है कि ***जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो*** । भारत ही नहीं विश्व के कई अन्य देशों में भी आजादी की लड़ाई में पत्रकारिता की निर्णयकारी भूमिका रही है। समाचारों के संकलन तथा प्रसारण से शुरू हुई पत्रकारिता की कला समाज की वाणी तथा अभिव्यक्ति का प्रतीक बन कर आज नए जमाने के नए तेवरों की हमराह बन चुकी है।

एक समय था जब मालिक लाखों का घाटा सह कर भी अखबार निकालते थे। सम्पादक को त्याग, तपस्या और संघर्ष के सम्बल पर जिन्दा रहना होता था। पत्रकारिता का मतलब ही समाज सेवा और देश सेवा होता था । लेकिन वक्त के साथ हर चीज बदलती चली गई।

आज कम्प्यूटर क्रान्ति के फलस्वरूप समाचार पत्रों का पूरा कलेवर ही बदल गया है। निश्चित तौर पर वर्तमान दौर में पत्रकारिता पर बाजार हावी हो गया है। आज अखबार को जनता की आवाज के बजाय साबुन और तेल की तरह एक प्रोडक्ट मानने वालों की कमी नहीं है और एक तरह से बाजार खबरों पर सवार हो गया है। लेकिन इन प्रतिकूल स्थितियों के बाद भी यह उम्मीद खत्म नहीं हुई है कि पत्रकारिता अपने तेवर और अपनी ताकत बचा पाने में कामयाब रहेगी। सच लिखने का साहस, खबरों की तह तक जाने की दृष्टि और जन सरोकारों की अभिव्यक्ति एक बार फिर पत्रकारिता के आधार स्तम्भ बनेंगे।

वर्तमान दौर में टैक्नोलॉजी का जिस तेजी से विकास हो रहा है, उसने अखबारों की दुनिया ही बदल दी है। एक दौर था जब हाथ से लिखे शब्दों के अखबार में छपने तक के बीच का समय कई घंटों का होता था। आज कुछ मिनटों में यह सारा काम हो जाता है। तकनीक का ही कमाल है कि अखबारों के नेट संस्करण आज आम हो गए हैं और यह भी माना जा रहा है कि पेपरलेस अखबारों का जमाना भी जल्द ही आने वाला है। यानी अखबार तो आप तक पहुचेगा लेकिन कागज पर छपा हुआ नहीं। आपके कम्प्यूटर या मोबाइल की स्क्रीन पर ही आपका अखबार आपके सामने आ जाएगा।

नए जमाने, नयी तकनीक और नए दौर में पत्रकारिता की चुनौतियां भी निश्चित रूप से नई होंगी, लेकिन पत्रकारिता की पहचान और कलम की ताकत तब भी कम नही होगी ।

3.11 शब्दावली :

विलियम बोल्टास : विलियम बोल्टास एक डच व्यक्ति था जो कोलकाता में ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापार से जुड़ा था। कंपनी के अधिकारियों के आर्थिक भ्रष्टाचार से परेशान होकर उसने कोलकाता के कौंसिल भवन की दीवारों पर हाथ का लिखा एक परचा चिपकाया था। 1778 की इस घटना को भारत में आधुनिक पत्रकारिता के इतिहास की एक शुरूआती कड़ी माना जाता है।

समाचार सुधावर्षण : समाचार सुधावर्षण हिन्दी का पहला दैनिक पत्र था। यह जून 1854 में कोलकाता से प्रकाशित हुआ। श्याम सुन्दर सेन इसके संपादक थे। यह पत्र 1868 तक प्रकाशित होता रहा । 4 पन्ने में इस अखबार में 2 पन्ने हिन्दी और 2 बांग्ला के होते थे।

भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता : भारतीय पत्रकारिता और खास तौर पर हिन्दी पत्रकारिता के विकास में भारतेन्दु युग का महत्वपूर्ण योगदान है। 1868 में कविवचन सुधा के प्रकाशन को भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता की शुरूआत माना जाता है। कविवचन सुधा के पहले संपादक–प्रकाशक भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ही थे। 1877 से भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता का दूसरा दौर शुरू हुआ। इस युग में हिन्दी पत्रकारिता में भाषा और शिल्प के लिहाज से कई अहम सुधार हुए और पत्रकारिता का मुख्य फोकस सामाजिक सवालों के इर्द गिर्द घूमता रहा।

पेड न्यूज : पेड न्यूज यानी ऐसी खबर जिसके प्रकाशन के लिए पैसे दिए गए हों। एक दौर में पत्र–पत्रिकाओं में पैसे के आधार पर सिर्फ विज्ञापन ही छपवाए जा सकते थे। गांधी जी के अखबारो में तो विज्ञापन छापने पर भी रोक थी। बहुत सी पत्र पत्रिकाएं ऐसे विज्ञापन नहीं छापती थीं जो भ्रामक हों, अच्छे उत्पादों के न हों। लेकिन बाजार के बढ़ते दवाबों ने आज विज्ञापनों को खबरों पर सवार कर दिया है। विज्ञापन देने वाले चाहते हैं कि उनके उत्पाद पर पत्रकारों की मोहर भी लग जाए। इस लिए पहले एडवेटोरियल कह कर विज्ञापन छापे जाते थे । जिन्हे पहली नजर में देख कर उनके खबर या लेख होने का भ्रम होता था। लेकिन अब तो बड़े–बड़े समूहों के अखबार भी विज्ञापनों को खबरों के रूप में छाप रहे है। जिन्हें पेड न्यूज कहा जाता है।

स्वातंत्रयोत्तर काल : भारत में स्वतंत्रता (15, अगस्त 1947) के बाद के काल को स्वातंत्रयोत्तर काल कहा जाता है जो भारत के स्वतंत्रत होने के बाद से चल रहा है।

स्वदेशी आन्दोलन : स्वदेशी आन्दोलन को प्रारम्भ करने का श्रेय भी भारतेन्दु को ही हैं। 23 मार्च, 1874 को 'कवि वचन सुधा' के माध्यम से उन्होंने देश की जनता से देश–हित के लिए स्वदेशी वस्त्र पहनने का आह्वान किया था यह आह्वान बाद में स्वदेशी आंदोलन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

3.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

उत्तर 3.3

उत्तर 1– भारत में पुर्तगाली मिशनरियों ने 1550 मे गोवा में पहला प्रेस स्थापित किया था।

उत्तर 2– भारत का पहला पत्र हिकीज बंगाल गजट का कैलकटा जनरल एडवरटाइजर 2 पृष्ठों का अखबार था और वह 12 इंच लम्बा तथा 8 इंच चौड़ा था।

उत्तर 3– तत्कालीन मद्रास से प्रकाशित इंण्डियन हेरेल्ड को बिना लाइसेंस के निकाला जा रहा था। शासन और प्रिंस ऑफ वेल्स के खिलाफ आपित्तजनक लेख प्रकाशित करने के आरोप में कंपनी के अधिकारियों ने इसके संपादक विलियम हम्फ्रीस को भारत छोड़कर इंग्लैण्ड जाने का हुक्म सुना दिया। इसी कारण यह अखबार बन्द हो गया।

उत्तर 3.4

उत्तर 1– उन्नीसवीं सदी में भारत की पत्रकारिता जातीय और उपनिवेश विरोधी चेतना का पर्याय बन गई थी। इसलिए उन्नीसवीं सदी को महत्वपूर्ण माना जाता है।

उत्तर 2– पहला प्रेस एक्ट ब्रिटिश राज में वायसराय लार्ड वेलेजली ने बनाया था। इसमें पत्रकारिता पर कई पाबन्दियां लगाई गई थीं जैसे कि किसी सरकारी अधिकारी के निरीक्षण के बिना कोई पत्र प्रकाशित नहीं किया जा सकता था।

उत्तर 3.5

उत्तर 1– बंगदूत कोलकाता से प्रकाशित होने वाला एक बहुभाषी साप्ताहिक पत्र था। यह बांग्ला, अंग्रेजी, हिन्दी और फारसी में प्रकाशित होता था। इसका पहला अंक 10 मई 1829 को प्रकाशित हुआ था और यह भी अधिक समय तक नहीं चल सका।

उत्तर 2– उत्तर प्रदेश का पहला समाचार बनारस से 1845 में प्रकाशित बनारस अखबार था। इसमें नाममात्र की हिंदी के साथ अरबी–फारसी की भरमार थी।

उत्तर 3.6

उत्तर 1– कवि वचन सुधा बनारस से प्रकाशित होने वाली मासिक साहित्यिक पत्रिका थी जिसका प्रकाशन 15 आगस्त 1867 से शुरू हुआ था। लगभग 18 वर्ष तक प्रकाशित होती रही यह पत्रिका बाद में साप्ताहिक हो गई थी और इसमें राजनीतिक लेख भी छपने लगे थे।

उत्तर 2– भारत मित्र भारतेन्दु युग का एक महत्वपूर्ण पत्र है। 17 मई 1878 प्रकाशित इस पाक्षिक के संपादन से बाबूराव विष्णु पराडकर और अम्बिका प्रसाद बाजपेयी जैसे लोग भी जुड़े थे।

उत्तर 3– कवि वचन सुधा का प्रकाशन सर्वप्रथम 23 मार्च, 1874 को हुआ था।

उत्तर 4– स्वदेशी आन्दोलन को प्रारम्भ करने का श्रेय भी भारतेन्दु को ही हैं। उन्होंने कवि वचन सुधा नामक पत्रिका के माध्यम से देश की जनता से देश–हित के लिए स्वदेशी वस्त्र पहनने का आह्वान किया था।

उत्तर 3.7

उत्तर 1– बीसवीं सदी के प्रथम चरण में 1900 से 1918 की अवधि को हिन्दी पत्रकारिता का तीसरा दौर भी कहा जाता है। इसे द्विवेदी युग या तिलक युग भी कहा जाता है।

उत्तर 2– हिन्दी पत्रकारिता का गांधी युग 1920 से शुरू माना जाता है। इस दौर की पत्रकारिता पर महात्मा गांधी के पत्रकार रूप का गहरा प्रभाव पड़ा था।

उत्तर 3– हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में गांधी युग 1920 से 1947 तक का माना गया है।

उत्तर 3.8

उत्तर 1– इमरजेंसी के बाद के महत्वपूर्ण हिन्दी संपादकों में धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी, रधुवीर सहाय, राजेन्द्र माथुर, सुरेन्द्र प्रताप सिंह और कमलेश्वर प्रमुख हैं।

उत्तर 2– स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता का सबसे सकारात्मक पहलू इस दौर में हुआ टैक्नोलॉजी का विकास है। अत्याधुनिक टैक्नोलॉजी और कम्प्यूटर के उपयोग ने पत्र पत्रिकाओं का रंग रूप ही बदल दिया है।

उत्तर 3.9

उत्तर 1– भूमंडलीकरण के दौर में समाचार पत्रों की प्रस्तुति के साथ–साथ उनकी सामग्री के स्तर में भी बदलाव आया है। अब विज्ञापनों को समाचारों से अधिक प्रमुखता मिलने लगी है।

उत्तर 2– विषय वस्तु की दृष्टि से आज फैशन, जीवन शैली, खानपान, पर्यटन, सौंन्दर्य आदि विषयों को प्रमुखता की जा रही है और अखबारों में सामाजिक सरोकारों से जुड़ी खबरों के लिए जगह कम होती जा रही है।

3.13 सन्दर्भ ग्रन्थसूची :

1. कुमार, विजेन्द्र	:	हिंदी पत्रकारिता और भूमंडलीकरण
2. चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद	:	हिंदी पत्रकारिता का इतिहास
3. जोशी, रामशरण	:	मीडिया मिशन से बाजारीकरण तक
4. नटराजन, जे0	:	भारत में पत्रकारिता
5. मिश्र, कृष्ण बिहारी	:	हिंदी पत्रकारिता
6. रंगास्वामी, पार्थसारथी	:	जर्नलिज्म इन इंडिया
7. यादव, चंद्रदेव	:	हिंदी पत्रकारिता स्वरूप और संरचना

3.14 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री :

1. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, डॉ0 संजीव भानावत, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर।

2. समाचार पत्रों का इतिहास, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी।

3.15 निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1– आधुनिक पत्रकारिता की शुरूआत कब हुई ? किस अखबार को आधुनिक युग का पहला अखबार माना जाता है ?

प्रश्न 2– भारत में पहला प्रिटिंग प्रेस कब और कहां लगा ? शुरूआती दौर में भारत में प्रिंटिंग प्रेस क्यों लगाए गए थे ?

प्रश्न 3– भारत में उन्नीसवीं सदी में पत्रकारिता पर किस तरह के प्रतिबन्ध थे ? उदाहरण देकर समझाइये।

प्रश्न 4– हिन्दी पत्रकारिता के विकास में बंगाल का क्या योगदान है ? एक निबन्ध लिखिए।

इकाई –04

स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता

4.4 क्रान्तिकारी आन्दोलन एवं पत्रकारिता

4.5 भारतीय प्रांत एवं पत्रकारिता

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

4.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

4.10 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

4.11 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना :

प्रश्नपत्र के पिछली इकाईयों में पत्रकारिता का परिचय, स्वरूप, आयाम, विश्व में पत्रकारिता इतिहास, भारत में पत्रकारिता का इतिहास, हिन्दी पत्रकारिता और भारतीय पत्रकारिता आदि विषयों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। भारतीय पत्रकारिता को विस्तृत रूप से जानने के लिए इसे दो खण्डों में बांटा गया है स्वन्त्रता से पूर्व भारतीय पत्रकारिता और स्वतंत्रता के बाद भारतीय पत्रकारिता।

स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय पत्रकारिता को बहुत संघर्ष करना पड़ा, क्योंकि इस काल में भारतीय पत्रकारिता को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी। इस काल में जो भी पत्र–पत्रिका सरकार के अनुकूल समाचार नहीं छापती उसे बंद करा दिया जाता था और पत्रकार को जेल भेज दिया जाता था। इस दौरान के अधिकतर पत्रकार स्वतंत्रता आंदोलन के क्रांतिकारी थे जैसे–महात्मा गांधी, गणेश शंकर, राजा राममोहन राय, बाल गंगाधर तिलक आदि। इस इकाई में स्वन्त्रता से पूर्व भारतीय पत्रकारिता का अध्ययन किया गया है।

स्वन्त्रता के बाद भारतीय पत्रकारिता का स्वरूप व उद्देश्य किस तरह बदले इसका अध्ययन आगे आने वाली इकाईयों में किया जायेगा।

4.2 उद्देश्य :

भारत में पत्रकारिता का इतिहास जेम्स आगस्टस हिकी के बंगाल गजट से शुरू होकर आजकल के डिजिटल प्रिन्ट मीडिया व कम्प्यूटर मीडिया तक फैला है। भारतीय पत्रकारिता स्वतंत्रता से पूर्व एक क्रान्तिकारी पत्रकारिता के रूप में मानी जाती है। उन्नीसवीं सदी में सामाजिक सवालों से इसकी यात्रा शुरू हुई और बीसवीं सदी आते–आते राष्ट्रीयता और आजादी के सदमें ने इसे अपने रंग में रंग लिया। बीसवीं सदी के आरम्भिक दौर के अधिकतर पत्रकार राजसत्ता के खिलाफ आवाज उठाने वाले थे तथा पत्रकारिता का एकमात्र उद्देश्य जनता को जागरूक करना और भारत को स्वतंत्र कराना था। इस इकाई में यह जानने की कोशिश की गयी है कि स्वतंत्रता से पूर्व भारत की पत्रकारिता किस तरह की थी? भारतीय पत्रकारिता के प्रारम्भिक दौर में उसे किस तरह के संघर्षों का सामना करना पड़ा तथा भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में इसकी क्या भूमिका रही।

इस इकाई से छात्र जान सकेंगे –

- भारत के प्रारंभिक समाचार पत्रों के प्रसार की जानकारी प्राप्त करना।
- क्रान्तिकारी आंदोलन का भारतीय पत्रकारिता पर किस तरह का प्रभाव पड़ा था?
- ब्रिटिश काल में भारतीय प्रांतीय पत्रकारिता का स्वरूप कैसा था ?
- यह जानने की कोशिश करना कि प्रारम्भिक भारतीय पत्रों को किस तरह के प्रतिरोध, दबावों और दमन का सामना करना पड़ा?
- क्रांतिकारी आन्दोलन और तत्कालीन पत्रकारिता का क्या अन्तर्सम्बन्ध था?

4.3 स्वतंत्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता :

सन् 1857 के विद्रोह को भारतीय स्वाधीनता संग्राम का पहला युद्ध माना गया है। उस समय तक समाचार पत्रों का प्रचार कुछ विशेष रूप में नहीं हुआ था और आज जिस रूप में समाचार पत्र हमें प्राप्त होते हैं, वह तब इतना सम्भव भी नहीं दिखाई देता था। भारत में समाचार पत्र अवश्य निकले थे लेकिन उनकी प्रसार संख्या बहुत सीमित थी। 1836 में समाचार चन्द्रिका की 250 प्रतियां, समाचार दर्पण की 398, बंगदूत की 70 से भी कम, पूर्णचन्द्रोदय की 100 और ज्ञानेनेशुन की 200 प्रतियां ही प्रकाशित होती थीं। सन् 1839 में कलकत्ता में जो उस समय भारत की राजधानी थी, यूरोपियनों के 26 पत्र निकलते थे, जिनमें विदेशी 6 दैनिक थे और 9 भारतीय पत्र थे। 'संवाद प्रभाकर' 14 जून, 1839 को दैनिक हुआ था। सन् 1857 में पयामे आजादी के नाम से उर्दू तथा हिन्दी में एक पत्र प्रकाशित हुआ जो अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्ति का प्रचारक था, इसको बाद में सरकार द्वारा जब्त कर लिया गया था। जिस किसी के पास उसकी प्रति पायी जाती थी, उन्हें राजद्रोह का दोषी माना जाता था और कठोर से कठोर यातनाएं दी जाती थीं।

1836 में समाचार चन्द्रिका की 250 प्रतियां, समाचार दर्पण की 398, बंगदूत की 70 से भी कम, पूर्णचन्द्रोदय की 100 और ज्ञानेनेशुन की 200 प्रतियां ही प्रकाशित होती थीं। सन् 1839 में कलकत्ता में जो उस समय भारत की राजधानी थी, यूरोपियनों के 26 पत्र निकलते थे, जिनमें विदेशी 6 दैनिक थे और 9 भारतीय पत्र थे।

सन् 1857 में ही हिन्दी के प्रथम दैनिक समाचार 'सुधावर्षण' और उर्दू फारसी के दो समाचारपत्रों 'दूरबीन' और 'सुल्तान उल अखबार' के विरूद्ध यह मुकदमा चला कि उन्होंने बहादुरशाह जफर का एक फरमान छापा जिसमें लोगों से मांग की गयी थी कि अंग्रेजों को भारत से बाहर निकाल दें। इस पत्र के सम्पादक श्यामसुन्दर सेन दिन भर की सुनवाई के बाद राजद्रोह के अपराध से मुक्त कर दिए गए और इसके बाद ही लार्ड केनिंग का प्रसिद्ध गैगिंग एक्ट पास हुआ, जिसमें समाचार पत्रों पर बहुत बन्धन लगाए गए थे। इस सिलसिले में लार्ड केनिंग ने विधान परिषद की बैठक में अपने भाषण में यह सूचना दी कि भारतीय जनता के हृदय में इन समाचार पत्रों ने, जो भारतीय भाषाओं में छपते थे, सूचना देने के बहाने कितना राजद्रोह लोगों के दिलों में भर दिया। उन्होनें यह भी स्पष्ट किया कि उनकी यह टिप्पणी भारतीयों द्वारा संचालित पत्रों से सम्बद्ध थी, यूरोपियन पत्रों के सिलसिले में नहीं। इस रिपोर्ट के बाद यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती कि प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम, जिसे मुख्यतया सिपाहियों को विद्रोह कहा जाता है या जिसके पीछे नानासाहब, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, अवध की बेगम या बहादुरशाह जफर जैसे राजा–महाराजाओं, नवाबों और बादशाहों का असन्तोष माना जाता है, भारतीय पत्र–पत्रिकाओं और पत्रकारों से कम प्रभावित नहीं था। केनिंग के ये विचार केवल उत्तर भारत के समाचार–पत्रों के बारे में नहीं थे। बम्बई के गवर्नर लार्ड एलफिस्टन ने भी इनका समर्थन किया था। इसके परिणामस्वरूप द्वारिकानाथ ठाकुर द्वारा संचालित 'बंगाल हरकारा' पत्र का प्रकाशन 19 सितम्बर से 24 सितम्बर, 1857 तक स्थगित कर दिया गया और उसे फिर से प्रकाशित करने की अनुमति तभी मिली जब उसके सम्पादक ने त्यागपत्र दे दिया। उत्तर प्रदेश के अनेक पत्रों को प्रकाशित होने से रोक लगा दी गई।

भारत में अंग्रेजी राज्य के विरूद्ध संघर्ष के क्षेत्र में जिन समाचारपत्रों का विशेष उल्लेख करना आवश्यक हैं, उनमें कलकत्ता का 'हिन्दू पेट्रियट' मुख्य था, जिसकी स्थापना 1853 में गिरीश चन्द्र घोष ने की थी और जो हरिश्चन्द्र मुखर्जी के नेतृत्व में असाधारण लोकप्रियता प्राप्त कर गया। सन् 1861 में इस पत्र में भी मनमोहन घोष का एक नाटक 'नील दर्पण' निकला जिसने गोरे व्यापारियों के विरूद्ध नील की खेती को खत्म करने के लिए आन्दोलन चलाया और इसके फलस्वरूप एक नील कमीशन की नियुक्ति हो गयी। बाद में यह पत्र श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के हाथ में आ गया और इसके पश्चात् क्रिस्टोदास पाल इसके सम्पादक नियुक्त किए गए। इस पत्र ने सरकारी ज्यादतियों का खुलकर विरोध किया और यह मांग की कि सरकार की नौकरियों में भारतीयों को प्रवेश दिया जाए। सन् 1878 में जो देशी भाषायी समाचार पत्र विरोधी कानून पास हुआ, उसका इसने जमकर विरोध किया।

'अमृत बाजार पत्रिका' का स्वतंत्रता संग्राम में अपना विशेष योगदान रहा। इस पत्र को दबाने के लिए सन् 1878 मे अनेक प्रयास किए गए। इस पत्र के सम्पादक शिशिर कुमार घोष और मोतीलाल घोष ने इसे रातोंरात अंग्रेजी का भी पत्र बना दिया।

सन् 1849 में पूना से 'ज्ञान प्रकाश' का प्रकाशन हुआ था। इसका प्रबन्ध पूना की सार्वजनिक सभा ने किया। इस पत्र के अन्तर्गत सार्वजनिक महत्व के प्रश्नों पर बहुत प्रभावशाली ढंग से लिखा जाता था। महाराष्ट्र के सार्वजनिक जीवन के एक प्रकार से आदि–संस्थापक महादेव गोविन्द रानाडे भी इसमें लिखते थे। कुछ दिनों बाद इस पत्र के सम्पादक श्रीकृष्ण शास्त्री चिपलूणकर के पुत्र विष्णु शास्त्री चिपलूणकर और बाल गंगाधर तिलक ने मिलकर 1 जनवरी, 1881 में मराठी में 'केसरी' और अंग्रेजी में 'मराठा', नामक दो साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किये। डकेन स्टार नामक अंग्रेजी पत्र के सम्पादक राम जोशी भी इसमें आ गए और यह पत्र 'मराठा' में मिला लिया गया। इनके एक अन्य साथी प्रसिद्ध लेखक आगरकर थे। कोल्हापुर के दीवान के विरूद्ध तक लेख छापने पर तिलक और आगरकर को सजा हुई और बाद में जब 1897 में पूना में प्लेग फैला और एक कमिश्नर रैंड के अत्याचार असहनीय हो गए तो लोकमान्य तिलक ने 4 मई, 1897 में एक लेख प्रकाशित किया जिसमें लिखा था कि ''बीमारी तो एक बहाना है वास्तव में सरकार लोगों की आत्मा को कुचलना चाहती हैं। मिस्टर रैंड अत्याचारी हैं और जो कुछ वे कर रहे है, वह सरकार की आज्ञा से ही कर रहे हैं, इसलिए सरकार के पास प्रार्थना देना व्यर्थ हैं। ''इस लेख के पश्चात् चापेकर बन्धुओं ने 22 जून को रैंड की हत्या कर दी थी।

15 जून को 'केसरी' में तिलक का जो अग्रलेख निकला था, उसको लेकर उन्हें डेढ़ वर्ष की सजा दी गई और इसके बाद लोकमान्य तिलक भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अत्यन्त प्रमुख नेता स्वीकार कर लिए गए। उन्होंने ही यह नारा दिया कि 'स्वाधीनता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार हैं' और 'मैं उसे लेकर रहूंगा।' उनका 'केसरी' सारे भारत मे स्वाधीनता संग्राम का एक प्रबल प्रचारक बन गया और उन्हें 1908 में राजद्रोह सम्बन्धी बैठक, अध्यादेश और विधेयक का विरोध करने के लिए 6 वर्ष के काले पानी की सजा दी गयी। 'केसरी' और 'मराठा' स्वाधीनता आन्दोलन के प्रमुख प्रवर्तक बन गए और सारे देश में उनका आदर्श अनुकरणीय माना गया। नागपुर और बनारस से हिन्दी 'केसरी' निकला और जब 1920 में बनारस से 'आज' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ तो उस सम्बन्ध में दिशा–निर्देश लेने के लिए बाबूराव विष्णु पराड़कर, लोकमान्य तिलक से मिलने पूना गये थे।

15 जून को 'केसरी' में तिलक का जो अग्रलेख निकला था, उसको लेकर उन्हें डेढ़ वर्ष की सजा दी गई और इसके बाद लोकमान्य तिलक भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अत्यन्त प्रमुख नेता स्वीकार कर लिए गए। उन्होंने ही यह नारा दिया कि 'स्वाधीनता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार हैं' और 'मैं उसे लेकर रहूंगा।' उनका 'केसरी' सारे भारत मे स्वाधीनता संग्राम का एक प्रबल प्रचारक बन गया और उन्हें 1908 में राजद्रोह सम्बन्धी बैठक, अध्यादेश और विधेयक का विरोध करने के लिए 6 वर्ष के काले पानी की सजा दी गयी।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– 1836 में सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला भारतीय समाचार पत्र कौन था?

प्रश्न 2– बंगदूत की कुल कितनी प्रतियां छपती थी?

प्रश्न 3– समाचार सुधावर्षण पर किस लिए मुकदमा चला था?

प्रश्न 4– अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ संर्घष करने वाला मुख्य समाचार पत्र 'हिन्दू पेट्रियट' का प्रकाशन कब तथा किसके सम्पादन में शुरू हुआ था?

4.4 क्रान्तिकारी आन्दोलन एवं पत्रकारिता :

स्वतन्त्रता संग्राम के आरम्भिक वर्षों में महामना मदनमोहन मालवीय ने 'दैनिक हिन्दोस्थान' का सम्पादन किया और 'अभ्युदय' नामक साप्ताहिक तथा दैनिक पत्र भी प्रकाशित किया जिनकी प्रेरणा से अनेक पत्रों ने जन्म लिया और स्वतन्त्रता की महत्वपूर्ण लड़ाई में अपनी अहम् भूमिका निभाई। 'नवजीवन', 'हरिजन', 'हरिजन सेवक', यंग इण्डिया' और 'हरिजन बन्धु' जैसे पत्र भी इसी बीच प्रकाश में आए।

जहां तक क्रान्तिकारी आन्दोलन का सम्बन्ध हैं, भारत का क्रान्तिकारी आन्दोलन बन्दूक और बम के साथ नहीं, समाचारपत्रों से शुरू हुआ। जिनमें तीन नाम अत्यन्त गौरवशाली हैं। सर्वप्रथम– 'युगांतर', जिसका प्रकाशन और सम्पादन अरविन्द घोष के छोटे भाई वारीन्द्र कुमार घोष ने किया और भूपेन्द्र नाथ दत्त तथा अविनाश भट्टाचार्य की सहायता से इसे प्रकाशित किया। बाद में जब ये समाचार पत्र बन्द हो गया तो उसी के कार्यकर्ताओं ने एक क्रांतिकारी दल संगठित किया, जो 'युगांतर' गुट के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मानिकतल्ला स्ट्रीट पर स्थित 'युगांतर' कार्यालय की तलाशी के समय सरकार अरविन्द घोष को एक लेख के लिए उत्तरदायी समझकर पकड़ना चाहती थी परन्तु उस समय सभी कार्यकर्ताओं ने अपने आपको पत्र का सम्पादक घोषित किया, जिसके बाद सरकार को दमनकारी कानून बनाने पड़े और इस पत्र को बन्द करना पड़ा। 1908 में इस पत्र की प्रसार संख्या 8000 के लगभग थी। जब समाचार पत्रों द्वारा अपराध भड़काने सम्बन्धी कानून के अन्तर्गत इसे बन्द कर दिया गया तो चीफ जस्टिस सर लारेंस जैकिनसन ने इस पत्र के बारे में लिखा था– ''इनकी हरेक पंक्ति से अंग्रेजों के प्रति विद्वेष टपकता है। हरेक शब्द से क्रांति होती हैं।'' रौलेट रिपोर्ट, जो दस साल बाद लिखी गयी थी, में भी 'युगांतर' के बहुत से उद्धरण दिए गए, जिससे यह सिद्ध किया जा सके कि किस तरह इस पत्र ने अंग्रेजों के विरूद्ध विद्वेष भड़काया और लोगों को क्रांन्ति के लिए उकसाया। उसमें एक जगह यह मान लिया गया कि इस अखबार की पन्द्रह हजार प्रतियां छपती हैं और साठ हजार लोग उसे पढ़ते हैं।

इसी युगांतर के नाम पर जब अमरीका में गदर पार्टी की स्थापना हुई तो लाला हरदयाल ने पार्टी के कार्यालय तथा गदर पत्र के प्रकाशन स्थल का नाम युगांतर आश्रम रखा। स्वयं 'गदर' अखबार अपने आप में क्रांति का बड़ा दूत था। यह एक वर्ष की अवधि में ही हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, गुजराती, मराठी, बांग्ला और अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित किया जाने लगा और कुल मिलाकर इसकी लाखों प्रतियां छपती थीं और भारत से बाहर रहने वाले सभी भारतीयों को इसकी प्रतियां भेजी जाती थीं।

'युगांतर' के पश्चात् भारत में 'वन्देमातरम' पत्र ने राष्ट्रीय आंदोलन में बड़ी भूमिका निभायी। इसकी स्थापना श्री सुबोध चन्द्र मलिक, देशबन्दु चित्तरंजन दास और बिपिनचन्द्र पाल ने 6 अगस्त, 1906 को अरविन्द घोष के सम्पादकत्व में की थी। अरविन्द घोष पर मुकदमा चला और उनके साथ ही साथ 'संध्या' के सम्पादक ब्राह्मबांधव उपाध्याय और 'युगांतर' के सम्पादक भूपेन्द्रनाथ दत्त पर भी। अरविन्द घोष को सजा नहीं हो सकी परन्तु ब्राह्मबांधव उपाध्याय व 'वन्देमातरम्' के प्रेस मैनेजर को जेल भेज दिया गया। बाद में उन्होनें अेंग्रेजी में 'कर्मयोगी' और बंगला में 'धर्म' नामक पत्र निकाला। यह वह दौर था जब ब्राम्हा पाल लाल नाम की तिकड़ी भारतीय चेतना को झकझोरने में लगी हुई थी। बाल यानी बाल गंगाधर तिलक, पाल यानी विपिन चन्द्र पाल और लाल यानी लाला लाजपत राय ये तीनों ही अपने–अपने संग्रामी तेवरों के साथ पत्रकारिता की मशाल को भी थामे हुये थे।

जहां तक हिन्दी पत्रों का सम्बन्ध है प्रारम्भ में जो पत्र कलकत्ता मे निकले, उन्हें सरकारी सहायता की अपेक्षा रहती थी, परन्तु इस दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की थी, जिन्होनें 1867 में 'कविवचन सुधा' नामक एक कविता की पत्रिका निकाली परन्तु बाद में उसमें गद्य भी सम्मिलित होता रहा। पहले वह मासिक थी, 1875 में साप्ताहिक हो गई और अगले दस वर्ष तक हिन्दी तथा अंग्रेजी में निकलती रही। उस पत्र की क्या नीति थी, उसका दिग्दर्शन उसके मुख पृष्ठ पर छपने वाले उस सिद्धान्त वाक्य से मिलता है जो इस प्रकार थाः

''खल–गननसों सज्जन दुखी मति होहिं, हरिपद मति रहै।
अपधर्म छूटै, स्तत्व निज भारत गहै, करदुख बहै।
बुध तजहिं मत्सर, नारिनरसम होहिं, जग आनन्द लहै।
तजि ग्रामकविता, सुकविजनकी अमृतबानी सब कहै।''

इस पत्र में इस प्रकार 'स्वत्व निज भारत गहै, करदुख बहै, नारिनरसम होहिं' जैस विचार प्रकट किए गये थे, जो उस समय के लिए क्रान्तिकारी थे। जब ब्रिटेन के राजकुमार भारत आए तो उनके स्वागत में इस पत्रिका में एक कविता छपी, जिसके बारे में अंग्रेज अधिकारियों को समझाया गया कि इसमें श्लेष है और जिस शब्द 'पाद्यार्ध्य' का प्रयोग किया गया हैं, उसका अर्थ जूतों से पीटना भी हो सकता हैं। इससे पहले मर्सिया नामक एक लेख के कारण उस पत्र की सरकारी सहायता बन्द कर दी गई और उनके दो अन्य पत्रों 'हरिश्चन्द्र पत्रिका' और 'बाल–बोधिनी' जिनकी 100–100 प्रतियां सरकार खरीदती थी उनकी भी खरीददारी सरकार ने बन्द कर दी। हरिश्चन्द्र ने इसके बाद आनरेरी मजिस्ट्रेट के पद से इस्तीफा दे दिया। लेकिन यह पत्र फिर भी बहुत लोकप्रिय हो गया।

इस पत्र से भी अधिक महत्वपूर्ण यह हुआ कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जो अन्य मित्र थे जैसे कानपुर में प्रतापनारायण मिश्र तथा इलाहाबाद में पण्डित बालकृष्ण भट्ट, उन्होंने दो बड़े राजनैतिक पत्र निकाले जिनका बहुत असरदार प्रभाव हुआ। इलाहाबाद से बालकृष्ण भट्ट का 'हिन्दी प्रदीप' निकला जो 1910 में 'प्रेस एक्ट' के अन्तर्गत बन्द कर दिया गया। 'ब्राह्मण' पत्र ने कानपुर में राष्ट्रीय पत्रों की परम्परा का जन्म दिया। लाहौर से मुकुन्दराम के सम्पादन में 'ज्ञान

प्रदायिनी' पत्रिका निकली। सन् 1885 में कालाकांकर से राजा रामपाल सिंह ने 'हिन्दोस्थान' पत्र निकाला, जिसके प्रथम सम्पादक मदनमोहन मालवीय थे। वे बालकृष्ण भट्ट की परम्परा के थे और उन्होंने न केवल 'हिन्दोस्थान' के द्वारा बल्कि बाद में अन्य पत्रों के द्वारा राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रोत्साहित किया। इसी पत्र में बालमुकुन्द गुप्त और अमृतलाल चक्रवर्ती जैसे यशस्वी संपादकों ने काम किया जिन्होंने दैनिक पत्रों के क्षेत्र में विशेषतया राजनैतिक पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत अधिक नाम कमाया।

कलकत्ता का एक प्रसिद्ध हिन्दी समाचारपत्र 'भारत मित्र' था, जो 17 मई 1878 को पाक्षिक पत्र के रूप में निकला। बाद में यह दैनिक हो गया और इस पत्र ने राष्ट्रीय आंदोलन में बहुत बड़ा योगदान दिया। इस पत्र के प्रकाशक दुर्गाप्रसाद मिश्र और छोटूलाल मिश्र कश्मीरी थे। पचास वर्ष तक इस पत्र ने राष्ट्रीयता का प्रचार किया। कश्मीर को हड़पने की ब्रिटिश सरकार की योजना का इसने भंडाफोड़ किया और इसके सम्पादक बालमुकुन्द गुप्त ने लार्ड कर्जन के अत्याचारों पर 'शिवशम्भु' के चिठ्ठे' नाम से जो टिप्पणियां कीं उससे देश में बहुत जन–जागृति फैली। इसी के सम्पादक दुर्गाप्रसाद मिश्र ने 'उचित वक्ता' नामक पत्र भी निकाला। इस पत्र में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी भी लिखते थे।

कलकत्ता में हिन्दी के अनेक पत्र प्रकाशित हुए जिन्होनें राष्ट्रीय आन्दोलन के समय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'स्वतन्त्र' नामक पत्र भी अम्बिका प्रसाद बाजपेयी द्वारा प्रारम्भ किया गया। हास्य का पत्र 'मतवाला' था। बनारसीदास चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में 'विशाल भारत' निकला, जिसने ने केवल विदेशों में रहने वाले भारतीयों की दुर्गति की ओर ध्यान दिलाया बल्कि संसार की प्रगतिशील विचारधारा से हिन्दी जगत को परिचित कराया।

पंडित सुन्दरलाल ने इलाहाबाद से 'कर्मयोगी साप्ताहिक निकाला जो उग्र विचारधारा का पत्र था। इसमें अरविन्द घोष के 'कर्मयोगी' तथा लोकमान्य तिलक के 'केसरी' मे प्रकाशित लेख भी छपते थे। बहुत शीघ्र ही इसकी प्रसार संख्या 10000 प्रतियां हो गयीं और इससे तंग आकर तत्कालीन गोरी सरकार ने 1908 और 1910 के दमनकारी कानूनों के अन्तर्गत इसे बन्द करा दिया। सुन्दरलाल जी की प्रेरणा और सहयोग से शिवनारायण भटनागर ने उर्दू का 'स्वराज्य' पत्र निकाला जिसके नौ सम्पादकों को राजद्रोह के अन्तर्गत सजा हुई और एक के बाद एक जेल भेजे गये। कई लोगों को काले पानी की सजा हुई। बाद में 1910 के प्रेस कानूनों के अन्तर्गत यह भी बन्द हो गया। सुन्दरलाल ने साप्ताहिक 'भविष्य' नामक पत्र भी निकाला। इसके द्वारा उन्होंने राजनैतिक विचारधारा के प्रसार में बड़ा योगदान दिया।

स्वाधीनता प्रेमी हिन्दी पत्रकारों में गणेश शंकर विद्यार्थी का नाम प्रमुख रूप से जाना जाता है। वे बालकृष्ण भट्ट के शिष्य थे। सन् 1913 में उन्होंने कानपुर से साप्ताहिक 'प्रताप' का प्रकाशन किया, जो स्वाधीनता आन्दोलन का एक प्रमुख प्रचारक बन गया। अपने अग्रलेखों और समाचारों के कारण उनको कई बार सजा भी हुई। हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रयास में वे 1931 में शहीद हो गए।

सन् 1920 में शिवप्रसाद गुप्त ने बाबूराव विष्णु पराड़कर के सम्पादकत्व में 'आज' निकाला। 'आज' नामक पत्र उत्तर प्रदेश में राष्ट्रीय समाचारों और विचारों का प्रबल समर्थक रहा। यद्यपि पराड़कर उग्रवादी थे और क्रान्तिकारी दल के सदस्य होने के नाते कलकत्ता की रोड़ा कम्पनी में कारतूसों की डकैती के मामले में जेल काट चुके थे, परन्तु उन्होंने कांग्रेस विचारधारा के प्रसार में बड़ा योगदान दिया। इसी प्रकार आगरा से पंडित कृष्णदत्त पालीवाल का 'सैनिक' पश्चिमी उत्तर प्रदेश का प्रबल राष्ट्रीय पत्र हो गया। इन पत्रों–'प्रताप', 'आज', 'अभ्युदय' या 'सैनिक' प्रत्येक को स्वाधीनता आन्दोलन में बन्द होना पड़ता था और इसके सम्पादक और प्रकाशन जेल भेज दिये जाते थे।

दिल्ली में प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दी में 'वीर अर्जुन' और उर्दू में 'तेज' का प्रकाशन शुरू किया। ये दोनों पत्र राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रबल पक्षधर रहे और स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के बाद पंडित इन्द्र विद्या वाचस्पति और देशबन्धु गुप्त इन्हें चलाते रहे। ये लोग भी प्रमुख कांग्रेसी नेता रहे।

लाहौर में महाशय खुशहाल चन्द्र खुरसंद ने 'मिलाप' और महाशय कृष्ण ने उर्दू का प्रकाशन किया। ये पत्र भी राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रचारक रहे। पंजाब में राष्ट्रीय पत्रों की परम्परा काफी पुरानी रही हैं। सन् 1881 में सरदार दयाल सिंह मजीठिया ने सुरेन्द्रलाल बनर्जी के परामर्श से शीतलकांत चटर्जी के सम्पादकत्व में अंग्रेजी पत्र 'ट्रिब्यून' का प्रकाशन प्रारम्भ किया। कुछ दिनों तक बिपिन चन्द्रपाल ने भी इस पत्र में सम्पादन किया और बाद में 1917 से श्री कालीनाथ राय, जो पहले 'बंगाली' पत्र में काम कर रहे थे और जो 1911 में लाला लाजपतराय के 'पंजाबी' पत्र के सम्पादक हुए थे, इसके सम्पादक हो गये और दिसम्बर 1945 तक इसके सम्पादक रहे। पंजाब के राष्ट्रवादी पत्रकारों में एक अत्यन्त गौरवशाली नाम सूफी अम्बा प्रसाद का हैं, जिन्होंने पंजाब से 'हिन्दुस्थान', 'देशभक्त' और 'पेशवा' जैसे समाचार–पत्रों मे काम किया था। सन् 1890 में उन्होंने अपने जन्म स्थान मुरादाबाद से एक उर्दू साप्ताहिक 'जाम्युल इलूम' नाम का पत्र निकाला और 1897 मे उन्हें एक लेख के कारण डेढ़ साल के लिए जेल भेज दिया गया था। 1901 में वे जेल से छूटे और उन्होंने फिर उसी प्रकार के विचार लिखने जारी रखे, जिसके लिए उन्हें 6 वर्ष की जेल हुई और उनकी सारी सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। 1906 में जब वे जेल से छूटे तो फिर लाहौर के 'हिन्दुस्थान' पत्र में काम करने लगे। सरदार अजीत सिंह ने जब भारत माता सोसाइटी स्थापित की तो सूफी अम्बा प्रसाद उनके साथ हो गए। बाद में जब सरदार अजीत सिंह को देश निकाला हो गया, तो वे भी नेपाल भाग गये, लेकिन अंग्रेज सरकार ने उन्हें पकड़वा दिया। वे जब तक भारत में रहे, लाला हरदयाल के साथ पुस्तकें लिखने और पत्रों में लेख लिखने का काम करते रहे। बाद में वे ईरान चले गये, वहां जब प्रथम युद्ध के समय ब्रिटिश सेना का ईराक पर कब्जा हो गया तो उन्हें गोलियों से उड़ा दिया गया।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– 'युगांतर' क्या था?

प्रश्न 2– 'गदर' कितनी भाषाओं में प्रकाशित होता था?

प्रश्न 3– 'कविवचन सुधा' कब प्रकाशित हुई थी?

4.5 भारतीय प्रांत एवं पत्रकारिता :

भारत का कोई प्रांत ऐसा नहीं था जिसने राष्ट्रीयता का प्रचार करने वाले पत्रों और पत्रकारों को जन्म न दिया हो। बम्बई से 'बाम्बे क्रोनिकल' तो निकला ही, उसके ही एक सम्पादक बी0 जी0 होर्नीमैन, ने 'बाम्बे क्रोनिकल' को उग्र राष्ट्रीयता का एक प्रबल पत्र बना दिया तथा 'बाम्बे सेंटीनल' निकाला। उन्होनें सत्याग्रह सभा की कार्रवाइयों में भाग लिया और जलियांवाला हत्याकांड अत्याचारों की जो रिपोर्ट छापीं उसके कारण उनके संवाददाता गोवर्धन दास को फौजी अदालत से 3 साल की सजा हुई और होर्नीमैन को बीमारी की अवस्था में इंग्लैड़ वापस भेज दिया गया। बम्बई में ही अमृतलाल सेठ ने गुजराती 'जन्मभूमि' को जो काठियावाड़ की रियासतों की प्रजा के पत्र के रूप में निकला था, राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रबल संवाहक बनाया। इसी प्रकार का दूसरा गुजराती पत्र सांवलदास गांधी का 'सांझ वर्तमान' था। सांवलदास गांधी ने सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में महत्वपूर्ण भाग लिया था और जूनागढ़ सरकार के विरूद्ध समानांतर सरकार बनायी थी, जिसने 1947 में जूनागढ़ के नवाब को भारत छोड़कर जाने के लिए विवश किया। सिंध में साधु टी0 एल0 वासवानी ने 'न्यू टाइम्स' निकाला और सिंधी पत्र 'हिन्दू' के तीन सम्पादक जयरामदास दौलतराम, डॉक्टर चौइथराम गिडवानी और हीरानन्द कर्मचन्द गिरफ्तार किए गए तथा प्रेस बन्द कर दिया गया और उनकी सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। सन् 1932 के आन्दोलन में संपादक और प्रबन्ध विभाग के सारे कर्मचारी गिरफ्तार कर लिये गए थे। सन् 1942 में इसका प्रकाशन गांधी जी की अपील पर बन्द कर दिया गया।

बिहार के राष्ट्रीय पत्रों में सच्चिदानन्द सिन्हा द्वारा स्थापित 'सर्चलाइट' पत्र मुरली मनोहर सिन्हा के सम्पादकत्व में राष्ट्रीय आन्दोलन का बड़ा पक्षधर रहा। बिहार के हिन्दी पत्रों में देवव्रत शास्त्री द्वारा स्थापित 'नवशक्ति' और 'राष्ट्रवाणी' राष्ट्रीय आन्दोलन के पत्र रहे। 'साप्ताहिक योगी' और 'हुंकार' ने भी जनजागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बंगाल में हेमंत प्रसाद घोष ने 1914 में 'बसुमती' की स्थापना की थी और मृणाल कांति घोष, प्रफुल्लकुमार सरकार और सुरेशचन्द्र मजूमदार ने 'आनन्द बाजार पत्रिका', की स्थापना की। 'आनन्द बाजार' पत्रिका आज भी बांग्ला भाषा का लोकप्रिय और सबसे बड़ा पत्र है। चितरंजनदास ने 1923 में 'फारवर्ड' पत्र निकाला था और इन पत्रों का राष्ट्रीय आन्दोलन में बड़ा योगदान रहा। मद्रास में एनी बेसेंट ने 'मद्रास स्टेंडर्ड' पत्र को खरीद कर उसका नाम 'न्यू इंडिया' कर दिया और 14 जुलाई 1914 से अपने सम्पादकत्व में उसे निकालना प्रारम्भ किया। यह पत्र भी दक्षिण भारत में होमरूल आन्दोलन और कांग्रेस आन्दोलन का प्रबल पक्षधर था। इस पत्र के विरूद्ध काईवाई शुरू की गयी, पहले दो हजार रूपये की और फिर दस हजार रूपये की जमानत मांगी गयी और एनी बेसेंट को नजरबन्द कर दिया गया।

स्वतंत्रता आन्दोलन में पत्रकारों के योगदान का इतिहास वस्तुतः स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास हैं क्योंकि ज्यादातर मामलों में या तो पत्र का सम्पादक स्वयं स्वतन्त्रता का नेता हो गया या नेता ने अपने विचारों को प्रकट करने के लिए पत्र निकालना आवश्यक समझा। अगर चितरंजन दास का 'फारवर्ड' था तो जे0 एम0 सेन गुप्त का, 'एडवांस था, मोहम्मद अली का

'कामरेड' था तो मौलाना अबुल कलाम आजाद का 'अल हिलाल' था। मौलाना अब्दुल बारी ने 'हमदम' निकाला था, सर्वेन्ट आफ इण्डिया सोसाइटी ने नागपुर से 'हितवाद'। माखन लाल चतुर्वेदी ने पहले जबलपुर से और फिर खण्डवा से 'कर्मवीर' का प्रकाशन किया और विजय सिंह पथिक ने 'राजस्थान' पत्र का, जो बाद में 'तरूण राजस्थान' हो गया। पूना का 'ज्ञान प्रकाश' और 'इन्दू प्रकाश', लखनऊ का 'एडवोकेट' आदि ऐसे अनेक पत्र ओर पत्रिकाएं थीं, जिनका नाम स्वाधीनता संग्राम से जुड़ा हुआ हैं। कुछ ने पत्रकारों की एक नयी श्रृंखला ही उत्पन्न कर दी जिनमें टी0 प्रकाशम् द्वारा स्थापित मद्रास का 'स्वराज्य' या मूलचन्द अग्रवाल द्वारा स्थापित 'विश्वमित्र' उल्लेखनीय हैं। देशी राज्यों में भी बहुत से समाचार पत्र निकले। यद्यपि उन्हें पड़ोस के अंग्रेजी इलाकों से निकालना ज्यादा सुरक्षित होता। केरल के 'मलयाली मनोरमा' को सरकार का कोपभाजन होना पड़ा और कालीकट का 'मातृभूमि' तो मलयालम भाषा में स्वाधीनता का प्रबल समर्थक था। इसी प्रकार का पत्र कर्नाटक में हुबली में स्थापित 'संयुक्त कर्नाटक' अथवा मद्रास की तेलुगु, आंध्र पत्रिका या 'स्वदेश मित्रम्' जो तमिल में छपता था और उड़िया पत्र समाज का 'असम ट्रिब्यून' और 'नूतन असमिया' थे। अगर राष्ट्रीय आन्दोलन के समय ये सभी पत्र उपलब्ध न होते, तो हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन का स्वरूप किस प्रकार का होता, इसका अनुमान लगाना अत्यन्त कठिन हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– बॉम्बे क्रोनिकल के सम्पादक कौन थे?

प्रश्न 2– 'जन्म भूमि' किस भाषा का अखबार था?

प्रश्न 3– न्यूटाइम्स कहां से निकलताा था और इसके संपादक कौन थे?

4.6 सारांश :

भारत में आधुनिक पत्रकारिता का जन्म ईस्ट इण्डिया कंपनी के राज के दौरान हुआ था। 1857 में आजादी की पहली लड़ाई से पूर्व के युग में भारतीय पत्रकारिता सूचनाओं के संवाहक के रूप में उभर रही थी। कंपनी के अंग्रेज अधिकारियों के भ्रष्टाचार आदि के बारे में कुछ समाचार प्रकाशित हुए भी तो उन्हें लिखने और छापने वालों को कंपनी अधिकारियों के गुस्से का शिकार बनना पड़ता था। फिर भी 1857 की आजादी की पहली लड़ाई के प्रस्फुटन में तत्कालीन भारतीय पत्रकारिता ने अहम प्रभाव डाला था। 1857 की क्रांति के दौरान ही पहले हिन्दी दैनिक समाचार 'सुधावर्षण' और ऊर्दू, फारसी, के अखबार 'दूरबीन' और सुल्तान उल अखबार के विरूद्ध राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। इसी के बाद अखबारों पर अंकुश लगाने के लिए ब्रिटिश सरकार ने कई तरह के प्रतिबन्ध लगा दिए। लेकिन भारतीय पत्रकारिता की विकास यात्रा इससे जरा भी प्रभावित नहीं हुई। उल्टे उसमें और स्पष्टता, अधिक तीखापन और आक्रामकता आने लगी। हिन्दू पैट्रियट इस दौर का एक प्रमुख अखवार था जिसने सरकारी ज्यादतियों के खिलाफ खुल कर आवाज उठाई। 'केसरी' और 'मराठा' भी इस काम में पीछे नहीं थे।

'युगान्तर' जैसे अखबारों ने आजादी के क्रांतिकारी आन्दोलन की वकालत की और 'गदर', 'बन्देमातरम' आदि ने इस मशाल को आगे बढ़ाया। हिन्दी पत्रकारिता का भारतेन्दु युग इस मामले में अधिक महत्वपूर्ण रहा। ऐसा इसलिए भी हुआ कि इस युग तक हिन्दी क्षेत्र में शिक्षा का प्रचार शुरू हो चुका था और अखबारों को पढ़ सकने वाले लोगों की तादाद भी बढ़ने लगी थी। भारतीय राजनीति में गांधी जी का प्रभाव बढ़ने के साथ–साथ स्थानीय नेतृत्व के उभार के कारण छोटे–बड़े शहरों से भी अखबार निकलने लगे थे और ऐतिहासिक संदर्भ में देखें तो इन सब ने अपने–अपने स्तर पर समाज को जागरूक करने में कसर नहीं छोड़ी थी। भारत की प्रान्तीय पत्रकारिता भी हिन्दी पत्रकारिता की तरह अपने–अपने क्षेत्रों में राष्ट्रीयता और आजादी की लड़ाई की ध्वज वाहक बन गई थी। इस पृष्ठभूमि का सहज विश्लेषण करने से एक बात तो साफ होती है कि भारत की आजादी के संघर्ष की सफलता पत्रकारिता के सहयोग के बिना सम्भव ही नहीं थी।

4.7 शब्दावली :

बाम्बे समाचार : बाम्बे समाचार देश का सबसे पुराना अखबार है। यह एक गुजराती दैनिक है और इसका प्रकाशन 1822 में शुरू हुआ था। इसका प्रकाशन द बाम्बे समाचार प्राइवेट लिमिटेड नामक प्रकाशन गृह द्वारा किया जाता है और आज भी यह एक लोकप्रिय अखबार है।

बेनेट कोलमेन लिमिटेड : यह देश का एक प्रमुख प्रकाशन समूह है। 1838 से अनवरत प्रकाशित टाइम्स ऑफ इण्डिया के अलावा हिन्दी दैनिक नवभारत टाइम्स, विजनेस दैनिक इकोनोमिक टाइम्स इस समूह के प्रमुख अखबार हैं। एफ0 एम0 रेडियो और टेलीविजन न्यूज में भी दखल रखने वाले इस प्रकाशन समूह ने एक दौर में हिन्दी को दिनमान और धर्मयुग जैसी पत्रिकाएं भी दी थीं।

नीला दर्पण : नीला दर्पण मनमोहन घोष का लिखा एक नाटक था जो 1861 में कलकत्ता से प्रकाशित 'हिन्दू पेट्रियट' में प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशन के बाद नील की खेती करने वाले अंग्रेज व्यापारियों के खिलाफ एक आन्दोलन शुरू हो गया और नील कमीशन की नियुक्ति हुई। नील की खेती खत्म करने में इस नाटक की विशेष भूमिका रही थी।

केसरी : केसरी आजादी की लड़ाई के आरम्भिक दौर का एक महत्वपूर्ण समाचार पत्र था। बालगंगाधर तिलक और विष्णु शास्त्री चिपलूणकर ने मिलकर इसे 1जनवरी 1881 को मराठी साप्ताहिक के रूप में शुरू किया था। इसी प्रकाशन से अंग्रेजी में मराठा साप्ताहिक भी निकाला जाता था। केसरी आपने तीखे और ब्रिटिश राज विरोधी लेखों के लिए जाना जाता था। 1908 में तिलक को केसरी के लेखों के लिए 6 वर्ष के कालेपानी की सजा दी गई थीं बाद में नागपुर और बनारस से केसरी का हिन्दी संस्करण भी निकला था।

सांझ वर्तमान : सांझ वर्तमान एक गुजराती दैनिक अखबार था, जिसके सम्पादक सांवलदास गांधी थे। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौर में इस अखबार ने जूनागढ़ के नवाब के विरूद्ध मोर्चा शुरू किया था और जूनागढ़ के भारत में विलय के पीछे इस अखबार की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

गणेश शंकर विद्यार्थी : बाल कृष्ण भट्ट के शिष्य गणेश शंकर विद्यार्थी स्वाधीनता के लिए कुर्बान हो जाने वाले पत्रकारों में एक है। 1913 में उन्होंने कानपुर से प्रताप का प्रकाशन शुरू किया था। अपने अग्रलेखों और टिप्पणियों के कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। 1931 में रामपुर में दंगाइयों की हिंसा में उन्होंने अपनी जान कुर्बान कर दी।

4.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

उत्तर 4.3

उत्तर 1 – 1836 में सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला समाचार पत्र समाचार चन्द्रिका था, जिसकी कुल 250 प्रतियां प्रकाशित होती थी।

उत्तर 2 – बंगदूत की 70 से भी कम प्रतियां छपती थी।

उत्तर 3 – समाचार सुधावर्षण पर 1857 में मुकदमा इस आरोप में चला था कि इस समाचार पत्र ने बहादुर शाह जफर का एक फरमान छापा था, जिसमें लोगों से आह्वान किया गया था कि वे अंग्रेजों को भारत से बाहर भगा दें।

उत्तर 4 – अंग्रेजी साम्राज्य के खिलाफ संर्घष करने वाला मुख्य समाचार पत्र 'हिन्दू पेट्रियट' का प्रकाशन सन् 1853 में गिरीश चन्द्र घोष के सम्पादन में शुरू हुआ था।

उत्तर 4.4

उत्तर 1 – 'युगांतर' अन्नीसवीं सदी के आरम्भ में अरविन्द घोष के भाई वाशीन्दू कुमार घोष द्वारा निकाला गया एक क्रांतिकारी अखबार था।

उत्तर 2 – लाला हरदयाल द्वारा निकाला गया गदर हिन्दी, उर्दू, पंजाबी, गुजराती, मराठी, बांग्ला और अंग्रेजी में एक साथ प्रकाशित होता था।

उत्तर 3 – 'कविवचन सुधा' सन् 1867 ईसवीं में प्रकाशित हुई थी।

उत्तर 4.5

उत्तर 1 – बॉम्बे क्रोनिकल के सम्पादक बी जी होर्नो मैन थे।

उत्तर 2– 'जन्म भूमि' गुजराती भाषा का अखबार था।

उत्तर 3– सिंध से प्रकाशित होने वाले न्यूटाइम्स के सम्पादक साधु टी0 एल0 वासवानी थे।

4.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अरविन्द मोहन : पत्रकार और पत्रकारिता प्रशिक्षण, सामयिक प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली– 110002 ए (2005)।

2. चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद : हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास।

3. तिवारी, डॉ0 अर्जुन : स्वतन्त्रता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता।

4. मेहता, आलोक : पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, (2005)।

5. मिश्र, अखिलेश : पत्रकारिताः मिशन से मीडिया तक, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली – 110002, (2004)।

6. वैदिक, वेद प्रताप : हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।

7. सकलानी, शक्ति प्रसाद : उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास, उत्तरा प्रकाशन, टी कैम्प, रूद्रपुर – 263153, (2004)।

8. शर्मा, डॉ0 रामविलास : भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा।

4.10 सहायक उपयोगी पाठय सामग्री :

1. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, डॉ0 संजीव भानावत, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर।

2. समाचार पत्रों का इतिहास, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी।

4.11 निबन्धात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1– भारत के स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी पत्रकारिता का क्या योगदान रहा विवेचना कीजिए?

प्रश्न 2– स्वतंत्रता के बाद हिन्दी पत्रकारिता का उद्देश्य क्या था? एक निबन्ध लिखिए।

प्रश्न 3– स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता में क्या बदलाव आए हैं? विस्तार से लिखिए।

प्रश्न 4– 1836 में भारतीय पत्रकारिता की क्या स्थिति थी? कौन–कौन प्रमुख समाचार पत्र उस समय प्रकाशित हो रहे थे और उनकी प्रसार संख्या क्या थी?

प्रश्न 5– आजादी से पूर्व प्रांतीय पत्रकारिता पर एक लेख लिखिए?

इकाई –05

स्वतंत्रता के बाद भारतीय पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 स्वतंत्रता के बाद भारतीय पत्रकारिता

5.4 प्रमुख प्रकाशन गृह और उनकी पत्रिकाएं

5.5 सारांश

5.6 शब्दावली

5.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

5.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

5.9 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना :

प्रश्नपत्र के पिछली इकाईयों में पत्रकारिता का परिचय से लेकर विश्व व भारत में पत्रकारिता के इतिहास के साथ–साथ भारत में स्वतन्त्रता से पूर्व पत्रकारिता का अध्ययन किया गया है। जिससे छात्र पत्रकारिता को गहराई से जानने के साथ–साथ भारतीय पत्रकारिता को मूलरूप से समझ सकें।

आजादी के बाद पत्रकारिता का दायित्व और जिम्मेदारियां दोनों ही बदल गईं। 1947 से पहले जहां उसके पास एक महान उद्देश्य था और मोटे तौर पर आजादी के उस महान उद्देश्य के लिए सारी भारतीय पत्रकारिता के सुर एक जैसे थे वहीं आजादी के बाद क्षेत्रीय और भाषाई विभिन्नताओं के सुर अलग–अलग होने लगे। इस इकाई में स्वन्त्रता के बाद भारतीय पत्रकारिता के स्वरूप व उद्देश्यों में आये बदलाओं का अध्ययन किया गया है।

स्वतंत्रता के बाद पत्रकारिता में एका–एक बदलाव आया और आज डिजिटल युग की पत्रकारिता एक क्रांतिकारी पत्रकारिता कम और व्यावसायिक पत्रकारिता अधिक बन गयी है।

5.2 उद्देश्य :

स्वतंत्रता के बाद तथा मौजूदा दौर में भारतीय पत्रकारिता की स्थिति में कई बदलाव आये हैं वह पत्रकारिता के आयामों को लेकर हो या पत्रकारिता के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति के आने से।

स्वन्त्रता के बाद भारतीय संविधान का निर्माण हुआ। यहां के नागरिक को स्वन्त्र रूप से जीने व अपने अधिकारों को समझने, जानने व मांगने की स्वतन्त्रता मिली साथ ही अपने विचारों को बोलने व अभिव्यक्ति की स्वन्त्रता भी मिली। इस अधिकार के मिलते ही पत्रकारिता ने स्वन्त्रत रूप से पत्रकारिता के उद्देश्यों को समझा और उनका निर्वाह किया आज यही कारण है कि भारत में पत्रकारिता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण क्रांति आयी जिससे आज यहां पत्रकारिता के कई आयाम भी अस्तित्व में आये। और आज भारतीय पत्रकारिता स्वन्त्रत रूप से बिना किसी दबाव व डर के अपने उत्तरदायित्वों को पूरा कर रही है।

इस इकाई से छात्र जान सकेंगे कि –

- आाजादी के बाद भारतीय पत्रकारिता का किस तरह विस्तार हुआ है?
- स्वन्त्रता प्राप्ति के बाद अभिव्यक्ति एवं बोलने के अधिकार के मिलने से भारतीय पत्रकारिता में किस तरह की क्रांति आई।
- आजादी के बाद भारत में कितने पत्र समूह अस्तित्व में आये और इन पत्रसमूहों के अन्तर्गत कितने पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है।

5.3 स्वतंत्रता के बाद भारत में पत्रकारिता :

राजनैतिक पराधीनता के युग में हिन्दी पत्रकारिता ने जिस साहस और संघर्ष क्षमता का परिचय दिया वह प्रशंसनीय है। जनमत निर्माण तथा जनशिक्षण की दिशा में हिन्दी पत्रों तथा पत्रकारों ने जिस मिशन भाव से कार्य किया वह मिशन भाव स्वतन्त्र भारत में घीरे–धीरे लुप्त होता चला गया और उसकी जगह व्यावसायिकता का भाव पैदा होने लगा। स्वतन्त्रता के पूर्व हिन्दी पत्रकारिता जिन उद्देश्यों और लक्ष्यों के लिए समर्पित थी वह भी अब बदल गए थे। पहले पत्रकारिता का मूल लक्ष्य था देश की आजादी का। स्वतन्त्र भारत में पत्रकारिता का लक्ष्य हो गया देश के आर्थिक–सामाजिक विकास में जन–जन की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करना। राष्ट्र ने लोकतन्त्रात्मक शासन पद्धति को स्वीकार किया। यह पद्धति तभी सफल हो सकती है जब आम जन इस शासन पद्धति से सीधे जुड़े। इस प्रकार सत्ता और जनता के मध्य एक कड़ी के रूप में कार्य करने का भारी दायित्व आजादी के बाद की पत्रकारिता के कन्धों पर आ पड़ा।

1947 में स्वतंत्रता मिली और उसके साथ ही पत्रकारिता का नया संघर्षमय दौर शुरू हो गया। आजादी मिलने के बाद नई चुनौतियां सामने आईं जिनका सामना पत्रकारिता को भी करना पड़ा। स्वातंत्रयोत्तर भारत का नेहरु युग राष्ट्रीय–सामाजिक विकास के लिए नई जमीन तलाश रहा था। भारतीय संविधान ने सबको अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की, जिससे सूचना पाने और

देने का अधिकार सबको मिल गया। इन परिस्थितियों में हिंदी पत्रकारिता का तेजी से विकास हुआ। हिंदी प्रदेशों में साक्षरता दर बढ़ी और इस वजह से समाचार पत्रों की प्रसार संख्या भी बढ़ी। समाचार पत्र तकनीक की दृष्टि से भी उन्नत हुए और मुद्रण की स्थिति भी पहले अच्छी हुई। कुछ पूंजीपति पत्रकारिता के क्षेत्र में आगे आए। इससे हिंदी पत्रकारिता का विकास हुआ लेकिन धीरे धीरे लोगों ने इसका गलत फायदा उठाया और भ्रष्टाचार बढ़ने लगा। इमरजैंसी के दौर में एक बार फिर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर अंकुश लगा। 1977 में इमरजैंसी खतम होते ही फिर से पूंजीपतियों और राजनीति का खेल शुरू हो गया। सनसनीखेज खबरों की वजह से विश्लेषणात्मक खबरें कम लिखी जाने लगी। आठवें दशक तक आते–आते अफसर और मंत्रियों के बीच लेनदेन की खबरें आने लगी। लेकिन इसी दौर में धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी, रघुवीर सहाय, राजेंद्र माथुर, सुरेन्द्र प्रताप सिंह और कमलेश्वर जैसे संपादक भी आए जिन्होने पूंजीनियंत्रित समाचार पत्रों को विकृत होने से बचाया। उन्हें सत्ता का खिलौना नहीं बनने दिया।

इस दौर का एक और सकारात्मक पहलू यह भी है कि टैक्नोलॉजी के जरिए समाचार पत्रों का रंगरुप ही बदल गया। खबरें पहले से ज्यादा तेजी से, आकर्षक और कलात्मक तरीके से प्रस्तुत की जाने लगी। कम्प्यूटर के उपयोग ने पत्रकारिता की दुनिया में क्राति ही कर दी। साजसज्जा पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा, लेकिन यह दुर्भाग्य है कि आज की पत्रकारिता पाठकों के भरोसे न चलकर विज्ञापन के भरोसे चल रही है। विषय की दृष्टि से भी काफी बदलाव आ गया है। अब धर्म और टैक्नोलॉजी से लेकर स्वास्थ्य और श्रृंगार, कानून से लेकर मनोरंजन तक हर क्षेत्र की खबरें समाचार पत्रों में होती हैं। खबरों के साथ फीचर भी होते हैं।

पत्रकारिता के उद्देश्यों में बदलाव के साथ इसके स्वरूप में भी परिवर्तन होने लगा हैं। अब अधिकांश पत्र–पत्रिकाएं कुछ 'बड़े' प्रकाशन गृहों तक ही सिमट कर रह गईं। एक लम्बी अवधि तक अंग्रेजी भाषा के पत्रों का प्रभुत्व रहा। हिन्दी पत्रकारिता को अनुवाद प्रणाली पर निर्भर रहना पड़ा। सम्पादक और अन्य पत्रकार वेतन भोगी होने लगे और 'सेवा के आदर्श' की बजाय अब 'व्यक्ति हित साधना' को श्रेय मिलने लगा। प्रत्येक कार्य व्यावसायिकता से संचालित होने लगा। पीत पत्रकारिता भी अपना सिर उठाने लगी।

इतना सब–कुछ होने के बाद भी पत्र–पत्रिकाओं की संख्या में तेजी से वृद्धि होने लगी। समाचार संकलन से लेकर समाचारों के प्रस्तुतीकरण, मुद्रण तथा साजसज्जा आदि सभी क्षेत्रों में आधुनिकता का समावेश हुआ है। स्वतन्त्र भारत में पत्रकारिता के क्षेत्र में विविध जानकारी उपलब्ध कराने की दृष्टि से 1953 में गठित प्रथम प्रेस आयोग की सिफारिशों के आधार पर जुलाई 1956 को रजिस्ट्रार ऑफ न्यूज पेपर्स कार्यालय (आर0 एन0 आई0) की स्थापना की गई इसके माध्यम से सन् 1956 से लगातार भारत में प्रेस स्थिति की विशद् जानकारी एकत्रित की जा रही हैं। भारत में प्रेस की स्थिति के अध्ययन के लिए दो प्रेस आयोगों की भी स्थापना की गई हैं। इन आयोगों ने अनेक महत्त्वपूर्ण सिफारिशें की हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– इमरजेंसी के बाद के कुछ प्रमुख महत्वपूर्ण हिन्दी सम्पादकों के नाम बताइए ?

प्रश्न 2– स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता का सबसे सकारात्मक पहलू क्या है?

प्रश्न 3– उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाले किन्ही चार दैनिक समाचार पत्रों के नाम लिखिए?

प्रश्न 4 – आर्थिक पत्रकारिता की किसी एक मुख्य पत्रिका का नाम लिखिए?

5.4 कुछ प्रमुख भारतीय प्रकाशन गृह और उनके प्रकाशन :

आजादी के पूर्व भारत में अंग्रेजों को बाहर निकालाना ही पत्रकारिता का मिशन था। तब यह कहावत भी प्रचलित हुई थी कि ''जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो''। और इसी मिशन के चलते भारत आजाद भी हुआ। आज 'प्रेस' की महत्ता पूरे समाज के सामने है। वर्तमान में समाचार पत्र व पत्रिकाओं की भारी भीड़ है। पूरे देश से हजारों पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही हैं। हर विषय, हर वर्ग और हर नीति का इसमें समावेश है। स्वतन्त्रता के बाद वैसे भी देश को गति एवं दिशा देने का भार पत्रकारों के कंधे पर आ गया। राष्ट्र के हर क्षेत्र के समुचित विकास के लिए सहयोगी बनना पत्रकारों का दायित्व बन गया। अंग्रेजी शासन के समाप्त होने के साथ ही समस्त अंग्रेजी समाचार पत्रों के संस्थान भारतीय औद्योगिक प्रतिष्ठानों के हाथों में आ गए। अब समाचार पत्र–पत्रिकाएं उद्योग की तरह चलने लगे हैं। इससे एक नवीन स्थिति यह पनपी है कि जहां पहले पत्रकारों का एक वर्ग ही सम्पादक व प्रकाशक था वह धीरे–धीरे गायब होने लगा। अब संचालक कोई अलग व्यक्ति है, सम्पादक कोई अलग और पत्रकार वेतनभोगी कर्मचारी। हालांकि अब पत्रों की प्रसार संख्या बढ़ी है। मुद्रण की उत्त्म व्यवस्था भी है, नए–नए विषयों पर पत्रिकाएं निकल रही हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् दैनिक पत्रों की संख्या तेजी से बढ़ी और उनेक प्रतिष्ठित समूहों जैसे राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, नवभारत टइम्स, पंजाब केसरी, हिन्दुस्तान टाइम्स, अमर उजाला, दैनिक जागरण, द ट्रिब्यून, टाइम्स ऑफ इण्डिया आदि समाचार के कई नगरों से संस्करण निकलने लगे हैं। पर तकनीकी क्षेत्र के विकास, पूंजीवाद के प्रभाव, ओछी व घिनौनी राजनीति, विज्ञान के बढ़ते कदमों के कारण पत्रकारिता के क्षेत्र में स्पर्धा व अनैतिक मूल्यों का बोलबाला बढ़ गया है। पत्रकारिता पहले की तरह 'मिशन' नही रही वह अब एक उद्योग में बदल गई है। पत्रकारिता पर धर्म, अर्थ, राजनीति, जनता आदि के कई प्रभाव अपना असर दिखाने लगे हैं। चूंकि पत्र–पत्रिकाएं बिना विज्ञापनों के नहीं चल सकती हैं। इसलिए विज्ञापन इन पर हावी हो रहे हैं। मानवीय कल्याण एवं लोकमंगल का कारक पत्र अब लाभ–हानि के सौदे वाला उद्योग है।

दूसरे दृष्टिकोण से देखें तो आज पत्र–पत्रिकाओं की पाठक–संख्या में भरपूर वृद्धि हुई है। आज अनेक विषयों, अनुशासनों, विधाओं की पत्र–पत्रिकाओं की भरमार है। इन सभी में युगीन चेतना दिखाई देती है। भ्रष्टाचार, पक्षपात, सत्ता व राजनीति का दुरूपयोग, गरीबों की आवाज, सज की विजय जैसे प्रसंग इन सभी की सुर्खियां होते हैं। लेखन, सम्पादन, मुद्रण व चित्रों की प्रस्तुति में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। हिन्दी का प्रयोग उसके मानक रूप में होने लगा है। पत्र–पत्रिकाओं का स्वरूप चाहे कुछ भी हो पर उसमें सभी वर्ग के पाठकों का ध्यान रखा जाने लगा है। समाचार, साहित्य, धर्म–दर्शन, महिलाएं, प्रकृति, बच्चे, उद्योग, खेल, सूचना, संगीत आदि के स्तम्भ प्रायः हर पत्र–पत्रिका में उपलब्ध हैं।

भारत में समाचार प्रकाशन का व्यवसाय अब काफी पुराना हो गया है। देश में 41 मीडिया संस्थान ऐसे हैं जो अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर चुके हैं। वर्तमान में द बॉम्बे समाचार प्राइवेट लिमिटेड देश का सबसे पुराना प्रकाशन समूह है जो अब भी सक्रिय है। 1822 में मुम्बई से बॉम्बे समाचार नामक गुजराती दैनिक के प्रकाशन से इसकी शुरूआत हुई थी। बॉम्बे समाचार इस समय देश का सबसे पुराना अखबार है। 1875 से ही अंग्रेजी दैनिक स्ट्रेटसमैन का प्रकाशन कर रहा द स्ट्रेटसमैन पब्लिक लिमिटेड़ देश का एक दूसरा सबसे पुराना प्रकाशन समूह है जो अब भी स्ट्टेसमैन का प्रकाशन कर रहा है। गुजराती दैनिक गुजरात समाचार को 1932 से प्रकाशित कर रहा लोक प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड देश का एक अन्य पुराना प्रकाशन समूह है।

देश में दैनिक समाचार पत्र के साथ पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन से जुड़े कुछ प्रमुख प्रकाशन समूह निम्नलिखित हैं–

1. बेनट कॉलमेन एण्ड कम्पनी

टाइम्स ऑफ इंडिया (अंग्रेजी दैनिक, 1838), इकोनोमिक टाइम्स (अंग्रेजी दैनिक, 1961), नवभारत टाइम्स (हिन्दी दैनिक, 1950), महाराष्ट्र टाइम्स (मराठी दैनिक, 1972), सांध्य टाइम्स (हिन्दी दैनिक, 1970), टाइम्स ऑफ इंडिया (गुजराती दैनिक, 1989), फेमिना (अंग्रेजी–हिन्दी महिला पत्रिका), टाइम्स नाऊ (अंग्रेजी न्यूज चैनल)।

2. इंडियन एक्सप्रेस समूह

लोकसत्ता (मराठी दैनिक, 1948), इंडियन एक्सप्रेस (अंग्रेजी दैनिक, 1953), फाइनेंशियल एक्सप्रेस (अंग्रेजी दैनिक, 1977), लोक प्रभा (मराठी साप्ताहिक, 1974), जनसत्ता (हिन्दी दैनिक, 1983), समकालीन (गुजराती दैनिक, 1983), स्क्रीन (अंग्रेजी साप्ताहिक, 1950), दिनामनि (तमिल दैनिक, 1957)

3. आनन्द बाजार पत्रिका समूह

आनन्द बाजार पत्रिका (बांग्ला दैनिक, 1920), बिजनेस स्टैण्डर्ड (अंग्रेजी दैनिक 1976), टेलीग्राफ (अंग्रेजी दैनिक, 1980), संडे (अंग्रेजी साप्ताहिक 1979), आनन्द मेला (बांग्ला पाक्षिक, 1975), आनन्द कोष (बांग्ला पाक्षिक, 1985), स्पोर्ट्स वर्ल्ड (अंग्रेजी साप्ताहिक, 1978), बिजनेस वर्ल्ड (अंग्रेजी पाक्षिक 1951)

4. मलयालम मनोरमा समूह

मलयालम मनोरमा (दैनिक, 1957), द वीक (अंग्रेजी दैनिक, 1982), मलयालम मनोरमा (मलयालम साप्ताहिक, 1951), मलयालम मनोरमा (वार्षिक) हिन्दी, अंग्रेजी और मलयालम।

5. अमृत बाजार पत्रिका समूह

अमृत बाजार पत्रिका (अंग्रेजी दैनिक, 1868), जुगान्तर (बांग्ला दैनिक, 1937), नारदन इंडिया पत्रिका (अंग्रेजी दैनिक, 1959), (हिन्दी दैनिक, 1978)

6. हिन्दुस्तान टाइम्स एण्ड एलाइड प्रकाशन

हिन्दुस्तान टाइम्स (अंग्रेजी दैनिक, 1924), हिन्दुस्तान (हिन्दी दैनिक, 1936), नंदन (हिन्दी मासिक, 1964), कादम्बिनी (हिन्दी मासिक, 1960)

7. हिन्द समाचार समूह

हिन्द समाचार (उर्दू दैनिक, 1940), पंजाब केसरी (हिन्दी दैनिक, 1965) तथा पंजाबी ट्रिब्यून।

8. मातृभूमि प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग कम्पनी

मातृभूमि डेली (मलयालम दैनिक, 1962), चित्रभूमि (मलयालम साप्ताहिक, 1982), गृहलक्ष्मी (मलयालम मासिक, 1979)

9. कस्तूरी एण्ड संस लिमिटेड

द हिन्दू (अंग्रेजी दैनिक, 1878), स्पोर्ट्स स्टार (अंग्रेजी साप्ताहिक, 1978), फ्रंटलाइन (अंग्रेजी पाक्षिक), इण्डियन क्रिकेट (क्रिकेट वार्षिकी)।

10. द ट्रिब्यून ट्रस्ट

द ट्रिब्यून (अंग्रेजी दैनिक 1957), ट्रिब्यून (हिन्दी दैनिक, 1978), ट्रिब्यून (पंजाबी दैनिक 1978)

11. सौराष्ट्र ट्रस्ट

जन्म भूमि (गुजराती दैनिक, 1934), जन्मभूमि प्रवासी (गुजराती दैनिक, 1939), फुलछाव (गुजराती दैनिक 1952), कच्छमित्र (गुजराती साप्ताहिक 1957), व्यापार (सप्ताह में दो बार, गुजराती, 1948)

12. संदेश लिमिटेड

संदेश (गुजराती दैनिक, 1923), श्री (गुजाराती साप्ताहिक, 1962), धर्म संदेश (गुजराती पाक्षिक, 1965)

13. राजस्थान पत्रिका समूह

राजस्थान पत्रिका (हिन्दी दैनिक, 1956), इतवारी पत्रिका (हिन्दी साप्ताहिक, 1974), राजस्थान पत्रिका (अंग्रेजी दैनिक, 1984), बालहंस (हिन्दी पाक्षिक, 1980)

14. द न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिकेशन पब्लिक लिमिटेड–

इंडिया नेशन (अंग्रेजी दैनिक, 1930), आर्यावर्त (हिन्दी दैनिक, 1940)

15. लिविंग मीडिया इण्डिया लिमिटेड – इण्डिया टुडे (बहुभाषी समाचार पत्रिका)

(अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल, तेलगू और मलयालम समाचार पत्रिका) मेल टुडे (अंग्रेजी, दैनिक) कास्मोपालिटन अंग्रेजी फैशन और लाइफ स्टाइल पत्र गुडहाउस कीपिंग (अंग्रेजी पत्रिका) मैन्स हल्थ (अंग्रेजी स्वास्थ्य पत्रिका)

16. जागरण समूह

दैनिक जागरण सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला हिन्दी दैनिक, आर्य नेक्स्ट (हिग्लिश टेबुलाइट दैनिक) सखी (हिन्दी महिला पत्रिका), जागरण वार्षिकी(हिन्दी वार्षिकी)।

17. डी बी कार्प लिमिटेड

दैनिक भाष्कर (हिन्दी दैनिक), दिव्य भाष्कर (गुजराती दैनिक), अहा जिन्दगी (मासिक हिन्दी पत्रिका), डी एन ए (अंग्रेजी दैनिक)

इस प्रकार समूहों के अतिरिक्त देश में एक दर्जन से अधिक ऐसे बड़े प्रकाशन समूह हैं जो किसी दैनिक का प्रकाशन तो नहीं कर रहे लेकिन उनकी पत्रिकाओं का नाम और लोकप्रियता किसी से कम नहीं है। इनमें सरिता, मुक्ता, सरस सलिल, चम्पक और गृह शोभा आदि का प्रकाशन करने वाली दिल्ली बुक कम्पनी प्रमुख हैं।

देश के विभिन्न राज्यों से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी दैनिक इस प्रकार हैं–

1. बिहार– आर्यावर्त, हिन्दुस्तान, आज, रांची एक्सप्रेस, प्रभात खबर।

2. मध्य प्रदेश– नई दुनिया, नवभारत टाइम्स, चौथा संसार, दैनिक भास्कर, देशबन्धु।

3. हरियाणा– आज समाज, पंजाब केसरी।

4. महाराष्ट्र– नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, आज का आनन्द।

5. पंजाब– पंजाब केसरी, दैनिक ट्रिब्यून।

6. राजस्थान– राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, दैनिक नवज्योति, जय राजस्थान।

7. उत्तर प्रदेश– जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान, आज, राष्ट्रीय सहारा, स्वतन्त्र भारत।

8. पश्चिम बंगाल– विश्वमित्र, सन्मार्ग, जनसत्ता।

9. दिल्ली– नवभारत टाइम्स, हिन्दुस्तान, पंजाब केसरी, राष्ट्रीय सहारा, जनसत्ता, आज समाज, वीर अर्जुन, जागरण।

10. हिमाचल प्रदेश– उदय भारत।

11. उत्तराखण्ड – अमर उजाला, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, राष्ट्रीय सहारा, शाह टाइम्स, उत्तर उजाला।

स्वतन्त्रता के बाद हिन्दी पत्रकारिता का व्यापक प्रसार हुआ है। राजनैतिक समाचारों के विवरण मात्र से हटकर साहित्य–संस्कृति तथा ज्ञान–विज्ञान के विविध विषयों की व्यापकता को हिन्दी पत्रकारिता ने समेटने का प्रयास किया हैं। तकनीकी विषयों पर अवश्य ही हिन्दी पत्रकारिता अभी प्रारम्भिक अवस्था में हैं, किन्तु अन्य सभी क्षेत्रों में उसने अंग्रेजी सहित सभी भाषाओं को पीछे छोड़ दिया हैं।

स्वतंत्र भारत में हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं की सिर्फ संख्यात्मक वृद्धि ही नहीं हुई वरन् हिन्दी पत्रकारिता ने समाज निर्माण तथा राष्ट्र निर्माण के लिए भी आधार भूमि तैयार करने में पहल की हैं। जन–जन की भावनाओं को हिन्दी पत्रकारिता ने मुखरित किया हैं, सुधारवादी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित किया हैं, हिन्दी भाषा के प्रचार–प्रसार के दायित्व का निर्वाह किया हैं, साहित्यिक सांस्कृतिक अभिरूचि का विकास किया है तथा राष्ट्रीयता की भावनाओं का विकास किया है।

31 मार्च, 2007 तक देश में पंजीकृत पत्र–पत्रिकाओं की कुल संख्या 6,54,032 थी। जिसमें 7131 दैनिक, 22,116 साप्ताहिक, 8,547 पाक्षिक, 19,456 मासिक और 4,470 त्रेमासिक थे। पंजीकरण के आंकड़ों के अनुसार देश में कुल 123 भाषाओं और बोलियों में पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं जिनमे सबसे अधिक 9885 पत्र–पत्रिकाएं उत्तर प्रदेश से निकलती हैं।

2010 की दूसरी तिमाही के आंकड़ों के अनुसार दैनिक जागरण देश का सबसे अधिक प्रसार संख्या वाला अखबार था और इसकी प्रसार संख्या सभी संस्करणों को मिलाकर एक करोड़, उनसठ लाख, पच्चीस हजार थी। दूसरे स्थान पर दैनिक भास्कर था जिसकी प्रसार संख्या एक करोड़, तैंतीस लाख, तीन हजार थी। हिन्दुस्तान की प्रसार संख्या एक करोड़, एक लाख, तितालीस हजार थी और यह तीसरे स्थान पर था। चौथे स्थान पर मलयालयी मनोरमा था और इसकी प्रसार संख्या अठानबे लाख, इकतालीस हजार थी। अमर उजाला दैनिक के सभी संस्करणों की प्रसार संख्या चौरासी लाख, सत्रह हजार थी और यह पांचवें स्थान पर था। छठे स्थान पर रहे लोकमत की प्रसार संख्या चौहतर लाख दो हजार थी। प्रसार संख्या के लिहाज से सातवें स्थान पर दैनिक तांथी था और इसके सभी संस्करणों की प्रसार संख्या भी चोहत्तर लाख दो हजार थी। द टाइम्स ऑफ इंडिया के सभी संस्करणों की प्रसार संख्या सत्तर लाख अठासी हजार थी और यह आठवें स्थान पर था। राजस्थान पत्रिका के सभी संस्करणों की प्रसार संख्या उनहतर लाख थी और यह नवें स्थान पर था। मातृभूमि की प्रसार संख्या पैंसठ लाख छियासठ हजार थी और यह दसवें स्थान पर था। आनंद बाजार पत्रिका की प्रसार संख्या पैंसठ लाख उनतालीस हजार थी और यह ग्यारहवें स्थान पर थी। इनाडु की प्रसार संख्या इकसठ लाख चौवन हजार थी और यह बारहवें स्थान पर था। गुजरात समाचार की प्रसार संख्या बावन लाख अठारह हजार थी और यह तेरहवें स्थान पर था। दिनाकरन चौदहवें स्थान पर था और इसकी प्रसार संख्या पचास लाख इकतालीस हजार थी। साक्षी की प्रसार संख्या छियालीस लाख अड़तीस हजार थी और यह पंद्रहवें स्थान पर था। सोलहवें स्थान पर डेली सकाल था और इसकी प्रसार संख्या बयालीस लाख दो हजार थी। पंजाब केसरी सत्रहवें स्थान पर था और इसकी प्रसार संख्या पैंतीस लाख इकसठ हजार थी। चौतीस लाख तिरपन हजार की प्रसार संख्या के साथ हिन्दुस्तान टाइम्स अठारहवें स्थान पर था। दिव्य भास्कर की प्रसार संख्या तैंतीस लाख अठासी हजार थी तथा इसका स्थान उनीसवां था। बीसवें स्थान पर विजय कर्नाटक था और इसकी प्रसार संख्या बतीस लाख तिहतर हजार थी।

2010 की दूसरी तिमाही के आंकड़ों के अनुसार वनीता मलयालयी पत्रिका पहले स्थान पर थी और इसकी प्रसार संख्या सताईस लाख इक्यावन हजार थी। सरस सलिल की प्रसार संख्या बीस लाख पैंतालीस हजार थी और यह दूसरे स्थान पर थी। तीसरे स्थान पर रही प्रतियोगिता दर्पण की प्रसार संख्या अठारह लाख तीन हजार थी। इंडिया टुडे ;अंग्रेजीद्ध की प्रसार संख्या सत्रह लाख इकहतर हजार थी और यह चौथे स्थान पर थी। पांचवें स्थान पर इंडिया टुडे ;हिन्दीद्ध थी, जिसकी प्रसार संख्या तेरह लाख एक हजार थी। कुमुदम छठे स्थान पर थी और इसकी प्रसार संख्या बारह लाख तिहतर हजार थी। मेरी सहेली की प्रसार संख्या बारह लाख पैंसठ हजार थी और यह सातवें स्थान पर थी। बलराम पत्रिका आठवें स्थान पर थी और इसकी

प्रसार संख्या बारह लाख इक्कीस हजार थी। साप्ताहिक मलयालया मनोरमा की प्रसार संख्या बारह लाख सत्रह हजार थी और यह नवें स्थान पर थी। गृहशोभा दसवें स्थान पर थी और इसकी प्रसार संख्या ग्यारह लाख इक्यासी हजार थी। गृहलक्ष्मी की प्रसार संख्या ग्यारह लाख साठ हजार थी और यह ग्यारहवें स्थान पर थी। रीडर्स डाइजेस्ट की प्रसार संख्या ग्यारह लाख इक्वायन हजार थी और यह बारहवें स्थान पर थी। दस लाख सत्तासी हजार की प्रसार संख्या के साथ किकेट सम्राट तेरहवें स्थान पर और मातृभूमि आरोग्य मासिक की प्रसार संख्या ग्यारह लाख पैंसठ हजार थी और यह चौदहवें स्थान पर थी। पंद्रहवें स्थान पर आनन्द विकतन थी और इसकी प्रसार संख्या दस लाख तेतालीस हजार थी। जनरल नॉलेज टुडे सोलहवें स्थान पर थी और इसकी प्रसार संख्या नौ लाख तिरसठ हजार थी। कुंगुमम की प्रसार संख्या नौ लाख छह हजार थी और यह सत्रहवें स्थान पर थी। चंपक हिन्दी आठ लाख अड़तालीस हजार की प्रसार संख्या के साथ अठाहरवें स्थान पर थी। मातृभूमि वार्ता की प्रसार संख्या आठ लाख पैंतालीस हजार थी और यह उनीसवें स्थान पर थी। बीसवें स्थान पर निरोगधाम पत्रिका थी जिसकी प्रसार संख्या आठ लाख तिरालीस हजार थी।

हिन्दी के दस प्रमुख समाचार पत्रों की जून, 2010 तक प्रसार की स्थिति पर एक नजर –

नम	सभी संस्करणों की कुल प्रसारण संख्या
दैनिक जागरण	एक करोड़ उनसठ लाख पच्चीस हजार
दैनिक भास्कर	एक करोड़ तैंतीस लाख तीन हजार
हिन्दुस्तान	एक करोड़ एक लाख तैंतालीस हजार
अमर उजाला	चौरासी लाख सत्रह हजार
राजस्थान पत्रिका	उनहतर लाख
पंजाब केसरी	पैंतीस लाख इकसठ हजार
नवभारत टाइम्स	चौबीस लाख पिचहत्तर हजार
नई दुनिया	चौदह लाख आठ हजार
प्रभात खबर	तेरह लाख छियालीस हजार
हरि भूमि	तेरह लाख चौदह हजार

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– कुछ दैनिक समाचार पत्र व पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन समूहों का नाम बताइए?

प्रश्न 2– 31 मार्च, 2007 तक देश में पंजीकृत पत्र–पत्रिकाओं की संख्या बताइए ?

प्रश्न 3– देश में कुल कितनी भाषाओं व बोलियों में पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं ?

प्रश्न 4– उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाले कुछ प्रमुख हिन्दी दैनिक के नाम बताइए ?

5.5 सारांश :

15 अगस्त, 1947 को भारती की आजादी के साथ ही एक नए अध्याय की शुरूआत हुई। 1950 में देश का संविधान बना और लोकतांत्रिक प्रणाली को शासन के लिए स्वीकार किया गया। देश के लिए 'जनता की सरकार, जनता के लिए, जनता द्वारा शासित' पद्धति को अपनाया गया। ऐसी शासन व्यवस्था में देश के हर नागरिक की भागीदारी सीाव है। संविधान के द्वारा मौलिक अधिकारों के रूप में वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता प्रदान की गई है। वह इस शक्ति का सदुपयोग कर देश के हित को नई दिशा दे सकता है।

स्वतन्त्रता के पहले के समाचार–पत्र राष्ट्रीय उद्‌बोधन, सामाजिक सुधार, हिन्दी सेवा, धार्मिक उदारतावाद, अन्याय के विरूद्ध संघर्ष जैसे बड़े लक्ष्यों के साधक थे। तब का पत्रकार देश की आजादी के लिए अलख जगाता था। कुप्रथाओं और कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करता था। इस महत्वपूर्ण मिशन को पूरा करने के लिए वह प्रखर जुझारू मानसिकता तथा आत्मबल द्वारा हिन्दी पत्रकारिता को सक्रिय व जीवित रखने हेतु प्रयासरत था। तब पत्रकारिता के मापदंडों में निष्ठा का तत्व सर्वोपरि था। न उसमें पद का कोई गरूर था न वेतन का लालच। न ही कोई ग्लैमर या व्यक्तिगत हित उस पर हावी हो सकता था।

आजादी के बाद पत्रकारिता की दशा और दिशा दोनों में ही बदलाव आया। आजाद भारत के मुद्‌दे नए थे, उनका लक्ष्य नया था, कहीं क्षेत्रीयता तो कहीं भाषाई सवाल नए सामाजिक समीकरण बना रहे थे। इस सब का असर पत्रकारिता पर भी पड़ा और पत्र–पत्रिकाओं की विषय वस्तु भी उसी के हिसाब से परिवर्तित होने लगी। तकनीकी विकास ने भी पत्रकारिता को नए आयामों तक पहुंचा दिया। छपे हुए शब्दों की पत्रकारिता, आवाज के जरिए रोडियो और फिर ध्वनि तथा चित्रों के साथ टेलीविजन तक जा पहुंची और आज तो इटंरनेट और मोबाइल युग में उसका प्रवेश हो चुका है।

इतनी प्रगति और विस्तार के वाबजूद यह नहीं कहा जा सकता कि भारतीय पत्रकारिता की विकास यात्रा अपनी मंजिल तक जा पहुंची है। उसे तो अभी भी यात्रा करनी है–नए युग के नए पत्रकारों को उसका आह्‌वान है कि वे आएं और पत्रकारिता के नए मानदण्ड कायम करें।

5.6 शब्दावली :

बाम्बे समाचार : बाम्बे समाचार देश का सबसे पुराना अखबार है। यह एक गुजराती दैनिक है और इसका प्रकाशन 1822 में शुरू हुआ था। इसका प्रकाशन द बाम्बे समाचार प्राइवेट लिमिटेड नामक प्रकाशन गृह द्वारा किया जाता है और आज भी यह एक लोकप्रिय अखबार है।

बेनेट कोलमेन लिमिटेड : यह देश का एक प्रमुख प्रकाशन समूह है। 1838 से अनवरत प्रकाशित टाइम्स ऑफ इण्डिया के अलावा हिन्दी दैनिक नवभारत टाइम्स, विजनेस दैनिक इकोनोमिक टाइम्स इस समूह के प्रमुख अखबार हैं। एफ0 एम0 रेडियो और टेलीविजन न्यूज में भी दखल

रखने वाले इस प्रकाशन समूह ने एक दौर में हिन्दी को दिनमान और धर्मयुग जैसी पत्रिकाएं भी दी थीं।

नीला दर्पण : नीला दर्पण मनमोहन घोष का लिखा एक नाटक था जो 1861 में कलकत्ता से प्रकाशित 'हिन्दू पेट्रियट' में प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशन के बाद नील की खेती करने वाले अंग्रेज व्यापारियों के खिलाफ एक आन्दोलन शुरू हो गया और नील कमीशन की नियुक्ति हुई। नील की खेती खत्म करने में इस नाटक की विशेष भूमिका रही थी।

केसरी : केसरी आजादी की लड़ाई के आरम्भिक दौर का एक महत्वपूर्ण समाचार पत्र था। बालगंगाधर तिलक और विष्णु शास्त्री चिपलूणकर ने मिलकर इसे 1जनवरी 1881 को मराठी साप्ताहिक के रूप में शुरू किया था। इसी प्रकाशन से अंग्रेजी में मराठा साप्ताहिक भी निकाला जाता था। केसरी आपने तीखे और ब्रिटिश राज विरोधी लेखों के लिए जाना जाता था। 1908 में तिलक को केसरी के लेखों के लिए 6 वर्ष के कालेपानी की सजा दी गई थीं बाद में नागपुर और बनारस से केसरी का हिन्दी संस्करण भी निकला था।

सांझ वर्तमान : सांझ वर्तमान एक गुजराती दैनिक अखबार था, जिसके सम्पादक सांवलदास गांधी थे। भारत छोड़ो आन्दोलन के दौर में इस अखबार ने जूनागढ़ के नवाब के विरूद्ध मोर्चा शुरू किया था और जूनागढ़ के भारत में विलय के पीछे इस अखबार की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

गणेश शंकर विद्यार्थी : बाल कृष्ण भट्ट के शिष्य गणेश शंकर विद्यार्थी स्वाधीनता के लिए कुर्बान हो जाने वाले पत्रकारों में एक है। 1913 में उन्होंने कानपुर से प्रताप का प्रकाशन शुरू किया था। अपने अग्रलेखों और टिप्पणियों के कारण उन्हें कई बार जेल भी जाना पड़ा। 1931 में रामपुर में दंगाइयों की हिंसा में उन्होंने अपनी जान कुर्बान कर दी।

5.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

उत्तर 5.3

उत्तर 1– इमरजेंसी के बाद के महत्वपूर्ण हिन्दी संपादकों में धर्मवीर भारती, मनोहर श्याम जोशी, रधुवीर सहाय, राजेन्द्र माथुर, सुरेन्द्र प्रताप सिंह और कमलेश्वर प्रमुख हैं।

उत्तर 2– स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता का सबसे सकारात्मक पहलू इस दौर में हुआ टैक्नोलॉजी का विकास है। अत्याधुनिक टैक्नोलॉजी और कम्प्यूटर के उपयोग ने पत्र पत्रिकाओं का रंग रूप ही बदल दिया है।

उत्तर 3– उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाले प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों में दैनिक जागरण, अमर उजाला, दैनिक हिन्दुस्तान व राष्ट्रीय सहारा शामिल हैं।

उत्तर 4– आर्थिक पत्रकारिता की एक मुख्य पत्रिका का नाम बिजनेस वर्ल्ड है।

उत्तर 5.4

उत्तर 1– 1. बेनट कॉलमेन एण्ड कम्पनी

2. इंडियन एक्सप्रेस समूह

3. आनन्द बाजार पत्रिका समूह

4. मलयालम मनोरमा समूह

5. अमृत बाजार पत्रिका समूह

6. हिन्दुस्तान टाइम्स एण्ड एलाइड प्रकाशन

7. हिन्द समाचार समूह

8. मातृभूमि प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग कम्पनी

9. कस्तूरी एण्ड संस लिमिटेड

10. द ट्रिब्यून ट्रस्ट

11. सौराष्ट्र ट्रस्ट

12. संदेश लिमिटेड

13. राजस्थान पत्रिका समूह

14. द न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिकेशन पब्लिक लिमिटेड–

15. लिविंग मीडिया इण्डिया लिमिटेड – इण्डिया टुडे (बहुभाषी समाचार पत्रिका)

16. जागरण समूह

17. डी बी कार्प लिमिटेड

उत्तर 2– 31 मार्च, 2007 तक देश में पंजीकृत पत्र–पत्रिकाओं की कुल संख्या 6,54,032 थी। जिसमें 7131 दैनिक, 22,116 साप्ताहिक, 8,547 पाक्षिक, 19,456 मासिक और 4,470 त्रेमासिक थे।

उत्तर 3– पंजीकरण के आंकड़ों के अनुसार देश में कुल 123 भाषाओं और बोलियों में पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं जिनमे सबसे अधिक 9885 पत्र–पत्रिकाएं उत्तर प्रदेश से निकलती हैं।

उत्तर 4 – उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड से प्रकाशित प्रमुख हिन्दी दैनिक दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान, राष्ट्रीय सहारा, स्वतन्त्र भारत, आज, शाह टाइम्स, उत्तर उजाला आदि हैं।

5.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अरविन्द मोहन : पत्रकार और पत्रकारिता प्रशिक्षण, सामयिक प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली– 110002ए (2005)।

2. चतुर्वेदी, जगदीश प्रसाद : हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास।

3. तिवारी, डॉ0 अर्जुन : स्वतन्त्रता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता।

4. मेहता, आलोक : पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, (2005)।

5. मिश्र, अखिलेश : पत्रकारिताः मिशन से मीडिया तक, राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली – 110002, (2004)।

6. वैदिक, वेद प्रताप : हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।

7. सकलानी, शक्ति प्रसाद : उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास, उत्तरा प्रकाशन, टी कैम्प, रूद्रपुर – 263153, (2004)।

8. शर्मा, डॉ0 रामविलास : भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परम्परा।

5.9 सहायक/उपयोगी पाठय सामग्री :

1. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, डॉ0 संजीव भानावत, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स, जयपुर।

2. समाचार पत्रों का इतिहास, अम्बिका प्रसाद वाजपेयी।

3. पत्र–पत्रिकाएं

2. इंटरनेट

5.10 निबन्धात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1– भारत के स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी पत्रकारिता का क्या योगदान रहा विवेचना कीजिए?

प्रश्न 2– स्वतंत्रता के बाद हिन्दी पत्रकारिता का उद्देश्य क्या था?

प्रश्न 3– स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी पत्रकारिता में क्या बदलाव आए हैं?

प्रश्न 4– 1836 में भारतीय पत्रकारिता की क्या स्थिति थी? कौन–कौन प्रमुख समाचार पत्र उस समय प्रकाशित हो रहे थे और उनकी प्रसार संख्या क्या थी?

प्रश्न 5– आजादी से पूर्व प्रांतीय पत्रकारिता पर एक टिप्पणी लिखिए ?

इकाई –06

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 उत्तराखण्ड में पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

6.4 स्वतंत्रता से पूर्व उत्तराखण्ड में पत्रकारिता

6.5 स्वतंत्रता के पश्चात उत्तराखण्ड में पत्रकारिता

6.6 सारांश

6.7 शब्दावली

6.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

6.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

6.10 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

6.11 निबन्धात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना :

पिछली इकाईयों में विश्व एवं भारतीय पत्रकारिता के इतिहास का वर्णन किया गया है साथ ही भारत में स्वतन्त्रता से पहले और स्वतन्त्रता के बाद पत्रकारिता की स्थिति पर अध्ययन किया गया है। जिससे छात्र भारतीय पत्रकारिता के इतिहास को समझ सकें तथा स्वतन्त्रता के बाद की भारतीय पत्रकारिता में आये बदलाओं को भी जान सकें।

इस इकाई में उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास, स्वतन्त्रता से पूर्व एवं स्वतन्त्रता के बाद उत्तराखण्ड में पत्रकारिता की स्थिति आदि विषयों पर छात्रों को जानकारी देने की कोशिश की गई है।

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य व उत्तराखण्ड में पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाएं आदि विषयों की जानकारी छात्रों को आगली इकाई में दी जायेगी।

6.2 उद्देश्य :

इस इकाई के जरिए हम उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास को जान सकेंगे तथा भारतीय स्वाधीनता संग्राम व उत्तराखण्ड के जनान्दोलनों में स्थानीय पत्रकारिता की भूमिका के बारे में अध्ययन करेंगे।

इस इकाई के अध्ययन से आप जान सकेंगे कि –

- उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का उद्भव एवं विकास किस तरह हुआ?
- स्वतन्त्रता से पूर्व और स्वतन्त्रता के बाद उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का स्वरूप।
- उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का उद्भव किन उद्देश्यों को लेकर हुआ?

6.3 उत्तराखण्ड में पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

कागज और मुद्रण का आविष्कार सबसे पहले चीन में हुआ और फिर यह कला चीन से यूरोप में पहुंची। यह माना जाता है कि चीन में ही सबसे पहला समाचार पत्र निकला जिसका नाम 'पेकिंग गजट' अथवा तिंचाओ था। यूरोप में पहली प्रेस की स्थापना सन् 1440 में हुई। जर्मनी के गुटेनबर्ग नामक एक ईसाई ने इस प्रेस को स्थापित किया था और उसी ने सबसे पहले बाइबिल को छापा। यह भी माना जाता है कि इंग्लैंड में कैक्सटन ने 1477 में प्रेस स्थापित की। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि इंग्लैंड का पहला समाचार–पत्र 1603 में प्रकाशित हुआ था और इसका आकार बहुत छोटा था। इसमें विदेश की खबरें ही छपती थीं। स्वदेश की खबरें छापने की तब अनुमति नहीं थी। सन् 1666 में लंदन गजट प्रकाशित हुआ। यह सप्ताह में दो बार छपता था। सत्रहवीं शताब्दी के अंत में एकाएक लेखकों और पत्रकारों की संख्या में वृद्धि हुई और टैटलर, स्पेक्टेटर, एग्जामिनर, गार्जियन, इंग्लिश मैन, लवर आदि अनेक साप्ताहिक प्रकाशित हुए। ग्रब जर्नल उस समय का सबसे अधिक प्रसिद्व पत्र था।

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता के विकास की प्रक्रिया भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की प्रकिया के समानान्तर रही है। हांलाकि उत्तराखण्ड में 1815 से लेकर 1857 तक कंपनी के शासन के दौर में भी उत्तराखण्ड के कवियों मौलाराम (1743–1833), गुमानी (1779–1846) एवं कृष्णा पाण्डे(1800–1850) आदि की कविताओं में असन्तोष के बीज मिलते हैं। साथ ही उत्तराखण्ड में 1857 के स्वाधीनता संग्राम के समय तथा इससे पूर्व भी औपनिवेशिक अवमानना के प्रमाण मिलते हैं, जिनमें यहां की पत्रकारिता की ऐतिहासिक झलक नजर आती है।

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का विकास स्वाधीनता युग में माना जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रकाशित पत्रों में से कुछ ही समाचार पत्र 1947 के बाद प्रकाशन जारी रख सके क्योंकि स्वाधीनता पूर्व के अधिकांश पत्रों का जो उद्देश्य था वह हासिल हो चुका था। फिर भी ठीक 15 अगस्त 1947 को भगवती प्रसाद पांथरी, गोपेश्वर कोठियाल आदि ने देहरादून से ''युगवाणी'' का प्रकाशन आरम्भ किया। यह पत्र मूलतः प्रजामंडल का पत्र था। इसका महत्व टिहरी रियासत के

अंतिम दो सालों के आंदोलनों के संदर्भ में अधिक है। यह पत्र मासिक पत्रिका के रूप में आज भी निकल रहा है और उत्तराखण्ड की अग्रणी पत्रिकाओं में से एक है।

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का एक गौरवपूर्ण अतीत है। आर्थिक रूप से पिछड़ा होने के बावजूद उत्तराखण्ड में बौद्धिक सम्पदा का खजाना हमेशा लबालव रहा है। संत और ऋषि परम्परा का उत्तराखण्ड से गहरा रिश्ता रहा है। यही कारण है कि देश में पत्रकारिता का बीज जैसे ही अंकुरित होना शुरू हुआ, उत्तराखण्ड में भी उसका जन्म और विकास शुरू हो गया। बीसवीं सदी के आरम्भ से ही उत्तराखण्ड के अखबारों में सुधारों की छटपटाहट, विचारों की स्पष्टता और आजादी की अकुलाहट दृष्टिगोचर होने लगी थी। राष्ट्रीय आन्दोलन के उभार के साथ–साथ स्थानीय पत्रकारिता में अधिक आक्रमकता, अधिक आक्रोश और ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेकने की प्रबल इच्छा साफ–साफ दिखाई देने लगी थी।

1947–1952 के बीच देहरादून से हिमाचल, देश सेवक, अंगारा तथा अल्मोड़ा से कुमाऊँ राजपूत, रूपा, प्रदीप आदि पत्र–पत्रिकाएं निकलीं। 1956 में कोटद्वार से ललिता प्रसाद नैथाणी ने ''सत्यपथ'' का प्रकाशन किया। इस पत्र ने स्थानीय विषयों को प्रमुखता से उठाने की कोशिश की। इसी दौर में विष्णुदत्त उनियाल का नैनीताल से ''पर्वतीय'' नामक पत्र निकला। लम्बे समय तक जीवित रहे इस अखबार ने उत्तराखण्ड में नए दौर की पत्रकारिता को बहुत कुछ सिखाया। हिन्दी के कई नामी लेखकों और पत्रकारों के लिए यह अखबार एक पाठशाला की तरह था। 1957 में हीरालाल बड़ोला ने मुनि की रेती टिहरी गढ़वाल से तथा राधाकृष्ण कुकरेती ने देहरादून से क्रमशः ''उत्तराखण्ड'' और ''नया जमाना'' साप्ताहिक शुरू किये। पिथौरागढ़ से ''उत्तराखण्ड ज्योति'' साप्ताहिक पत्र 1961 में निकला तो उत्तराखण्ड की तराई (उधमसिंह नगर) से बिगुल, चौराहा, लोकतंत्र आदि साप्ताहिक अखबार निकले। 1962 – 1977 के दौरान मसूरी से ''सीमान्त प्रहरी'', देहरादून से ''जन लहर'', ऋषिकेश से ''हिमालय की आवाज'', उत्तरकाशी से ''पर्वतवाणी,'', ''गढ़रैवार'', पिथौरागढ़ से ''पर्वत पीयूष'' आदि पत्र निकलने प्रारम्भ हुए। 1955 में काशीपुर से प्रकाशित अखबार ''जन जागृति'' तथा कोटद्वार से 1965 में प्रकाशित ''आवाज'' वामपंथी प्रभाव वाले पत्र थे। 1974 में देहरादून से प्रकाशित ''लपराल'' नामक अखबार ने किसानों– मजदूरों के दुःख दर्दों को समझने का प्रयास किया। इस दौर में साहित्यिक पत्र – पत्रिकाएं भी निकलीं। परन्तु अपना खास प्रभाव नहीं छोड़ पायीं। प्रतिनिधित्व के तौर पर अल्मोड़ा से ''माद्री'', ''शिल्पी'', टिहरी से ''नैतिकी'', पिथौरागढ़ से ''पथिक'' आदि का जिक्र किया जा सकता है।

आठवें दशक के बाद पूंजीवादी अखबार, पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन और दर्जनों टीवी चैनलों ने धीरे – धीरे यहां की क्षेत्रीय पत्रकारिता की रीढ़ तोड़नी शुरू की। फिर भी अपने सीमित संसाधनों के बावजूद कुछ समाचार पत्र– पत्रिकाएं निरन्तर प्रकाशित होते हुए अपना पाठक वर्ग बनाए हुए हैं। ये हैं– युगवाणी, पर्वतजन, नया जमाना, सीमान्त प्रहरी, मसूरी टाइम्स, आज का पहाड़, नैनीताल समाचार, आधारशिला, उत्तरा, पहाड़ आदि।

परन्तु व्यावसायिक रूप से देखें तो उक्त में से अधिकांश पत्र – पत्रिकाओं की हालत दयनीय है और एक सीमित पाठक वर्ग तक ही इनकी पहुंच है। यही हाल यहां की साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्र – पत्रिकाओं का भी है। अल्मोड़ा से कुमाऊॅनी भाषा में ''पहरू'' पत्रिका निकल रही है और पौड़ी से गढ़वाली में उत्तराखण्ड खबरसार पाक्षिक निकलता है। गढ़वाल से गढ़वाली भाषा में एकाध और पत्रिकाएं भी निकल रही हैं, परन्तु इन सभी की प्रसार संख्या कम है एवं संसाधन सीमित हैं।

वर्तमान में देखें तो अमर उजाला, दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दुस्तान जैसे समाचार पत्रों को उत्तराखण्ड में सबसे ज्यादा पढ़ा जाता है। पूंजी, आकर्षक साज–सज्जा, क्षेत्रीयकरण (क्षेत्रीय संस्करण), कुशल प्रबन्ध तन्त्र, सरकारी, प्रतिष्ठानों, संस्थानों एवं व्यक्तिगत विज्ञापनों के बल पर इनका दबदबा बना हुआ है। त्वरित संचार तंत्र, उन्नत तकनीक के माध्यम से सही समय पर यह समाचार पत्र लोगों को उपलब्ध हो जाते हैं और क्षेत्रीयकरण के कारण लोग अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय विषयों से लेकर अपने गॉव, शहर की सभी छोटी–मोटी सूचनाएं इन अखबारों में पढ़ सकते हैं। इसके अलावा गढ़वाल पोस्ट, उत्तर उजाला, दून दर्पण, जन लहर आदि छोटे स्थानीय दैनिक पत्र भी अपने अस्तित्व के संघर्ष में निरन्तर जुटे हुए हैं।

उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद तो उत्तराखण्ड में नई पत्र पत्रिकाओं की बाढ़ ही आ गई है। सिर्फ देहरादून से ही प्रकाशित होने का दावा करने वाले दैनिक पत्रों की संख्या 45 से अधिक हो गई है। यही हाल वहां से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं का भी है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– मौलाराम, गुमानी एवं कष्णा पाण्डेय कौन थे?

प्रश्न 2– कागज और मुद्रण का आविष्कार सबसे पहले कहां हुआ ?

प्रश्न 3– उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाला ऐसा कौन सा पत्र था जो स्वतन्त्रता वर्ष 1947 से प्रकाशित होकर आज भी प्रकाशित हो रहा है?

प्रश्न 4– वर्तमान में उत्तराखण्ड के देहरादून जनपद से प्रकाशित होने वाले दैनिक पत्रों . की कुल संख्या कितनी है?

6.4 स्वतंत्रता से पूर्व उत्तराखण्ड में पत्रकारिता :

अनादिकाल से उत्तराखण्ड की पहिचान देवात्माओं की धरती के रूप में रही है। यहां कर्म की जगह धर्म और आध्यात्म को महत्व दिया जाता रहा। संतोषी और यथास्थितिवादी होने के कारण बाह्य क्षेत्रों से यहां वालों का सम्पर्क नगण्य रहा। मूर्ति पूजा और कर्मकाण्ड यहां अभीष्ट था। यहां का जन मानस ''कोऊ नृप होय हमै का हानि'' जैसी विचार प्रधानता वाला था।

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता के विकास की प्रक्रिया भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की प्रक्रिया के समानान्तर रही है। जब यहॉ 1815 में गोरखों के क्रूर एवं अत्याचारी शासन का अन्त ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा हुआ तो शुरूआत में अंग्रेजों का स्वागत हुआ। क्योंकि तब जनता गोरखों के

क्रूर एवं अत्याचारी शासन से त्रस्त थी। हांलाकि उत्तराखण्ड में 1815 से लेकर 1857 तक कंपनी के शासन के दौर में भी उत्तराखण्ड के कवि मौलाराम (1743 – 1833), गुमानी (1779–1846) एवं कृष्णा पाण्डे(1800 – 1850) आदि की कविताओं में असन्तोष के बीज मिलते हैं। साथ ही उत्तराखण्ड में 1857 के स्वाधीनता संग्राम के समय तथा इससे पूर्व भी औपनिवेशिक अवमानना के प्रमाण मिलते हैं।

स्थानीय पत्रकारिता ने बाद के वर्षों में उत्तराखण्ड के विभिन्न स्थानीय संघर्षों का स्वाधीनता संग्राम से एकीकरण कर देश के अन्य हिस्सों के आंदोलनों एवं वहां के समाज, संस्कृति से जनता को परिचित कराने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाई। उत्तराखण्ड में स्वतंत्रता से पूर्व भी पत्रकारिता का इतिहास काफी सक्रिय रहा। सामाजिक समस्याओं को लेकर जहां यहां की पत्रकारिता ने जन्म लिया वहीं राष्ट्र की आजादी में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

सन् 1842 में एक अंग्रेज व्यवसायी और समाज सेवी जान मेकिनन ने उत्तर भारत का पहला समाचार पत्र 'द हिल्स' का मसूरी से प्रकाशन शुरू किया। अखबार का प्रिटिंग प्रेस सेमिनरी स्कूल परिसर में था। यह पत्र अपने बेहतरीन प्रकाशन व प्रसार के लिए चर्चित रहा। कहा जाता है इस पत्र में आयरलैण्ड व इंगलैण्ड के आपसी झगड़ों के बारे में टिप्पणियां खूब प्रकाशित होती थीं। सात–आठ वर्षों तक चलने के बाद अखबार बन्द हो गया और सारा उत्तरी क्षेत्र अखबार विहीन हो गया। सन् 1860 में डा0 स्मिथ ने अखबार का प्रकाशन पुनः शुरू किया। सन् 1865 में अखबार हमेशा के लिए बन्द हो गया और सदा के लिए इतिहास के पृष्ठों में गुम हो गया।

सन् 1870 में मसूरी से ऑग्ल भाषी का एक और अखबार 'मसूरी एक्सचेंज' का प्रकाशन शुरू हुआ। कुछ ही महीनों के प्रकाशन उपरान्त यह अखबार भी बन्द हो गया। यह अखबार विज्ञापन के लिए चर्चित था। सन् 1872 में 'मसूरी सीजन' नाम से ऑग्ल भाषी एक और समाचार पत्र का प्रकाशन यहां से हुआ। इसे कोलमैन ने शुरू किया था। जॉन नार्थन पत्र के साझीदार थे। यह पत्र भी मात्र 2 वर्ष तक ही चला।

सन् 1875 में 'मसूरी क्रानिकल' का प्रकाशन शुरू हुआ। इसी दशक में 'बेकन' और 'द ईगल' नाम से दो और अंग्रेजी भाषी समाचार पत्रों का प्रकाशन यहां से हुआ। ये दोनों पत्र भी अल्पजीवी रहे।

मसूरी से प्रकाशित बीसवीं सदी का पहला समाचार पत्र 'द मसूरी टाइम्स' था। मिस्टर बाड़ीकाट ने सन् 1900 में इस अखबार का प्रकाशन शुरू किया था। बाद में अखबार का प्रबन्धन भारतीयों के हाथ में आ गया था। 'द मसूरी टाइम्स' अखबार सर्वाधिक प्रसार और प्रसिद्धि वाला अखबार था। इसके संवाददाता योरोपीय देशों तक फैले थे। मि.जे. एच. जॉनसन बाद में इसके स्वामी और सम्पादक रहे। यह अखबार मेफिसलाइट, हिमालय क्रानिकल, द हिल एडवरटाइजर व द इको का प्रतिनिधि भी था।

उत्तराखण्ड की पत्रकारिता सन् 1842 से सन् 2010, यानी 168 वर्षों तक का इतिहास समेटे हुयी है। जहां तक स्वाधीनता पूर्व की पत्रकारिता का प्रश्न है, वह 105 वर्षों का इतिहास है।

उत्तराखण्ड में इस कालावधि की पत्रकारिता को यदि हम चरणों में विभाजित करे, तो इसे तीन पड़ावों से होकर गुजरते देखते हैं। पत्रकारिता का पहला चरण सन् 1842 से सन् 1870 के कालखण्ड का है। 28 वर्षों की इस कालावधि में उत्तराखण्ड से जितने भी पत्र–पत्रिकाएं निकले वे सभी मसूरी से प्रकाशित हुए। उन सभी पत्र–पत्रिकाओं के संचालक और सम्पादक अंग्रेज ही थे। मसूरी में अंग्रेजों ने ही पत्रकारिता की प्रथम पाठाशाला शुरू की थी।

स्वातंत्रता पूर्व पत्रकारिता का दूसरा चरण सन् 1900 से सन् 1939 तक माना जाता है। इसी कालखण्ड में यहां पत्रकारिता में उतार–चढ़ाव देखे गये हैं। स्वराज्य प्राप्ति के लिए लड़ी गयी लड़ाई के संदर्भ में उद्देश्य पूर्ण पत्रकारिता की शुरूआत इसी अवधि में हुई। शक्ति, गढ़वाली, गढ़वाल समाचार, स्वाधीन प्रजा, तरूण कुमाऊँ, अभय, कास्मोपोलिटन, गढ़देश, संदेश, जागृत जनता, कर्मभूमि जैसे साप्ताहिकों का अभ्युदय इसी कालावधि में हुआ।

उत्तराखण्ड में स्वतंत्रता से पूर्व पत्रकारिता का तीसरा और अंतिम चरण सन् 1940 से सन् 1947 की अवधि का है। अंग्रेजों भारत छोड़ो और पूर्ण स्वराज्य की मांग का यही दौर था। स्वाधीनता आंदोलन में हजारों राष्ट्रभक्तों, सम्पादकों/पत्रकारों ने जेल जाकर स्वावधीनता संग्राम में अपनी उपस्थिति दर्ज इसी काल में कराई थी। इस दोर में कई अखबार मालिकों व सम्पादकों को अंग्रेजों की तानाशाही का जुर्म भी सहना पड़ा। कई पत्रों से जमानती मांगे गये तो कई बंद करा दिये गये और कई मालिक व सम्पादकों को जेल में भेजा गया।

उत्तराखण्ड में स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता पर यदि नजर दौड़ाएं तो हमे साफ तौर पर पत्रकारिता के दो दौर नजर आते हैं। पहला वह जो औपनिवेशिक शासन के सम्पर्क से पैदा जागरण का है और दूसरा राष्ट्रीय आंदोलन का, जिसका विस्तृत अध्ययन निम्नवत है–

यद्यपि 1842 में एक अंग्रेज व्यवसायी और समाजसेवी जान मेकिनन ने अंग्रेजी भाषा में मसूरी से ''द हिल्स'' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन शुरू कर दिया था, परन्तु 1868 में नैनीताल से प्रकाशित होने वाला ''समय विनोद'' उत्तराखण्ड से निकलने वाला पहला देशी (हिन्दी–उर्दू) पत्र था। पत्र के संपादक–स्वामी जयदत्त जोशी वकील थे। पत्र पाक्षिक था तथा नैनीताल प्रेस से छपता था। 1877 के आसपास यह समाचार पत्र कदाचित बन्द हो गया। पत्र ने सरकारपरस्त होने के बावजूद ब्रिटिश राज में चोरी की घटनाएं बढ़ने, भारतीयों के शोषण, बिना वजह उन्हें पीटने, उन पर अविश्वास करने पर अपने विविध अंकों में चिंता व्यक्त की थी।

उत्तराखण्ड ही नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश में पत्र – पत्रिकाओं के प्रकाशन के क्षेत्र में 1871 में अल्मोड़ा से प्रकाशित ''अल्मोड़ा अखबार'' का विशिष्ट स्थान है। इसका सरकारी रजिस्ट्रेशन नंबर 10 था और यह प्रमुख अंग्रेजी पत्र ''पायनियर'' का समकालीन था। इसके 48 वर्ष के जीवनकाल में इसका संपादन क्रमशः बुद्धिबल्लभ पंत, मुंशी इम्तियाज अली, जीवानन्द जोशी, सदानन्द सनवाल, विष्णुदत्त जोशी तथा 1913 के बाद बद्रीदत्त पाण्डे ने किया।

स्वतंत्रता से पूर्व उत्तराखण्ड की पत्रकारिता ने जहां स्वाधीनता आंदोलन में अपनी भूमिका दर्ज करायी वहीं इसने एक ओर बेगार, जंगलात, डोला–पालकी, नायक सुधार, अछूतोद्धार तथा

गाड़ी–सड़क जैसे आन्दोलनों को मुखर अभिव्यक्ति दी तो दूसरी ओर असहयोग, स्वराज, सविनय अवज्ञा, व्यक्तिगत सत्याग्रह, भारत छोड़ो आन्दोलन जैसी अवधारणाओं को इसने ग्रामीण जन मानस तक पहुँचाने का प्रयास किया। यही नहीं यहां की पत्रकारिता ने साहित्यिक–सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को भी मंच प्रदान किया।

प्रारम्भिक चरण में ''अल्मोड़ा अखबार'' सरकारपरस्त था फिर भी इसने औपनिवेशिक शासकों का ध्यान स्थानीय समस्याओं के प्रति आकृष्ट करने में सफलता पाई। कभी पाक्षिक तो कभी साप्ताहिक रूप से निकलने वाले इस पत्र ने अंग्रेजों के अत्याचारों से त्रस्त पर्वतीय जनता की मूकवाणी को अभिव्यक्ति देने का कार्य किया। इस पत्र का मुख्य विषय आंचलिक समस्याएं कुली बेगार, जंगल बंदोबस्त, बाल शिक्षा, मद्य निषेध, स्त्री अधिकार आदि रहे।

सन् 1893–1894 में अल्मोड़ा से ''कूर्मांचल समाचार'' 1902 में लैंसडाउन से गिरिजा दत्त नैथाणी द्वारा संपादित मासिक पत्र ''गढ़वाल समाचार'' और 1905 में देहरादून से प्रकाशित ''गढ़वाली'' भी अपनी उदार और नरम नीति के बावजूद औपनिवेशिक शासन की गलत नीतियों का विरोध करते रहे थे।

1913 में बद्रीदत्त पाण्डे के ''अल्मोड़ा अखबार'' के संपादक बनने के बाद इस पत्र का सिर्फ स्वरूप ही नहीं बदला वरन् इसकी प्रसार संख्या भी 50–60 से बढकर 1500 तक हो गयी। बेगार, जंगलात, स्वराज, स्थानीय नौकरशाही की निरंकुशता पर भी इस पत्र में आक्रामक लेख प्रकाशित होने लगे। अन्ततः 1918 में ''अल्मोड़ा अखबार'' सरकारी दबाव के फलस्वरूप बन्द हो गया। बाद मे इसकी भरपाई 1918 में बद्रीदत्त पाण्डे के संपादकत्व में ही निकले पत्र ''शक्ति'' ने पूरी की। शक्ति पर शुरू से ही स्थानीय आक्रामकता और भारतीय राष्ट्रवाद दोनों का असाधारण असर था।

''शक्ति'' का प्रत्येक संपादक राष्ट्रीय संग्रामी था। बद्रीदत्त पाण्डे, मोहन जोशी, दुर्गादत्त पाण्डे, मनोहर पंत, राम सिंह धौनी, मथुरा दत्त त्रिवेदी, पूरन चन्द्र तिवाड़ी आदि में से एक–दो अपवादों को छोड़कर ''शक्ति'' के सभी सम्पादक या तो जेल गये थे या तत्कालीन प्रशासन की घृणा के पात्र बने।

''शक्ति'' ने न सिर्फ स्थानीय समस्याओं को उठाया वरन् इन समस्याओं के खिलाफ उठे आन्दोलनों को राष्ट्रीय आन्दोलन से एकाकार करने में भी उसका महत्वपूर्ण योगदान रहा। ''शक्ति'' की लेखन शैली का अन्दाज 27 जनवरी 1919 के अंक में प्रकाशित निम्न पंक्तियों से लगाया जा सकता है :–

''आंदोलन और आलोचना का युग कभी बंद न होना चाहिए ताकि राष्ट्र हर वक्त चेतनावस्था में रहे अन्यथा जाति यदि सुप्तावस्था को प्राप्त हो जाती है तो नौकरशाही, जर्मनशाही या नादिरशाही की तूती बोलने लगती है।''

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता के विकास के क्रम में देहरादून से प्रकाशित ''गढ़वाली'' (1905–1952) गढ़वाल के शिक्षित वर्ग के सामूहिक प्रयासों द्वारा स्थापित एक सामाजिक संस्थान

था। यह उत्तराखण्ड में उदार चेतना का प्रसार करने वाले तत्वों में से एक अर्थात् उदार सरकारपरस्त संगठनों के क्रम में स्थापित ''गढ़वाल यूनियन'' (स्थापित1901) का पत्र था। इसका पहला अंक मई 1905 को निकला जो कि मासिक था तथा इसके पहले सम्पादक होने का श्रेय गिरिजा दत्त नैथानी को जाता है।

''गढ़वाली'' के दूसरे सम्पादक तारादत्त गैरोला बने। यद्यपि ''गढ़वाली'' का प्रकाशन एक सामूहिक प्रयास था, परन्तु इस प्रयास को सफल बनाने में विश्वम्भर दत्त चंदोला की विशेष भूमिका थी। 1916 से 1952 तक गढ़वाली का संपादन–संचालन का सारा भार विश्वम्भर दत्त चंदोला के कंधों पर ही रहा था।

47 साल तक जिन्दा रहने वाले इस पत्र ने अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं से लेकर विविध राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विषयों पर प्रखरता के साथ लिखा तथा अनेक आन्दोलनों की पृष्ठभूमि तैयार की। ''गढ़वाली'' की लेखनी का एक अंश इस प्रकार हैः–

''कुली बर्दायश की वर्तमान प्रथा गुलामी से भी बुरी है और सभ्य गवरमैण्ट के योग्य नहीं, कतिपय सरकारी कर्मचारियों की दलील है, कि यह प्राचीन प्रथा अर्थात दस्तूर है, किंतु जब यह दस्तूर बुरा है तो चाहे प्राचीन भी हो, निन्दनीय है और फौरन बन्द होना चाहिए। क्या गुलामी, सती प्रथा प्राचीन नहीं थीं।''

गढ़वाल में कन्या विक्रय के विरूद्ध आंदोलन संचालित करना, कुली बेगार, जंगलात तथा गाड़ी सड़क के प्रश्न को प्रमुखता से उठाना, टिहरी रियासत में घटित रवांई कांड (मई 1930) के समय जनपक्ष का समर्थन कर उसकी आवाज बुलंद करना (जिसकी कीमत ''गढ़वाली'' के सम्पादक विश्वम्भर दत्त चंदोला को जेल जाकर चुकानी पड़ी) तथा गढ़वाल में वहां की संस्कृति एवं साहित्य का नया युग ''गढ़वाली युग'' आरम्भ करना ''गढ़वाली'' के जीवन के शानदार अध्याय हैं।

पत्रकारिता के इसी क्रम मे पौड़ी से सदानन्द कुकरेती ने 1913 में ''विशाल कीर्ति'' का प्रकाशन किया और ''गढ़वाल समाचार'' तथा ''गढ़वाली'' के सम्पादक रहे गिरिजा दत्त नैथानी ने लैंसडाउन से ''पुरूषार्थ'' (1918–1923) का प्रकाशन किया। इस पत्र ने भी स्थानीय समस्याओं को आक्रामकता के साथ उठाया।

स्थानीय राष्ट्रीय आन्दोलन के संग्रामी तथा उत्तराखण्ड के प्रथम बैरिस्टर मुकुन्दीलाल ने जुलाई 1922 में लैंसडाउन से ''तरूण कुमाऊॅ'' (1922–1923) का प्रकाशन कर राष्ट्रीय तथा स्थानीय मुद्दों को साथ–साथ अपने पत्र में देने की कोशिश की। इसी क्रम में 1925 में अल्मोड़ा से ''कुमाऊॅ कुमुद'' का प्रकाशन हुआ। इसका सम्पादन प्रेम बल्लभ जोशी, बसन्त कुमार जोशी, देवेन्द्र प्रताप जोशी आदि ने किया। शुरू में इसकी छवि राष्ट्रवादी पत्र की अपेक्षा साहित्यिक अधिक थी।

उत्तराखण्ड की पत्रकारिता के इतिहास में अल्मोड़ा से प्रकाशित ''स्वाधीन प्रजा'' (1930–1933) का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसके सम्पादक प्रखर राष्ट्रवादी नेता विक्टर मोहन

जोशी थे। अल्पजीवी पत्र होने के बावजूद यह पत्र अत्यधिक आक्रामक सिद्ध हुआ। पत्र ने अपने पहले अंक में ही लिखा–

''भारत की स्वाधीनता भारतीय प्रजा के हाथ में हैं। जिस दिन प्रजा तड़प उठेगी, स्वाधीनता की मस्ती तुझे चढ़ जाएगी, ग्राम–ग्राम, नगर–नगर देश प्रेम के सोते उमड़ पड़ेंगे तो बिना प्रस्ताव, बिना बमबाजी या हिंसा के क्षण भर में देश स्वाधीन हो जाएगा। प्रजा के हाथ में ही स्वाधीनता की कुंजी है।''

इसी क्रम में 1939 में पीताबर पाण्डे ने हल्द्वानी से ''जागृत जनता'' का प्रकाशन किया। अपने आक्रामक तेवरों के कारण 1940 में इसके सम्पादक को सजा तथा 300 रू0 जुर्माना किया गया।

भक्तदर्शन तथा भैरव दत्त धूलिया द्वारा लैंसडाउन से 1939 से प्रकाशित ''कर्मभूमि'' पत्र ने ब्रिटिश गढ़वाल तथा टिहरी रियासत दोनों में राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक चेतना फैलाने का कार्य किया। गढ़वाल के प्रमुख कांग्रेसी नेता भैरव दत्त धूलिया, भक्तदर्शन, कमलसिंह नेगी, कुन्दन सिंह गुसांई, श्री देव सुमन, ललिता प्रसाद नैथानी, नारायण दत्त बहुगुणा इसके सम्पादक मण्डल से जुड़े थे। ''कर्मभूमि'' को समय–समय पर ब्रिटिश सरकार तथा टिहरी रियासत दोनों के दमन का सामना करना पड़ा। 1942 में इसके संपादक भैरव दत्त धूलिया को चार वर्ष की नजरबंदी की सजा दी गयी।

उत्तराखण्ड में दलित पत्रकारिता का उदय 1935 में अल्मोड़ा से प्रकाशित ''समता'' (1935 से लगातार) पत्र से हुआ। इसके संपादक हरिप्रसाद टम्टा थे। यह पत्र राष्ट्रीय आन्दोलन के युग में दलित जागृति का पर्याय बना। इसके संपादक संक्रिय समाज सुधारक होने के बावजूद संग्रामी नहीं थे।

उत्तराखण्ड में स्वतंत्रता से पूर्व प्रकाशित होने वाले कुछ पत्र–पत्रिकाओं का विवरण निम्नवत है–

(1) **समय विनोद :** समय विनोद उत्तराखण्ड का पहला स्थानीय अखबार था। हिन्दी उर्दू में निकलने वाले इस अखबार का प्रकाशन 1868 में नैनीताल से शुरू हुआ था। इसके 1877 तक प्रकाशित होने के प्रमाण मिलते हैं। इस पाक्षिक के संपादक जयदत्त जोशी पेशे से वकील थे। सरकारपरस्त होने के बाद भी इसने अनेक बार जनता की समस्याओं पर अपनी चिन्ता प्रकट की थी।

(2) **शक्ति :** शक्ति उत्तराखण्ड में आजादी से पहले के दौर का एक महत्वपूर्ण स्थानीय अखबार था। यह 1918 से अब तक निरन्तर छप रहा है। शक्ति के पहले संपादक बद्रीदत्त पाण्डे के बाद में आजादी की लड़ाई के अनेक नायक भी इसके सम्पादन से जुड़े। इसने एक ओर स्थानीय जन समस्याओं को उठाया, सामाजिक बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाई तो दूसरी ओर आजादी की लड़ाई और अहिंसक आन्दोलन को भी उत्तराखण्ड की जनता तक पहुंचाया।

(3) **कर्मभूमि :** 1939 में लैंसडाउन से भैरवदत्त धूलिया और भक्तदर्शन द्वारा प्रकाशित कर्मभूमि ने ब्रिटिश गढ़वाल और टिहरी रियासत दोनों में राजनीतिक और सामाजिक चेतना फैलाने का काम किया। इसे अनेक बार ब्रिटिश सरकार और टिहरी रियासत दोनों की नाराजगी झेलनी पड़ी। 1942 में इसके संपादक भैरवदत्त धूलिया को 4 वर्ष नजरबंदी की सजा भी सुनाई गई थी।

(4) **पर्वतीय** : विष्णुदत्त उनियाल के संपादन में नैनीताल से प्रकाशित पर्वतीय अपने दौर का एक महत्वपूर्ण अखबार था। इस अखबार ने अपने दौर में अनेक युवाओं को पत्रकारिता की ओर अग्रसर किया था। इससे पत्रकारिता का पहला पाठ सीख कर आगे बढ़े अनेक लोगों ने राष्ट्रीय स्तर पर लेखन और पत्रकारिता में मुकाम हासिल किया।

(5) **गढ़वाली :** मई सन् 1905 में गढ़वाल यूनियन (सभा) द्वारा देहरादून में हिन्दी राष्ट्रीय पत्र 'गढ़वाली' का आरम्भ हुआ। पहले इसके सदस्यों के द्वारा पत्र का नाम 'उत्तराखण्ड समाचार' और 'गढ़वाल समाचार' प्रस्तावित किया गया किन्तु 'गढ़वाली' नाम सरल और उपयोगी समझ कर यही पारित कर दिया गया। गढ़वाल सभा के लिए पत्र की आवश्यकता का सुझाव भी चन्दोला ने गैरोला जी को दिया था, वे सभा के मंत्री और चन्दोला उपमंत्री थे, इस प्रकार आरम्भ से ही वे 'गढ़वाली' पत्र से जुड़े रहें।

(6) **पुरूषार्थ :** सन् 1918 जनवरी को मासिक पुरूषार्थ का प्रथम अंक, दीनबन्धु प्रेस बिजनौर से छापा गया। इसके सम्पादक गिरिजादत्त नैथाणी थे। यह दुगड्डा और नैथाणा से प्रकाशित होता था। दिसम्बर 1916 को यह बन्द हो गया। सन् 1926 से गिरिजा दत्त नैथाणी ने दुगड्डा में फिर से मासिक 'पुरूषार्थ' छापने का प्रयत्न किया। एक अंक निकल सका था कि निमोनिया से नैथाणी जी का स्वर्गवास हो गया और पुरूषार्थ का प्रकाशन बंद हो गया।

(7) **तरूण कुमाऊँ :** तरूण कुमाऊँ, मासिक पत्र जुलाई सन् 1922 से मई, 1924 तक छपता रहा। इसके सम्पादक बैरिस्टर कुकन्दी लाल थे। आरम्भिक काल जुलाई 1922 से सितम्बर 1923 तक 'तरूण–कुमाऊँ' गढ़वाली प्रेस देहरादून में मुद्रित और प्रकाशित होता रहा। इसके पश्चात् भास्कर प्रेस देहरादून में छापा गया। इसका वार्षिक मूल्य 3 रूपया था। यह एक उच्च स्तर का पत्र था। देशव्यापी राजनीतिक उथल–पुथल पर सतर्क दृष्टि रखते हुये तरूण कुमाऊँ के द्वारा बैरिस्टर मुकन्दी लाल ने गढ़वाल–कुमाऊँ की जनता की मूलभूत समस्याओं को उजागर करते हुये उनके निवारण के लिए अंग्रेज अधिकारियों से जोरदार हिमायत की।

(8) **क्षत्रियवीर :** सन् 1923 से ठाकुर प्रताप सिंह नेगी के सम्पादन में पौड़ी से 'क्षत्रियवीर' पाक्षिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ। ठाकुर हनुमंत सिंह रघुवंशी द्वारा ओरियंटल प्रेस आगरा में छापा गया। 'क्षत्रियवीर' 1936 तक छपता रहा। 1934 में इसके सम्पादक ठाकुर कोतवाल सिंह नेगी थे। सन् 1927 में कुवंर गजेन्द्र सिंह रघुवंशी द्वारा राजपूत ऐंग्लो ओरिएंटल प्रेस, मदन मोहन दरवाजा, आगरा में छापा गया।

(9) **गढ़देश :** साप्ताहिक पत्र 'गढ़देश' सन् 1926 ई. में कोटद्वार से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक और प्रकाशक पंडित कुपाराम मिश्र 'मनहर' थे। पहले यह पंण्डित कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर के प्रेस सहारनपुर में छपा, फिर लाला शीतला प्रसाद विद्यार्थी द्वारा उनके निज के प्रेस 'शांति प्रिटिंग प्रेस' सहारनपुर में छपता रहा। कुछ समय तक देहरादून में स्वामी विचारानन्दजी सरस्वती के 'अभय प्रेस' से छपता रहा। 'गढ़देश' 1932 तक चलता रहा। इसने गढ़वाल की कई समस्याओं को सशक्त रूप से उठाया। यह राष्ट्रवादी पत्र था। कृपाराम मिश्र स्वयं राष्ट्रभक्त प्रगतिशील, उत्साही व्यक्ति थे।

(10) **गढ़वाल हितैषी :** सन् 1930 में लैन्सडाउन से प्रकाशित पाक्षिक पत्र 'गढ़वाल हितैषी' सन् 1937 तक छपता रहा। इसके सम्पादक व प्रकाशक पं0 पीताम्बर दत्त पसबोला (ऐडवोकेट) थे। मार्च 1932 से 'गढ़वाल हितैषी' केवल 'हितैषी' के नाम से 1937 तक प्रकाशित होता रहा। सम्पादक पं0 पीताम्बर दत्त पसबोला राय बहादुर ही रहे। यह पत्र आरम्भ से ही लाला शान्ति चन्द्र जैन, 'चैतन्य प्रेस' बिजनौर से प्रकाशित होता रहा। 'हितैषी' का चन्दा 2 रूपया वार्षिक था। राय बहादुर पसबोला 'हितैषी' को अंग्रेज सरकार के विरूद्ध होने से बचाकर रखते थे।

(11) **उत्तर भारत :** सात्पाहिक पत्र 'उत्तर भारत' सन् 1936 में पौड़ी से छपता आरम्भ हुआ। शुरू में इस साप्ताहिक के मुद्रक प्रकाशक अनुसूया प्रसाद बहुगुणा, रहे तथा यह पत्र 'उत्तर भारत प्रेस' पौड़ी से प्रकाशित होता रहा। महेशानन्द थपलियाल इसके सम्पादक रहे। रमेश चन्द्र नौटियाल भी कुछ समय तक इसके संयुक्त सम्पादक रहे। 1940 में इसके मुद्रक और प्रकाशक चन्द्रमोहन थपलियाल हो गये। तब यह ''गढ़वाल फाइन आर्ट प्रेस' पौड़ी से छपने लगा।

(12) **नव प्रभात :** सन् 1936 से साप्ताहिक नव प्रभात पौड़ी से प्रकाशित हुआ। साप्ताहिक 'उत्तर भारत' की तरह इसके सम्पादक भी महेशानन्द थपलियाल ही रहे। पत्र 'गढ़वाल फाइन आर्ट प्रेस' पौड़ी से प्रकाशित होता रहा। 1940 में 'उत्तर प्रभात' और कोटद्वार से हरिराम मिश्र का 'संदेश' भी 'नव–प्रभात' में सम्मिलित कर लिया गया था। महेशानन्द थपलियाल ने इस पत्र की उन्नति के काफी प्रयास किया। इस पत्र ने गढ़वाल की समस्याओं को उठाने के साथ–साथ सुधारात्मक कार्यों को विशेष स्थान देकर, कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया। साथ ही देश की अंग्रेज प्रशासन की दबंग नीति तथा तत्कालीन भारत के निपुण सुलझे हुये, कूटनीतिज्ञ व दृढ़संकल्पधारी राजनीतिज्ञों की कार्य प्रणाली पर पैनी नजर रखी। उदाहरण के लिए, द्वितीय युद्ध के समय राजगोपालाचारी का अमेरिका के समाचार पत्रों का उत्तर और कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद के पत्रों के उत्तर यहां दिये गये हैं।

'नव प्रभ्भात' 1942 तक छपता रहा आर्थिक समस्या के कारण आगे नहीं चल सका। इसका वार्षिक मूल्य रू0 3.00 मात्र तथा एक प्रति का एक आना था।

(13) **सत्यवीर :** टिहरी से सर्वप्रथम 1927 में ठाकुर हरदेव सिंह ने 'सत्यवीर' नाम से एक पाक्षिक पत्र निकाला था। यह देहरादून में 'देहरा टाइम्स प्रेस' से मुद्रित और ऋषिकेश के प्रकाशित होता था। इस पत्र में ठाकुर हरदेव सिंह को कुछ लोगों द्वारा सक्रिय सहयोग प्राप्त था। तत्कालीन टिहरी रियासत की गतिविधियों की जानकारी देने के साथ, स्थानीय और विविध समाचारों तक सीमित रहा। टिहरी के 1928–29 के राज्य प्रशासन का समर्थक था तथा 1926 से 1927 से 1930 तक छपता रहा।

(14) **स्वराज्य संदेश :** सन् 1935 में देहरादून से 'स्वराज्य संदेश' पत्र का प्रकाशन किया गया। इसके सम्पादक चौधरी हुलास वर्मा थे। यह 'हिन्दी भाग देहरा टाइम्स प्रेस' देहरादून में मुद्रित होता था। 'स्वराज्य–संदेश' राष्ट्रीय पत्र था। इसके लेख विशेषतः तत्कालीन अंग्रेज प्रशासन और भारतीय राजनीति से सम्बन्धित रहते थे। चौधरी हुलासवर्मा कांग्रेस के समर्थ कार्यकर्ता थे। 'स्वराज्य संदेश' के मुखपृष्ठ पर ही भारत मां की वन्दना 'बन्दे मातरम्' का उद्घोष छपा रहता था जिसके उच्चारण से ही भारत के देश भक्तों पर तत्कालीन अंग्रेज पुलिस की लाठियों की वर्षा होती थी। स्वदेश आंदोलन और अंग्रेजों के खिलाफ को लेकर प्रकाशित लेखों के कारण इन्हें जेल भी जाना पड़ा।

उपरोक्त पत्र–पत्रिकाओं के अलावा कई अन्य पत्र भी थे जो उत्तराखण्ड के गढ़वाल तथा कुमाऊँ क्षोत्र से प्रकाशित होते थे और जिन्होंने देश की स्वाधीनता की लड़ाई तो लड़ी ही साथ ही उत्तराखण्ड की सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक समस्याओं की लड़ाइयां भी लड़ीं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– उत्तराखण्ड में स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता के दूसरे चरण को समझाइये?

प्रश्न 2– उत्तराखण्ड में स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता के तीसरे चरण के बारे में बताइए ?

प्रश्न 3– 'कर्मभूमि' कब और कहां से प्रकाशित हुआ था ?

प्रश्न 4– 'शक्ति' के विषय में लिखिए ?

6.5 स्वतंत्रता के पश्चात उत्तराखण्ड की पत्रकारिता :

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में से कुछ ही 15 अगस्त, 1947 को आजादी का जश्न देख सके। इनमें उंगली पर गिने जाने वाले नाम हैं –अल्मोड़ा से प्रकाशित 'शक्ति', 'जागृत जनता', गढ़वाल से 'कर्म भूमि', देहरादून से 'गढ़वाली', मसूरी से 'द हेराल्ड वीकली' और 'द मसूरी टाइम्स'। इनमें 'द हेराल्ड वीकली' और 'द मसूरी टाइम्स' स्वातंत्रय युग में कुछ समय चलने के बाद बन्द हो गए। 'समता', 'स्वाधीन प्रजा' का थोड़े अन्तराल के बाद पुनः प्रकाशन हुआ, जबकि 'दून समाचार' (देहरादून) और 'द मसूरी टाइम्स' और 'मैफिसलाइट' (मसूरी) का लम्बे अन्तराल के बाद पुनः प्रकाशन हुआ। 'शक्ति' अखबार गिरते–पड़ते छप रहा है, किन्तु परिवर्तन के साथ। 'जागृत जनता' का प्रकाशन, इसके सम्पादक कामरेड पीताम्बर पाण्डे के निधन

के साथ ही ठप्प हो गया। कोटद्वार से प्रकाशित 'कर्म भूमि' के सम्पादक भैरव दत्त धूलिया जी के अवसान के बाद उनके सुपुत्र शरतचन्द्र धूलिया ने अखबार को प्रकाशित किया। कुछ वर्षों के प्रकाशन उपरान्त यह अखबार भी बन्द हो गया। देहरादून से प्रकाशित 'गढ़वाली' के प्रकाशन पर चन्दोला जी के निषन के बाद अलप विराम लग गया किन्तु शीघ्र ही उनकी सुयोग्य पुत्री श्रीमती ललिता वैष्णव चन्दोला ने 'गढ़वाली' का प्रकाशन शुरू कर दिया। एक दिन वह भी थक गई और अन्तः 'गढ़वाली' के प्रकाशन पर भी सदा के लिए विराम लग गया। आज जकारे बीच औपनिवेशिक शासन में पत्रकारिता का जीवित साक्ष एकमात्र 'शक्ति' अखबार है जो शक्तिहीन, दीन जीवित है अैर निस्तेज चल रहा है।

देश को स्वाधीनता प्राप्ति के साथ ही साम्प्रदायिकता की आग में झुलसना पड़ा। कम से कम लाखों हिन्दु–मुसलमानों का खून बहाकर आजादी की कीमत चुकानी पड़ी। सन् 1947 के अन्तिम 5 महीने बड़ी बेचैनी असुरक्षा, भय और अफरा–तफरी में बीते। हर्ष और विषाद के मुहाने पर खड़ा रहा पूरा देश। ऐसी स्थिति में अखबार निकालने की किसे सूझ थी। फिर भी ठीक 15 अगस्त को प्रो0 भगवती प्रसाद पांथरी और तेजराम भट्ट (टिहरी निवासी) ने देहरादून से 'युगवाणी' का प्रवेशांक निकाला। 'युगवाणी' का विधिवत प्रकाशन विश्वेश्वर दत्त कोठियाल ने देहरादून से 'युगवाणी प्रेस' से किया जो अपना अर्धसतक पार कर चुका है। कुछ समय बाद रानीखेत से स्वाधीनता संग्राम सेनानी श्री जय दत्त बैला, वकील ने 'प्रजाबन्धु' नाम से एक साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू किया। 'युगवाणी' का उद्देश्य टिहरी जनक्रांति को आवाज प्रदान करना था। 'प्रजाबन्धु' कांग्रेसी अखबार था। इन 5 महीनों की अवधि में देहरादून से एक अंग्रेजी साप्ताहिक 'वायस ऑफ द दून' का भी प्रकाशन हुआ। यह साप्ताहिक अखबार घोसी गली से प्रकाशित होता था। कुछ समय बाद अखबार का प्रकाशरन बन्द हो गया। एक धार्मिक मासिक पत्रिका 'सर्व हितकारी' राजपुर, देहरादून से स्वामी गोविन्दा नन्द और धर्मानन्द शास्त्री के संयुक्त सम्पादन में प्रकाशित हुई। इस प्रकार स्वतंत्रता के पश्चात उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का आरम्भिक स्वरूप काफी संघर्षशील व अफरा–तफरी के माहोल में रहा।

उत्तराखण्ड की पत्रकारिता सन् 1952 तक करीब–करीब ठीक ही चली। बुनियादी चरित्र में कम ही बदलाव आता देखा गया। पत्रकारिता का क्षेत्र बढ़ रहा था। लिखने और बोलने की आजादी की रफ्तार शनैः शनैः बढ़ने लगी। लम्बी नींद के बाद जगने पर जैसे कोई सुस्ताता है, देश और समाज उसी तर्ज पर अंगड़ाई ले रहा था। इधर पत्रकारिता पर कम ध्यान दिया गया। सन् 1947 से 1952 के पांच वर्षों में देहरादून से 'हिमांचल' (मसूरी), 'फ्रन्टियर मेल' हिमाचल टाइम्स (अंग्रेजी), देश सेवक (उर्दू), 'नन्हीं दुनिया' (बालोपयोगी मासिक), 'अंगारा' (गढ़वाली, सांस्कृतिक मासिक पत्रिका), राम सन्देश (अध्यात्मिक–धार्मिक मासिक पत्रिका) और 'चेतावनी' साप्ताहिक प्रकाशित हुए। उत्तराखण्ड में अपने समय के चोटी के पत्रकारों सर्व श्री अमीरचन्द बम्बवाल, सतपाल पॉधी, पण्डित खुशदिल, सत्यप्रसाद रतूड़ी, प्रो. लेखराज 'उल्फत' ने पत्रकारिता का शुभारमी इसी कालावधि में किया। अल्मोड़ा से 'कुमाऊँ राजपूत' (पाक्षिक) 'रूपा' और 'प्रदीप' (मासिक साहित्यिक पत्रिका) का शुभागमन इसी दौर में हुआ।

1952 से 1957 तक देश की तस्वीर और बदलने लगी, और बदलते राजनीतिक रंगों का प्रभाव पत्रकारिता पर भी झलकने लगा। पत्रकारिता वाद की ओर चलने लगी और विवाद उसके पीछे। इस काल में सर्वाधिक 25 अखबार देहरादून से निकले। इसी प्रकार 5 गढ़वाल, 2 अल्मोड़ा, 1 टिहरी गढ़वाल, 1 चमोली, 1 काशीपुर, और 1 अखबार नैनीताल से निकला। अंग्रेजी, गोरखाली, गुरूमुखी, बाल साहित्य, धार्मिक–अध्यात्मिक, ब्रेल, कला, साहित्य, लोकभाषी और कुछ वाम विचारक अखबारों का अभ्युदय इसी दौर में हुआ। इस प्रकार अतीत के 10 वषों। (1947–1957) में उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का स्वरूप सामने आ गया। अधिकतर साप्ताहिक कांग्रेस के पक्षधर रहे। पत्रकारिता कुछ–कुछ राजनीति केन्द्रित होती चली गई। भाषायी और इतर विषयों की पत्रकारिता इसकी अपवाद रही। पहली बार अन्धों के लिए ब्रेल साहित्य छपा। विष्णु दत्त उनियाल का नैनीताल से 'पर्वतीय' और देहरादून से 'फ्रन्टियर मेल' का अंग्रेजी संस्करण और 'हिमाचल टाइम्स' का हिन्दी संस्करण इसी अवधि (1957) में निकले। हीरालाल बड़ोला ने मुनिकीरेती, टिहरी गढ़वाल से और राधाकृष्ण कुकरेती ने देहरादून से क्रमशः 'उत्तराखण्ड' और 'नया जमामा' साप्ताहिक शुरू किए।

सन् 1962 के आते–आते उत्तराखण्ड में पत्रकारिता को 15 वर्ष प्राप्त हो चुके थे। अभी तक विभिन्न विषयक मासिक पत्रिकाओं को छोड़, सभी दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक समाचार पत्र योजनाओं–परियोजनाओं और कथित विकास सम्बन्धी समाचारों और राजनीति के इर्द–गिर्द घूमते रहे। अब तक आंचलिक क्षेत्रों– उत्तरकाशी, टिहरी गोपेश्वर, जोशीमठ, पौड़ी, श्रीनगर, चम्पावत, पिथौरागढ़ से एक भी साप्ताहिक नहीं छपता था। अल्मोड़ा से केवल एक साप्ताहिक 'नागराज' रमा शंकर सनवाल ने छापा था। पिथौरागढ़ से 'उत्तराखण्ड ज्योति' साप्ताहिक (1961) में प्रकाशित हुआ। उर्दू का एक साप्ताहिक 'कोहसार' नैनीताल से छपा। नैनीताल वर्तमान उधम सिंह नगर से बिगुल, चौराह, लोकतंत्र और दशानन साप्ताहिक अखबार निकलने शुरू हुए। देहरादून से इस बीच एक दर्जन पत्र–पत्रिकाएं छपने लगे थे।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद जिस राजनीति का प्रचलन इस देश में हुआ उसके लिए भारतीय जीवन7मूल्यों कोई अर्थ नहीं था। राजनीति का जो बना बनाया स्वरूप और शैली थी, वह वही थी, जिसे अंग्रेज शासक फेंक गये थे। कोई अपना मौलिक ढांचा नहीं था। कोई ऐसा स्वरूप नहीं था, जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता कि सदियों से प्रवाहमान भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है देश की राजनीति। भारतीय नेताओं ने देश की सांस्कृतिक–भौगोलिक स्थितियों के अनुकूल राज करने की कोई नई शैली विकसित करने के बजाय अंग्रेजीों की गुलामों पर राज करने की शैली को ग्रहण करना बेहतर समझा। यह औपनिवेशिक मनोग्रन्थी की देन थी। इस शैली में शासक और शोषित को जोड़ने वाला सूत्र नहीं थ। शासक वर्ग में एक विकृत सामंती मानसिकता थी, जिसके लिए शासित वर्ग का बबेस, पराश्रित रहना आवश्यक था। इस व्यवस्था में कोई ऐसा सेतु नहीं था जो दोनों को एक दूसरे से जोड़े। अंग्रेजों की राज करने की एक नीति थी– 'फूट डालो और राज करो' भारीतीय शासकों ने भी यही नीति अपनाई।

सन् 1962 में चीन के हाथों युद्ध में शर्मनाक पराजय के बाद हमारी 'रूमानी' कल्पनाओं की दुनियां कांच के खिलौने की तरह चूर–चूर होकर बिखर गई। दूसरी तरफ राष्ट्रीय सवालों पर साकार देश एक हो गया। पत्रकारिता में एक प्रकार दिशा परिवर्तन झलकने लगा। राष्ट्रीय सुरक्षा के पश्न अहम् हो गए, किन्तु यह सारा खेल कुछ ही समय तक चला और लौटकर पत्रकारिता राजनेताओं की परिक्रमा करने में जुट गई। यहीं से राष्ट्रीय ाऔर क्षेत्रीय पत्रकारिता एक तरफ तो सेल्फ–ग्लोरिफिकेशन के दौर रसे गुजरने लगी। तो दूसरी तरफ इसमें अराजक गुण घर करने लगे। उत्तराखण्ड की पत्रकारिता के सन्दर्भ में मै सन् 1962–1977 के काल खण्ड की पत्रकारिता को पत्रकारिता के ह्रास का नहीं बल्कि उत्कर्ष का समय समझता हूं। इस कालावधि मे उत्तराखण्ड से उन अखबारों का श्रीगणेश हुआ, जो सही अर्थों में उत्तराखण्ड के दुःख–दर्द को समझते थे और उत्तराखण्ड की माटी का रंग पहचानते थे। इन अखबारों ने सदैव ही उत्तराखण्ड से जुड़े पश्नों को प्राथमिकता के साथ रख और रचनात्मक दृष्टिकोण के साथ उन पर लिख। मसूरी से सीमानत प्रहरी, दमामा, मसूरी सन्देश, कमेन्टेटर, देहरादून से जनलहर, हिमानी, देहरा क्रानिकल, देहरा पत्रिका, विटनेश, यमुना किनारे, उत्तरांचल, दूनवाणी, हिमाचल पोस्ट, हिमाचल स्टार, जंजीर, दीवार, 1970, दून गार्ड, द नार्दन पोस्ट, दून दर्शन, डोईवाला से उपमन्यु, ऋषिकेश से हिमालय की आवाज, टिहरी से टिहरी टाइम्स, तरूण हिन्द, उत्तराखण्ड, पिथौरागढ़ से पर्वत पियूष, बागेश्वर से बागनाथ, उत्तरकाशी से 'पर्वतवाणी', गढ़ रैबार, चमोली से उत्तराखण्ड आब्जर्बर, अनिकेत, अल्मोड़ा से स्वाधीन प्रजा, द्वाराहाट से द्रोणाचल प्रहरी, रानीखेत से कुंजराशन, गढ़वाल–कोटद्वार से दून दर्शन, डोईवाला से उपमन्यु, ऋषिकेश से हिमालय की आवाज, टिहरी से टिहरी टाइम्स, तरूण हिन्द, उत्तराखण्ड, पिथौरागढ़ से पर्वत पियूष, बागेश्वर से बागनाथ, उत्तरकाशी से 'पर्वतवाणी', गढ़ रैबार, चमोली से उत्तराखण्ड आब्जर्बर, अनिकेत, अल्मोड़ा से स्वाधीन प्रजा, द्वाराहाट से द्रोणाचल प्रहरी, रानीखेत से कुंजराशन, गढ़वाल–कोटद्वार से मस्ताना मजदूर, गढ़ गौरव, पौड़ी से पौड़ी टाइम्स, गढ़वाल मण्डल, लैन्सडौन से अलकनन्दा, दोगड्डा से राष्ट्रीय ज्वाला, श्रीनगर से मातृपद, नैनीताल से सन्देश सागर, उत्तरायण, खबर संसार, और लोकालय इस श्रेणी के अखबार निकले हैं।

वामपंथी विचारों वाले अखबार भी इस कालखण्ड में अपेक्षाकृत खूब निकले किन्तु स्वीकार्यता के अभाव में ज्यादा नहीं चल सके। सन् 1955 में काशीपुर से प्रकाशित अखबार 'जन जागृति' यहां से छपने वालो पहला जनवादी अखबार था। इसका सम्पादन हरीश ढौंढियाल और राधा कृष्ण कुकरेती ने किया। राधा कृष्ण कुकरेती द्वारा सम्पादित 'नया जमामा' (1957 देहरादून) उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाला दूसरा वामपंथी विचारक अखबार है। यह अखबार आज भी चल रहा है। सन् 1959 में कन्युनिस्ट कार्यकर्ताओं शम्भु प्रसाद ढौंडियाल, बी.डी. भट्ट, सोहन कृष्ण डबराल और पीताम्बर देवराणी ने मिलकर कोटद्वार से 'आवाज' नाम से एक पत्र का प्रकाशन शुरू किया। सन् 1965 के आसपास रामनगर (नैनीताल) से सुशील कुमार 'निरंजन' ने 'पर्वतराज टाइम्स' नाम से एक और अखबार प्रकाशित किया। बाद में कोटद्वार, ऋषिकेश, दिल्ली और फिर कोटद्वार से किंचित व्यवधानों के साथ यह अखबार छपता रहा।

सन् 1974 में गढ़वाल के एक युवा क्रांतिकारी पत्रकार कृपाल सिंह रावत 'सरोज' ने ऋषिकेश छिद्दरवाला, देहरादून से 'लपराल (छपराल)' नाम से एक पाक्षिक अखबार प्रकाशित किया। 'लपराल' गढ़वाली शब्द है जिसका अर्थ लफ्ट होता है। इस अखबार के माध्यम से 'सरोज' ने क्षेत्र के किसानों, मजदूरों, नौजवानों की आवाज बुलन्द की। सन् 1978 में सुशील कुमार 'निरंजन' ने तीसरी बार एक और अखबार 'शैल शिल्पी' रामनगर से निकाला।

इस लम्बी अवधि में साहित्यिक पत्रकारिता का शून्य स्पष्ट नजर आया। प्रतिनिधित्व के तौर पर अल्मोड़ा से प्रकाशित 'माद्री', शिल्पी, टिहरी से 'नैतिकी', पिथौरागढ़ से 'पथिक' उत्तरकाशी से 'काशी दर्पण', 'हिम तरंगिणी' (संस्कृत), लैन्सडौन से 'अलकनन्दा', कोटद्वार से 'गढ़ गौरव', दोगड्डा से 'राष्ट्रीय ज्वाला', और रूद्रपुर से विद्यार्थियों की पत्रिका 'युग समर्पण' और 'हस्तक्षेप' का उल्लेख मात्र है। देहरादून–मसूरी से भी मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। इनमें कुछ पत्रिकाएं अंग्रेजी भाषा में छपीं, कुछ हिन्दी में। किन्तु ये विशुद्ध साहित्यिक न हो कर, विभिन्न विषयक थीं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रकाशित पत्रों में से कुछ ही समाचार पत्र 1947 के बाद प्रकाशन जारी रख सके क्योंकि स्वाधीनता पूर्व के अधिकांश पत्रों का जो उद्देश्य था वह हासिल हो चुका था। फिर भी ठीक 15 अगस्त 1947 को भगवती प्रसाद पांथरी, गोपेश्वर कोठियाल आदि ने देहरादून से ''युगवाणी'' का प्रकाशन आरम्भ किया। यह पत्र मूलतः प्रजामंडल का पत्र था। इसका महत्व टिहरी रियासत के अंतिम दो सालों के आंदोलनों के संदर्भ में अधिक है। यह पत्र मासिक पत्रिका के रूप में आज भी निकल रहा है और उत्तराखण्ड की अग्रणी पत्रिकाओं में से एक है।

स्वत्रंता के बाद उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाले कुछ समाचार पत्र–पत्रिकाओं का परिचय इस प्रकार है–

1947 – 1952 के बीच देहरादून से हिमाचल, देश सेवक, अंगारा तथा अल्मोड़ा से कुमाऊॅ राजपूत, रूपा, प्रदीप आदि पत्र – पत्रिकाएं निकलीं। 1956 में कोटद्वार से ललिता प्रसाद नैथाणी ने ''सत्यपथ'' का प्रकाशन किया। इस पत्र ने स्थानीय विषयों को प्रमुखता से उठाने की कोशिश की। इसी दौर में विष्णुदत्त उनियाल का नैनीताल से ''पर्वतीय'' नामक पत्र निकला। लम्बे समय तक जीवित रहे इस अखबार ने उत्तराखण्ड में नए दौर की पत्रकारिता को बहुत कुछ सिखाया। हिन्दी के कई नामी लेखकों और पत्रकारों के लिए यह अखबार एक पाठशाला की तरह था। 1957 में हीरालाल बड़ोला ने मुनि की रेती टिहरी गढ़वाल से तथा राधाकृष्ण कुकरेती ने देहरादून से क्रमशः ''उत्तराखण्ड'' और ''नया जमाना'' साप्ताहिक शुरू किये। पिथौरागढ़ से ''उत्तराखण्ड ज्योति'' साप्ताहिक पत्र 1961 में निकला तो उत्तराखण्ड की तराई (उधमसिंह नगर) से बिगुल, चौराहा, लोकतंत्र आदि साप्ताहिक अखबार निकले।

1962 – 1977 के दौरान मसूरी से ''सीमान्त प्रहरी'', देहरादून से ''जन लहर'', ऋषिकेश से ''हिमालय की आवाज'', उत्तरकाशी से ''पर्वतवाणी,'', ''गढ़रैवार'', पिथौरागढ़ से ''पर्वत पीयूष'' आदि पत्र निकलने प्रारम्भ हुए। 1955 में काशीपुर से प्रकाशित अखबार ''जन जागृति'' तथा कोटद्वार से 1965 में प्रकाशित ''आवाज'' वामपंथी प्रभाव वाले पत्र थे। 1974 में देहरादून से

प्रकाशित ''लपराल'' नामक अखबार ने किसानों – मजदूरों के दुःख दर्दों को समझने का प्रयास किया। इस दौर में साहित्यिक पत्र – पत्रिकाएं भी निकलीं। परन्तु अपना खास प्रभाव नहीं छोड़ पायीं। प्रतिनिधित्व के तौर पर अल्मोड़ा से ''माद्री'', ''शिल्पी'', टिहरी से ''नैतिकी'', पिथौरागढ़ से ''पथिक'' आदि का जिक्र किया जा सकता है।

आठवें दशक (1978–2010) के बाद पूंजीवादी अखबार, पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन और दर्जनों टीवी चैनलों ने धीरे – धीरे यहां की क्षेत्रीय पत्रकारिता की रीढ़ तोड़नी शुरू की। फिर भी अपने सीमित संसाधनों के बावजूद कुछ समाचार पत्र–पत्रिकाएं निरन्तर प्रकाशित होते हुए अपना पाठक वर्ग बनाए हुए हैं। ये हैं– युगवाणी, पर्वतजन, नया जमाना, सीमान्त प्रहरी, मसूरी टाइम्स, आज का पहाड़, नैनीताल समाचार, आधारशिला, उत्तरा, पहाड़ आदि।

परन्तु व्यावसायिक रूप से देखें तो उक्त में से अधिकांश पत्र–पत्रिकाओं की हालत दयनीय है और एक सीमित पाठक वर्ग तक ही इनकी पहुंच है। यही हाल यहां की साहित्यिक–सांस्कृतिक पत्र–पत्रिकाओं का भी है। अल्मोड़ा से कुमाऊॅनी भाषा में ''पहरू'' पत्रिका निकल रही है और पौड़ी से गढ़वाली में उत्तराखण्ड खबरसार पाक्षिक निकलता है। गढ़वाल से गढ़वाली भाषा में एकाध और पत्रिकाएं भी निकल रही हैं, परन्तु इन सभी की प्रसार संख्या कम है एवं संसाधन सीमित हैं।

उत्तराखण्ड की आवाज कहे जाने वाले साप्ताहिक पत्र और पत्रिकाएं वक्त की आंधी में खो गए हैं। बचे–खुचे अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। दैनिक अखबारों की रोजी–रोटी इलेक्ट्रानिक मीडिया छीनता जा रहा है। रहे–सहे साप्ताहिकों को राज्य में स्थापित दैनिकों ने विकलांग बना छोड़ा है। राज्य की राजधानी देहरादून से छपने वाले उंगुली पर गिने दैनिक अखबार हैं जो उत्तराखण्ड मूल के लोगों द्वारा संचालित है। शेष बड़ी पूंजी वाले सभी अखबार बाहर से आए हुए हैं। ये सभी बहुपृष्ठीय बहुरंगीय अखबार किसी 'प्रोडक्ट' की तरह अपने अखबार को बचेते हैं।(सकलानी)

दूसरी तरफ, अति सीमित साधनों के बीच उत्तराखण्ड से प्रकाशित कई साप्ताहिकों, दैनिकों और मासिक पत्रिकाओं ने राजनीतिबाजों को जब–तब बेनकाब किया और नौकरशाही में फैले भष्टाचार को खुलकर कलम का निशाना बनाया। इस सूची में कुछ नाम इस प्रकार हैं – युगवाणी, हिमालय टाइम्स, सीमान्त प्रहरी, पर्वतीय, 1970, उत्तरायण, मसूरी टाइम्स, हेमकुण्ड और हिमालय, हिमालय और हम, पौड़ी टाइम्स, कर्मभूमि, उत्तरांचल, आज का पहाड़, उत्तराखण्ड ज्योति, अल्मोड़ा टाइम्स, उत्तर उजाला, द्रोणाचल प्रहरी, देवभूमि जंगल के दावेदार आदि कुछ ऐसे अखबार हैं, जिन्हें उत्तराखण्ड की माटी से जुड़ा अखबार कहा जा सकता है। इन सभी पत्र–पत्रिकाओं में सालभर में प्रकाशित विज्ञापनों का योग पूंजीपति अखबार के किसी एक विशेषांक में प्रकाशित विज्ञापनों का योग कहीं अधिक बैठता है। फिर भी ये चले और चल रहे हैं। (सकलानी)

उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद तो उत्तराखण्ड में नई पत्र पत्रिकाओं की बाढ़ ही आ गई है। सिर्फ देहरादून से ही प्रकाशित होने का दावा करने वाले दैनिक पत्रों की संख्या 45 से अधिक हो गई है। यही हाल वहां से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं का भी है।

हाल के वर्षों में पत्रकारिता ने जिस तीव्रता से नई तकनीक और नये बदलावों को आत्मसात किया है वह हैरान करने वाला है। इस क्रम में सबसे ज्यादा बदलाव स्वयं खबरें लेने–देने के व्यापार में और इस काम में लगे लोगों में, इसकी तकनीक में, तथा इसके प्रभाव में हुआ है। समाज में पत्रकारिता के विभिन्न रूपों की पैठ और प्रभाव में भारी वृद्धि हुयी है। यह लोगों की राय बनाने, बदलने की वाहक भी बन गई है और उनके नजरिये तथा उनकी खबरों को सामने लाने का प्रभावी माध्यम भी बन गई है।

पेशे के तौर पर भी इसने समाज की प्रतिभाओं को आकर्षित किया है। नई पीढ़ी में प्रतिभावान और समाज के लिये कुछ करने की मंशा रखने वालों की फौज पत्रकारिता की तरफ मुड़ी है। आज पत्रकारिता से जुड़े जोखिम, काम की परेशानियॉ, जरा भी फुरसत का वक्त न होना जैसी दिक्कतें नए लोगों को इस पेशे में आने से रोकती नहीं बल्कि उन्हें चुनौती और एडवैंचर जैसी लगती हैं। शायद यही वजह है कि सभी विश्वविद्यालय और संस्थाएं अपने यहॉ पत्रकारिता का पाठ्यक्रम शुरू कर रही हैं। पत्रकारिता के अध्यापन की सामाग्री तथा किताबें तो कम पड़ रही हैं, लेकिन पत्रकारिता पढ़ने वाले लड़के – लड़कियों की कमी नहीं है। सूचना क्रान्ति के प्रभाव और लोगों में अखबार की रूचि बढ़ने के साथ–साथ अखबारों में विज्ञापनों की संख्या भी तेजी से बढ़ी है। इसका सीधा असर यह हुआ है कि अखबारों की प्रसार संख्या लगातार बढ़ रही है और उसी के साथ अखबारों के स्थानीय संस्करण भी बढ़ते जा रहें है। आज उत्तराखण्ड के देहरादून तथा हल्दानी जैसे शहरों से भी तमाम बड़े दैनिकों के संस्करण प्रकाशित होने लगे हैं। इसने पत्रकारिता में रोजगार भी बढ़ाए हैं और पत्रकारों को दिल्ली–लखनऊ के बजाय अपने क्षेत्र में रह कर पत्रकारिता करने के अवसर भी सुलभ करा दिए हैं।

यह दौर पत्रकारों के लिए नई जिम्मेदारियों का दौर है। पत्रकार अरविन्द मोहन अपनी पुस्तक ''पत्रकार और पत्रकारिता प्रशिक्षण'' में लिखते हैं कि – ''नये बदलावों, विस्तारों, तकनीकी ताकत ने पत्रकारों के ऊपर ज्यादा जिम्मेदारी डाल दी है। जब आप के मुंह से कही बात एक, दो चार लोगों की जगह दस–बीस पचास करोड़ लोगों को सूचना दे, उनके कार्य– व्यापार और सोच को प्रभावित करती हो तब आपकी जिम्मेदारी निश्चित रूप से बहुत बढ़ जाती है।''

आज का दौर सूचना क्रान्ति का दौर है। इंटरनेट के जरिये कोई भी सूचना कितनी ही जगह पहुंचायी जा सकती है। इसलिए आज एक अच्छे पत्रकार को सूचना क्रान्ति के माध्यमों का भी अच्छा जानकार होना चाहिये। आज मीडिया में पत्रकारों अलावा सूचना तकनीक के अन्य विशेषज्ञों के लिए भी रोजगार के आकर्षक अखबारों की कमी नही रह गई है। आज स्थानीय टी वी चैनलों और दैनिक अखबारों को छोटी–छोटी जगहों पर भी नियमित अथवा अंशकालिक पत्रकारों की आवश्यकता रहती है। इंटरनेट व मोबाइल ने भी पत्रकारिता के नये रास्ते खोल दिये हैं। इससे युवाओं के लिए घर बैठे पत्रकार बनना भी आसान हो गया है।

आज धीरे – धीरे प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अंग्रेजी का वर्चस्व टूट रहा है। कल तक जो पत्रकार या विशेषज्ञ हिन्दी बोलने मे अपमान महसूस करते थे, आज टीवी पर फटाफट हिन्दी बोलते हैं। हिन्दी पत्र – पत्रिकाओं की प्रसार संख्या, पहुंच, पूंजी सभी में अभूतपूर्व वृद्धि हुयी है। इस तरह अंग्रेजी के साथ ही हिन्दी भाषा के जानकार पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रूफ रीडिंग से लेकर खबरों के कुशल लेखन तक के क्षेत्र में कैरियर तलाश सकते हैं। एक फोटोग्राफर के लिए भी आज फोटोपत्रकार के रूप में कैरियर बनने के मौके पहले की तुलना में काफी बढ़ गए हैं।

आज उत्तराखण्ड से दर्जनों अखबार पत्र–पत्रिकाएं निकल रही हैं। इनमें राजनीतिक विषयों के साथ – साथ सामाजिक, सांस्कृतिक – साहित्यिक, पर्यावरण, खेल – कूद, व्यापार आदि की खबरों का विस्तार बढ़ा है। परन्तु प्रायः इन सभी पत्र – पत्रिकाओं की प्रसार संख्या कम है। इसका कारण पूंजी का अभाव, सचेत, जागरूक, खोजी एवं निडर पत्रकारों की कमी कुशल प्रबन्धन न होना, विज्ञापन न जुटा पाना, उन्नत तकनीक एवं सूचना क्रान्ति के माध्यमों का प्रयोग न करना, स्थानीयता को जगह कम देना, संचार तंत्र के कुशल प्रयोग का अभाव, प्रचार की कमी आदि हो सकते हैं। आज की पीढ़ी का पत्रकार उक्त चीजों को ध्यान में रख किसी पत्र – पत्रिका से जुड़े या नया पत्र – पत्रिका निकाले तो वह भी अपने कैरियर के साथ – साथ अनेक युवाओं का कैरियर संवार सकता है। इसी तरह इंटरनेट व मोबाइल पत्रकारिता में भी वह अपने लिए स्थान बना सकता है।

वर्तमान में देखें तो अमर उजाला, दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दुस्तान जैसे समाचार पत्रों को उत्तराखण्ड में सबसे ज्यादा पढ़ा जाता है। पूंजी, आकर्षक साज–सज्जा, क्षेत्रीयकरण (क्षेत्रीय संस्करण), कुशल प्रबन्ध तन्त्र, सरकारी, प्रतिष्ठानों, संस्थानों एवं व्यक्तिगत विज्ञापनों के बल पर इनका दबदबा बना हुआ है। त्वरित संचार तंत्र, उन्नत तकनीक के माध्यम से सही समय पर यह समाचार पत्र लोगों को उपलब्ध हो जाते हैं और क्षेत्रीयकरण के कारण लोग अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय विषयों से लेकर अपने गॉव, शहर की सभी छोटी–मोटी सूचनाएं इन अखबारों में पढ़ सकते हैं। इसके अलावा गढ़वाल पोस्ट, उत्तर उजाला, दून दर्पण, जन लहर आदि छोटे स्थानीय दैनिक पत्र भी अपने अस्तित्व के संघर्ष में निरन्तर जुटे हुए हैं।

यहॉ यह भी ध्यान रखना जरूरी है कि पत्रकारिता के सत्ता, पैसे तथा शक्ति से जुड़ जाने के कारण और कैरियर पर जरूरत से ज्यादा जोर देने से बहुत सारे नये पत्रकार जल्दी ही अवसान की ओर चले जाते हैं। दिन – रात विशेष खबरों को खोजने की प्रवृत्ति, सामान्य ड्यूटी न करना, विशिष्ट खबरों को गढ़ने का फरेब करना, प्रोन्नति के लिये दफ्तर के अन्दर जोड़ – तोड़, चापलूसी से लेकर सत्ता के गलियारों तक अपनी पहुॅच का इस्तेमाल करना इनका मुख्य काम होता है, लेकिन स्थितियां बदलते ही ऐसे लोग सड़क पर आ जाते हैं। लंबे पेशेवर कैरियर के हिसाब से इन सब चीजों को दरकिनार रखना चाहिए। युवा पत्रकार को पूरी लगन पूरी निष्ठा और पूरी ईमानदारी के साथ काम करना चाहिए, काम सीखना चाहिए। उसे खबर की तह में जाने की कोशिश करनी चाहिए और गलतियों से बचना चाहिए। पत्रकार अरविन्द मोहन लिखते हैं

–''पत्रकारों को किसी भी अन्य पेशे के लोगों की तुलना में ज्यादा संयमी और दूरदर्शी होना चाहिए, क्योंकि उनका काम ही अपने ''गम'' से ज्यादा जमाने के ''गम'' की चिंता करना है।''

उत्तराखण्ड के नया राज्य बनने के बाद यहां पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन के क्षेत्र में काफी वृद्धि हुयी है। क्षेत्रीय भाषा की पत्र–पत्रिकाओं से लेकर दर्जनों हिन्दी पत्र–पत्रिकाएं निकल रही हैं और तमाम राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय टीवी चैनलों से लेकर स्थानीय चैनल भी यहॉ दस्तक दे चुके हैं। निश्चित ही उक्त सभी माध्यमों को अच्छे पत्रकारों की जरूरत हर समय रहती ही है।

इस प्रकार कहें तो उत्तराखण्ड की पत्रकारिता का स्वतंत्रता से पूर्व अथवा उसके पश्चात् हमारे देश की पत्रकारिता में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में उत्तराखण्ड की पत्रकारिता ने भी राष्ट्रीय पत्रकारिता के साथ मिलकर देश के आजादी के आंदोलन में जनचेतना जागृत करने में अहम् भूमिका निभाई। समय–समय पर सामाजिक–आर्थिक आंदोलनों में इसकी सराहनीय भूमिका रही है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व व बाद में भी प्रकाशित समाचार पत्रों के नाम बताइए ?

प्रश्न 2– स्वतंत्रता प्राप्ति के समय किन–किन अखबारों का प्रकाशन हुआ ?

प्रश्न 3– सन 1947 से 1952 तक पांच वर्षों में देहरादून से कौन–कौन से अखबार प्रकाशित हुए?

प्रश्न 4– 1962 – 1977 के दौरान प्रकाशित समाचार पत्र–पत्रिकाओं के नाम बताइए ?

6.6 सारांश :

पत्रकारिता का जन्म ही अपने विचारों व जिज्ञासा को एक–दूसरे तक पहुंचाने के लिए हुआ है। अंग्रेजी के महत्वपूर्ण साहित्यकार एडीसन ने पत्रकारिता के बारे में कहा था कि– 'पत्रकारिता से अधिक मनोरंजक, अधिक चुनौतीपूर्ण, अधिक रसमयी और अधिक जनहितकारी कोई दूसरी बात मुझे दिखाई नहीं देती। एक स्थान पर बैठकर प्रतिदिन हजारों–लाखों लोगों तक पहुंच जाना, उनसे अपने मन की बात कह देना, उन्हे सलाह देना, शिक्षा देना–परामर्श देना, उन्हें विचार देना, उनका मनोरंजन करना, उन्हें जागरूक बनाना सचमुच बेहद आश्चर्यजनक होता है।'

हालांकि यह माना जाता है कि भारत में प्रेस स्थापित करने में पुर्तगालियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। किंतु भारत में पत्रकारिता की शुरूआत करने का श्रेय अंग्रेजों को ही जाता है। पुर्तगाली, डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज सभी भारत में व्यापार करने आए थे। अग्रेजों के प्रयासों से 1779 में कोलकाता में पहली सरकारी प्रेस स्थापित की गई जिसके प्रबंधक चार्ल्स विलकिंस थे।

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का उद्भव 19 वीं शताब्दी में माना जाता है, जब यहॉ 1815 में गोरखों के क्रूर एवं अत्याचारी शासन का अन्त ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा हुआ तो शुरूआत में अंग्रेजों का स्वागत हुआ। उत्तराखण्ड में 1815 से लेकर 1857 तक कंपनी के शासन के दौर में

उत्तराखण्ड के कवि मौलाराम (1743 – 1833), गुमानी (1779–1846) एवं कृष्णा पाण्डे(1800 – 1850) आदि की कविताओं में असन्तोष के बीज मिलते हैं। साथ ही उत्तराखण्ड में 1857 के स्वाधीनता संग्राम के समय तथा इससे पूर्व भी औपनिवेशिक अवमानना के प्रमाण मिलते हैं।

स्थानीय पत्रकारिता ने बाद के वर्षों में उत्तराखण्ड के विभिन्न स्थानीय संघर्षों का स्वाधीनता संग्राम से एकीकरण कर देश के अन्य हिस्सों के आंदोलनों एवं वहां के समाज, संस्कृति से जनता को परिचित कराने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाई। उत्तराखण्ड में स्वतंत्रता से पूर्व भी पत्रकारिता का इतिहास काफी सक्रिय रहा। समाजिक समस्याओं को लेकर जहां यहां की पत्रकारिता ने जन्म लिया वहीं राष्ट्र की आजादी में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वतन्त्रता से पूर्व उत्तराखण्ड से प्रकाशित होने वाले पत्र–पत्रिकाएं – समय विनोद, शक्ति, कर्मभूमि, पर्वतीय, गढ़वाली, पुरूषार्थ, तरूण कुमाऊँ, क्षत्रियवीर, गढ़देश, गढ़वाल हितैषी, उत्तर भारत, नव प्रभात, सत्यवीर तथा स्वराज्य संदेश प्रमुख हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रकाशित पत्रों में से कुछ ही समाचार पत्र 1947 के बाद प्रकाशन जारी रख सके। 1947 में देहरादून से 'युगवाणी' पत्र जो आज भी मासिक पत्रिका के रूप में निरन्तर प्रकाशित हो रही है। 1947–1952 के बीच देहरादून से हिमाचल, देश सेवक, अंगारा तथा अल्मोड़ा से कुमाऊॅ राजपूत, रूपा, प्रदीप आदि पत्र–पत्रिकाएं निकलीं। 1956 में कोटद्वार से ललिता प्रसाद नैथाणी ने ''सत्यपथ'' का प्रकाशन किया। इस पत्र ने स्थानीय विषयों को प्रमुखता से उठाने की कोशिश की। इसी दौर में विष्णुदत्त उनियाल का नैनीताल से ''पर्वतीय'' नामक पत्र निकला। लम्बे समय तक जीवित रहे इस अखबार ने उत्तराखण्ड में नए दौर की पत्रकारिता को बहुत कुछ सिखाया।

आठवें दशक के बाद पूंजीवादी अखबार, पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन और दर्जनों टीवी चैनलों ने धीरे – धीरे यहां की क्षेत्रीय पत्रकारिता की रीढ़ तोड़नी शुरू की। फिर भी अपने सीमित संसाधनों के बावजूद कुछ समाचार पत्र– पत्रिकाएं निरन्तर प्रकाशित होते हुए अपना पाठक वर्ग बनाए हुए हैं। ये हैं– युगवाणी, पर्वतजन, नया जमाना, सीमान्त प्रहरी, मसूरी टाइम्स, आज का पहाड़, नैनीताल समाचार, आधारशिला, उत्तरा, पहाड़ आदि।

वर्तमान में उत्तराखण्ड में अमर उजाला, दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दुस्तान जैसे समाचार पत्रों को उत्तराखण्ड में सबसे ज्यादा पढ़ा जाता है। पूंजी, आकर्षक साज–सज्जा, क्षेत्रीयकरण (क्षेत्रीय संस्करण), कुशल प्रबन्ध तन्त्र, सरकारी, प्रतिष्ठानों, संस्थानों एवं व्यक्तिगत विज्ञापनों के बल पर इनका दबदबा बना हुआ है। त्वरित संचार तंत्र, उन्नत तकनीक के माध्यम से सही समय पर यह समाचार पत्र लोगों को उपलब्ध हो जाते हैं और क्षेत्रीयकरण के कारण लोग अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय विषयों से लेकर अपने गॉव, शहर की सभी छोटी–मोटी सूचनाएं इन अखबारों में पढ़ सकते हैं। इसके अलावा गढ़वाल पोस्ट, उत्तर उजाला, दून दर्पण, जन लहर आदि छोटे स्थानीय दैनिक पत्र भी अपने अस्तित्व के संघर्ष में निरन्तर जुटे हुए हैं।

6.7 शब्दावली :

समय विनोद : समय विनोद उत्तराखण्ड का पहला स्थानीय अखबार था। हिन्दी उर्दू में निकलने वाले इस अखबार का प्रकाशन 1868 में नैनीताल से शुरू हुआ था। इसके 1877 तक प्रकाशित होने के प्रमाण मिलते हैं। इस पाक्षिक के संपादक जयदत्त जोशी पेशे से वकील थे। सरकारपरस्त होने के बाद भी इसने अनेक बार जनता की समस्याओं पर अपनी चिन्ता प्रकट की थी।

शक्ति : शक्ति उत्तराखण्ड में आजादी से पहले के दौर का एक महत्वपूर्ण स्थानीय अखबार था। यह 1918 से अब तक निरन्तर छप रहा है। शक्ति के पहले संपादक बद्रीदत्त पाण्डे के बाद में आजादी की लड़ाई के अनेक नायक भी इसके सम्पादन से जुड़े। इसने एक ओर स्थानीय जन समस्याओं को उठाया, सामाजिक बुराईयों के खिलाफ आवाज उठाई तो दूसरी ओर आजादी की लड़ाई और अहिंसक आन्दोलन को भी उत्तराखण्ड की जनता तक पहुंचाया।

कर्मभूमि : 1939 में लैंसडाउन से भैरवदत्त धूलिया और भक्तदर्शन द्वारा प्रकाशित कर्मभूमि ने ब्रिटिश गढ़वाल और टिहरी रियासत दोनों में राजनीतिक और सामाजिक चेतना फैलाने का काम किया। इसे अनेक बार ब्रिटिश सरकार और टिहरी रियासत दोनों की नाराजगी झेलनी पड़ी। 1942 में इसके संपादक भैरवदत्त धूलिया को 4 वर्ष नजरबंदी की सजा भी सुनाई गई थी।

गढ़वाली : मई सन् 1905 में गढ़वाल यूनियन (सभा) द्वारा देहरादून में हिन्दी राष्ट्रीय पत्र 'गढ़वाली' का आरम्भ हुआ। पहले इसके सदस्यों के द्वारा पत्र का नाम 'उत्तराखण्ड समाचार' और 'गढ़वाल समाचार' प्रस्तावित किया गया किन्तु 'गढ़वाली' नाम सरल और उपयोगी समझ कर यही पारित कर दिया गया। गढ़वाल सभा के लिए पत्र की आवश्यकता का सुझाव भी चन्दोला ने गैरोला जी को दिया था, वे सभा के मंत्री और चन्दोला उपमंत्री थे, इस प्रकार आरम्भ से ही वे 'गढ़वाली' पत्र से जुड़े रहें।

पुरूषार्थ : सन् 1918 जनवरी को मासिक पुरूषार्थ का प्रथम अंक, दीनबन्धु प्रेस बिजनौर से छापा गया। इसके सम्पादक गिरिजादत्त नैथाणी थे। यह दुगड्डा और नैथाणा से प्रकाशित होता था। दिसम्बर 1916 को यह बन्द हो गया। सन् 1926 से गिरिजा दत्त नैथाणी ने दुगड्डा में फिर से मासिक 'पुरूषार्थ' छापने का प्रयत्न किया। एक अंक निकल सका था कि निमोनिया से नैथाणी जी का स्वर्गवास हो गया और पुरूषार्थ का प्रकाशन बंद हो गया।

तरूण कुमाऊँ : तरूण कुमाऊँ, मासिक पत्र जुलाई सन् 1922 से मई, 1924 तक छपता रहा। इसके सम्पादक बैरिस्टर कुकन्दी लाल थे। आरम्भिक काल जुलाई 1922 से सितम्बर 1923 तक 'तरूण–कुमाऊँ' गढ़वाली प्रेस देहरादून में मुद्रित और प्रकाशित होता रहा। इसके पश्चात् भास्कर प्रेस देहरादून में छापा गया। इसका वार्षिक मूल्य 3 रूपया था। यह एक उच्च स्तर का पत्र था। देशव्यापी राजनीतिक उथल–पुथल पर सतर्क दृष्टि रखते हुये तरूण कुमाऊँ के द्वारा बैरिस्टर मुकन्दी लाल ने गढ़वाल–कुमाऊँ की जनता की मूलभूत समस्याओं को उजागर करते हुये उनके निवारण के लिए अंग्रेज अधिकारियों से जोरदार हिमायत की।

क्षत्रियवीर : सन् 1923 से ठाकुर प्रताप सिंह नेगी के सम्पादन में पौड़ी से 'क्षत्रियवीर' पाक्षिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ। ठाकुर हनुमंत सिंह रघुवंशी द्वारा ओरियंटल प्रेस आगरा में छापा गया। 'क्षत्रियवीर' 1936 तक छपता रहा। 1934 में इसके सम्पादक ठाकुर कोतवाल सिंह नेगी थे। सन् 1927 में कुवंर गजेन्द्र सिंह रघुवंशी द्वारा राजपूत ऐंग्लो ओरिएंटल प्रेस, मदन मोहन दरवाजा, आगरा में छापा गया।

गढ़देश : साप्ताहिक पत्र 'गढ़देश' सन् 1926 ई. में कोटद्वार से प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक और प्रकाशक पंडित कुपाराम मिश्र 'मनहर' थे। पहले यह पंण्डित कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर के प्रेस सहारनपुर में छपा, फिर लाला शीतला प्रसाद विद्यार्थी द्वारा उनके निज के प्रेस 'शांति प्रिटिंग प्रेस' सहारनपुर में छपता रहा। कुछ समय तक देहरादून में स्वामी विचारानन्दजी सरस्वती के 'अभय प्रेस' से छपता रहा। 'गढ़देश' 1932 तक चलता रहा। इसने गढ़वाल की कई समस्याओं को सशक्त रूप से उठाया। यह राष्ट्रवादी पत्र था। कृपाराम मिश्र स्वयं राष्ट्रभक्त प्रगतिशील, उत्साही व्यक्ति थे।

गढ़वाल हितैषी : सन् 1930 में लैन्सडाउन से प्रकाशित पाक्षिक पत्र 'गढ़वाल हितैषी' सन् 1937 तक छपता रहा। इसके सम्पादक व प्रकाशक पं0 पीताम्बर दत्त पसबोला (ऐडवोकेट) थे। मार्च 1932 से 'गढ़वाल हितैषी' केवल 'हितैषी' के नाम से 1937 तक प्रकाशित होता रहा। सम्पादक पं0 पीताम्बर दत्त पसबोला राय बहादुर ही रहे। यह पत्र आरम्भ से ही लाला शान्ति चन्द्र जैन, 'चैतन्य प्रेस' बिजनौर से प्रकाशित होता रहा। 'हितैषी' का चन्दा 2 रूपया वार्षिक था। राय बहादुर पसबोला 'हितैषी' को अंग्रेज सरकार के विरूद्ध होने से बचाकर रखते थे।

नव प्रभात : सन् 1936 से साप्ताहिक नव प्रभात पौड़ी से प्रकाशित हुआ। साप्ताहिक 'उत्तर भारत' की तरह इसके सम्पादक भी महेशानन्द थपलियाल ही रहे। पत्र 'गढ़वाल फाइन आर्ट प्रेस' पौड़ी से प्रकाशित होता रहा। 1940 में 'उत्तर प्रभात' और कोटद्वार से हरिराम मिश्र का 'संदेश' भी 'नव–प्रभात' में सम्मिलित कर लिया गया था। महेशानन्द थपलियाल ने इस पत्र की उन्नति के काफी प्रयास किया। इस पत्र ने गढ़वाल की समस्याओं को उठाने के साथ–साथ सुधारात्मक कार्यों को विशेष स्थान देकर, कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया। साथ ही देश की अंग्रेज प्रशासन की दबंग नीति तथा तत्कालीन भारत के निपुण सुलझे हुये, कूटनीतिज्ञ व दृढ़संकल्पधारी राजनीतिज्ञों की कार्य प्रणाली पर पैनी नजर रखी। उदाहरण के लिए, द्वितीय युद्ध के समय राजगोपालाचारी का अमेरिका के समाचार पत्रों का उत्तर और कांग्रेस अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद के पत्रों के उत्तर यहां दिये गये हैं।

सत्यवीर : टिहरी से सर्वप्रथम 1927 में ठाकुर हरदेव सिंह ने 'सत्यवीर' नाम से एक पाक्षिक पत्र निकाला था। यह देहरादून में 'देहरा टाइम्स प्रेस' से मुद्रित और ऋषिकेश के प्रकाशित होता था। इस पत्र में ठाकुर हरदेव सिंह को कुछ लोगों द्वारा सक्रिय सहयोग प्राप्त था। तत्कालीन टिहरी रियासत की गतिविधियों की जानकारी देने के साथ, स्थानीय और विविध समाचारों तक सीमित रहा। टिहरी के 1928–29 के राज्य प्रशासन का समर्थक था तथा 1926 से 1927 से 1930 तक छपता रहा।

स्वराज्य संदेश : सन् 1935 में देहरादून से 'स्वराज्य संदेश' पत्र का प्रकाशन किया गया। इसके सम्पादक चौधरी हुलास वर्मा थे। यह 'हिन्दी भाग देहरा टाइम्स प्रेस' देहरादून में मुद्रित होता था। 'स्वराज्य–संदेश' राष्ट्रीय पत्र था। इसके लेख विशेषतः तत्कालीन अंग्रेज प्रशासन और भारतीय राजनीति से सम्बन्धित रहते थे। 'स्वराज्य संदेश' के मुखपृष्ठ पर ही भारत मां की वन्दना 'बन्दे मातरम्' का उद्घोष छपा रहता था जिसके उच्चारण से ही भारत के देश भक्तों पर तत्कालीन अंग्रेज पुलिस की लाठियों की वर्षा होती थी। स्वदेश आंदोलन और अंग्रेजों के खिलाफ को लेकर प्रकाशित लेखों के कारण इन्हें जेल भी जाना पड़ा।

6.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

उत्तर 6.3

उत्तर 1– उत्तराखण्ड में 1815 से लेकर 1857 तक कंपनी के शासन के दौर में कुछ कवियों ने अपनी कविताओं में असन्तोष की कविताएं गाये थे, ये कवि मौलाराम, गुमानी एवं कष्णा पाण्डेय आदि थे।

उत्तर 2– कागज और मुद्रण का आविष्कार सबसे पहले चीन में हुआ और फिर यह कला चीन से यूरोप में पहुंची। यह माना जाता है कि चीन में ही सबसे पहला समाचार पत्र निकला जिसका नाम 'पेकिंग गजट' अथवा तिंचाओ था।

उत्तर 3– 'युगवाणी' एक ऐसा पत्र है जो भारतीय स्वतंत्रता वर्ष 1947 में प्रकाशित होना शुरू हुआ था और आज भी लगातार देहरादून के युगवाणी प्रेस से मासिक पत्रिका के रूप में प्रकाशित हो रही है।

उत्तर 4– वर्तमान में देहरादून से लगभग 45 देनिक पत्र प्रकाशित हो रहे हैं।

उत्तर 6.4

उत्तर 1– स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता का दूसरा चरण सन् 1900 से सन् 1939 तक माना जाता है। इसी कालखण्ड में यहां पत्रकारिता में उतार–चढ़ाव देखे गये हैं। स्वराज्य प्राप्ति के लिए लड़ी गयी लड़ाई के संदर्भ में उद्देश्य पूर्ण पत्रकारिता की शुरूआत इसी अवधि में हुई। शक्ति, गढ़वाली, गढ़वाल समाचार, स्वाधीन प्रजा, तरूण कुमाऊँ, अभय, कास्मोपोलिटन, गढ़देश, संदेश, जागृत जनता, कर्मभूमि जैसे साप्ताहिकों का अभ्युदय इसी कालावधि में हुआ।

उत्तर 2– उत्तराखण्ड में स्वतंत्रता से पूर्व पत्रकारिता का तीसरा और अंतिम चरण सन् 1940 से सन् 1947 की अवधि का है। अंग्रेजों भारत छोड़ो और पूर्ण स्वराज्य की मांग का यही दौर था। स्वाधीनता आंदोलन में हजारों राष्ट्रभक्तों, सम्पादकों/पत्रकारों ने जेल जाकर स्वावधीनता संग्राम में अपनी उपस्थिति दर्ज

इसी काल में कराई थी। इस दौर में कई अखबार मालिकों व सम्पादकों को अंग्रेजों की तानाशाही का जुर्म भी सहना पड़ा।

उत्तर 3– 1939 में लैंसडाउन से भैरवदत्त धूलिया और भक्तदर्शन द्वारा प्रकाशित कर्मभूमि ने ब्रिटिश गढ़वाल और टिहरी रियासत दोनों में राजनीतिक और सामाजिक चेतना फैलाने का काम किया। इसे अनेक बार ब्रिटिश सरकार और टिहरी रियासत दोनों की नाराजगी झेलनी पड़ी। 1942 में इसके संपादक भैरवदत्त धूलिया को 4 वर्ष नजरबंदी की सजा भी सुनाई गई थी।

उत्तर 4– ''शक्ति'' का प्रत्येक संपादक राष्ट्रीय संग्रामी था। बद्रीदत्त पाण्डे, मोहन जोशी, दुर्गादत्त पाण्डे, मनोहर पंत, राम सिंह धौनी, मथुरा दत्त त्रिवेदी, पूरन चन्द्र तिवाड़ी आदि में से एक–दो अपवादों को छोड़कर ''शक्ति'' के सभी सम्पादक या तो जेल गये थे या तत्कालीन प्रशासन की घृणा के पात्र बने। ''शक्ति'' ने न सिर्फ स्थानीय समस्याओं को उठाया वरन् इन समस्याओं के खिलाफ उठे आन्दोलनों को राष्ट्रीय आन्दोलन से एकाकार करने में भी उसका महत्वपूर्ण योगदान रहा। ''शक्ति'' की लेखन शैली का अन्दाज 27 जनवरी 1919 के अंक में प्रकाशित निम्न पंक्तियों से लगाया जा सकता है।

उत्तर 6.5

उत्तर 1– स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में से कुछ ही 15 अगस्त, 1947 को आजादी का जश्न देख सके। इनमें उंगली पर गिने जाने वाले नाम हैं –अल्मोड़ा से प्रकाशित 'शक्ति', 'जागृत जनता', गढ़वाल से 'कर्म भूमि', देहरादून से 'गढ़वाली', मसूरी से 'द हेराल्ड वीकली' और 'द मसूरी टाइम्स'। इनमें 'द हेराल्ड वीकली' और 'द मसूरी टाइम्स' स्वातंत्रय युग में कुछ समय चलने के बाद बन्द हो गए।

उत्तर 2– 15 अगस्त को प्रो0 भगवती प्रसाद पांथरी और तेजराम भट्ट (टिहरी निवासी) ने देहरादून से 'युगवाणी' का प्रवेशांक निकाला। 'युगवाणी' का विधिवत प्रकाशन विश्वेश्वर दत्त कोठियाल ने देहरादून से 'युगवाणी प्रेस' से किया जो अपना अर्धशतक पार कर चुका है। कुछ समय बाद रानीखेत से स्वाधीनता संग्राम सेनानी श्री जय दत्त बैला, वकील ने 'प्रजाबन्धु' नाम से एक साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू किया। 'युगवाणी' का उद्देश्य टिहरी जनक्रांति को आवाज प्रदान करना था। देहरादून से एक अंग्रेजी साप्ताहिक 'वायस ऑफ द दून' का भी प्रकाशन हुआ। यह साप्ताहिक अखबार घोसी गली से प्रकाशित होता था। कुछ समय बाद अखबार का प्रकाशरन बन्द हो गया। एक धार्मिक मासिक पत्रिका 'सर्व हितकारी' राजपुर, देहरादून से स्वामी गोविन्दा नन्द और धर्मानन्द शास्त्री के संयुक्त सम्पादन में प्रकाशित हुई।

उत्तर 3– सन् 1947 से 1952 के पांच वर्षों में देहरादून से 'हिमांचल' (मसूरी), 'फ्रन्टियर मेल' हिमाचल टाइम्स (अंग्रेजी), देश सेवक (उर्दू), 'नन्हीं दुनिया' (बालोपयोगी मासिक), 'अंगारा' (गढ़वाली, सांस्कृतिक मासिक पत्रिका), राम सन्देश (अध्यात्मिक–धार्मिक मासिक पत्रिका) और 'चेतावनी' साप्ताहिक प्रकाशित हुए।

उत्तर 4– 1962 – 1977 के दौरान मसूरी से ''सीमान्त प्रहरी'', देहरादून से ''जन लहर'', ऋषिकेश से ''हिमालय की आवाज'', उत्तरकाशी से ''पर्वतवाणी,'', ''गढ़रैवार'', पिथौरागढ़ से ''पर्वत पीयूष'' आदि पत्र निकलने प्रारम्भ हुए। 1955 में काशीपुर से प्रकाशित अखबार ''जन जागृति'' तथा कोटद्वार से 1965 में प्रकाशित ''आवाज'' वामपंथी प्रभाव वाले पत्र थे। 1974 में देहरादून से प्रकाशित ''लपराल'' नामक अखबार ने किसानों – मजदूरों के दुःख दर्दों को समझने का प्रयास किया।

6.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. धस्माना, योगेश : उत्तराखण्ड में जनजागरण और आंदोलनों का इतिहास, विनसर पब्लिकेशन, देहरादून, 2006।

2. चंदोला वैष्णव, ललिता : स्वतन्त्रता पूर्व गढ़वाल की पत्रकारिता, प्रकाशक, प0 विश्वम्भर दत्त चन्दोला शोध संस्थान, 19/12, पटेल रोड, देहरादून।

3. चंदोला वैष्णव, ललिता : गढ़वाल के जागरण में 'गढ़वाली' का योगदान, (1914–18) प्रकाशक, प0 विश्वम्भर दत्त चन्दोला शोध संस्थान, 19/12, पटेल रोड, देहरादून।

4. नौटियाल, भगवती प्रसाद : हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियां और दिवंगत प्रमुख पत्रकार, विन्सर पब्लिकेशन, डिसपेन्सरी रोड देहरादून, 2006।

5. सकलानी, शक्ति प्रसाद : उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास, उत्तरा प्रकाशन टी–कैम्प, रूद्रपुर–263153, जिला उद्यम सिंह नगर, उत्तराखण्ड,2004

6. डबराल, शिवप्रसाद : उत्तराखण्ड का इतिहास, भाग VI टिहरी गढ़वाल राज्य का इतिहास सन् 1895 से 1947 तक, वीर गाथा प्रकाशन दोगड्डा, गढ़वाल।

6.10 सहायक / उपयोगी पाठ्य सामग्री :

1. गढ़वाल के जागरण में 'गढ़वाली' का योगदान, ललिता वैष्णव चंदोला, प्रकाशक, प0 विश्वम्भर दत्त चन्दोला शोध संस्थान, 19/12, पटेल रोड, देहरादून।

2. हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियां और दिवंगत प्रमुख पत्रकार, भगवती प्रसाद नौटियाल, विन्सर पब्लिकेशन, डिसपेन्सरी रोड देहरादून।

3. उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास शक्ति प्रसाद सकलानी, उत्तरा प्रकाशन टी–कैम्प, रूद्रपुर–263153, जिला उद्यम सिंह नगर, उत्तराखण्ड।

6.11 निबन्धात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1– उत्तराखण्ड में पत्रकारिता के इतिहास पर प्रकाश डालिए ?

प्रश्न 2– स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का क्या परिदृश्य था ? बताइए ?

प्रश्न 3– स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उत्तराखण्ड में पत्रकारिता में क्या परिवर्तन हुये ? एक लेख लिखिए।

प्रश्न 4– वर्तमान में उत्तराखण्ड की पत्रकारिता की क्या स्थिति है? समझाइए ?

प्रश्न 5– औपनिवेशिक विस्तार से उत्तराखण्ड की पत्रकारिता किस तरह प्रभावित हुई ? समझाइए?

प्रश्न 6– 18 वीं शताब्दी में प्रकाशित समाचारपत्रों ने पत्रकारिता के विकास में क्या योगदान दिया? विस्तार रूप से लिखिए।

खण्ड – 02

समसामयिक परिप्रेक्ष्य

इकाई –07

उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप एवं करियर की संभावनाएं

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 उत्तराखंड में पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप

7.4 प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की स्थिति

7.5 कैरियर की संभावनाएं

7.6 सारांश

7.7 शब्दावली

7.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

7.9 संदर्भ ग्रंथसूची

7.10 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

7.11 निबन्धात्मक प्रश्न

7.1 प्रस्तावना :

इस प्रश्नपत्र के पिछली इकाईयों में आपने विश्व में पत्रकारिता के इतिहास से लेकर भारत व उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का उद्भव व विकास के बारे में विस्तृत से रूप से पढ़ा है। इसके अलावा भारत व उत्तराखण्ड में स्वतंत्रता से पूर्व व स्वतंत्रता के बाद की पत्रकारिता का भी अध्ययन किया है।

प्रस्तुत इकाई में उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप/परिदृश्य को लेकर चर्चा की गई है। साथ ही वर्तमान में उत्तराखण्ड में पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाओं की जानकारी छात्रों को दी गई है।

इस इकाई का अध्ययन करने पर छात्रों को उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप क्या है? की जानकारी हो जायेगी तथा वे पत्रकारिता को किस तरह से रोजगार के रूप में अपना सकते हैं की भी वे जानकारी पा सकते हैं।

7.2 उद्देश्य :

इस इकाई का उद्देश्य छात्रों को उत्तराखण्ड की वर्तमान पत्रकारिता से परिचित कराना है। उत्तराखण्ड में किस जनपद से कितने और कौन–कौन से पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं। तथा किस पत्र–पत्रिका का प्रकाशन स्वरूप क्या है वह क्षेत्रीय है या स्थानीय आदि की जानकारी प्राप्त कराना है।

मुख्य रूप से इस इकाई से छात्र जान सकेंगे कि –

- उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप कैसा है?
- उत्तराखण्ड में इलेक्ट्रानिक तथा प्रिन्ट मीडिया की क्या स्थिति है?
- उत्तराखण्ड में कुल कितने पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं?
- सर्वाधिक पत्र–पत्रिकाएं किस जनपद से प्रकाशित होती हैं?
- सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला समाचार पत्र–पत्रिका कौन है?

7.3 उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप :

पूरे देश में आजादी से पहले और उसके बाद की पत्रकारिता में आमूलचूल परिवर्तन आया है। आजादी से पहले की पत्रकारिता का केवल एक लक्ष्य था। अंग्रेजी हकूमत को उखाड़ फेंकने के लिए संघर्ष करना। तब पत्रकारिता में कैरियर बनाने जैसी कोई बात नहीं थी। मिशनरी भाव लेकर पत्रकार काम करता था। पत्रकारिता और मुनाफे का कहीं कोई संबंध नहीं था। लोग जेवरात बेचकर अखबार निकालते थे, ताकि आजादी की अलख जगाई जा सके। आजादी मिलने के बाद पत्रकारिता की प्राथमिकता बदली। भारत के नवनिर्माण की प्रक्रिया के बीच धीरे धीरे पत्रकारिता मिशन से व्यवसाय में परिवर्तित हो गई। एक जमाने में समाज सेवा के लिए पत्रकारिता करने वाले पत्रकार के सोचने का ढंग पूरी तरह बदल गया। अखबार निकालने वालों का नजरिया भी प्रोफेशनल हो गया। यह पूरे देश की स्थिति रही। उत्तराखंड भी इससे कहीं अलग नहीं रहा। आजादी से पहले उत्तराखंड में भी अंग्रेजों की मुखालफत के लिए अखबार निकले। आजादी मिलने के बाद काफी समय तक मिशनरी पत्रकारिता का दौर चला और फिर सब कुछ व्यवसायिक हो गया। आज उत्तराखंड में पत्रकारिता का उतना ही चमकदार कैरियर है, जितना पूरे देश में दिखाई पड़ता है।

राज्य निर्माण के बाद कुछ ही सालों में उत्तराखंड के अखबारी जगत की तस्वीर में भारी बदलाव आ गया है। यहां छोटे और मझोले अखबार तो सालों से छप ही रहे हैं। मगर अब बड़े मीडिया घरानों का उत्तराखंड पर फोकस है। उत्तराखंड को खास ध्यान में रखकर उनकी योजनाएं बन रही है। उत्तराखंड के शहरों में ही नहीं, बल्कि दूरदराज के गांव–कसबों तक में पत्रकार काम कर रहे हैं और उन्हें उनकी सेवाओं का मेहनताना भी मिल रहा है। अपनी विशिष्ट पहचान और स्थिति के कारण उत्तराखंड में कुछ खास किस्म की पत्रकारिता के लिए अपार

संभावनाएं मौजूद हैं। वन पर्यावरण, पर्यटन, तीर्थाटन, संस्कृति और साहसिक खेल से जुडी पत्रकारिता पर विशेष कार्य कर देश दुनिया के सामने आने के अवसर उत्तराखंड में ज्यादा हैं। उत्तराखंड में पत्रकारिता की मौजूदा तस्वीर आश्वस्त करती है। पत्रकारिता की पढ़ाई पूरी कर उत्तराखंड में कैरियर की संभावना टटोलने वालों को कम से कम अब निराश नहीं होना पड़ेगा। उत्तराखंड में पत्रकारिता का इतिहास क्या रहा है। प्रिंट और इलेक्टानिक मीडिया की वर्तमान स्थिति क्या है। इनमें कैरियर की राह कहां से खुलकर कहां पहुंचती है। इस इकाई में इन सब बातों का जवाब तलाशने की कोशिश की जाएगी।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व प्रकाशित पत्रों में से कुछ ही समाचार पत्र 1947 के बाद प्रकाशन जारी रख सके क्योंकि स्वाधीनता पूर्व के अधिकांश पत्रों का जो उद्देश्य था वह हासिल हो चुका था। फिर भी ठीक 15 अगस्त 1947 को भगवती प्रसाद पांथरी, गोपेश्वर कोठियाल आदि ने देहरादून से ''युगवाणी'' का प्रकाशन आरम्भ किया। यह पत्र मूलतः प्रजामंडल का पत्र था। इसका महत्व टिहरी रियासत के अंतिम दो सालों के आंदोलनों के संदर्भ में अधिक है। यह पत्र मासिक पत्रिका के रूप में आज भी निकल रहा है और उत्तराखण्ड की अग्रणी पत्रिकाओं में से एक है।

इसी क्रम में 1947 – 1952 के बीच देहरादून से हिमाचल, देश सेवक, अंगारा तथा अल्मोड़ा से कुमाऊँ राजपूत, रूपा, प्रदीप आदि पत्र – पत्रिकाएं निकलीं। 1956 में कोटद्वार से ललिता प्रसाद नैथाणी ने ''सत्यपथ'' का प्रकाशन किया। इस पत्र ने स्थानीय विषयों को प्रमुखता से उठाने की कोशिश की। इसी दौर में विष्णुदत्त उनियाल का नैनीताल से ''पर्वतीय'' नामक पत्र निकला। लम्बे समय तक जीवित रहे इस अखबार ने उत्तराखण्ड में नए दौर की पत्रकारिता को बहुत कुछ सिखाया । हिन्दी के कई नामी लेखकों और पत्रकारों के लिए यह अखबार एक पाठशाला की तरह था। 1957 में हीरालाल बड़ोला ने मुनि की रेती टिहरी गढ़वाल से तथा राधाकृष्ण कुकरेती ने देहरादून से क्रमशः ''उत्तराखण्ड'' और ''नया जमाना'' साप्ताहिक शुरू किये। पिथौरागढ़ से ''उत्तराखण्ड ज्योति'' साप्ताहिक पत्र 1961 में निकला तो उत्तराखण्ड की तराई (उधमसिंह नगर) से बिगुल, चौराहा, लोकतंत्र आदि साप्ताहिक अखबार निकले। 1962 – 1977 के दौरान मसूरी से ''सीमान्त प्रहरी'', देहरादून से ''जन लहर'', ऋषिकेश से ''हिमालय की आवाज'', उत्तरकाशी से ''पर्वतवाणी,'', ''गढ़रैवार'', पिथौरागढ़ से ''पर्वत पीयूष'' आदि पत्र निकलने प्रारम्भ हुए। 1955 में काशीपुर से प्रकाशित अखबार ''जन जागृति'' तथा कोटद्वार से 1965 में प्रकाशित ''आवाज'' वामपंथी प्रभाव वाले पत्र थे। 1974 में देहरादून से प्रकाशित ''लपराल'' नामक अखबार ने किसानों – मजदूरों के दुःख दर्दों को समझने का प्रयास किया। इस दौर में साहित्यिक पत्र – पत्रिकाएं भी निकलीं। परन्तु अपना खास प्रभाव नहीं छोड़ पायीं। प्रतिनिधित्व के तौर पर अल्मोड़ा से ''माद्री'', ''शिल्पी'', टिहरी से ''नैतिकी'', पिथौरागढ़ से ''पथिक'' आदि का जिक्र किया जा सकता है।

आठवें दशक के बाद पूंजीवादी अखबार, पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन और दर्जनों टीवी चैनलों ने धीरे – धीरे यहां की क्षेत्रीय पत्रकारिता की रीढ़ तोड़नी शुरू की। फिर भी अपने सीमित संसाधनों के बावजूद कुछ समाचार पत्र – पत्रिकाएं निरन्तर प्रकाशित होते हुए अपना पाठक वर्ग

बनाए हुए हैं। ये हैं – युगवाणी, पर्वतजन, नया जमाना, सीमान्त प्रहरी, मसूरी टाइम्स, आज का पहाड़, नैनीताल समाचार, आधारशिला, उत्तरा, पहाड़ आदि।

परन्तु व्यावसायिक रूप से देखें तो उक्त में से अधिकांश पत्र – पत्रिकाओं की हालत दयनीय है और एक सीमित पाठक वर्ग तक ही इनकी पहुंच है। यही हाल यहां की साहित्यिक – सांस्कृतिक पत्र – पत्रिकाओं का भी है। अल्मोड़ा से कुमाऊॅनी भाषा में ''पहरू'' पत्रिका निकल रही है और पौड़ी से गढ़वाली में उत्तराखण्ड खबरसार पाक्षिक निकलता है । गढ़वाल से गढ़वाली भाषा में एकाध और पत्रिकाएं भी निकल रही हैं, परन्तु इन सभी की प्रसार संख्या कम है एवं संसाधन सीमित हैं।

वर्तमान में देखें तो अमर उजाला, दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दुस्तान जैसे समाचार पत्रों को उत्तराखण्ड में सबसे ज्यादा पढ़ा जाता है। पूंजी, आकर्षक साज–सज्जा, क्षेत्रीयकरण (क्षेत्रीय संस्करण), कुशल प्रबन्ध तन्त्र, सरकारी, प्रतिष्ठानों, संस्थानों एवं व्यक्तिगत विज्ञापनों के बल पर इनका दबदबा बना हुआ है। त्वरित संचार तंत्र, उन्नत तकनीक के माध्यम से सही समय पर यह समाचार पत्र लोगों को उपलब्ध हो जाते हैं और क्षेत्रीयकरण के कारण लोग अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय विषयों से लेकर अपने गॉव, शहर की सभी छोटी–मोटी सूचनाएं इन अखबारों में पढ़ सकते हैं। इसके अलावा गढ़वाल पोस्ट, उत्तर उजाला, दून दर्पण, जन लहर आदि छोटे स्थानीय दैनिक पत्र भी अपने अस्तित्व के संघर्ष में निरन्तर जुटे हुए हैं।

उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद तो उत्तराखण्ड में नई पत्र पत्रिकाओं की बाढ़ ही आ गई है। सिर्फ देहरादून से ही प्रकाशित होने का दावा करने वाले दैनिक पत्रों की संख्या 45 से अधिक हो गई है। यही हाल वहां से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं का भी है।

उत्तराखंड में पत्रकारिता की वर्तमान तस्वीर दिनोंदिन बेहतर बनती जा रही है। समाज को सूचना और दिशा देने का काम इसके जिम्मे शुरू से रहा है। इस दायित्व को पत्रकारिता ने तमाम कठिनाइयों के बावजूद निभाया। स्थिति में अब तेजी से सकारात्मक बदलाव होता जा रहा है। पहले के मुकाबले पत्रकारिता ज्यादा सक्षम हुई है। हालांकि उसके लिए व्यवसायिक सीमाएं भी ज्यादा तय हो गई है। इसके बावजूद उसकी भूमिका आम आदमी और समाज के हित में ज्यादा प्रखर और प्रभावी दिखाई पड़ती है। हम जानते हैं कि उत्तराखंड में सब कुछ है। प्राकृतिक सौंदर्य है। अपार प्राकृतिक संसाधन मौजूद है। तमाम प्रमुख नदियों का उद्‌गम स्थल यहां है, जिससे पानी और बिजली के क्षेत्र में तमाम परियोजनाओं के लिए संभावनाओं के नए द्वार खुलते है। मेला कौथिगों का उत्सवी माहौल हमेशा मौजूद है। सांस्कृतिक सक्षम विरासत का दुनिया लोहा मानती है। इसके बावजूद एक दूसरा पहलु भी है, जो ज्यादा चुनौतीपूर्ण है। जटिल भौगोलिक परिस्थितियों में रह रहे आम आदमी तक बुनियादी सुविधाएं पहुंचाने की चुनौती अब भी अपनी जगह है। विकास की तमाम योजनाएं सुदूर गांवों तक नहीं पहुंच पा रही हैं। इसके अलावा प्राकृतिक आपदा और दुर्घटनाओं से उत्तराखंड के जनमानस का रोज का वास्ता है। मीडिया को इन्हीं स्थितियों के बीच उत्तराखंड में काम करना पड़ रहा है। जाहिर तौर पर उसके लिए करने को बहुत कुछ है। विपरीत भौगोलिक और अन्य परिस्थितियों में चुनौती भी कहीं बड़ी है। इसके

बावजूद यह सुखद संकेत है कि अब आम आदमी की अखबार या टीवी पत्रकार तक पहुंच बहुत सहज हो गई है। अपने काम के सिलसिले में पत्रकार तो उन तक पहुंच ही रहा है। अपनी परेशानी सरकार को बताने के लिए आम आदमी भी मीडिया का बखूबी इस्तेमाल कर ले रहा है। यह दो तरफा संवाद समस्याओं को हाईलाइट करने उनका हल तलाशने में कारगर साबित हो रहे हैं।

एक जमाने की बात रही है, जब प्राकृतिक आपदा या दुर्घटना की खबर संबंधित गांव कसबे में महीनों दबी रह जाती थी। सरकारी मशीनरी से लेकर स्वयंसेवी संस्थाओं, आम आदमी तक सूचनाएं तब पहुंचती थी, जब उसका कोई मतलब नहीं रह जाता था। प्राकृतिक आपदा के लिहाज से अति संवेदनशील उत्तराखंड क्षेत्र ने सूचनाएं यथा समय प्रसारित नहीं होने की समय समय पर बहुत बड़ी कीमत चुकाई। ये ही हाल विकास से जुड़ी योजनाओं का रहा। उत्तराखंड के नाम पर मोटा बजट लगातार मिलता रहा। मगर क्या योजनाएं हैं, उन पर कितना अमल हुआ। पैसा खर्च हुआ भी या यूं ही डकार लिया गया, इन बातों की पड़ताल करने वाले लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की पहुंच पहाड़ के भीतर तब बहुत सीमित थी। नतीजतन आपदा या दुर्घटना में राहत और बचाव कार्य हुआ तो ठीक, नही ंतो कोई बात नहीं जैसी स्थिति रही। अक्सर हताहतों की सही सही संख्या तक सामने नहीं आ पाती थी। विकास के बजट का गोलमाल करने वाले अफसरों ठेकेदारों की गर्दन तक कानून का हाथ नहीं पहुंचता था। सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व के बडे आयोजनों के साथ जंगल में मोर नाचा किसने देखा, जैसी स्थिति रही। मगर उत्तराखंड में पत्रकारिता के विस्तार के साथ ये दिक्कतें दूर होती चली गई हैं। अब पहाड़ का कोई ऐसा कोना नहीं बचा है, जो मीडिया की नजर में नहीं है। सीमांत और दूरस्थ इलाकों में बस दुर्घटना या भूकंप, भूस्खलन की कोई घटना हो, मीडिया के कैमरे, उसके पत्रकार अब मौके पर होते हैं। गढ़वाल का नीति माणा क्षेत्र हो या कुमाऊं का धारचूला। या फिर किसी भी दूरस्थ इलाके की बात कर ली जाए। दुर्घटना घटते ही अब उसकी जानकारी कुछ ही मिनटों में वह देश दुनिया के सामने होती है। जाहिर तौर पर मीडिया की सजगता ने सरकारी मशीनरी को भी चुस्त दुरस्त किया है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– उत्तराखण्ड में सर्वाधिक पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों के नाम बताइए ?

प्रश्न 2– उत्तराखण्ड से निरन्तर प्रकाशित समाचार पत्र–पत्रिकाओं के नाम बताइए ?

प्रश्न 3– वर्तमान में प्रकाशित पत्र – पत्रिकाओं की स्थिति पर प्रकाश डालिए ?

प्रश्न 4– वर्तमान में उत्तराखण्ड में पत्रकारिता की क्या स्थिति है ?

प्रश्न 5– वर्तमान में पत्रकारिता के समक्ष किस तरह की चुनौतियां हैं ?

7.4 प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया की स्थिति :

उत्तराखंड में मीडिया की बात करें, तो शुरू से प्रिंट मीडिया को ही लोगों ने जाना है। उत्तराखंड राज्य बनने के बाद से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का विस्तार होने लगा है। फिर भी गांव

कस्बों तक आज भी प्रिंट मीडिया की ज्यादा पकड़ है। उत्तराखंड में चूंकि साक्षरता का प्रतिशत शुरू से अच्छा है। इसलिए मीडिया को यहां फलने फूलने लायक माहौल हमेशा से मिला है। अखबार निकालने वाले और उन्हें हाथों–हाथ लेने वालों की कोई कमी नहीं रही। आजादी के दौर में भी यहां से कई अखबार निकले। लंबे समय तक साप्ताहिक पत्रों के जरिये ही आम आदमी की बात सामने आती रही। बड़े दैनिक अखबारों के नाम पर उत्तराखंड के पाठकों ने सबसे पहले यदि किन्हीं अखबारों के नाम जाने, तो वे दिल्ली से निकलने वाले नवभारत टाइम्स और हिंदुस्तान रहे। पहाड़ के पाठकों का इन अखबारों से लंबा जुड़ाव रहा है। पहाड़ के ज्यादातर इलाकों में एक जमाने में इन दोनों अखबारों की अच्छी पहुंच रही। उत्तराखंड में ये ही दो अखबार तब थे, जिनके संवाददाता प्रमुख जगहों पर मौजूद थे। हालांकि उनकी अंशकालिक नियुक्ति होती थी और उनके भेजे ज्यादातर समाचारों को अखबार में जगह नहीं मिल पाती थी। दोनों अखबारों का चूंकि राष्ट्रीय स्वरूप था, इसलिए उत्तराखंड की खबरों के लिए स्कोप कम था। फिर भी बड़ी घटनाएं घटने पर ये दो अखबार ही उन्हें सामने लाते थे।

अस्सी के दशक में उत्तराखंड में लोग अमर उजाला और दैनिक जागरण जैसे क्षेत्रीय समाचार पत्रों के नाम भी जानने लगे। जब तक उत्तर प्रदेश के बरेली से इन अखबारों को प्रकाशित कर उत्तराखंड भेजा गया, लोगों का बहुत ज्यादा ध्यान इन पर नहीं गया। जैसे ही मेरठ से इनका प्रकाशन शुरू हुआ, उत्तराखंड की पत्रकारिता की सूरत ही बदलने लग गई। छोटे से छोटे कसबे तक में संवाददाताओं की नियुक्ति हुई और वहां की खबरें अखबार में जगह पाने लगीं। दोनों अखबार उत्तराखंड की चिट्ठी के जैसे हो गए, जिन्हें बांचने में आम आदमी को आनंद मिलने लगा। इन अखबारों को लोगों के जुड़ाव से भरपूर मुनाफा मिला। लोगों को भी अपनी समस्याएं उठाने के लिए यह प्रभावी मंच लगा। दो तरफा संबंध इतना प्रगाढ़ हुआ कि 1997 से इन अखबारों का प्रकाशन उत्तराखंड से होने लगा। जोशीमठ जैसे इलाके में जहां पहले ये अखबार दिन में पहुंचते थे, अब सुबह सवेरे यह पाठकों की दहलीज पर होते हैं। यह कम सुखद नहीं है कि उत्तराखंड की राजधानी देहरादून के अलावा हल्द्वानी जैसे अपेक्षाकृत छोटे शहर से भी ये दोनों अखबार निकल रहे हैं। इनके कई डाक संस्करण निकल रहे है। 2008 से दोनों अखबारों के टेबलायड साइज के अखबार अमर उजाला काम्पेक्ट और आई नेक्सट का भी देहरादून से दैनिक प्रकाशन हो रहा है। 2007 से राष्ट्रीय सहारा और 2008 से दैनिक हिंदुस्तान का प्रकाशन भी देहरादून से शुरू हो गया है।

प्रदेश से प्रकाशित समाचार पत्र, पत्रिकाओं की जनपदवार सूची

क्रमांक	जनपद	पत्र–पत्रिकाओं की संख्या
1.	देहरादून	582
2.	हरिद्वार	107
3.	ऊधमसिंहनगर	70
4.	नैनीताल	19

5.	अल्मोड़ा	16
6.	पिथौरागढ़	07
7.	बागेश्वर	03
8.	चमोली	08
9.	पौड़ी	20
10.	उत्तरकाशी	07
11.	टिहरी	19

इन अखबारों और पत्र पत्रिकाओं में डीएवीपी से मान्यता प्राप्त दैनिक और सांध्य समाचार पत्रों की संख्या 49 है। देहरादून जिले से 28, हरिद्वार से 9, ऊधमसिंहनगर और नैनीताल जिले से 4–4, पौड़ी और टिहरी से दो–दो दैनिक या सांध्य दैनिक अखबारों का प्रकाशन होता है। डीएवीपी से मान्यता प्राप्त साप्ताहिक, मासिक और पाक्षिक समाचार पत्रिकाओं की संख्या 242 है। इनमें सबसे ज्यादा 152 पत्रिकाएं देहरादून जिले से प्रकाशित हो रही हैं। इसके बाद हरिद्वार से 46, ऊधमसिंहनगर से 18, पौड़ी से 08, नैनीताल से 05, टिहरी से 04, पिथौरागढ़ और चमोली जिले से 03–03, अल्मोड़ा से 02 और उत्तरकाशी जिले से 01 समाचार पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। ऐसे समाचार पत्र और पत्रिकाओं की संख्या 567 है, जो कि गैर मान्यता प्राप्त है, लेकिन सूचना एवं लोकसंपर्क विभाग से विज्ञापन सूची में उन्हें सूचीबद्ध किया गया है। ऐसे समाचार पत्र, पत्रिकाएं सबसे ज्यादा 402 देहरादून जिले से प्रकाशित हो रहे हैं। हरिद्वार जिले से 52, ऊधमसिंहनगर से 48, अल्मोड़ा से 14, टिहरी से 13, नैनीताल और पौड़ी से 10–10, उत्तरकाशी से 06, चमोली से 05, पिथौरागढ़ से 04 और बागेश्वर जिले से 03 समाचार पत्र, पत्रिकाएं निकल रहे हैं।

उत्तराखंड से प्रकाशित मान्यता प्राप्त दैनिक/सांध्य दैनिक अखबार

समाचार पत्र का नाम	**प्रकाशन जनपद का नाम**
अमर उजाला	देहरादून
दैनिक जागरण	देहरादून
दून दर्पण	देहरादून
प्रधान टाइम्स	देहरादून
राष्टीयता	देहरादून
शिखर संदेश	देहरादून
हिमाचल टाइम्स हिंदी	देहरादून

शाह टाइम्स	देहरादून
दैनिक हिंदुस्तान	देहरादून
मनीष टाइम्स	देहरादून
जनलहर	देहरादून
रायल बुलेटिन	देहरादून
सुबह का सूरज	देहरादून
दैनिक हिंदुस्तान राह	देहरादून
अपने लोग	हरिद्वार
प्रधान टाइम्स	हरिद्वार
बद्री विशाल	हरिद्वार
मानव जगत	हरिद्वार
हाक, हिंदी	हरिद्वार
हरिश्चंद्र उवाच	हरिद्वार
दैनिक अर्पणा टाइम्स	हरिद्वार
दैनिक रुद्र टाइम्स	हरिद्वार
दैनिक जयंत	कोटद्वार
सीमांत वार्ता	पौड़ी
अमर उजाला	नैनीताल
दैनिक जागरण	नैनीताल
उत्तर उजाला	नैनीताल
शाह टाइम्स	नैनीताल
जनलहर	टिहरी
शिखर संदेश	टिहरी
दैनिक हिमाचल टाइम्स, अंग्रेजी	देहरादून
हाक, अंग्रेजी	हरिद्वार
द गढ़वाल पोस्ट	देहरादून
सहाफत, उर्दू	देहरादून
हिमालय गौरव उत्तराखंड	देहरादून
खबर लाये हैं	देहरादून

देहरादून टाइम्स	देहरादून
वैली मेल	देहरादून
सांध्य प्रधान टाइम्स	देहरादून
उर्दू दैनिक प्रधान टाइम्स	देहरादून
निष्पक्ष समाचार ज्योति	देहरादून
उर्दू हालाते वतन	देहरादून
दैनिक राष्ट्रीय सहारा	देहरादून
दैनिक पेज थ्री	देहरादून
दैनिक पायनियर	देहरादून
ऊधमसिंहनगर का दर्पण	ऊधमसिंहनगर
दशानन	ऊधमसिंहनगर
मंगलभूमि टाइम्स	उधमसिंहनगर
उत्तरांचल दर्पण	ऊधमसिंहनगर

उत्तराखंड में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की बात करें, तो देश के तमाम दूसरे हिस्सों की तरह यहां भी दूरदर्शन आकाशवाणी ने लंबे समय तक एकछत्र राज किया है। सरकारी नियंत्रण में होने के बावजूद पब्लिक से जुड़े कई मसलों को इन दोनों के जरिये आवाज मिलती रही है। बड़ी घटना सामने आने पर बीबीसी या अन्य कोई देशी विदेशी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया गाहे बगाहे उत्तराखंड में सक्रिय होता था। नब्बे के दशक में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का पूरे देश में विस्तार हुआ, तो उत्तराखंड के सबसे बड़े देहरादून शहर में भी कुछ हलचल दिखाई देने लगी। कुछ एक प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक मीडिया संस्थानों ने अपने अंशकालिक प्रतिनिधि यहां नियुक्त किए। मगर नवंबर 2000 में उत्तराखंड के अलग राज्य के रूप में सामने आने के बाद तो तस्वीर एकदम बदल गई है। ईटीवी और सहारा समय जैसे न्यूज चैनल्स ने उत्तराखंड के समाचारों पर फोकस करते हुए उस तरह का स्थान हासिल कर लिया है, जैसा अखबारों में अमर उजाला और दैनिक जागरण का है। जी न्यूज, साधना, टीवी 100, जैन टीवी जैसे समाचार चैनलों ने भी खास उत्तराखंड की खबरों पर केंद्रित किया है। इसके अलावा आज तक, स्टार न्यूज, इंडिया टीवी, एनडीटीवी, न्यूज 24 जैसे प्रमुख समाचार चैनल भी उत्तराखंड की खबरों को प्रमुखता से कवर कर रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– प्रदेश में डीएवीपी से मान्यता प्राप्त दैनिक और सांध्य समाचार पत्रों की संख्या बताइए ?

प्रश्न 2– उत्तराखण्ड से अखबारों के प्रकाशन के बाद पाठकों को क्या सुविधा हुई है ?

प्रश्न 3– हिमालय गौरव उत्तराखंड कहां से प्रकाशित होता है?

प्रश्न 4– उत्तर उजाला कहां से प्रकाशित होता है?

7.5 कैरियर की संभावनाएं :

पूरे देश में पत्रकारिता के क्षेत्र में संभावनाएं दिनों दिन बढ़ रही है। पत्रकारिता में ग्लैमर आ गया है और लोग आजीविका और नाम कमाने के लिए इसमें आना चाहते हैं। इस तथ्य को सामने रखकर बात करें, तो उत्तराखंड में पत्रकारिता में कैरियर की संभावनाएं उतनी ही प्रबल हैं, जितनी की अन्य राज्यों में हैं। मगर उत्तराखंड के खास संदर्भों में कुछ एक बातें ऐसी हैं, जो संभावनाओं को और ज्यादा मजबूत बनाती है। ये कई बार कहा जा चुका है कि उत्तराखंड की पूरे देश में एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में पहचान है। बदरीनाथ, केदारनाथ जैसे पवित्र धामों की उपस्थिति, गंगा यमुना का उद्‌गम, चप्पे चप्पे में मठ, मंदिर जैसी तमाम सारी बातें हैं, जो यहां की सक्षम धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक विरासत के अभिन्न हिस्से हैं। यहां देश विदेश के लोगों का साल भर आना जाना लगा रहता है। यात्रा सीजन की तो बात ही अलग होती है। इस विशेष विषयों को लेकर काम करने की बहुत गुंजाइश है। हरिद्वार में महाकुंभ 2010 में ही निबटा है, जिसमें दुनिया भर का मीडिया महीनों भर सक्रिय रहा। उत्तराखंड के गढ़वाल और कुमाऊं मंडलों को जोड़ने और प्रत्येक बारह वर्ष में आयोजित होने वाली नंदा राजजात यात्रा को कवर करने हर बार देशी–विदेशी मीडिया यहां पहुंचता है। इसके अलावा साल भर चलने वालीं कई अन्य यात्राएं और आयोजन हैं। इसके अलावा जाने अनजाने ये बुरा तथ्य भी उत्तराखंड के साथ जुड़ा है, कि ये आपदा प्रभावित क्षेत्र है। अक्सर आपदा उत्तराखंड का बड़ा नुकसान कर जाती है। इन स्थितियों में इस क्षेत्र में काम करने वाले पत्रकारों के लिए खबरों का कोई संकट नहीं है।

उत्तराखंड के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य पूरी दुनिया की आंखें खोलता है। ये तथ्य यहां 65 फीसदी से ज्यादा वन क्षेत्रों की उपस्थिति से जुड़ा है। वन तो हैं ही, हिमालयी पर्वतों की श्रृंखला, ग्लेशियरों का भंडार, तमाम नदियां भी हैं, जो कि देश दुनिया को स्वच्छ हवा, पानी देने का काम कर रहा है। अपनी इस विशिष्टता के लिए उत्तराखंड ग्रीन बोनस देने की मांग पर जोर बनाता रहा है। इसके अलावा यहां की नदियों पर बने बांधों से बनने वाली बिजली पर उत्तराखंड कम और अन्य बाहरी राज्यों की निर्भरता ज्यादा है। विश्व स्तर पर पानी, बिजली, वन और पर्यावरण के मुद्‌दे दिनों दिन जिस तरह और संवेदनशील होते जा रहे हैं, उससे उत्तराखंड में पत्रकारिता के लिए और बेहतर स्थिति बना रही है। मीडिया संस्थानों से जुड़कर कार्य करने वाले तो इन विषयों पर काम करके नाम कमा ही सकते हैं, फ्री लांस जर्नलिज्म के पक्षधरों के लिए भी आगे बढ़ने की भरपूर संभावना है। साहसिक पर्यटन, खेल को अब धीरे–धीरे बढ़ावा मिल रहा है। 2011 में अंतरराष्ट्रीय स्तर के सैफ विंटर गेम्स पहली बार उत्तराखंड में हुए हैं। टिहरी झील में जल क्रीडाओं के लिए कोशिश की जा रही है। इन स्थितियों में साहसिक पर्यटन, खेल के क्षेत्र में भी पत्रकारिता करने के भरपूर मौके मिलने की उम्मीद है। उत्तराखंड में आयुर्वेद के क्षेत्र में भी अब तेजी से काम हो रहा है। इस क्षेत्र की पत्रकारिता के लिए भी काफी संभावनाएं दिखने लगी हैं।

राज्य बनने के बाद उत्तराखंड में खास तौर पर राजधानी देहरादून मीडिया हब के तौर पर उभरकर सामने आया है। चार बड़े समाचार पत्र यहां से छप रहे हैं। कोई भी बड़ा समाचार पत्र ऐसा नहीं है, जिसका अच्छा खासा कार्यालय देहरादून में ना हो। ईटीवी, सहारा समय, जी न्यूज, साधना जैसे न्यूज चैनलों के आधुनिक उपकरणों से लैस कार्यालय यहां काम कर रहे हैं। इसके अलावा प्रदेश में हरिद्वार, ऋषिकेश, रुड़की, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, पौड़ी, कोटद्वार, गोपेश्वर, उत्तरकाशी, टिहरी, नैनीताल, मसूरी, हल्द्वानी, रुद्रपुर, काशीपुर, चंपावत, बागेश्वर, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा जैसे तमाम शहर और कस्बों की मीडिया के नजरिये से अहमियत बढ़ गई है। हर अखबार के इन जगहों पर कार्यालय हैं। न्यूज चैनलों के रिपोर्टर भी पूरी सक्रियता से यहां पर काम कर रहे हैं। दैनिक भास्कर, पंजाब केसरी, स्वतंत्र भारत जैसे तमाम अखबारों के भी उत्तराखंड से लांच होने की संभावना प्रकट की जा रही है। इस लिहाज से देखें, तो उत्तराखंड में पत्रकारिता के क्षेत्र में कैरियर बनाने के लिए बेहतर मौके उपलब्ध हैं। पत्रकारिता के किसी विद्यार्थी के लिए पहले ये दिक्कत जरूर थी, कि पढ़ाई करने के बाद उसे कैरियर शुरु करने के लिए उत्तराखंड से बाहर के किसी बड़े शहर का रुख करना पड़ता था। मगर आज ये स्थिति नहीं रही है। उत्तराखंड की अब ये स्थिति है, कि बाहरी राज्यों के विद्यार्थियों के लिए भी यहां कैरियर के दरवाजे खुल रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– उत्तराखण्ड में पत्रकारिता में कैरियर की क्या संभावनाएं हैं ?

प्रश्न 2– उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के पश्चात अपेक्षाकृत छोटे कस्बों में मीडिया किस तरह विकसित हुआ है ?

7.6 सारांश :

उत्तराखंड में साक्षरता की बेहतर स्थिति ने पत्रकारिता लायक माहौल हमेशा रखा है। एक जमाने में जब अखबार, टीवी दूरदराज नहीं पहुंचे थे, तब भी देश दुनिया की खबरों से ठेठ गांव में बैठा व्यक्ति अपडेट रहा। अपने दैनिक कार्य निबटाते वक्त रेडियो उसके पास हर दम मौजूद रहा। बीबीसी की हिंदी सेवा के नियमित पाठक उत्तराखंड में बहुत ज्यादा रहे हैं। राज्य बनने से पहले और उसके बाद, उत्तराखंड की स्थिति में जमीन आसमान का अंतर आ गया है। अब आम आदमी के पास समाचार जानने के लिए साधनों की कमी नहीं है। ना ही इस क्षेत्र में कैरियर बनाने के इच्छुक लोगों के लिए काम की कमी है। मीडिया हब के तौर पर देहरादून, तो उसके छोटे रूप में हल्द्वानी दिखाई पड़ने लगा है। इन दोनों शहरों के बाद तमाम कारणों से हरिद्वार सबसे ज्यादा संभावना जगा रहा है। छोटे पर्वतीय जिलों में भी पहले के मुकाबले मीडिया की सक्रियता बढ़ी है, हालांकि यहां से कैरियर की नई राह निकलने में अभी थोड़ा वक्त लगेगा। बड़े जिलों में तो मीडिया संस्थानों का विस्तार लोगों को चौंका रहा है। उत्तराखंड में पत्रकारिता की पढ़ाई कराने वाले शैक्षणिक संस्थानों और उनमें उमड़ते छात्रों की संख्या लगातार बढ़ रही है। जाहिर तौर उत्तराखंड में पत्रकारिता के क्षेत्र में कैरियर तमाम संभावनाओं से भरा हुआ है। जैसे–जैसे नया राज्य और आत्मनिर्भर बनने की ओर अग्रसर होगा, पत्रकारिता में नई नई और संभावनाएं जगेंगी।

7.7 शब्दावली :

फ्रीलांस जर्नलिज्मः–इस तरह की पत्रकारिता, जिसमें किसी मीडिया संस्थान से जुड़कर कार्य करने की आवश्यकता नहीं होती। संबंधित पत्रकार किसी विषय पर स्वतंत्र होकर कार्य करता है और फिर किसी भी समाचार पत्र, न्यूज चैनल्स के लिए जुटाई गई सामग्री का प्रयोग कर लेता है।

मीडिया हबः–एक जगह पर बहुत सारे एक ही प्रकृति वाले संस्थानों की उपस्थिति को हब के तौर पर लिया जाता है। किसी जगह पर बहुत सारे शैक्षणिक संस्थान खुल जाए, तो उस क्षेत्र को एजुकेशनल हब कहा जा सकता है। इसी तरह, मीडिया के तमाम संस्थान एक जगह पर खुल जाएं, तो उस जगह को मीडिया हब कहा जा सकता है।

डाक संस्करण : क्षेत्रीय अखबारों में डाक संस्करण निकालने का चलन काफी समय स`चल रहा है। इसमें जिले या छोटे क्षेत्र को ध्यान में रखकर अखबार प्रकाशित किया जाता है। इसमें बाकी सारे पेज कॉमन होते हैं, लेकिन कुछ स्थानीय पेजों को अलग कर दिया जाता है। ये पेज खास एक जिले या इलाके में ही जाते हैं। संस्करण बदलते ही ये पेज भी बदल जाते हैं।

7.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

उत्तर 7.3

उत्तर 1– अमर उजाला, दैनिक जागरण, दैनिक हिन्दुस्तान जैसे समाचार पत्रों को उत्तराखण्ड में सबसे ज्यादा पढ़ा जाता है। इसके अलावा गढ़वाल पोस्ट, उत्तर उजाला, दून दर्पण, जन लहर आदि छोटे स्थानीय दैनिक पत्रों का भी अपना पाठक वर्ग है।

उत्तर 2– फिर भी अपने सीमित संसाधनों के बावजूद कुछ समाचार पत्र – पत्रिकाएं निरन्तर प्रकाशित होते हुए अपना पाठक वर्ग बनाए हुए हैं। ये हैं – युगवाणी, पर्वतजन, नया जमाना, सीमान्त प्रहरी, मसूरी टाइम्स, आज का पहाड़, नैनीताल समाचार, आधारशिला, उत्तरा, पहाड़ आदि।

उत्तर 3– व्यावसायिक रूप से देखें तो अधिकांश पत्र – पत्रिकाओं की हालत दयनीय है और एक सीमित पाठक वर्ग तक ही इनकी पहुंच है। यही हाल यहां की साहित्यिक – सांस्कृतिक पत्र – पत्रिकाओं का भी है। अल्मोड़ा से कुमाऊँनी भाषा में ''पहरू'' पत्रिका निकल रही है और पौड़ी से गढ़वाली में उत्तराखण्ड खबरसार पाक्षिक निकलता है। गढ़वाल से गढ़वाली भाषा में एकाध और पत्रिकाएं भी निकल रही हैं, परन्तु इन सभी की प्रसार संख्या कम है एवं संसाधन सीमित हैं।

उत्तर 4– उत्तराखंड में पत्रकारिता की वर्तमान तस्वीर दिनोंदिन बेहतर बनती जा रही है। समाज को सूचना और दिशा देने का काम इसके जिम्मे शुरू से रहा है। इस दायित्व को पत्रकारिता तमाम कठिनाइयों के बावजूद निभा रही है। स्थिति में अब

तेजी से सकारात्मक बदलाव होता जा रहा है। पहले के मुकाबले पत्रकारिता ज्यादा सक्षम हुई है।

उत्तर 5– विकास की तमाम योजनाएं सुदूर गांवों तक नहीं पहुंच पा रही हैं। इसके अलावा प्राकृतिक आपदा और दुर्घटनाओं से उत्तराखंड के जनमानस का रोज का वास्ता है। मीडिया को इन्हीं स्थितियों के बीच उत्तराखंड में काम करना पड़ रहा है। जाहिर तौर पर उसके लिए करने को बहुत कुछ है। विपरीत भौगोलिक और अन्य परिस्थितियों में चुनौती भी कहीं बड़ी है। इसके बावजूद यह सुखद संकेत है कि अब आम आदमी की अखबार या टीवी पत्रकार तक पहुंच बहुत सहज हो गई है।

उत्तर 7.4

उत्तर 1– उत्तराखण्ड से प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं में डीएवीपी से मान्यता प्राप्त दैनिक और सांध्य समाचार पत्रों की संख्या 49 है। देहरादून जिले से 28, हरिद्वार से 9, ऊधमसिंहनगर और नैनीताल जिले से 4–4, पौड़ी और टिहरी से दो–दो दैनिक या सांध्य दैनिक अखबारों का प्रकाशन होता है।

उत्तर 2– उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के पश्चात अमर उजाला, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, राष्ट्रीय सहारा जैसे राष्ट्रीय अखबारों का प्रकाशन उत्तराखंड से होने लगा है। वर्तमान समय में उत्तराखण्ड के दूरस्थ भौगोलिक इलाकों में जहां पहले ये अखबार दिन में पहुंचते थे अब सुबह–सवेरे यह पाठकों की दहलीज पर होते हैं। यह कम सुखद नहीं है कि उत्तराखंड की राजधानी देहरादून व हल्द्वानी से भी ये दोनों अखबार निकल रहे हैं। 2008 से दोनों अखबारों के टेबलायड साइज के अखबार अमर उजाला काम्पेक्ट और आई नेक्स्ट का भी देहरादून से दैनिक प्रकाशन हो रहा है। 2007 से राष्ट्रीय सहारा और 2008 से दैनिक हिंदुस्तान का प्रकाशन भी देहरादून से शुरू हो गया है। इससे पाठकों को देश–विदेश, राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय विषयों के ताजा समाचार मिल जाते हैं।

उत्तर 3– देहरादून से

उत्तर 4– नैनीताल जनपद के हल्द्वानी शहर से।

उत्तर 7.5

उत्तर 1– पत्रकारिता के क्षेत्र में अच्छे कैरियर की संभावनाएं दिनों दिन बढ़ रही हैं। पत्रकारिता में ग्लैमर आ गया है और लोग आजीविका और नाम कमाने के लिए इसमें आ रहे हैं। इस तथ्य को सामने रखकर बात करें, तो उत्तराखंड में पत्रकारिता में कैरियर की संभावनाएं उतनी ही प्रबल हैं, जितनी की अन्य राज्यों में हैं। मगर उत्तराखंड के खास संदर्भों में कुछ एक बातें ऐसी हैं, जो संभावनाओं को और ज्यादा मजबूत बनाती है। राज्य में बद्रीनाथ, केदारनाथ जैसे पवित्र धामों की उपस्थिति, गंगा यमुना का उद्‌गम, चप्पे–चप्पे में मठ, मंदिर जैसी तमाम सारी बातें हैं, जो यहां की सक्षम धार्मिक, सांस्कृतिक, पौराणिक विरासत के अभिन्न हिस्से हैं।

उत्तर 2– उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के पश्चात प्रदेश में हरिद्वार, ऋषिकेश, रुड़की, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, पौड़ी, कोटद्वार, गोपेश्वर, उत्तरकाशी, टिहरी, नैनीताल, मसूरी, हल्द्वानी, रुद्रपुर, काशीपुर, चंपावत, बागेश्वर, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा जैसे तमाम शहर और कस्बों की मीडिया के नजरिये से अहमियत बढ़ गई है। मुख्य अखबारों व टेलीविजन चैनलों के स्ट्रिंगर व संवाददाता इन क्षेत्रों में उपलब्ध हैं।

7.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. सकलानी, शक्ति प्रसाद : उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास, उत्तरा प्रकाशन, टी कैम्प, रूद्रपुर – 263153, (2004)

2. चंदोला वैष्णव, ललिता : गढ़वाल के जागरण में 'गढ़वाली' का योगदान, (1914–18) प्रकाशक, प0 विश्वम्भर दत्त चन्दोला शोध संस्थान, 19/12, पटेल रोड, देहरादून।

3. नौटियाल, भगवती प्रसाद : हिन्दी पत्रकारिता की दो शताब्दियां और दिवंगत प्रमुख पत्रकार, विन्सर पब्लिकेशन, डिसपेन्सरी रोड देहरादून, 2006।

4. सूचना निर्देशिका : सूचना एवं लोक संपर्क विभाग, उत्तराखंड।

7.10 सहायक/ उपयोगी पाठ्य सामग्री :

1. हिंदी पत्रकारिता की दो शताब्दियां और दिवंगत प्रमुख पत्रकार, भगवती प्रसाद नौटियाल।

2. स्वतंत्रता पूर्व गढ़वाल की पत्रकारिता, ललिता चंदोला वैष्णव

3. सूचना एवं लोक संपर्क विभाग, उत्तराखंड

7.11 निबन्धात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1 –उत्तराखंड की विशिष्ट स्थितियों में वे कौन से प्रमुख विषय हैं, जिनमें पत्रकारिता के लिए सबसे ज्यादा संभावनाएं हैं।

प्रश्न 2–प्रदेश के तमाम छोटे शहर और कस्बे भी पत्रकारिता के लिहाज से अब महत्वपूर्ण हो गए हैं। इसके आप क्या कारण महसूस करते हैं।

प्रश्न 3–उत्तराखंड में पत्रकारिता का क्षेत्र किस तरह से धीरे धीरे विकसित हुआ है? इस क्रम में उत्तराखंड में पत्रकारिता के इतिहास को विस्तार से लिखिए।

प्रश्न 4–आने वाले दिनों में उत्तराखंड में पत्रकारिता के क्षेत्र में कैरियर की संभावनाएं बढ़ सकती हैं एक लेख द्वारा समझाइये।

इकाई–08

समसामयिक, राजनैतिक एवं आर्थिक पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 समसामयिक पत्रकारिता

8.4 राजनैतिक पत्रकारिता

8.5 आर्थिक पत्रकारिता

8.6 सारांश

8.7 शब्दावली

8.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

8.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची

8.10 सहायक/उपयोगी पाठय सामग्री

8.11 निबन्धात्मक प्रश्न

8.1 प्रस्तावना :

पिछली इकाईयों में पत्रकारिता के इतिहास एवं उद्भव व विकास को लेकर अध्ययन किया गया था। साथ ही उत्तराखण्ड में पत्रकारिता के वर्तमान स्वरूप और उसमें रोजगार की सम्भावनाओं पर चर्चा की गई है।

इस इकाई में पत्रकारिता के समसामयिक परिप्रेक्ष्य पर चर्चा की गई है। कोशिश की गई है कि छात्र पत्रकारिता के समसामयिक परिप्रेक्ष्य के साथ–साथ राजनैतिक एवं आर्थिक पत्रकारिता की जानकारी भी प्राप्त करें।

समसामयिक घटनाएं पत्रकारिता के लिए महत्वपूर्ण आधार हैं। समसामयिक घटनाओं का पत्रकारिता के साथ क्या सम्बन्ध हैं तथा समसामयिक पत्रकारिता किसे कहते हैं इन तमाम विषयों की जानकारी पत्रकारिता में अध्ययनरत छात्र को आवश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखते हुये समसामयिक पत्रकारिता की जानकारी यहां दी जा रही है।

8.2 उद्देश्य :

समसामयिक घटना राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि विषयों पर आधारित हो सकती है। इन विषयों पर घटित होने वाली ताजी व ज्वलंत घटना ही समसामयिक घटना है। जनसंचार माध्यमों द्वारा इन समसामयिक घटनाओं का प्रसारण व प्रकाशन ही समसामयिक पत्रकारिता कहलाती है। समसामयकि पत्रकारिता अपने आप में पत्रकारिता की एक महत्वपूर्ण विधा है जिसकी जानकारी पत्रकारिता के छात्रों को होना आवश्यक है।

इस इकाई के अध्ययन से छात्र जान सकेंगे कि–

- समसामयिक पत्रकारिता किसे कहते हैं?
- आर्थिक पत्रकारिता किसे कहते हैं?
- राजनैतिक पत्रकारिता किसे कहते हैं?
- पत्रकारिता में समसामयिक घटनाओं की क्या भूमिका होती है?

8.3 समसामयिक पत्रकारिता :

भारत में पत्रकारिता की शुरुआत जिन परिस्थितियों में हुई, वह सब जानते हैं। देश अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त होने के लिए संघर्षरत था। जगह जगह आंदोलन थे। हिंसक और अंहिसक, दोनों तरह के। इन स्थितियों के बीच, आंदोलन की अलख जगाने के लिए पत्रकारिता एक ऐसे अस्त्र के रूप में सामने आई, जिसने अंग्रेजी साम्राज्य पर हो रहे हमलों को और धार प्रदान की। स्वतंत्रता आंदोलन में चाहे महात्मा गांधी रहे हों या बाल गंगाधर तिलक, नेतृत्व करते हुए उन्होंने पत्रकारिता का भी देश हित में भरपूर उपयोग किया। वो जमाना पत्रकारिता में विशुद्ध मिशनरी भाव का था। समसामायिक, राजनैतिक और आर्थिक विषय तब भी खूब उठे। चूंकि तब की पत्रकारिता का एकमात्र लक्ष्य आजादी था और राजनीतिक आंदोलन के जरिये इसे हासिल करने की कोशिश हो रही थी, इसलिए राजनैतिक पत्रकारिता का वर्चस्व रहा। सामाजिक, राजनैतिक और तमाम अन्य सम सामायिक विषय को भी तत्कालीन पत्रकारिता ने पुरजोर ढंग से उठाया। चाहे बात सांप्रदायिकता, छूआछूत, बाल विवाह जैसी बुराइयों से लड़ने की रही हो या फिर ब्रिटिश साम्राज्य की नीतियों की मुखालफत, पत्रकारिता धर्म पूरी ईमानदारी से निभाया गया। अंग्रेजों के शासनकाल में आर्थिक पहलुओं को भी पत्रकारिता ने खूब समझा और इन पर कलम चलाई। हालांकि आज की तरह, खास आर्थिक विषयों पर रिपोर्टिंग नहीं की गई, मगर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी अपनाने के अभियान के पीछे देशवासियों के आर्थिक लाभ, नुकसान की बात को पत्रकारिता ने अच्छे ढंग से समझाया।

आजादी मिलने के बाद पत्रकारिता का रंग रूप ही बदल गया है। अब हर प्रमुख विषय पर पत्रकारिता में विशेषज्ञता पर जोर है। व्यवसायिकता में कूद पड़ने के बावजूद पत्रकारिता लंबे समय तक सारे विषयों को एक साथ ही परोसती रही। आर्थिक, वाणिज्य, सैन्य, संस्कृति जैसे

अहम विषय तो एक तरह से अछूते ही रहे। मगर आम आदमी के मिजाज को भांपकर पत्रकारिता ने अब लगभग सारे प्रमुख विषयों को बहुत गहनता से कवर करना शुरू कर दिया है। पत्रकारिता के बदलते स्वरूप का इससे बड़ा कोई उदाहरण नहीं हो सकता कि पहले अखबारों में जहां केवल एक संपादक होता था, वहीं अब राजनीतिक संपादक अलग है, तो आर्थिक संपादक अलग। इसी तरह, अलग अलग विषयों पर एक अलग संपादक की नियुक्ति का प्रचलन बड़े अखबारों में चल निकला है। यह वक्त की मांग भी है। एक ही अखबार में इन विषयों के अलग–अलग पेज निर्धारित है। और तो और एक खास विषय को लेकर अलग से अखबार निकल रहे हैं। टीवी चैनल काम कर रहे हैं। सम सामायिक विषयों पर आधारित पत्रकारिता क्या है। राजनैतिक पत्रकारिता और आर्थिक पत्रकारिता कैसे होती है। इन सब बातों को इस इकाई में जानने का हमारा प्रयास होगा।

आजादी मिलने के बाद भारतीय पत्रकारिता ने सम सामायिक विषयों पर बेहद गंभीरता से काम करना शुरू किया है। दरअसल, तेजी से बदली स्थितियों में इसकी जरूरत भी रही है। स्थिति देश की भी बदली, तो मीडिया की भी। विकास की राह पर भारत ने तेजी से कदम आगे बढ़ाए। तमाम क्षेत्रों में देश ने उपलब्धियां हासिल कीं। कई चुनौतियों ने भी मुंह उठाया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कई घटनाक्रम सामने आए, जिसका प्रत्यक्ष, परोक्ष असर भारत पर पड़ा। यह क्रम लगातार जारी है और इस तरह की प्रगति ही सम सामायिक पत्रकारिता के लिए आधार तैयार कर रही है। मीडिया का नजरिया भी पिछले कुछ सालों में सौ फीसदी प्रोफेशनल होने की तरफ बढ़ा है। मीडिया की स्थिति भी सुधरी है। आधुनिकता के तमाम उपकरणों और पत्रकारों के लिए बेहतर सेवा शर्तों ने मीडिया का एक बड़ा कैनवास तैयार कर दिया है। पहले की बात करें, तो मीडिया किसी सम सामायिक विषय को उठाता जरूर था, मगर उसे प्रभावी मुद्दा बनाने में बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिल पाती थी। संचार की अपेक्षाकृत कम गति इस काम में सबसे बड़ा रोड़ा बनती थी। मगर आज की स्थिति देखें, तो किसी एक शहर से उठी बात पूरी देश दुनिया में कब छा जाती है, पता ही नहीं चलता। मीडिया की नेटवर्किंग मजबूत होने का भी प्रभावशाली नतीजा निकला है। तमाम अखबार, न्यूज चैनल्स के अपने रिपोर्टरों का जाल है। जहां जरूरत होती है, वहां दूसरी समाचार एजेंसियों की सेवाएं भी तुरंत हाजिर है। ऐसे में सम सामायिक पत्रकारिता के लिए बहुत अनुकूल स्थिति बन गई है।

मिस्त्र का ताजा उदाहरण हमारे सामने है। इस देश में लोकतंत्र बहाली के लिए हुए जनांदोलन के बाद लीबिया और अन्य देशों तक लोकतंत्र बहाली की आग फैल गई है। कई जगह जनांदोलन शुरू हो गए हैं। जिन देशों में जनता सालों से राजशाही या तानाशाही के जुल्मों का शिकार हुई है, वहां पर खुली हवा में सांस लेने की संभावनाओं को बल मिला है। सम सामायिक पत्रकारिता ने एक देश से शुरू हुए एक विचारात्मक आंदोलन को देखते देखते कई जगह फैला दिया। दरअसल, सम सामायिक पत्रकारिता का क्षेत्र इतना विस्तृत है, कि उसका कौन सा छोर पकड़े और किस को छोड़े निर्धारण करना मुश्किल है। अंतरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और यहां तक की स्थानीय स्तर पर भी सम सामायिक मामले अलग अलग हो सकते हैं। हालांकि इस तरह की पत्रकारिता का स्वरूप ही इस तरह का है, कि किसी क्षेत्र विशेष से उठी बात, बड़े

फलक तक पहुंचती है और तभी वह सम सामायिक मुद्दा भी बनता है। एक उदाहरण, उत्तराखंड आंदोलन से जुड़ा हुआ है। उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों को मिलाकर अलग उत्तराखंड राज्य बनाने की मांग एक क्षेत्र से उठी। उसके समानांतर, बिहार में झारखंड और मध्य प्रदेश में छत्तीसगढ़ राज्य की मांग को लेकर आंदोलन चले। देखा जाए, तो ये मामले क्षेत्रीय थे, मगर पूरे देश में इनकी गूंज हुई। केंद्र सरकार को भी क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए इन राज्यों के गठन को मंजूरी देनी पड़ी।

देखा जाए, तो सम सामायिक पत्रकारिता पूरी तरह इस बात पर निर्भर होती है, कि वर्तमान में कौन सा ऐसा विषय है, जो कि सबसे ज्यादा चर्चा में है और इसकी क्या वजह है। इसके अलावा ऐसे कौन से विषय हैं, जो कि पुराने समय से चले आ रहे हैं, लेकिन वर्तमान संदर्भों में फिर भी प्रासंगिक बने हुए है। मीडिया संस्थानों में सम सामायिक विषयों के लिए अब बहुत मेहनत की जा रही है। हर प्रमुख अखबार और न्यूज चैनल्स, सम सामायिक विषयों से अब अछूता नहीं है। ऐसे विषयों पर उसके खास आयोजन होते हैं। अखबारों की बात करें, विशेष पेज सम सामायिक विषय को ज्यादा प्रभावशाली ढंग से सामने रखते हैं। अपने वरिष्ठ संवाददाताओं से तो अखबार मैटर तैयार करवाता ही है, विशेषज्ञों का भी ज्यादा से ज्यादा उपयोग किया जाता है। उनकी राय तो छापी ही जाती है। विषय के प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण के लिए विशेषज्ञों से कॉलम लिखवाने का ट्रेंड पिछले कुछ सालों में काफी तेजी से चल निकला है। न्यूज चैनलों के स्टूडियों पर सम सामायिक विषय पर विशेषज्ञों से बातचीत, चरचा, बहस मुबाहिस के कार्यक्रमों की अब भरमार है। और तो और आम पब्लिक को स्टूडियों में बुलाकर या फिर किसी खास जगह पर जाकर संबंधित मसले पर सीधी बात भी चैनल्स काफी करने लगे हैं।

वैसे, तो हर रिपोर्टर से ही खूब पढ़ने लिखने की अपेक्षा की जाती है, मगर सम सामायिक पत्रकारिता करने वालों से ये अपेक्षा कई गुना ज्यादा होती है। इसकी वजह भी है। दरअसल, सामान्य घटना कवर करने वाले रिपोर्टरों का काम खबर जुटाने और उसे जैसा पाया, वैसा ही पेश करके चल जाता है। मगर सम सामायिक विषयों के पत्रकार के लिए संबंधित मुद्दे पर गहन अध्ययन बहुत जरूरी है। न्यूज चैनल्स में संबंधित पत्रकार की काफी मदद रिसर्च टीम कर देती है, फिर भी उसे अपने स्तर पर भी सारी जानकारी रखनी ही पड़ती है। समाचार पत्रों के अलावा समाचार पत्रिकाओं ने भी सम सामायिक पत्रकारिता की दिशा में अच्छा काम किया है। इंडिया टुडे और आउटलुक जैसी पत्रिकाओं की इस वजह से ख्याति किसी से छिपी नहीं है।

आज की स्थितियों में देखें, तो भारत में भ्रष्टाचार का मुद्दा सम सामायिक पत्रकारिता के लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बना हुआ है। यह मुद्दा आजादी के बाद से कई कई बार उठा है। कभी बोफोर्स तोप घोटाले, तो कभी ताबूत घोटाले, तो कभी हवाला मामले ने भ्रष्टाचार पर सरकारों की टांग खींचने का मीडिया को भरपूर मौका दिया। इन दिनों कॉमनवेल्थ गेम्स और टूजी स्पेक्ट्रम घोटाले के बहाने एक बार फिर से भ्रष्टाचार के मामले ने सरकार को हिलाकर रखा है। देश की आंतरिक सुरक्षा, जम्मू कश्मीर में अलगाववादियों की कारस्तानी, कई राज्यों में नक्सली गतिविधियों में तेजी जैसे सम सामायिक विषयों पर मीडिया का खास ध्यान है। भारत की

विदेश नीति, विशेषकर अमेरिका के साथ नजदीकी, चीन से देश की सुरक्षा पर बढ़ता खतरा ये ऐसे विषय हैं, जिन पर रोज नए नित कूटनीतिक समीकरण बन रहे हैं। इसके अलावा, विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, वन पर्यावरण, पब्लिक के लिए अन्य मूलभूत सुविधाओं से जुड़े सम सामायिक विषय भी समय समय पर उठ रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न–1–वर्तमान समय में सम सामयिक पत्रकारिता की गति किन कारणों से तेज हुई है।

प्रश्न–2–वर्तमान में मीडिया में कौन से सम सामयिक विषयों पर सबसे ज्यादा फोकस है।

8.4 राजनैतिक पत्रकारिता :

आज भी आप कोई सा अखबार उठा लें या फिर न्यूज चैनल देखें, अमूमन राजनैतिक खबरों का वर्चस्व ही दिखाई देगा। हालांकि पिछले कुछ सालों में मीडिया में राजनैतिक खबरों का एकाधिकार खत्म हुआ है। नहीं, तो किसी भी अखबार में राजनैतिक खबरें ही छाईं रहती थीं। अब आम आदमी के मिजाज के अनुरूप खबरों को विविधतापूर्ण बनाने की मीडिया समूहों की कोशिश रहती है। इसलिए सनसनी फैलाने, अपराध, दुर्घटना, घोटाले, स्कैंडल जैसी खबरें भी अब प्रमुखता से सामने आती है। चूंकि हमारा देश विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। सरकारें लोकतांत्रिक प्रणाली से ही चुनकर आती हैं और उसे ही आम आदमी से जुड़े फैसले करने होते हैं। इसलिए राजनैतिक खबरों को बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत जैसे देश में हालांकि साक्षरता के प्रसार की अब भी बहुत जरूरत है, फिर भी इस बात पर संतोष जताया जा सकता है कि आम आदमी राजनैतिक तौर पर बेहद जागरूक है। गली–मुहल्लों में होने वाली बातचीत में राजनैतिक विषय अमूमन छाए रहते हैं। राजनीतिक दलों की नीतियों पर खुलकर चरचा होती है।

आम आदमी किसी ना किसी राजनैतिक दलों से प्रभावित होता है। वह उसकी विचारधारा का पक्षधर होता है या आलोचक। राजनीतिक दलों से पूरी तरह मायूस हो चुके व्यक्ति की अपनी एक राजनैतिक चेतना होती है। इसलिए कहा जा सकता है कि राजनैतिक खबरों की अखबारों और न्यूज चैनलों में आम आदमी खूब अपेक्षा करता है। मीडिया समूह भी सारी खबरों में से राजनैतिक खबरों के लिए एक बड़ा कोटा अलग से निकालकर रखते हैं। राजनैतिक खबरों के महत्व का इस बात से भी पता चलता है कि लगभग हर राजनैतिक दल अब अपने मुखपत्र निकालने लगे हैं। भारतीय जनता पार्टी की मातृ संस्था आरएसएस पांचजन्य और आर्गनाइजर जैसे समाचार पत्रों का लंबे समय से प्रकाशन कर रहा है। सामना शिवसेना का मुखपत्र है।

भारतीय पत्रकारिता में राजनैतिक रिपोर्टर को बहुत सम्मान हासिल है। इस रिपोर्टर से ये अपेक्षा की जाती है कि उसे भारतीय राजनैतिक व्यवस्था, राजनैतिक दलों की नीतियों, स्वभाव, उनके संगठन, निर्वाचन प्रणाली, राजनैतिक शब्दावली आदि तमाम सारी बातों की जानकारी हो। तभी वह खबरों को जुटाने से लेकर उसका बेहतरीन विश्लेषण कर पाएगा। चुनावी सर्वेक्षण के क्षेत्र में मीडिया हाल के कुछ वर्षों में जिस सफलता के साथ आगे बढ़ा है, उसमें तो राजनैतिक

पत्रकारिता की भूमिका और अहम हो गई है। राजनैतिक पत्रकारों पर निष्पक्ष होकर पत्रकारिता करने का और दबाव इसलिए बढ़ गया, क्योंकि अब वह जनमत को और ज्यादा प्रभावित करने लगे हैं।

भारत में दलों की स्थिति : यह सब जानते हैं कि भारत ने अमेरिका और ब्रिटेन की तरह द्विदलीय निर्वाचन प्रणाली को नहीं अपनाया है। हालांकि आम आदमी के बीच होने वाली बहस में लगभग हर जगह इस प्रणाली की वकालत की जाती है। फिर भी भारत की परिस्थितियों में संविधान में बहुदलीय प्रणाली को देश हित में उपयुक्त मानते हुए इसे अपनाया गया है। यहां चुनाव प्रणाली में बहुत से राजनैतिक दल हिस्सा लेते हैं। उन्हें चुनाव में मिलने वाले वोटों के प्रतिशत, सीटों का आंकलन कर राष्ट्रीय या फिर क्षेत्रीय दल की मान्यता प्राप्त होती है। भारत में इस वक्त सबसे बड़ी दो राजनैतिक पार्टियों की बात करें, तो वह अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के रूप में ही नजर आती है। हालांकि इनके अलावा भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, समाजवादी पार्टी, लोकतांत्रिक कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस, तृणमूल कांग्रेस, राष्टीय जनता दल, लोक मोर्चा, समाजवादी जनता पार्टी, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवादी लेनिनवादी, अखिल भारतीय अन्नादुमुक मुनेत्र कणगम, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी, शिवसेना, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना, लोक दल, उत्तराखंड क्रांति दल जैसे तमाम राजनैतिक दल भी निर्वाचन प्रणाली से जुड़े हैं। इनमें से कुछ को राष्ट्रीय तो कुछ को क्षेत्रीय या राज्य स्तरीय राजनैतिक दल की मान्यता प्रदान है। भारतीय राजनीति में प्रमुख राजनैतिक दलों की जो स्थिति है, उसमें उनका ध्रुवीकरण कुछ इस तरह दिखाई पड़ता है। एक तरफ, कांग्रेस, दूसरी तरफ भारतीय जनता पार्टी और एक अलग पाले में वामपंथी दल। हालांकि पिछले कुछ सालों में गठबंधन की राजनीति का जो दौर चला है, उसमें अप्रत्याशित ढंग से कई दलों ऐसे दूसरे दलों के साथ सरकार चलाई है, जिसकी सामान्य स्थितियों में कल्पना नहीं की जा सकती थी।

भारतीय राजनीति ने नब्बे के दशक में केंद्र में राष्ट्रीय मोर्चा और वाम मोर्चा की ऐसी सरकार भी देखी, जिसमें सांप छछूंदर का सा बैर रखने वाले वामपंथी दल और भारतीय जनता पार्टी दोनों शामिल थे। इसी तरह, जब भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन बना, तो इसमें जनता दल यू जैसी पार्टी भी शामिल हुई, जो कि भारतीय जनता पार्टी से हमेशा दूरी बनाकर चलती थी। इस बीच, भारतीय राजनीति में विकास, धर्म, जाति आदि तमाम सारी बातें भी एक साथ चली हैं। कई राजनैतिक दलों को इससे राज्यों में फायदा भी मिला है। क्षेत्रीय दलों ने समय समय पर बड़े राजनैतिक दलों को आईना दिखाया है और केंद्र में सरकार बनाने के लिए उनका सहयोग अपरिहार्य रहा है। राजनीतिक दलों को स्वार्थों के चलते विभाजित होते हुए भी कई बार देखा गया है। दरअसल, ये सारी बातें भारतीय दलीय व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बन गई हैं।

दबाव समूहों का दबाव : भारतीय राजनीति में दबाव समूह यानी प्रेशर ग्रुपों की भी बेहद महत्वपूर्ण भूमिका है। ये दबाव समूह, छात्रों, व्यापारियों, श्रमिकों, किसानों, कर्मचारियों के संगठन के रूप में

होते हैं। ये स्वयं सत्ता में नहीं होते और ना ही आने का उनका प्रयास होता है, मगर इनका सरकारों पर लगातार दबाव कायम रहता है।

निर्वाचन आयोग की भूमिका : भारतीय निर्वाचन व्यवस्था की बेहतरीन मानीटरिंग का जिम्मा निर्वाचन आयोग के जिम्मे हैं। संसद, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, राज्यों के विधानमंडल के चुनाव कराने से लेकर उन्हें नियंत्रित करने का दायित्व निर्वाचन आयोग पर ही रहता है। संविधान में मुख्य चुनाव आयुक्त और दो चुनाव आयुक्तों की इस कार्य के लिए नियुक्ति का प्राविधान किया है। संविधान ने चुनाव आयोग को निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन कराने, मतदाता सूची तैयार करने, वोट प्रतिशत और सीटों के आधार पर मान्यता प्रदान करना या निरस्त करना, निष्पक्ष निर्वाचन की व्यवस्था करना, जरूरत पड़ने पर उपचुनाव कराने, राजनीतिक दलों के लिए आचार संहिता बनाने, चुनाव के दौरान इसका पालन कराने, चुनाव खर्च को निर्धारित और नियंत्रित करने जैसे कार्यों के लिए जवाबदेह बनाया है। राजनीतिक दलों को मान्यता देने के सवाल पर कुछ नियम आयोग ने बनाए हैं। यदि कोई दल राजनैतिक तौर पर पांच वर्ष लगातार सक्रिय रहता है और किसी एक चुनाव में लोकसभा के 25 सदस्यों में एक या फिर विधानसभा के 30 सदस्यों में से उसका एक सदस्य चुना गया हो, तो उस दल को राज्य स्तरीय मान्यता दी जाती है। यदि किसी दल को कम से कम चार राज्यों में मान्यता प्राप्त हो या फिर उसे किसी आम चुनाव में कम से कम चार फीसदी वोट मिले हो, तो उसे राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता प्रदान कर दी जाती है। बहुत कम समय में ही बहुजन समाज पार्टी को एक राज्य स्तरीय दल से राष्ट्रीय दल बनने में कामयाबी प्राप्त हुई है।

वैसे, तो हर तरह की रिपोर्टिंग में ही निष्पक्षता की उम्मीद की जाती है, मगर राजनैतिक क्षेत्र को कवर करते हुए अतिरिक्त सावधानी की जरूरत महसूस होती है। इसके कारण भी है। दरअसल, राजनैतिक व्यवस्था से जुड़े लोगों की हरसंभव कोशिश सत्ता प्रतिष्ठान पर कब्जे की रहती है। इस कार्य के लिए रिपोर्टरों को प्रलोभन या फिर दबाव से अपने पक्ष में करने के प्रयासों की गति बहुत तेज होती है। राजनैतिक रिपोर्टरों को इनसे बचते हुए निष्पक्षता से अपना काम करना होता है। कोशिश ये ही होनी चाहिए कि रिपोर्टर किसी दल का उपकरण ना बन जाए।

देश और प्रदेशों की राजधानियों में राजनैतिक रिपोर्टिंग लायक अधिक संभावनाएं निकलती हैं। किसी कस्बे या छोटे शहर में राजनैतिक रिपोर्टिंग का दायरा बहुत ज्यादा सिमट जाता है और बहुत हद तक मामला स्थानीय बन जाता है। देश या प्रदेश की राजधानी, जहां पर संसद और विधानसभा होती है और दलों के गतिविधियां पार्टी मुख्यालय से लेकर संसद, विधान भवन तक फैली होती है, वहां पर राजनैतिक रिपोर्टर बड़े फलक पर काम कर सकता है। दिल्ली हो या उत्तराखंड की राजधानी देहरादून, प्रमुख अखबारों और न्यूज चैनलों में अलग अलग राजनैतिक दल रिपोर्टरों को उनकी बीट के तौर पर बांटे जाते हैं। संबंधित रिपोर्टर उसे आवंटित की गई पार्टी के मुख्यालय में सक्रिय रहता है। पार्टी के प्रमुख नेताओं से लेकर आम कार्यकर्ता के लगातार संपर्क में रहता है। पार्टी के आगामी दिनों में होने वाले प्रमुख प्रस्तावित कार्यक्रमों में तो उसकी नजर होती ही है, पार्टी के भीतर मचे घमासान, अंतर्द्वंद का अपडेट भी वह लगातार

हासिल करता रहता है। अखबारों या न्यूज चैनल के पॉलिटिकल ब्यूरो चीफ को ये छूट जरूर रहती है कि वह संबंधित राजनैतिक रिपोर्टरों से फीड बैक हासिल कर समग्र तौर पर बड़ी राजनैतिक रिपोर्ट तैयार कर ले।

राजनीतिक रिपोर्टर को यह जानकारी जरूर होनी चाहिए, कि किस क्षेत्र में कौन सा दल प्रभावशाली है और किसमे कमजोर। विभिन्न जातियों और धर्मों से जुड़े लोगों का किस पार्टी के पक्ष या विपक्ष में समीकरण बैठ रहा है। उसके सत्तारूढ़ और विपक्षी दोनों दलों के नेताओं, कार्यकर्ताओं से अच्छे संपर्क होने चाहिए। जो कि समय समय पर उसे अंदर की खबरें देते रहें। विधायक से लेकर राष्ट्रपति तक के चुनाव की प्रक्रिया का ज्ञान होना चाहिए। इसके अलावा वह विभिन्न राजनैतिक दलों के संगठनात्मक चुनाव के बारे में भी पूरी जानकारी रखे। क्योंकि हर दल का अपना अलग संविधान और व्यवस्था है। कहीं अध्यक्ष मनोनीत किए जाते हैं, कहीं पर बाकायदा उनका चुनाव होता है। राजनैतिक रिपोर्टर भले ही पार्टियों को कवर कर रहा होता है, मगर उसे आम आदमी की दिक्कतों, समस्याओं से वाकिफ होना भी जरूरी है। ताकि मौका मिलने पर राजनैतिक दलों के बड़े मंच पर वह इसे प्रमुखता से उठा सके।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न–1–एक राजनैतिक रिपोर्टरों को प्रमुख तौर पर किन बिंदुओं की जानकारी होनी चाहिए।

प्रश्न–2–पत्रकारिता में राजनैतिक खबरों का कितना महत्व है।

8.5 आर्थिक पत्रकारिता :

कोई भी देश क्यों ना हो, आर्थिक गतिविधियां वहां के लोगों, समाज के लिए बेहद महत्व रखती हैं। देश विकसित हैं या विकासशील, इसके निर्धारण में वहां की तमाम अन्य बातों के अलावा आर्थिक गतिविधियां प्रमुख भूमिका निभाती हैं। हमारे देश में आर्थिक पत्रकारिता ने बहुत देरी से पांव पसारने शुरू किए हैं। जटिल विषय होने के कारण पत्रकारिता में लंबे समय तक यह उपेक्षित रहा। इस विषय की जटिलता दोनों के लिए थी। चाहे वो पत्रकार हों या फिर आम आदमी। मगर धीरे धीरे स्थिति बदली है। विदेशी मुद्रा, पंचवर्षीय योजना, ग्रामोद्योग, राष्टीय आय, औद्योगिक विकास आदि तमाम वजहों के चलते आर्थिक खबरों को ज्यादा से ज्यादा लिखने की जरूरत महसूस हुई। पहले के मुकाबले अब हर अखबार में आर्थिक समाचारों को खास महत्व मिल रहा है। इन खबरों के लिए एक या दो पेज निर्धारित रहते हैं। आर्थिक समाचारों पर ही केंद्रित कई अखबार निकल रहे हैं। शेयर बाजार, सट्टा बाजार, कपड़ा बाजार, मंडी आदि के भावों में आते उतार चढ़ाव की अब मीडिया को लगातार खबर है। अखबारों में आर्थिक खबरें, अपराध, राजनीति और अन्य विषयों की खबरों पर भारी पड़ रही है। अब ऐसा नहीं है कि बजट के दिन या उसके आस पास ही आर्थिक खबरों के लिए गुंजाइश निकले। अब साल के ज्यादातर दिनों में आर्थिक खबरें, अन्य खबरों से तगड़ी प्रतिस्पर्धा करती है और अखबार, न्यूज चैनल में प्रमुख स्थान पर कब्जा जमाती है।,

अंग्रेजी समाचार माध्यम आर्थिक पत्रकारिता पर ध्यान देने के मामले में काफी आगे रहे। इनको देखते हुए ही हिंदी अखबारों में भी आर्थिक खबरों को महत्व मिलना शुरू हुआ है। फिर ये बात भी रही है कि पिछले कुछ सालों में आर्थिक गतिविधियों को लेकर भारतीय जनमानस में जागरूकता बढ़ी है। मीडिया ग्रुप भी विविधतापूर्ण खबरें देने लगे हैं। आर्थिक पक्ष ऐसा है, जिससे हर आदमी जुड़ा है। मीडिया ने उसे इसके बारे में सरल शब्दों में बताना शुरू किया है। उसमें चेतना जागृत करने की कोशिश की है। आर्थिक खबरों से जब आम आदमी को उसकी भाषा में ही ये जानकारी होने लगे कि वह अपनी जमा पूंजी कहां खर्च करें, अमुक योजना से किस तरह उसकी जेब कट जाएगी। या फिर सरकार के भावी कार्यक्रमों के पीछे छिपे सकारात्मक या नकारात्मक आर्थिक पहलु क्या क्या हैं, तो उसकी दिलचस्पी निश्चित तौर पर इन खबरों के प्रति बढ़ेगी। पिछले कुछ सालों में ऐसा ही हुआ है। मीडिया ग्रुपों की ऐसा करने के पीछे सामाजिक जिम्मेदारी का भाव चाहे जितना हो, मगर आम आदमी के हितों की बात करते हुए अपना अलग पाठक या दर्शक वर्ग खड़ा करने की व्यवसायिक सोच ने भी भूमिका निभायी है। कारण चाहे जो भी रहे हों, मगर उसका नतीजा इस मायने में सकारात्मक निकला है कि आर्थिक गतिविधियों को मीडिया में भरपूर जगह मिलने लगी है। आर्थिक पत्रकारिता का दायरा बढ़ाने में नई आर्थिक नीतियों और लगातार फैलते भारतीय बाजार ने भी योगदान किया है। आज की राजनीति अब भावनात्मक कम और तथ्यात्मक ज्यादा हो गई है। भाषणों, चुनावी घोषणा पत्र में आर्थिक और तमाम अन्य तथ्यों को सामने रखकर राजनीति की दिशा तय की जा रही है। इसका भी आर्थिक पत्रकारिता के विस्तार में फायदा मिला है।

आजादी से पहले की बात करें, तो पता चलता है कि कामर्स, ईस्टर्न इकानामिस्ट जैसी कुछ एक आर्थिक पत्रिकाएं तब भी निकाली गई थीं। मुंबई से निकलने वाली कामर्स पत्रिका मफललाल उद्योग समूह और कलकत्ता से निकलने वाली ईस्टर्न इकानामिस्ट बिडला समूह से संबंधित थी। आजादी के बाद इकानामिक टाइम्स और फाइनेंशियल एक्सप्रेस का प्रकाशन मुंबई से हुआ; 1975 में कलकत्ता से बिजनेस स्टैंडर्ड का प्रकाशन शुरू हो गया। पिछले कुछ सालों में आर्थिक पत्र–पत्रिकाओं की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ है। बिजनेस लाइन, बिजनेस वर्ल्ड, बिजनेस टुडे जैसे कई नाम आर्थिक पत्रकारिता में जुड़े हैं। मगर आर्थिक पत्रकारिता की समृद्धशाली स्थिति अब भी अंग्रेजी माध्यम में ही ज्यादा दिखलाई पड़ती है। हिंदी अखबारों में आर्थिक खबरें भले ही अन्य खबरों को कड़ी प्रतिस्पर्धा देने लगी हो। इन खबरों के लिए अलग से पेज जरूर निकल रहे हैं, परंतु स्थिति बेहतरीन होने में अभी वक्त लगेगा। अमर उजाला से जुड़ा एक उदाहरण बताने के लिए काफी है, कि अभी चुनौती बड़ी है। अमर उजाला ग्रुप ने कुछ समय पहले अमर उजाला कारोबार नाम से एक हिंदी अखबार लांच किया था, मगर कुछ समय बाद ही इसे बंद कर देना पड़ा। इकानामिक टाइम्स की तरह हिंदी में अखबार निकालने की एक अन्य कोशिश भी सफल नहीं हो पाई है। हालांकि गुजरात व्यापार और नई दुनिया प्रकाशन ने आर्थिक पत्रिका का काम सफलतापूर्वक संचालित किया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति : अब बात भारतीय अर्थव्यवस्था की। आर्थिक पत्रकार को ये समझना जरूरी है कि भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप क्या है। उसकी जरूरत क्या है, आगे

भविष्य क्या है। भारतीय अर्थव्यवस्था के ढांचे में नजर दौड़ाएं, तो अब भी यह अब भी विकसित नहीं है। भारतीय अर्थव्यवस्था के मुख्य लक्षण में निम्न प्रति व्यक्ति आय शामिल है। विकसित पूंजीवादी देशों, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड जैसे देशों की तुलना में भारतीय अर्थव्यवस्था प्रणाली बहुत पीछे है। भारत में आय और संपत्ति का वितरण असमान है। एक लिहाज तक इसे अन्यायपूर्ण माना जा सकता है। स्थिति आज भी ये ही है कि उत्पादन के महत्वपूर्ण साधनों में कुछ लोगों का निजी स्वामित्व है। इसलिए अमीर और अमीर तथा गरीब और गरीब हो रहा है। खास तौर पर नब्बे के दशक में आर्थिक असमानताएं बढ़ी हैं। देखा जाए, तो गरीबी भारतीय अर्थव्यवस्था की हकीकत है। देश में हर दूसरा आदमी गरीब है, दांडेकर–रथ, बीएस मिन्हास और प्रणव वर्धन के शोध कार्यों के बाद ये स्थिति अधिक स्पष्ट हुई है।

कृषि की प्रधानता : तमाम प्रतिकूल स्थितियों के बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था में अब भी कृषि की प्रधानता की बात सामने दिखाई देती है। 1990 के दशक में भारत में कृषि पर निर्भरता में भारी कमी आई, मगर फिर भी आबादी का एक बड़ा भाग आज भी कृषि कार्यों में सक्रिय है। भारत में आबादी लगातार बढ़ती जा रही है और जनसंख्या विस्फोट के खतरे के भारत नजदीक पहुंच चुका है। इसे कोई भी आसानी से समझ सकता है, कि जब अल्प विकसित अर्थव्यवस्था में आबादी तेजी से बढ़ती है, तो उसको उत्पादन कार्य में लगाने के लिए पर्याप्त तेजी से उद्योगों का विकास नहीं हो पाता। परिणाम यह होता है कि भूमि पर जनसंख्या का भार बढ़ता है और बेरोजगारी की समस्या तेजी से फैलती है। भारत इस समस्या से लगातार गुजर रहा है। वरिष्ठ पत्रकार भरत झुनझुनवाला का कहना है कि हमे विकास की ऐसी परिभाषा स्थापित करनी होगी, जिसमें उत्पादन की तुलना में रोजगार को अधिक महत्व दिया जाए। उत्पादन ऐसी वस्तुओं का अधिक हो, जिनसे पर्यावरण संतुलन न बिगड़े तथा जिनके लिए देशों का शोषण ना हो। विकास की पश्चिमी परिभाषा को त्यागकर अपनी नई परिभाषा बनानी होगी, वरना हम भ्रमित रहेंगे।

पूंजी का अभाव : किसी भी अर्थव्यवस्था के विकास के लिए पूंजी की सबसे बड़ी जरूरत महसूस होती है। भारत की अर्थव्यवस्था में पूंजी का अभाव साफ दिखलाई पड़ता है। यह वास्तविक तथ्य है कि किसी भी देश का पूंजी संचय, उस देश की अर्थव्यवस्था को पिछड़ेपन से मुक्ति दिला सकता है। एक कुजनेत्स के अनुसार, पूंजी निर्माण के नीचे अनुपात के फलस्वरूप, राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि की दर नीची होती है, जब तक की पूंजी उत्पादन अनुपात गिरने की प्रवृत्ति ना दिखलाए। भारत में मानव विकास का नीचा स्तर भी दिखाई पड़ता है। मानव विकास का माप प्रायः संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा निर्मित मानव विकास सूचकांक की सहायता से किया जाता है।

अब भी पिछड़ापन : भारतीय अर्थव्यवस्था की जो बहुत अच्छी तस्वीर नहीं दिखलाई देती, उसका एक पहलु भारत में तकनीक का पिछड़ापन भी है। भारत में अभी भी विभिन्न उत्पादन कार्यों में आधुनिक तकनीक का उस स्तर पर इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है, जिसकी अपेक्षा है। दो तिहाई से ज्यादा आबादी की रोजी रोटी चलाने वाली कृषि में हरित क्रांति जैसे एक–दो अपवादों को छोड़ दिया जाए, तो देखने में आता है कि खेती–किसानी की पुरानी तकनीक पर आज भी काम हो रहा

है। इसमें बदलाव नहीं लाया जा सका है। भारत में उद्यमियों का अभाव भी रहा है। टाटा, बिडला, अंबानी जैसे उद्यमियों की बहुत बड़ी जमात भारत में नहीं खड़ी हो पाई। शुम्पीटर के अनुसार, किसी भी देश के तेजी के साथ आर्थिक विकास के लिए उस देश में भारी संख्या में कुशल उद्यमी होने चाहिए। भारत के उद्योगपतियों के बारे में चेस्टर बाउल्स ने काफी तीखी प्रतिक्रिया की है। चेस्टर बाउल्स के मुताबिक, यहां के उद्योगपति देश के दीर्घकालीन औद्योगिक विकास की बजाय सट्टेबाजी द्वारा लाभ कमाने की ओर अधिक ध्यान देते हैं। हालांकि पिछले कुछ सालों में भारत में नए ईमानदार, कर्मठ उद्यमी निकलकर सामने आए हैं। मगर फिर भी भारतीय अर्थव्यवस्था को तेजी दिलाने के लिए इनकी जितनी संख्या होनी चाहिए, वह नहीं है।

पुराना समाज, पुरानी मान्यताएं : भारतीय अर्थव्यवस्था के तेजी से आगे बढ़ने की राह में एक बड़ी रुकावट यहां के समाज में गहरे से व्याप्त पुरानी मान्यताएं, परंपराएं और संस्थाएं हैं। जर्मन समाजशास्त्री मैक्स बेवर के अनुसार, हिंदू धर्म ने भारत के अशिक्षित और शिक्षित दोनों ही वर्गों में ये विश्वास उत्पन्न किया है कि उनका वर्तमान जीवन पूर्व जन्मों के कर्मों द्वारा निर्धारित हुआ है और उन्हें अपने अगले जीवन को अच्छा बनाने के लिए धार्मिक कार्यों में समय लगाना चाहिए। इस प्रकार का विश्वास मनुष्य को निकम्मा बनाता है। दरअसल, यह हकीकत भी है। भारत के समाज पर जाति प्रथा, संयुक्त परिवार, उत्तराधिकार के नियम, धर्म और आध्यात्म का बहुत गहरा प्रभाव है। इससे आर्थिक विकास पर काफी हद तक प्रभाव पड़ रहा है।

राष्ट्रीय आय और आर्थिक संस्थाएं : देश की अर्थव्यवस्था के विकास को सही अर्थों में जानने के लिए जरूरी है कि आर्थिक रिपोर्टर को ये जानकारी भी हो कि आर्थिक वृद्धि से होने वाले लाभों का बंटवारा किस प्रकार हुआ है। राष्ट्रीय आय की माप के लिए कई धारणाएं प्रयोग की जाती है। भारत में इस वक्त मुख्य तौर पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी), शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (एनएनपी), वैयक्तिक आय और व्यय योग्य वैयक्तिक आय की अवधारणाओं का प्रयोग किया जा रहा है। भारत में इस वक्त कई आर्थिक संस्थाएं भी काम कर रही हैं। आर्थिक व्यवस्था में इन संस्थाओं का बहुत बड़ा योगदान है। एक कुशल आर्थिक संवाददाता से ये भी अपेक्षा होती है कि वह छोटी बड़ी हर आर्थिक संस्था के संगठन, काम करने के ढंग और उससे जुड़े प्रमुख लोगों के बारे में पूरी जानकारी रखे। वर्तमान में भारत में प्रमुख आर्थिक संस्थाएं भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी), भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (आईडीबीआई), भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी), भारतीय यूनिट ट्रस्ट (यूटीआई), भारतीय निर्यात आयात बैंक, राष्ट्रीय आवास बैंक, राष्ट्रीय कृषि तथा ग्रामीण बैंक (नाबार्ड), शेयर बाजार आदि हैं।

आर्थिक पत्रकारिता की स्थिति देश की राजधानी दिल्ली या फिर मुंबई जैसे उन शहरों में ज्यादा समृद्ध रूप में दिखाई पड़ती है, जहां आर्थिक गतिविधियां बहुत तेज हैं। छोटे कस्बों या गांवों तक आर्थिक पत्रकारिता को पहुंचने में अभी बहुत वक्त लगना तय है। हिंदी पत्रकारिता ने आर्थिक क्षेत्र की पत्रकारिता में कदम आगे तो बढ़ाए हैं, मगर अब भी बहुत शानदार तस्वीर नहीं उभरती। हिंदी के आर्थिक पत्रकारों को और बेहतर स्थिति में लाने के लिए मीडिया ग्रुपों को भी इन हाउस ट्रेनिंग प्रोग्राम पर ध्यान देना होगा। रिपोर्टर को खुद आर्थिक विषय, उसकी शब्दावली

को बहुत गहरे से समझने के लिए प्रयास करने होंगे। इस संबंध में प्रख्यात आर्थिक पत्रकार उपेंद्र प्रसाद का ये कहना उल्लेखनीय है कि अधिकतर हिंदी पत्रकार आज आर्थिक निरक्षरता की समस्या झेल रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न–1–प्रख्यात आर्थिक पत्रकार उपेंद्र प्रसाद ने हिंदी आर्थिक पत्रकारों की स्थिति पर क्या कहा है?

प्रश्न–2–एक आर्थिक रिपोर्टर में क्या–क्या खूबियां होनी चाहिए?

8.6 सारांशः

भारतीय पत्रकारिता में सम सामायिक, राजनैतिक और आर्थिक पत्रकारिता ने आज वो स्थिति बना ली है, जिसके बगैर कोई भी मीडिया संस्थान अधूरा ही माना जाएगा। हालांकि छोटे अखबारों के साथ ये दिक्कत है कि सम सामायिक और आर्थिक पत्रकारिता से उनका अब भी कोई सरोकार नहीं बन पाया है। कुछ छोटे समाचार पत्र जरूर अपवाद हो सकते हैं, जिन्होंने विपरीत स्थितियों में ये काम किया है या फिर कर रहे हैं। इसके पीछे छोटे अखबारों का कमजोर संगठनात्मक ढांचा काफी हद तक जिम्मेदार है। राजनैतिक पत्रकारिता के संबंध में जरूर स्थिति उतनी बुरी नहीं है। बड़े अखबारों और न्यूज चैनलों का जहां तक संवाल है, उन्हें उनके पाठकों और दर्शकों से सम सामायिक, आर्थिक और राजनैतिक पत्रकारिता के संबंध में जबरदस्त फीडबैक मिल रहा है। ये स्थिति इन तीनों तरह की पत्रकारिता को और आगे बढ़ाने में सहायक साबित हो रहा है।

8.7 शब्दावली :

कॉलमः अखबारी भाषा में कॉलम शब्द दो तरह से इस्तेमाल होता है। एक कॉलम का मतलब स्तंभ से है। किसी विषय पर कोई पत्रकार या विषय विशेषज्ञ अपने ही अंदाज में कोई लेख लिखता है, तो वह कॉलम कहलाता है। प्रख्यात पत्रकार शरद जोशी का नवभारत टाइम्स में प्रतिदिन शीर्षक वाला कॉलम बहुत लोकप्रिय हुआ था। दूसरा कॉलम अखबारों में तकनीक से जुड़ा हुआ है। समाचार पत्र अपने साइज के अनुसार, कॉलमों में बंटे होते हैं। खबरों के हेडिंग भी इसी हिसाब से लगाए जाते हैं कि वह कितने कॉलम की खबर है।

फीडबैक : सामान्य अर्थों में फीडबैक का जो आशय है, वो ही पत्रकारिता में भी है। अर्थात किसी विषय को जिन लोगों के सामने प्रस्तुत किया गया है, उनकी उस पर क्या प्रतिक्रिया रही है, उसकी जानकारी करना और उस हिसाब से सुधार करना फीडबैक कहलाता है। पत्रकारिता जगत में खबरों, खास आयोजनों पर पाठक और दर्शकों का फीडबैक लिया जाता है।

रिसर्च टीम : खास तौर पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में रिसर्च टीम रखने का चलन ज्यादा है। कई अखबारों में भी ऐसी व्यवस्था है। फील्ड में काम कर रहे रिपोर्टरों, डेस्क या प्रोडक्शन के स्टाफ के

अलावा पत्रकारों की ही एक ऐसी टीम बनाई जाती है, जो कि तमाम विषयों पर जरूरत के मुताबिक तुरंत ही विस्तार से संबंधित सामग्री उपलब्ध करा दे। उदाहरण के लिए किसी बड़ी राजनीतिक हस्ती का देहांत हो जाए। तो रिसर्च टीम उसका प्रोफाइल और तमाम अन्य चीजें बहुत तेजी से संबंधित रिपोर्टर को उपलब्ध करा देगी। इससे समाचार को बेहतर ढंग से प्रस्तुत करने में मदद मिलती है।

मुखपत्र : विशेषकर राजनैतिक पत्रकारिता के दौरान मुखपत्र शब्द इस्तेमाल में आता है। हालांकि गैर राजनैतिक संगठनों के भी मुखपत्र होते है। कोई राजनैतिक दल या और अन्य संगठन अपनी नीतियों और रीतियों के अधिकाधिक प्रचार के लिए नियमित तौर अखबार या पत्रिका निकालता है, तो वह उस दल या संगठन का मुखपत्र कहलाता है। निष्पक्ष कहलाने वाले कई समाचार पत्रों का किसी राजनैतिक दल की तरफ झुकाव हो सकता है, मगर उन्हें संबंधित दल का मुखपत्र नहीं कहा जा सकता। मुखपत्र, सीधे तौर पर संबंधित दल का चेहरा होते है। उनकी आवाज होते हैं।

8.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 8.3

उत्तर 1– संचार के साधनों का तेजी से विकास, मीडिया संस्थानों के भीतर बढ़ते पेशेवर अंदाज चलते सम सामायिक पत्रकारिता की गति तेज हुई है।

उत्तर 2– देश में सामने आए भ्रष्टाचार के मामले, चीन से बढ़ते खतरे, आंतरिक सुरक्षा को चुनौती जैसे सम सामायिक विषयों पर मीडिया का इन दिनों ज्यादा ध्यान है।

उत्तर 8.4

उत्तर 1– एक राजनैतिक रिपोर्टर को भारतीय राजनैतिक व्यवस्था, राजनैतिक दलों की नीतियों, स्वभाव, उनके संगठन, निर्वाचन प्रणाली, राजनैतिक शब्दावली आदि तमाम सारी बातों की जानकारी होनी चाहिए।

उत्तर 2– स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन से लेकर वर्तमान तक राजनैतिक खबरों का भारतीय पत्रकारिता में बेहद महत्वपूर्ण स्थान रहा है। चूंकि भारतीय संविधान ने देश में एक लोकतांत्रिक व्यवस्था को स्वीकार किया है। इस आधार पर ही निर्वाचन और अन्य समस्त प्रक्रिया संचालित होती है। इस लिहाज से भी मीडिया में राजनैतिक खबरों को सर्वोच्च प्राथमिकता मिलती है।

उत्तर 8.5

उत्तर 1– पत्रकार उपेंद्र प्रसाद ने कहा है कि अधिकतर हिंदी पत्रकार आर्थिक निरक्षरता की समस्या झेल रहे हैं अर्थात आर्थिक मामलों की उन्हें कोई जानकारी नहीं है।

उत्तर 2– एक आर्थिक रिपोर्टर से अपेक्षा की जाती है कि उसे देश की आर्थिक स्थिति, उसका स्वरूप, आर्थिक शब्दावली, समाज जीवन की स्थिति की जानकारी होनी चाहिए। आर्थिक खतरे किस तरह सिर उठा सकते हैं और उनके क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं, इसके आकलन की भी उसमें क्षमता होनी चाहिए।

8.9 संदर्भ ग्रन्थसूची :

1. चन्दोला, ललिता वैष्णव : गढ़वाल के जागरण में 'गढ़वाली' पत्र का योगदान

2. मिश्र, डा0 कृष्ण बिहारी : हिन्दी पत्रकारिता।

3. शाह, ज्योति : 'शक्ति के तीन दशक : उत्तराखण्ड में राष्ट्रवादी पत्रकारिता का अध्ययन।

8.10 सहायक/उपयोगी पाठय सामग्री :

1. उत्तराखण्ड में जनजागरण और आंदोलनों का इतिहास, योगेश घस्माना, विनसर पब्लिकेशन, देहरादून।

2. गढ़वाल का सांस्कृतिक वैभव, शिवानन्द नौटियाल, उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र इलाहाबाद।

3. स्वतन्त्रता पूर्व गढ़वाल की पत्रकारिता, ललिता वैष्णव चंदोला, प्रकाशक, प0 विश्वम्भर दत्त चन्दोला शोध संस्थान, 19/12, पटेल रोड, देहरादून।

8.11 निबन्धात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1– सम सामायिक पत्रकारिता अब तमाम ज्वलंत मुद्दों पर प्रभावशाली माहौल तैयार करने में किस तरह सक्षम साबित हो रही है? व्याख्या किजिए।

प्रश्न 2– पत्रकारिता में राजनैतिक खबरों का एकाधिकार खत्म हुआ है, फिर भी वह प्रभावशाली भूमिका में क्यों नजर आती है?

प्रश्न 3– हिंदी आर्थिक पत्रकारिता के विकास के लिए कौन–कौन से उपाय प्रभावी हो सकते हैं? वर्णन किजिए।

इकाई–09

सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 सामाजिक पत्रकारिता

9.4 धार्मिक पत्रकारिता

9.5 सांस्कृतिक पत्रकारिता

9.6 सारांश

9.7 शब्दावली

9.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

9.9 संदर्भ ग्रन्थसूची

9.10 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

9.11 निबन्धात्मक प्रश्न

9.1 प्रस्तावना :

पिछली इकाई में समसामयिक पत्रकारिता, राजनैतिक तथा आर्थिक पत्रकारिता की जानकारी छात्रों को दी गई है। समसामयिक पत्रकारिता की परिभाषा, महत्व व उपयोगिता का जिक्र इकाई में किया गया, साथ ही राजनैतिक और आर्थिक पत्रकारिता के सभी पहलूओं से छात्रों को परिचित कराने का प्रयास किया गया है।

इस इकाई में सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक पत्रकारिता की परिभाषा व उपयोगिता को छात्रो को समझाया गया है, जिससे वे पत्रकारिता की इन विधाओं को समझ सके और इनमें रोजगार की सम्भावनाएं तलाशने से पहले इन्हें समझ सकें।

सामाजिक, सांस्कृतिक व धार्मिक पत्रकारिता से जुड़े कई पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित होती हैं जिनका उद्देश्य धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दे व सूचनाओं का सम्प्रेषण व उन पर चर्चा करना है।

9.2 उद्देश्य :

पत्रकारिता को सही ढंग से व विस्तृत रूप से समझने के लिए पत्रकारिता की सभी विधाओं को समझना या उनका अध्ययन करना आवश्यक है। पत्रकारिता पाठ्यक्रम से जुड़े छात्रों

के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे पत्रकारिता को बारिकी से समझने के लिए तथा उसमें अपने भविष्य को तलाशने से पहले उसे सही ढंग से समझे, उसका अध्ययन करें। इसी उद्देश्य को लेकर इस इकाई में पत्रकारिता की इन विधाओं की जानकारी छात्रों को दी जा रही है।

इस इकाई को पढ़ने के बाद छात्र जान सकेंगे कि –

- सामाजिक पत्रकारिता क्या है? तथा सामाजिक सरोकारों को लेकर पत्रकारिता के क्या कर्तव्य हैं?
- सांस्कृतिक पत्रकारिता का वर्तमान युग में क्या महत्व है? तथा सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने में सांस्कृतिक पत्रकारिता की क्या भूमिका है?
- धार्मिक पत्रकारिता क्या है? तथा धार्मिक सरोकारों व मुद्दों पर चर्चा–परिचर्चा करने में पत्रकारिता की क्या भूमिका है? तथा धार्मिक एवं आध्यात्मिक संदेशों को किस तरह धार्मिक पत्रकारिता के माध्यम से प्रचार–प्रसार किया जा सकता है?

9.3 सामाजिक पत्रकारिता :

मनुष्य शुरू से ही एक सामाजिक प्राणी माना जाता है। वह समूह में रहना पसंद करता है। समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ता है और जिंदगी बसर करता है। यह क्षेत्र राजनीति का हो सकता है। धार्मिक–सांस्कृतिक हो सकता है। या फिर कोई और। पत्रकारिता को समाज का आईना कहा जाता है। जैसा समाज में घटेगा, पत्रकारिता रूपी आईना उसे वैसे ही सामने रखेगा। समाज को पत्रकारिता ने दिशा देने की कोशिश की है। यह सिलसिला आज भी चल रहा है। मगर यह कहना उचित नहीं होगा, कि केवल पत्रकारिता ही समाज पर असर डालती है। बदलते सामाजिक माहौल का पत्रकारिता पर भी बड़ा असर पड़ता है। पत्रकारिता समाज में आए बदलाव से काफी हद तक प्रभावित होती है। पिछले दो दशकों के उदारहण को सामने रखकर हम इस बदलाव को बहुत अच्छे से महसूस कर सकते हैं। पत्रकारिता में एक जमाने में ये सोचा जाता था, कि चाहे जैसी स्थिति हो, समाज को दिशा देने के अपने मूल कार्य को छोड़ना नहीं है। उदाहरण के लिए अश्लीलता का तब मुखर विरोध करना होता था, तो पत्रकारिता ये करती थी। मगर जमाना तेजी से बदला, फैशन की शक्ल में ढलकर कब अश्लीलता ने समाज जीवन में मजबूती से अपनी जगह बना ली। कब उसे एक हद तक स्वीकार कर लिया गया, पता ही नहीं चला। समाज ने ये सारी बातें स्वीकारी, तो पत्रकारिता ने भी स्वीकार कर ली। आज की तारीख में देखा जा सकता है, कि तमाम कार्यक्रमों, विज्ञापनों के जरिये अश्लीलता परोसी जा रही है और पत्रकारिता कहीं ना कही इसके बढ़ावा देने में योगदान कर रहा है।

एक उदाहरण क्रिकेट का भी है। पत्रकारिता से सारे खेलों के प्रति समान नजरिये की अपेक्षा की जाती है। मगर कोई भी ईमानदारी से बताए, कि आज की पत्रकारिता ऐसा कर रही है या नहीं। मीडिया में क्रिकेट के बोलबाले के आगे अन्य खेल दब गए हैं। चूंकि क्रिकेट से जुड़े संघ बेहद अमीर हैं। क्रिकेट के अभ्यास मैच तक मार्केट में पैसे से सीधे जुड़ गए हैं। मीडिया का

भी इसमें जुड़ाव है, इसलिए खेलों के नाम पर सिर्फ और सिर्फ क्रिकेट ही दिखलाई पड़ता है। इन सब बातों के बीच, फिर भी पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका काफी अहम है, जिसका वह काफी हद तक निर्वहन कर रही है। सामाजिक पत्रकारिता के साथ धार्मिक–सांस्कृतिक पत्रकारिता का प्रायः जोड़ लिया जाता है। इसकी वजह है। समाज जीवन के साथ धर्म और संस्कृति का इतना प्रगाढ़ संबंध है, कि इन्हें अलग करके नहीं देखा जाता। मीडिया के किसी रिपोर्टर की बीट का कांबिनेशन बनाना हो, तो उसे अक्सर सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक रिपोर्टिंग एक साथ दे दी जाती है। दरअसल, भारत जैसे धार्मिक और सांस्कृतिक देश में समाज जीवन के साथ धर्म और संस्कृति को अलग करना एक हिसाब से नामुमकिन काम है।

धार्मिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता पर विभिन्न संस्थाओं का वर्चस्व रहा है। यानी विभिन्न धार्मिक या सांस्कृतिक संस्थाओं के स्तर पर ही ज्यादातर ऐसी पत्रकारिता की गई। मगर अब यह मीडिया क्षेत्र की मुख्य धारा से जुड़ा विषय हो गया है। गांव–कस्बे तक धर्म संस्कृति के बड़े बड़े आयोजन होने लगे हैं। इन स्थितियों ने इस तरह की पत्रकारिता के लिए तमाम नई संभावनाओं को जन्म दे दिया है।

हमारे देश में पत्रकारिता की शुरुआत से लेकर इसके विकसित होने तक की प्रक्रिया में सामाजिक पत्रकारिता बेहद मजबूती से जुड़ी रही है। आजादी की लड़ाई में जिस वक्त पूरा देश जुटा था, तब भी इस तरह की पत्रकारिता ने बेहद कारगर साधन के रूप में अपनी भूमिका निभाई।

कई महापुरुषों ने पत्रकारिता के जरिये भी समाज की आवाज को बुलंद किया। पत्रकारिता की सामाजिक भूमिका पर महात्मा गांधी ने बेहद सटीक अंदाज में तब कहा था कि किसी भी समाचार पत्र का पहला काम है लोगों के भावों को समझकर प्रकट करना। दूसरा काम है लोगों में जिन भावनाओं की आवश्यकता हो, उन्हें जागृत करना। तीसरा काम है कि लोगों में कोई दोष हो तो निर्भय होकर उसे सबके सामने रखना। आधुनिक पत्रकारिता के जनक राजा राममोहन राय ने मीरात उल अखबार में लिखा था–मेरा सिर्फ ये ही उद्देश्य है कि मैं जनता के सामने ऐसे बौद्धिक निबंध उपस्थित करुं, जो उनके अनुभव को बढ़ाने और सामाजिक प्रगति में सहायक सिद्ध हों। संपादकाचार्य पंडित बाबूराव पराड़कर के अनुसार, पत्रकारिता यानी तलवार की धार पर धापना है। समाज के जीवन में जिन पृष्ठों पर उचित निर्णयों की आवश्यकता होती है और जिन निर्णयों पर समाज का जीवन अंत में निर्भर रहता है, उनके बारे में जनता को योग्य जानकारी कराना, उनके संबंध में जनमत का निर्माण और नेतृत्व करना, उस मत को प्रकट करना तथा अधिक से अधिक लाभ जनता को पहुंचाना एक आदर्श पत्रकार का कर्तव्य है।

आज चाहे स्थितियां कितनी भी बदल गई हों, तब भी पत्रकारिता में सबसे पहला भाव सामाजिक पत्रकारिता का ही है। समाज हित की बात को आगे रखकर ही पत्रकारिता अपना काम करती है। हालांकि मीडिया संस्थानों के भीतर की बात करें, तो दिखलाई पड़ता है कि राजनीतिक, आर्थिक, खेल, अपराध जैसे विषयों के लिए तो अखबारों, न्यूज चैनल्स में सर्वोच्च प्राथमिकता दिखाते हुए खास रिपोर्टर नियुक्त किए जाते हैं, मगर सामाजिक रिपोर्टर की अलग से नियुक्ति का अब भी चलन नहीं है। ना ही सामाजिक संपादक जैसा कोई पद मीडिया संस्थानों में दिखलाई पड़ता है। इसकी जरूरत शायद इसलिए भी महसूस नहीं होती, कि समाज जीवन के

जितने भी विषय है, वह सामाजिक विषय के भीतर स्वतःस्फूर्त ढंग से शामिल हैं। उदाहरण के लिए कहीं से यह खबर सामने आए कि संपत्ति विवाद में एक बेटे ने अपने बाप को ही मार डाला है। तो प्रथम दृष्टया यह अपराध की ही खबर होगी; मगर इसके पीछे सामाजिक खबर के लिए पर्याप्त संभावना होगी। इन स्थितियों में संबंधित अखबार या न्यूज चैनल ये रिपोर्ट भी तैयार करा लेता है कि आखिर वह कौन से सामाजिक कारण हैं, जिनमें रिश्तों का खून होता है। समाजशास्त्रियों और तमाम अन्य लोगों से इस संबंध में वार्ता रिपोर्ट को और प्रामाणिक बनाएगी। अन्य विषयों के संबंध में भी सामाजिक पत्रकारिता के लिए पर्याप्त संभावनाएं हर दम मौजूद है, क्योंकि समाज का विषय ही अपने आप में बहुत ज्यादा बड़ा है। मीडिया संस्थाओं के काम करने के ढंग से एकदम अलग फ्री–लांसर पत्रकारों का एक बड़ा वर्ग सामाजिक पत्रकारिता में सक्रिय है।

सामाजिक पत्रकारिता करने वाले रिपोर्टर के लिए ये जरूरी है कि वह समाज से जुड़ी तमाम बातों का गहन अध्ययन करते रहे। समाज क्या है, उसके घटक क्या है; उसका व्यवहार, उस पर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावों की उसे जानकारी करते रहना चाहिए। प्रसिद्ध समाजशास्त्री मोरिस गिन्स बर्ग के शब्दों में–समाज ऐसे व्यक्तियों का संग्रह है, जो कुछ संबंधों तथा व्यवहारों की विधियों द्वारा आपस में बंधे हुए हैं और उन व्यक्तियों से भिन्न है, जो इस प्रकार संबंधों से बंधे हुए नहीं हैं। देखा जाए, तो पत्रकारिता के लिए समाजोन्मुखी होना पहली शर्त है। यह उसके अस्तित्व और सम्मान के लिए अनिवार्य है। पत्रकारिता को एक सामाजिक संस्था माना जा सकता है। जिस तरह एक व्यक्ति, समुदाय समाजीकरण की प्रक्रिया से लगातार गुजरता है, ठीक वो ही स्थिति पत्रकारिता की भी है। समाजीकरण व्यक्तियों और उनके द्वारा निर्मित संस्थाओं दोनों का होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया के दो घटक हैं। एक, सामाजिक क्रिया। दो, सामाजिक नियंत्रण। सामाजिक क्रिया के अंतर्गत व्यक्ति समाज के सदस्य के रूप में अपनी जरुरतों और अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए कार्य करता है। ऐसा करते हुए उसके अमर्यादित होकर समाज में अव्यवस्था फैलाने की आशंका भी रहती है। इसलिए समाजीकरण के दूसरे घटक यानी सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता पड़ती है। ये ही स्थिति पत्रकारिता के साथ भी जुड़ी है। पत्रकारिता भी हर दिन नया सीखते हुए अपनी जरूरतों और अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए काम करती है। एक स्थिति में उसके भी स्वच्छंद होकर कार्य करने की आशंका बन जाती है। इसलिए नियंत्रण की उसके लिए भी जरूरत महसूस की जाती है।

वैसे, पत्रकारिता ने अपने जन्म से लेकर आज तक समाज में अपने को समायोजित करते हुए सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अहम भूमिका निभाई है। राजशाही के दौरान की बात करें, तो कई राजा जगह जगह उपदेश और आदर्श वाक्य लिखवाकर समाज हित में काम करते थे। उनका ये कर्म एक प्रकार से सामाजिक पत्रकारिता का ही हिस्सा होता था। सम्राट अशोक का इस संबंध में खास योगदान रहा, जिन्होंने ईसा से सैकड़ों वर्ष पूर्व स्तंभ लेखन की शानदार परंपरा की शुरुआत की। इससे पहले की बात करें, तो माना जाता है कि देवर्षि नारद ने पत्रकारिता की शुरुआत की। समाज हित में जगह जगह घूमने और सूचनाओं के आदान प्रदान ने देवर्षि नारद को पौराणिक कथाओं में एक विशिष्ट स्थान दिलाया है। भारत में आजादी के आंदोलन के दौरान सामाजिक पत्रकारिता के क्षेत्र में महापुरुषों ने उल्लेखनीय कार्य किया। धर्म–मजहब, जाति, क्षेत्र की संकीर्णता छोड़कर पूरे देश को आजादी के आंदोलन के एक सूत्र में पिरोने का काफी बड़ा काम तत्कालीन सामाजिक पत्रकारिता ने किया है। भारतीय नवजागरण

तथा समाज सुधार के अग्रदूत राजा राम मोहन राय ने कई पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों और अनुचित रीति रिवाजों को खत्म करने के लिए अभियान छेड़ा। गांधी जी ने अस्पृश्यता निवारण, जातिगत भेदभाव को दूर करने के लिए सामाजिक पत्रकारिता के माध्यम से उल्लेखनीय कार्य किया था।

सामाजिक पत्रकारिता करते वक्त संबंधित रिपोर्टर के लिए बड़ी चुनौती ये है कि व्यावसायिक दबाव झेलते हुए वह पुरजोर ढंग से समाज के हित की बात उठाए। जाने अनजाने कोई भी ऐसी बात वह सामने नहीं लाए, जो कि समाज का तात्कालिक या दीर्घकालिक नुकसान कर सकती हो। उसे संबंधित रिपोर्टिंग करते वक्त हर हाल में विश्वसनीय दिखना ही चाहिए। उसकी स्थिति छोटे–बड़े राजनीतिक दलों के उन नेताओं की तरह नहीं होनी चाहिए, जिन पर जनता का कतई विश्वास नहीं होता। हालांकि लगातार बढ़ते व्यावसायिक दबाव में ये करना बेहद कठिन है। फिर भी कुशल पत्रकार बीच का रास्ता निकाल लेते हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– महात्मा गांधी ने समाचार पत्रों के कौन–कौन से प्रमुख कार्य बताए हैं?

प्रश्न 2– राजा राम मोहन राय ने पत्रकारिता के माध्यम से कौन से सामजिक विषयों को प्रमुखता से उठाया?

9.4 : आर्थिक पत्रकारिता :

आज की पत्रकारिता में किसी खबर या रिपोर्ट को पेश करते वक्त यह आकलन किया जाता है, कि उससे कितने लोग जुड़े हैं। जो सामग्री छापी जा रही है, उसका कितने लोग इंतजार कर रहे हैं और क्या प्रभाव पड़ सकता है। इस हिसाब से देखे, तो धार्मिक पत्रकारिता की अहमियत बहुत ज्यादा बढ़ गई है। श्री शिरड़ी धाम में साईंबाबा को सोने का सिंहासन भेंट करने की खबर आती है, तो निश्चित तौर पर उन्हें आराध्य मानने वाले करोड़ों भक्तों का ध्यान इस पर जाता है। श्री बदरीनाथ धाम को केंद्रित कर लिखी गई कोई भी रिपोर्ट पूरी देश दुनिया का अपनी ओर ध्यान खींचती है। ये ही स्थिति देश के अन्य पवित्र धार्मिक स्थलों की है। धर्म को भले ही वामपंथी अफीम की संज्ञा देते हों, मगर यह सच है कि भारत जैसे देश में धर्म में आम आदमी के प्राण बसते हैं। उसका बहुत बड़ा विश्वास धर्म पर है, जो उसे अराजक होने से एक हद तक रोकता है। अच्छे रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित भी करता है।

देखा जाए, तो धर्म क्या है। धर्म से तात्पर्य है मनुष्य द्वारा स्वयं अपनाए गए सही आचरण के नियम और धर्मग्रंथों पर आधारित विचारधारा और सामाजिक संगठन। धार्मिक पत्रकारिता की शुरुआत की बात करें, तो ठीक ठीक ये बताना मुश्किल है, कि कब इस तरह की पत्रकारिता सामने आई। मगर यह तय है कि भारत में धार्मिक पत्रकारिता की गौरवशाली परंपरा रही है। धर्म के कल्याणकारी रूप को समाज के सामने प्रस्तुत कर धार्मिक पत्रकारिता क्षमा, दया, अहिंसा और सहिष्णुता की भावना का व्यापक प्रचार प्रसार कर सकती है। पत्रकारिता ने ऐसा किया भी है और कर भी रही है।

पौराणिक और ऐतिहासिक काल की तमाम घटनाओं पर नजर डालें, तो पता चलता है कि यह बहुत पहले से समाज जीवन के साथ जुड़ी रही है। सृष्टि के पहले पत्रकार के रूप में नारद

की भूमिका को कई विद्वानों ने स्वीकार किया है। विश्व कोष तक में नारद की पत्रकार बतौर भूमिका को मान्यता दी गई है। विद्वान राम अवतार शर्मा के अनुसार, हिंदू संस्कृति में नारद का व्यक्तित्व आरंभिक पत्रकारिता के तत्वों से पोषित मिलता है।

महाभारत काल की बात करें, तो इस जमाने में वातिकों का जिक्र मिलता है। प्राचीन चरित्र कोश के अनुसार, हालांकि वातिकों का कार्य युद्ध के वृतांत सुनाने का था, मगर कई मौकों पर उन्होंने एक हिसाब से धार्मिक पत्रकारिता भी की। दुर्योधन ने जब वैष्णव और युधिष्ठर ने राजसूय यज्ञ किए, इन समारोह में मौजूद वातिकों ने सारे कुरु राज्य में ये सूचना दी। सम्राट अशोक ने अपने अभिलेखों में धार्मिक उपदेशों का प्रचार किया। उन्हें कोने कोने तक प्रसारित करने के लिए उन्होंने खास तौर पर निर्देश दिए थे। सन् 1456 के गुरु वर्ग ने बाइबिल की 42 पंक्तियां छापी। ईसाई मिशनरियों ने अपनी गतिविधियों को बढ़ाने के लिए धार्मिक पत्रकारिता का जमकर इस्तेमाल किया। भारतीय भाषाओं में दिग्दर्शन और समाचार दर्पण पत्र निकाले गए। इसके जवाब में राजाराममोहन राय ने ब्राहमैनिकल मैगजीन निकाली। इसमें उन्होंने भारतीय मूल्यों का प्रचार प्रसार किया।

भारत में वर्तमान में धार्मिक पत्रकारिता की बात करें, तो आज की तारीख में हर अखबार और न्यूज चैनल संबंधित खबरों को प्राथमिकता दे रहा है। हिंदी के प्रमुख अखबारों में सप्ताह में एक दिन धार्मिक सामग्री के लिए पूरा पेज तय है। हालांकि अंग्रेजी पत्रकारिता में इसका अभाव दिखता है। कोई भी बड़े धार्मिक त्योहार और आयोजन से पहले ही धार्मिक खबरें बहुतायत में दिखाई देने लगी है। व्रत–त्योहार के लिए अखबारों में खास कॉलम शुरू किए गए हैं। इस बीच, हाल के कुछ वर्षों में धार्मिक संगठनों, गुरूओं की सक्रियता काफी बढ़ी है और गांव कस्बों तक में बड़े बड़े धार्मिक आयोजन होने लगे हैं। ऐसे में छोटे से लेकर बड़ी हर तरह की धार्मिक खबर अब अखबारों में दिखाई पड़ने लगी है। धार्मिक पत्रकारिता में कल्याण पत्रिका ने अपनी अलग जगह बनाई है।

धार्मिक पत्रकारिता से जुड़े पत्रकारों के लिए पहली शर्त ये है कि वह हर धर्म के बारे में गहनता से अध्ययन करें। संबंधित धर्म की मान्यताएं, परंपराएं, नियम आदि के बारे में संपूर्ण जानकारी हासिल करें। चूंकि धर्म एक बेहद संवेदनशील मामला है। इसलिए जरा सी भी चूक पत्रकार और उसके संस्थान के लिए भारी पड़ सकती है। भारत जैसे विभिन्न धर्म संप्रदाय वाले देश में तो ये और भी जरूरी है कि धार्मिक रिपोर्टर को हर धर्म की बुनियादी बातें जरूर पता हों। हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, जैन और अन्य जितने भी धर्म हैं, उनके बारे में जानकारी के लिए उनके पुजारियों के साथ रिपोर्टर का अच्छा संपर्क जरूरी है। रिपोर्टिंग करते वक्त वह ऐसी बात को वह हमेशा नजरअंदाज करे, जिससे दो धर्म–संप्रदायों के बीच झगड़ा बढ़ने की आशंका हो। सद्भाव और प्रेम भाई चारा बढ़ाने के संदेशों का खूब प्रचार करे। धार्मिक शब्दावलियों पर उसका पूरा अधिकार होना चाहिए। धार्मिक त्योहारों से क्या पौराणिक, ऐतिहासिक तथ्य जुड़े हैं, उसे उनकी जानकारी होनी चाहिए। किस तरह के परिवर्तन होते जा रहे हैं, उसे इस पर निगाह रखनी चाहिए और बेहद संतुलित, संयमित ढंग से लिखना भी चाहिए। बेहतर स्थिति ये मानी जा सकती है कि धार्मिक रिपोर्टिंग करते वक्त हम ज्यादातर बातें संबंधित धर्म के पुजारियों को कोट करके ही लिखे। इसका सबसे बड़ा फायदा ये होगा, कि खबर में यदि संबंधित धर्म के अनुयायियों

को कुछ नागवार भी गुजरता है, तो भी वह तीखी प्रतिक्रिया देने से इसलिए बचेंगे, क्योंकि उनका पक्ष उनके पुजारी के हवाले से आ चुका होगा।

प्रमुख अखबारों में अब हर जगह धार्मिक रिपोर्टर रखा जाने लगा है। बड़े शहरों में तो कुछ कुछ अखबार प्रमुख धर्म के आधार पर अलग अलग रिपोर्टरों की नियुक्ति भी करने लगे हैं। जैसे हिंदू धार्मिक गतिविधियां एक रिपोर्टर देखेगा, तो मुस्लिम धार्मिक गतिविधियां दूसरा। हालांकि यह बहुत कम जगह पर है। अमूमन एक धार्मिक रिपोर्टर ही सारे धर्मों की गतिविधियों को कवर कर लेता है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– आजादी से पूर्व ईसाई मिशनरियों ने भारतीय भाषाओं में कौन से दो समाचार पत्र निकाले?

प्रश्न 2– आजादी से पूर्व निकाली गई ब्राहमैनिकल मैगजीन का क्या उद्देश्य था।?

9.5 सांस्कृतिक पत्रकारिता :

भारत की पहचान शुरू से सांस्कृतिक चेतना से ओत प्रोत देश के रूप में रही है। संस्कृति की जितनी विशेषता भारत के संदर्भ में देखने को मिलती है, शायद ही ऐसा कोई देश हो। संस्कृति देश में एक बड़ी बहस का विषय भी हमेशा रहा है। जीवन दर्शन तो ये है ही। किसी भी देश के नागरिकों के जीने का ढंग संस्कृति है। वेशभूषा, रीति रिवाज, परंपराएं, भाषा, मान्यताएं, इतिहास, आचार विचार आदि तमाम पहलुओं से संस्कृति उभरकर सामने आती है। भारत में संस्कृति का निर्माण धर्म, क्षेत्र और जातीयता के आधार पर हुआ है। भारत पर समय समय पर विदेशी हमले होते रहे। इस वजह से यहां के समाज जीवन पर विभिन्न संस्कृतियों की झलक साफ दिखलाई पड़ी है। आर्य संस्कृति को यहां सबसे प्राचीन माना जाता है। पहले मुसलमानों का हमला और बाद में सालों साल अंग्रेजी साम्राज्य की वजह से भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण में बहुत बड़े बदलाव आए। ये ही वजह रही, कि आजादी के संघर्ष के दौरान पत्रकारिता ने जहां राजनैतिक, कूटनीतिक पत्रकारिता कर अंग्रेजी साम्राज्य पर दबाव बनाने का काम किया, वहीं, सांस्कृतिक चेतना के प्रसार का जिम्मा भी अपने कंधों पर लिया।

आजादी के बाद भारत में सांस्कृतिक पत्रकारिता की बहुत बड़ी जरूरत महसूस की गई है। देश पर लंबे समय तक अंग्रेजी शासन का प्रभाव हमारी मानसिकता पर कहीं ना कहीं पड़ा है। इसके अलावा आज भी ये बात की जाती है कि लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति से भारत उबर नहीं पाया है। इस कारण यहां शिक्षा का वो स्वरूप सामने नहीं आ पाया है, जो कि भारत जैसे एक सांस्कृतिक देश में अपेक्षित है। इन सब बातों ने भारत के सांस्कृतिक मूल्यों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की है। अंग्रेजी मानसिकता से कहीं ना कहीं भारत का जनमानस आज भी जकड़ा हुआ है। पिछले कुछ सालों में सूचना क्रांति का विस्तार भले ही जनमानस के लिए वरदान साबित हुआ हो, मगर भारतीय संस्कृति पर पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव को इससे और गति मिली है। सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित भारतीय समाज में तमाम उन बातों ने जगह बनानी शुरू कर दी है, जिनके लिए पहले कहीं कोई जगह नहीं निकला करती थी। हिंसा और सेक्स जैसे विषयों के वर्चस्व ने भारतीय सांस्कृतिक ताने बाने को तहस नहस करना शुरू कर दिया है। टीवी और

फिल्मों का भारतीय समाज पर बहुत हद तक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। समाज में सीधे सीधे दो वर्ग आमने सामने दिखाई पड़ते हैं। एक वर्ग है, जो पुरानी भारतीय संस्कृति के साथ रत्ती भर छेड़छाड़ होते नहीं देखना चाहता। वहीं दूसरा वर्ग, आधुनिकता के नाम पर खुलेपन का कट्टर पक्षधर है। मौके–बे–मौके इन दोनों वर्गों के बीच संघर्ष की स्थिति दिखाई पड़ती है। वेलेंटाइन डे पर हर साल इस तरह का संघर्ष अब आम बात हो गई है। चूंकि समाज का भी पत्रकारिता पर गहरा असर पड़ता है। साथ ही पत्रकार भी इसी समाज से पत्रकारिता में आता है। ऐसें में इन दो वर्गों में कहीं ना कहीं वो भी बंटा दिखाई पड़ता है। इसीलिए संस्कृति के सवाल पर पत्रकारिता और पत्रकारों का दृष्टिकोण एक सा नहीं दिखता।

भारतीय और अन्य देशों के सांस्कृतिक दर्शन में जमीन आसमान का सा अंतर है। खास तौर पर पाश्चात्य सभ्यता वाले देशों के लिए भौतिक प्रगति ही जीवन में सब कुछ है। इसके विपरीत, भारतीय संस्कृति में भौतिक प्रगति को गौण समझा जाता है। ईश्वर, मोक्ष, नैतिकता ये सब भारतीय संस्कृति के भीतर कहीं गहरे तक विद्यमान है। देश की पत्रकारिता एक जमाने में भारतीय संस्कृति के इस स्वरूप अडिग नजर आती थी। मगर पत्रकारिता के पेशे में तब्दील होने का असर रहा है कि संस्कृति से जुड़ी तमाम बातें मीडिया के एक वर्ग को दकियानूसी लगने लगी है। संस्कृति से जुड़ी तमाम सारी बातें जाने अनजाने उनके निशाने पर आ रही है। हालांकि इन सब बातों के बाजवूद, सांस्कृतिक पत्रकारिता के महत्व से कोई इनकार नहीं कर सकता है। हालांकि ये भी सच्चाई है कि आज भी पत्रकारिता की मुख्य धारा में सांस्कृतिक पत्रकारिता पूरी तरह रच बस नहीं पाई है।

एक विद्वान का कहना है कि सांस्कृतिक पत्रकारिता अपने स्वरूप में विचार गंगा की पर्याय है। जैसे गंगा अपने उद्गम स्थल से मात्र कुछ बूंदों की धार के रूप में बहती है, मगर निरंतर आगे बढ़ कर अपने महत स्वरूप को प्रकट करते हुए निरंतर प्रवाहमान रहती है। उसी तरह पत्रकारिता की स्थिति है। समस्त पत्रकारिता के समुद्र में सांस्कृतिक पत्रकारिता भले ही एक क्षीण धारा के समान दिखलाई दे, पर अपनी महत्ता द्वारा समस्त पत्रकारिता की व्यापकता में सांस्कृतिक पत्रकारिता की ही छवि विद्यमान है। भले ही मीडिया में कितनी व्यवसायिक घर कर गई हो, मगर फिर भी ये माना जाता है कि पीत पत्रकारिता से सराबोर पत्रकारिता को सांस्कृतिक पत्रकारिता से ही सही दिशा और दशा मिल सकती है।

धर्मयुग पत्रिका की शुरुआत के दौरान उसके संपादक धर्मवीर भारती ने एक साक्षात्कार में सांस्कृतिक पत्रकारिता के बारे में जो कुछ कहा, उसे नई पीढ़ी के पत्रकारों को जरूर जानना चाहिए। धर्मवीर भारती से एक संपादक के रूप में उनके उद्देश्य पूछे गए थे। उन्होंने कहा कि साधारण से साधारण पाठक गहरे सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूक होकर जीवन के जटिल संघर्ष का सामना करने योग्य बनता चले। पाठक को धर्मयुग से ज्ञान, जीवन दृष्टि और आस्था मिले। ये स्थिति बताती है कि बीस साल पहले सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति कोई संपादक कितना संजीदा होता था। आज की स्थिति में सांस्कृतिक पत्रकारिता की बातें तो होती हैं, मगर इसका सैद्धांतिक पक्ष ही ज्यादा दिखाई पड़ता है। आज ज्यादातर बड़े संपादकों के लिए समाचार एक प्रोडक्ट बन गया है। रिपोर्टरों से हर दिन उनकी बिकाऊ खबर लाने की अपेक्षा रहती है। इन स्थितियों में समझा जा सकता है कि सनसनी की तलाश में जुटा मीडिया संस्कृति की बात को

कितने आगे ले जाएगा। हालांकि एक बड़े वर्ग का सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़ाव, इस तरह के खबरों की अपेक्षा, पत्रकारिता के सामाजिक दायित्व और सरकारों के एजेंडे में संस्कृति विषय को प्राथमिकता कुछ ऐसे कारण है, जिनके चलते मीडिया को इस तरह की पत्रकारिता पर भी ध्यान देना पड़ रहा है।

अखबारों और न्यूज चैनलों में अलग से सांस्कृतिक रिपोर्टर रखे जाने लगे है। अच्छी स्थिति बड़े शहरों में है। कस्बों और गांवों में आज भी सांस्कृतिक पत्रकारिता सिरे से गायब दिखती है। वहां का रिपोर्टर अपराध, राजनीति या अन्य विभागों की खबरों में ही उलझा रहता है। वरिष्ठ पत्रकार आलोक मेहता का मानना है कि पत्रकारों को अपने आस पास बिखरी सांस्कृतिक विरासत को देखना और अपने पाठकों को दिखाना होगा, तभी संस्कृति के बारे में निरंतर विकृत होती जा रही अवधारणा को ठीक करने का मौका मिलेगा। जहां तक सांस्कृतिक रिपोर्टर में अपेक्षित विशेषताओं का सवाल है, उसे संस्कृति के मूलभूत तत्वों की जानकारी होनी ही चाहिए। उसका भाषा शैली बेहतरीन होनी जरूरी है, तभी वह संस्कृति का सुंदर संसार जनसामान्य के सामने ला पाएगा।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– भारत में सांस्कृतिक पत्रकारिता की आवश्यकता क्यों महसूस की गयी ?

प्रश्न 2– धर्मवीर भारती ने सांस्कृतिक पत्रकारिता के उद्देश्यों के बारे में क्या कहा था ?

9.6 सारांश :

सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता की भारत में आजादी से पूर्व और उसके बाद लगभग मिलती जुलती स्थिति दिखाई पड़ती है। आजादी के आंदोलन के दौरान राजनैतिक पत्रकारिता के अलावा इन तीनों तरह के विषय खूब उठाए गए। इन विषयों पर आधारित पत्रकारिता की बदौलत ही उस जमाने में राजनैतिक आंदोलन से इतर, कई सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आंदोलन भी हुए और जनमानस पर उसका गहरा असर पड़ा।

स्वतंत्र भारत में पत्रकारिता अब उस स्थिति में आ गई है, जब हर विषय की मार्केट में हैसियत तोली जा रही है। उसी के अनुरूप उसे पेश किया जा रहा है। ऐसे में कई बार ऐसी स्थिति आती है, जब सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता को बहुत ज्यादा महत्व मिल जाता है। इसके विपरीत, ऐसी स्थिति भी आती है, कि इन तीनों विषयों से जुड़ी खबरें हाशिये पर रहती है। आश्वस्त करने लायक बात यह है कि चाहे वो आम आदमी हो या फिर सरकार, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों को नजरअंदाज करने की स्थिति में कोई नहीं है। इसकी बहुत बड़ी वजह भी है। दरअसल, ये तीनों ही विषय हर व्यक्ति पर असर डालते है। इनसे व्यक्ति का रोजाना का वास्ता है और पीढ़ी दर पीढ़ी इससे व्यक्ति जुड़ा हुआ रहा है। इन तीनों विषयों को समाज जीवन से निकाल दिया जाए, तो फिर बहुत कुछ शेष नहीं रह जाता है। इसलिए तमाम तरह की स्थितियों के बावजूद पत्रकारिता में इन विषयों की अहमियत लगातार बनी हुई है।

9.7 शब्दावली :

कोट :समाचार में जब कोई बात किसी के हवाले से कही जाती है, तो उसे कोट करना कहा जाता है। एक रिपोर्टर कोई भी खबर अपने हिसाब से लिखता है, मगर वह खबरों का हवाला जरूर देता है, ताकि खबर की विश्वसनीयता बनी रहे।

पीत पत्रकारिता : इसे अंग्रेजी में यलो जनर्लिज्म कहा जाता है। यह पत्रकारिता के बुरे पहलु को अभिव्यक्त करने वाला शब्द है। जब पत्रकारिता के मूल्यों से हटकर निजी स्वाथों के लिए डरा धमकाकर या किसी प्रलोभन को स्वीकार करते हुए खबरें लिखी जाती हैं, तब उसे पीत पत्रकारिता कहा जाता है।

समाजोन्मुखी : ये शब्द दो भागों में बंटा है। एक में समाज है, दूसरे में उन्मुख होना शामिल है। उन्मुख का अर्थ किसी ओर आगे बढ़ना है। ऐसे में सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि समाज की ओर बढ़ना या केंद्रित होना समाजोन्मुखी है।

गौण : कोई भी कम महत्व का विषय गौण कहलाता है।

सराबोर : किसी विषय पर पूरी तरह डूब जाना या फिर पूरी तरह उसी में समा जाना, सराबोर होना कहलाता है।

इतरः इस शब्द का अर्थ है हटकर।

9.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

उत्तर 9.3

उत्तर 1– महात्मा गांधी ने समाचार पत्रों के प्रमुख रूप से तीन काम बताए हैं। एक लोगों के भावों को समझकर प्रकट करना। दूसरा, जिन भावनाओं की आवश्यकता हो, उन्हें जागृत करना। तीसरा, लोगों में कोई दोष हो तो निर्भय होकर उसे सबके सामने रखना।

उत्तर 2– राजा राम मोहन राय ने पत्रकारिता के माध्यम से भारतीय नवजागरण का उल्लेखनीय कार्य किया। इस क्रम में उन्होंने सामाजिक कुरीतियों और अनुचित रीति रिवाजों पर लगातार प्रहार किए और सुधारात्मक उपाय किए।

उत्तर 9.4

उत्तर 1– ईसाई मिशनरियों ने अपनी गतिविधियों को बढ़ाने के लिए भारतीय भाषाओं में दिग्दर्शन और समाचार दर्पण नाम से पत्र निकाले थे।

उत्तर 2– राजा राम मोहन राय ने भारतीय मूल्यों के व्यापक प्रचार प्रसार के उद्देश्य से ब्राहमैनिकल मैगजीन की शुरुआत की थी।

उत्तर 9.5

उत्तर 1– आजादी के बाद भारत में सांस्कृतिक पत्रकारिता की बहुत बड़ी जरूरत महसूस की गई है। देश पर लंबे समय तक अंग्रेजी शासन का प्रभाव हमारी मानसिकता

पर कहीं ना कहीं पड़ा है। भारत समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला प्रदेश रहा है अतः यहां की सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए भी सांस्कृतिक पत्रकारिता आवश्यक है।

उत्तर 2– धर्मवीर भारती ने एक साक्षात्कार में सांस्कृतिक पत्रकारिता के बारे में कहा कि साधारण से साधारण पाठक गहरे सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूक होकर जीवन के जटिल संघर्ष का सामना करने योग्य बनता चले। पाठक को धर्मयुग से ज्ञान, जीवन दृष्टि और आस्था मिले।

9.9 संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. कुमार, डॉ0 अवधेश : हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता
2. मेहता, आलोक : भारत में पत्रकारिता
3. आलोक, डी0 डी0 एस0 : पत्रकारिता एवं जनसंपर्क,
4. मिश्र, समीरात्मज : निबंध मंजूषा
5. दुबे, राजीव : हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रीय आंदोलन
6. जोगलेकर, काशीनाथ गोविंद : पत्र, पत्रकार और सरकार

9.10 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री :

1. पत्रकारिता और समाज, डॉ0 यू0 सी0 गुप्ता, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. मास मीडिया एण्ड सोसाइटी, जितेन्द्र सिंह, सुमित इन्द्रप्राइजेज, दरियागंज, नई दिल्ली।

9.11 निबन्धात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1–सांस्कृतिक पत्रकारिता बेहद महत्वपूर्ण होने के बावजूद मुख्य धारा की पत्रकारिता में पूरी तरह नहीं आ पाई है। इसके कारणों पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 2–धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पत्रकारिता अलग अलग होते हुए भी काफी हद तक एक दूसरे से संबद्ध है। समझाइये।

प्रश्न 3–समाज का पत्रकारिता और पत्रकारिता का समाज पर बराबर असर पड़ता है। कैसे?

प्रश्न 4–हर दम सनसनी तलाशने की मीडिया की बढ़ती प्रवृत्ति के बीच सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पत्रकारिता का किस तरह का भविष्य है।

इकाई –10

लोकतंत्र, सामाजिक आन्दोलन और मीडिया (उत्तराखण्ड के विशेष संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 लोकतंत्र का अर्थ

10.4 सामाजिक आन्दोलनों का परिचय

10.5 उत्तराखण्ड में सामाजिक आंदोलन और मीडिया

10.6 सामाजिक आन्दोलन रिर्पोटिंग की अवधारणा एवं कार्य पद्यति

10.7 सामाजिक आन्दोलन रिपोर्टिंग का लक्ष्य और योग्यताएं

10.7 सामाजिक आंदोलन रिर्पोटिंग के प्रकार

10.8 सारांश

10.9 शब्दावली

10.10 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

10.11 संदर्भ ग्रन्थसूची

10.12 सहायक/उपयोगी पाठ्य सामग्री

10.13 निबन्धात्मक प्रश्न

10.1 प्रस्तावना :

पिछली इकाई में हमने सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पत्रकारिता का अध्ययन किया। जिसमें विद्यार्थियों को सामाजिक सरोकारों से जुड़ी पत्रकारिता व धार्मिक प्रचार–प्रसार व सांस्कृतिक गति–विधियों से सम्बन्धित पत्रकारिता की जानकारी दी गयी।

इस इकाई में लोकतंत्र, लोकतंत्र और मीडिया तथा सामाजिक आंदोलन और मीडिया (उत्तराखण्ड के विशेष सन्दर्भ में) का अध्ययन किया गया है। कोशिश की गई है कि विद्यार्थियों को उत्तराखण्ड में सामाजिक आन्दोलन और उनमें मीडिया की भूमिका की जानकारी प्राप्त हो सके। और वे समझ सकें कि सामाजिक आन्दोलनों को आगे बढ़ाने तथा सफल बनाने में मीडिया की क्या भूमिका हो सकती है।

उत्तराखण्ड में यदि पत्रकारिता के इतिहास को देखा जाय तो यहां की पत्रकारिता का उद्भव सामाजिक आंदोलनों को लेकर ही हुआ है। जनआन्दोलनों में यहां की पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है।

10.2 उद्देश्य :

समाज की सेहत के लिए लोकतंत्र जितना जरूरी है, लोकतंत्र की सेहत के लिए उतने ही जरूरी हैं सामाजिक आन्दोलन। किसी भी अच्छे पत्रकार के लिए यह आवश्यक है कि वह समाज की नब्ज पढ़ने में माहिर हो और अगर वो सामाजिक सवालों को उठाने में, सामाजिक आन्दोलनों को समझने और उनकी रिर्पोटिंग में माहिर हो गया तो इसे सोने में सुहागा माना जाता है। सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टिंग एक बेहद संवेदनशील विषय है। इसकी रिपोर्टिंग के लिए पत्रकार की तीखी नजर और मामले की तह तक जाने की प्रवृत्ति तो जरूरी है ही, पीड़ित, प्रभावित और उद्वेलित समाज की धड़कनों को समझने–जानने की कोशिश भी उतनी ही जरूरी है। प्रस्तुत इकाई में छात्रों की जानकारी के लिए इन्ही बुनियादी मुद्दों पर एक नजर डाली गई है।

इस इकाई के अध्ययन से छात्र जान सकेंगे –

- लोकतंत्र की मूलभूत अवधारणाएं क्या होती हैं?
- किन परिस्थितियों के कारण सामाजिक आन्दोलन उत्पन्न होते हैं?
- सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टिंग का ऐतिहासिक सन्दर्भ एवं रिपोर्टिंग हेतु कुछ विशेष योग्यताओं का आकलन करना।
- और उत्तराखण्ड में हुए सामाजिक आन्दोलनों के प्रति मीडिया का दृष्टिकोण समझना और मीडिया के इस ऐतिहासिक आलोक में भविष्य का मीडिया दृष्टिकोण विकसित करना।

10.3 लोकतंत्र का अर्थ :

भारत को विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र माना जाता है। तमाम चुनौतियों और विसंगतियों के बावजूद वोट के जरिए सत्ता परिवर्तन और जन आकांक्षा की पूर्ति के लिए काम करने वाली सरकारों का गठन करा देने वाली लोकतांत्रिक व्यवस्था बनाने में तो हम भारत के लोग सफल हो गए हैं परन्तु एक ऐसी राजनैतिक प्रणाली हम विकसित नहीं कर सके हैं जो लोकतंत्र की आदर्श परम्पराओं की स्थापना के लिये त्याग, सत्कर्म और उच्चतम आदर्शों के अनुरूप आचरण करे। सामाजिक आन्दोलनों के जरिए समाज बार–बार इस बात का प्रयास करता है कि कैसे लोकतात्रिक व्यवस्था को अधिक जवावदेह और बेहतर बनया जाए। आन्दोलनों के इन्हीं स्वरों को मीडिया मुखर बनाता है और व्यापक भी। इन अर्थों में लोकतंत्र, सामाजिक आन्दोलन और मीडिया एक दूसरे के पूरक हैं, एक–दूसरे को मजबूत और बेहतर बनाने के कारक हैं।

लोकतंत्र की सार्वभौमिक मान्यता के कारण इसका सही अर्थ समझना और सही परिभाषा करना एक कठिन काम है क्योंकि लोकतंत्र के बुनियादी सिद्धान्तों को किसी दार्शनिक अथवा राजनीतिज्ञ ने किसी निश्चित समय पर निर्धारित और निश्चित नहीं किया, वरन् उसका पिछले ढ़ाई तीन हजार वर्षों में धीरे – धीरे विकास हुआ है । लोकतंत्र की शुरूआत ऐथेन्स(यूनान) से मानी जाती है। अरस्तू , रूसो, टामसपेन, मौंटेस्क्यू, अब्राहम लिंकन से लेकर बट्रेन्ड रसेल आदि ने अपने–अपने सिद्धान्तों के आधार पर लोकतंत्र की व्याख्या की है। यहॉ तक कि 1917 में मार्क्सवादी सिद्धान्तों पर हुयी रूसी क्रान्ति तथा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूर्वी यूरोप में बनी साम्यवादी सरकारों ने भी स्वयं को ''जनवादी लोकतंत्र'' कहा था।

मीडिया के विद्यार्थियों को यह भी देखना चाहिए कि भारत में लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली कैसी हैं ? और क्या सचमुच शासन के विभिन्न अंगों द्वारा अपने – अपने कार्य क्षेत्र में संविधान की मर्यादाओं के अनुकूल आचरण किया जा रहा है अथवा नहीं। मीडिया के विद्यार्थी को विशेषकर भारत के संविधान की उद्येशिका, मूल अधिकार और मूल कर्तव्यों के आलोक में घटनाओं को समझना एवं उनका मूल्यांकन जरूर करना चाहिए।

- मीडिया के विद्यार्थी के लिए लोकतंत्र की स्वीकार्यता के सार्वभौमिक तत्वों को समझना भी बेहद जरूरी हैं। ये तत्व हैं –
- स्वतंत्रता, समानता, भ्रातत्व, जनता की प्रभुसत्ता, शांतिपूर्ण साधनों पर विश्वास,स्वतंत्र न्यायपालिका, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव, नागरिकों के मौलिक अधिकार, शासन के तीनों अंगों – विधायी, कार्यकारी और न्यायिक अंगो पर नियंत्रण एवं संतुलन आदि।

भारतीय संविधान की उद्येशिका से भारतीय लोकतंत्र की आत्मा का पता चलता है। अतः मीडिया के विद्यार्थी को उद्येशिका के प्रत्येक शब्द को जानना एवं समझना चाहिये। इस उद्येशिका में कहा गया है कि–''हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को : सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रशिक्षण एवं अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर 1949 ई. को एतद्द्वारा इस संविधान कों अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।''

संविधान की मूल भावना का अध्ययन करने से पत्रकारिता के छात्रों में यह समझ भी भलीभांति विकसित होगी कि पत्रकार को लोकतांत्रिक व्यवस्था किस तरह के अधिकार देती है और पत्रकार से किस तरह के दायित्व की अपेक्षा करती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– लोकतंत्र का उद्भव.....से हुआ ।

प्रश्न 2– यूरोप की साम्यवादी सरकारें अपने को किस लोकतंत्र के नाम से पुकारती थीं ?

प्रश्न 3– लोकतंत्र की चार प्रमुख सार्वभौमिक संकल्पनाएं क्या हैं ?

10.4 सामाजिक आन्दोलनों का परिचय :

स्वतंत्रता मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ चाहत है। इसे पाने अथवा इसकी सुरक्षार्थ मनुष्य प्रतिकार करता है। प्रतिकार तथा प्रतिरोध किसी भी समाज के साथ किये जा रहे शोषक व्यवहार, अन्याय तथा आर्थिक, सांस्कृतिक घुसपैठ से स्वाभाविक असहमति की अभिव्यक्ति है। प्रतिकार का जैविक या मानवीय गुण सभी में होता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के लिये ही नहीं लड़े थे वरन् उनका उद्देश्य एक नवीन व्यवस्था की स्थापना करना भी था। आर्थिक, सामाजिक असमानताओं को घटाने , जनसाधारण की गरीबी, बेरोजगारी एवं मानव गरिमा की पुर्नस्थापना, नागरिक अधिकारों की गारंटी, साम्प्रदायिक सौहार्द की पुर्नस्थापना और सभी को न्याय दिलाने के सम्बन्ध में तत्कालीन नेताओं का एक स्पष्ट दृष्टिकोण था।

भगत सिंह ने कहा था–''देश को एक आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है.....जब तक मनुष्य के द्वारा मनुष्य तथा एक राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण, जो साम्राज्यशाही के नाम से विख्यात है, समाप्त नहीं कर दिया जाता तब तक मानवता को उसके कलेशों से छुटकारा मिलना असम्भव है।''

जब–जब किसी भी व्यवस्था ने मनुष्य की गरिमा के साथ खिलवाड़ किया है, शोषक व्यवहार या अन्याय किया है, आर्थिक, सांस्कृतिक घुसपैठ की है तो उसका विविध रूपों से प्रतिकार हुआ है और सामाजिक आन्दोलनों का जन्म हुआ है । सामाजिक आन्दोलन शब्द से ही सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तीनों तरह के आन्दोलनों का सामुहिक बोध होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में अनेक आन्दोलनों ने जन्म लिया है । इनमें राज्य बनाने के आन्दोलन, भाषायी आन्दोलन, महिला आन्दोलन, आपातकाल विरोधी आन्दोलन, जल, जंगल, जमीन, पानी एवं अन्य प्राकृतिक सम्पदाओं से जुड़े आन्दोलन आदि सामाजिक आन्दोलन प्रमुख हैं। आज भी हम देखते हैं कि हमारी आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा असुरक्षा, हिंसा, अशिक्षा, बेरोजगारी, कुपोषण, स्वास्थ सेवाओं और शुद्ध पेयजल बिजली – सड़क के अभाव, भोजन के अभाव, सामाजिक, आर्थिक असमानता, अवसरों की असमानता एवं भेदभाव और अपमान से ग्रसित होकर दयनीय स्थिति में जीवन यापन कर रहा है। भारत में सामाजिक–आर्थिक न्याय की स्थापना के मार्ग में प्रमुख चुनौतियां शिक्षा एवं गरीबी हैं और इन सभी मुद्दों को लेकर समाज मे बार–बार प्रतिरोध के स्वर सामाजिक आंदोलनों के रूप में फूटते रहे हैं।

> *''देश को एक आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है.....जब तक मनुष्य के द्वारा मनुष्य तथा एक राष्ट्र के द्वारा दूसरे राष्ट्र का शोषण, जो साम्राज्यशाही के नाम से विख्यात है, समाप्त नहीं कर दिया जाता तब तक मानवता को उसके कलेशों से छुटकारा मिलना असम्भव है।''*
>
> **: भगत सिंह**

भारत में पत्रकारिता के विकास की सम्पूर्ण प्रक्रिया राष्ट्रीयता के विकास के समानान्तर रही है और पूरक भी । भारतीय राष्ट्रवादियों का उद्देश्य था कि जनता का राजनीतिकरण किया जाऐ उसमे राजनीतिक चेतना का प्रसार किया जाये और प्रेस ही ऐसा एक मात्र साधन था, जो जनता को शिक्षित करने और उसमें राष्ट्रीयता के प्रसार का काम कर सकता था। इसीलिए हम देखते हैं कि भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से जन मानस को जोड़ने का प्रयास सर्वप्रथम पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से ही हुआ और इसका आरम्भ सामाजिक सवालों को लेकर ही हुआ था।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– आजादी के बाद भारत के प्रमुख सामाजिक आंदोलन कौन से थे ?

प्रश्न 2– सामाजिक आंदोलनों की रिर्पोटिंग करने वाले पत्रकार का प्रमुख दायित्व क्या है?

10.5 उत्तराखण्ड में सामाजिक आन्दोलन और मीडिया :

उत्तराखण्ड के प्रारम्भिक कत्यूरी राजवंश से लेकर चंदों, परमारों और गोरखों के इतिहास एवं शासन प्रबन्ध को जानने का प्रमुख साधन यद्यपि – अभिलेख, मुद्राएं, ताम्रपत्र, भोजपत्र, पाण्डुलिपियॉ आदि रहीं हैं परन्तु इनके अत्याचारों की कहानियां हमें आज भी लोक गाथाओं, लोकगीतों, लोकोक्तियों, मुहावरों, कथाओं आदि लोक विधाओं के माध्यम से प्राप्त होती हैं। तब एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक इस तरह की सूचनाएं पहुंचाने का कार्य मौखिक परम्परा के द्वारा ही होता था।

उत्तराखण्ड में अंग्रेजों के आगमन के बाद धीरे – धीरे जनता और अंग्रेजों के बीच अन्तर्विरोध तीव्र होने लगे और विविध आन्दोलनों की पृष्ठभूमि बनने लगी। इन आन्दोलनों की पृष्ठभूमि तैयार करने में स्थानीय पत्रकारिता व संगठनों की विशेष भूमिका रही। ब्रिटिश उत्तराखण्ड कें शुरूआती कुली बेगार आन्दोलन (जबरन श्रम के खिलाफ प्रतिकार) एवं जंगलात आन्दोलन बाद में राष्ट्रीय संग्राम के साथ एकाकार हो गए । कुली बेगार एवं जंगलात के कष्टों को यहां के तत्कालीन प्रमुख समाचार पत्रों – अल्मोड़ा अखबार (1871 – 1918), गढ़वाली (1905 – 1952), शक्ति (1918 से निरन्तर) गढ़वाल समाचार(1902 – 1904) आदि ने प्रमुखता से उठाया। ब्रिटिश उत्तराखण्ड में हुए अन्य सामाजिक आन्दोलनों में महिला आन्दोलन, डोला पालकी आन्दोलन, दलित आन्दोलन, नायकोद्धार, शिक्षा प्रचार आदि प्रमुख हैं। जहां अल्मोड़ा अखबार, शक्ति, गढ़वाली, स्वाधीन प्रजा आदि ने क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय आन्दोलन को जोड़ने का काम किया तो वहीं दूसरी ओर ''समता'' जैसे पत्रों ने दलितों के बीच चेतना और संगठन का कठिन काम किया तो 'गढ़वाली, ''शक्ति'', ''कुमाऊॅ कुमुद'' आदि ने अनेक बार सामाजिक – राजनीतिक प्रश्नों पर अपनी स्पष्ट राय प्रकट की।

स्वातंत्र्योत्तर उत्तराखण्ड भी विविध आन्दोलनों की जन्म भूमि रही है। यहां चिपको आन्दोलन (वन आन्दोलन), नशा नहीं रोजगार दो आंदोलन, विभिन्न भूमि आन्दोलन (कोटखर्रा, बिन्दुखत्ता आदि) और इन सब आन्दोलनों को समेटता उत्तराखण्ड आन्दोलन हुआ। आज भी

जल, जंगल, जमीन, पानी, बिजली, सड़क आदि के लिए आन्दोलन होते रहते हैं। यहां बड़े बांधों के निर्माण के कारण विस्थापित जनता के आन्दोलन भी लंबे समय से जारी हैं और यह बात बिना किसी संकोच के कही जा सकती है कि इन सभी आन्दोलनों के प्रचार–प्रसार में स्थानीय मीडिया की जबर्दस्त भूमिका रही है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– उत्तराखण्ड में चले प्रथम व्यापक जन सहभागिता वाले आन्दोलन का नाम क्या था ?

प्रश्न 2– कुली बेगार एवं जंगलात के कष्टों को सबसे ज्यादा किन समाचार पत्रों ने उठाया?

प्रश्न 3– उत्तराखण्ड में दलित आन्दोलन से सम्बन्धित सबसे महत्वपूर्ण समाचार पत्र कौन सा था?

10.6 सामाजिक आन्दोलन रिपोर्टिंग की अवधारणा एवं कार्य पद्धति :

भारत में पत्रकारिता के विकास की प्रक्रिया राष्ट्रीय भावना एवं विविध सामाजिक आन्दोलनों की विकास के समानान्तर और पूरक रही है। प्रेस ही तब एक महत्वपूर्ण साधन था जो जनता को शिक्षित करने एवं राष्ट्रीयता के प्रसार का सश्क्त माध्यम बन सकता था और निश्चित ही भारत के राष्ट्रीय आन्दोलनों से जन मानस को जोड़ने का प्रयास सर्वप्रथम समाचार पत्रों के माध्यम से ही हुआ।

परन्तु यहॉ पर यह भी महत्वपूर्ण है कि किसी भी सामाजिक आन्दोलन को अलग अलग समाचार पत्र पत्रिकाएं अपने अपने चश्में से देखती हैं। उस घटना के प्रति उस पत्र पत्रिका के रिपोर्टर का दृष्टिकोण एवं अन्ततः उसके सम्पादक का दृष्टिकोण निर्णायक तत्व बनता है। फिर भी यह तत्थ्य नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि रिपोर्टर ही पत्र पत्रिका/चैनल/वैबसाइट/रेडियो के लिये आँख, नाक, कान, हाथ और पैर है। डेस्क पर बैठा आदमी लाख प्रयास कर ले, घटना स्थल के माहौल, दृश्य या आवाज को न तो महसूस कर सकता है, न ही कॉपी में पैदा कर सकता है। इसलिये रिपोर्टर का दायित्व है कि वह घटना के सभी पहलुओं को जानने समझने एवं उसे कैमरे में कैद करने की कोशिश करे, जिससे खबर की वस्तुनिष्ठता बनी रहे। उदाहरण के तौर पर किसी आन्दोलन में कहीं जनता और पुलिस के बीच संघर्ष होता है, पुलिस जनता पर लाठियॉ भांजती है और फिर जनता पुलिस पर पत्थर बरसाती है तो रिपोर्टर को चाहिए कि वह दोनों तरफ के दृश्य अपने कैमरे में कैद करे। पुलिस पक्ष के किसी आदमी से इन्टरव्यू ले कि उसने लाठीचार्ज क्यों किया, और जनपक्ष के नेता का भी इन्टरव्यू ले कि आंखिर जनता इतनी उद्वेलित क्यों हुयी ? फिर दोनों तरफ के तथ्यों को ध्यान में रख अपनी रिर्पोट प्रस्तुत करे।

- सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टिंग हेतु रिपोर्टर को भरसक प्रयास करना चाहिए कि वह घटना स्थल पर जरूर मौजूद रहे।
- उसे शासन और जनता के बीच संघर्ष की स्थिति में दोनों पक्षों का दृष्टिकोण जानना चाहिए और दोनों तरफ के तत्थ्य इकट्ठे करने चाहिए । तत्थ्य लिखित रूप में, मौखिक इन्टरव्यू के रूप मे, घटना के फोटोग्राफ्स के रूप में या ऑडियो–वीडियों रिकार्डिंग के रूप में एकत्र किए जा सकते हैं। इससे खबर की वस्तुनिष्ठता बनी रहती है।
- यदि रिपोर्टर घटना स्थल पर न जा सके तो उसे चाहिए कि वह विभिन्न माध्यमों से प्राप्त सूचनाओं की प्रमाणिकता की उचित जांचपरख करके ही अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करे।
- प्रायः सामाजिक आन्दोलन एकाएक उत्पन्न नहीं होते। वे एक – दो लोगों से आरम्भ होकर सैकड़ों, हजारों – लाखों लोगों की भागीदारी के गवाह बनते हैं। अतः किसी भी आन्दोलन की रिपोर्टिंग के समय रिपोर्टर को चाहिए कि वह उस आन्दोलन की पृष्ठभूमि भी जानने का भरसक प्रयास करे।

सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टिंग हेतु कुछ सावधानियां भीं जरूरी हैं। एक लोकतांत्रिक देश में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करना, उन्हें बढ़ावा देना भी एक पत्रकार का कर्तव्य होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर अगड़ी – पिछड़ी जातियों या विभिन्न धार्मिक मान्यताओं वालें लोगों के बीच होने वाले विवादों या इस तरह की अन्य संवेदनशील घटनाओं की रिपोर्टिंग के समय पत्रकारों को बहुत संयम से काम लेना चाहिए। इसके लिए पत्रकार का जातीय, भाषायी, धार्मिक, क्षेत्रीय या अन्य पूर्वाग्रहों से मुक्त होना जरूरी है।

जिस तरह से तत्थ्य इतिहासकार के लिए कच्चा माल हैं, वैसे ही किसी भी आन्दोलन के समय हुयी घटनाएं एवं तत्थ्य रिपोर्टर के लिए कच्चा माल होते हैं। जब एक पत्रकार किसी घटना या आन्दोलन से सम्बन्धित तत्थ्य इकट्ठा करता है तो तत्थ्यों के चुनाव में उसका अपना दृष्टिकोण काम आता है। फिर वह उन्हें अपनी समझ या अपने दृष्टिकोण के आधार पर समाज के सामने पेश करता है। इस तरह रिपोर्टर हर रोज इतिहास लिखता है या पेश करता है। अतः सामाजिक आन्दोलन की सही रिपोर्टिंग के लिए जरूरी है कि

- अधिक से अधिक तत्थ्य इकट्ठे किये जांय।
- इन तत्थ्यों में से जिन तत्थ्यों का रिपोर्टिंग के लिए इस्तेमाल किया जाए, समाज पर उनका कैसा और क्या प्रभाव पड़ेगा ? इसका पहले ही आंकलन कर लिया जाना चाहए। सभी तत्थ्यों की व्याख्या लोकतांत्रिक मूल्यों और जनपक्षीय दृष्टिकोण के आलोक में की जानी चाहिये।

ऐसी रिपोर्टो का शीर्षक छोटा होना चाहिए और ऐसा होना चाहिए कि उससे की कहानी की आत्मा प्रकट होती हो ।

उदाहरण के तौर पर 1918 की एक घटना है। ब्रिटिश उत्तराखण्ड में डिप्टी कमिश्नर लोमस एक महिला के साथ अल्मोड़ा के स्याही देवी जंगल में शिकार खेलने के लिए गये, जहॉ शराब देर से लाने पर उन्होंने एक कुली को गोली मारकर घायल कर दिया। तत्कालीन प्रमुख समाचार पत्र ''अल्मोड़ा अखबार'' ने इस घटना का कड़ा विरोध किया। फलतः 1871 से प्रकाशित ''अल्मोड़ा अखबार'' को सरकार का कोप भाजन बनना पड़ा और उसका प्रकाशन बन्द करना पड़ा। गढ़वाल से प्रकाशित पत्र ''पुरूषार्थ'' ने जिस शीर्षक से इस घटना को व्यक्त किया वह सरल और आकर्षक तो था ही साथ ही वह पूरी कहानी को भी कह जाता था। वह शीर्षक था – ''एक फायर के तीन शिकार – कुली, मुर्गी और अल्मोड़ा अखबार''।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– यदि रिर्पोटर किसी वजह से घटना स्थल पर न पहुंच सके तो उसे क्या करना चाहिए ?

प्रश्न 2– सामाजिक आंदोलनों की सही रिर्पोटिंग के लिए क्या जरूरी है ?

प्रश्न 3– सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टों का शीर्षक कैसा होना चाहिए?

10.7 सामाजिक आन्दोलन रिपोर्टिंग का लक्ष्य और योग्यताएं :

प्रिंट मीडिया शुरू से ही संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम बन गया था। उत्तराखण्ड में ही देखें तो ब्रिटिश काल में विभिन्न सामाजिक आन्दोलनों की सही रिपोर्टिंग के कारण शक्ति, गढ़वाली आदि के सम्पादक जेल गये। अनेक अखबारों के सम्पादकों को सरकारी दमन का सामना करना पड़ा, अनेक अखबार इसी कारण बन्द करवा दिए जाए। वस्तुतः उस दौर में पत्रकारिता का लक्ष्य मानवीय मूल्यों के रक्षार्थ लड़ना था।

आजाद भारत का इतिहास भी अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक आंदोलनों का गवाह रहा है और उन आन्दोलनों के परिप्रेक्ष्य में मीडिया की अहम भूमिका रही है। आज भी उत्तराखण्ड में अनेक आंदोलन लंबें समय से चल रहे हैं। कोई भी संवेदनशील पत्रकार इन आदोलनों के वास्तविक कारणों की पहचान कर और आन्दोलन से जुड़े हर पक्ष की पड़ताल कर एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट तैयार कर सकता है।

असल चीज है तथ्य, उसकी प्रस्तुति का ढंग और संवाददाता का खबर के अन्दर तक पहुंचना। सामाजिक आन्दालनों की रिर्पोटिंग करने वाले पत्रकार का संवेदनशील होना बेहद जरूरी है मगर उसे इतना भावुक भी नहीं होना चाहिए कि वो रिपोर्ट तैयार करते समय भावनाओं में बह जाए। सामाजिक आंदोलन की रिर्पोटिंग करने वाले पत्रकार में कुछ विशेष योग्यताएं जरूर होनी चाहिए।

- उसे राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र एवं इतिहास की मूलभूत संकल्पनाओं का ज्ञान होना चाहिए।

- उसे विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आन्दोलनों के इतिहास की भी सामान्य जानकारी जरूर होनी चाहिए।
- उत्तराखण्ड में सामाजिक आन्दोलन की रिपोर्टिंग करने वाले पत्रकार को उत्तराखण्ड के इतिहास, संस्कृति, भूगोल एवं यहॉ पर हुए विविध आन्दोलनों का ज्ञान अवश्य होना चाहिए।

पत्रकार के लिए पूर्व में हुए आन्दोलनों का ज्ञान इसलिये भी जरूरी है कि पूर्व में हुए आन्दोलनों के परिप्रेक्ष्य में वह वर्तमान में हो रहे आन्दोलनों को समझकर भविष्य में होने वाली घटनाओं का अंदाजा लगा सकता है।

असल चीज है तथ्य, उसकी प्रस्तुति का ढंग और संवाददाता का खबर के अन्दर तक पहुंचना। सामाजिक आन्दालनों की रिर्पोटिंग करने वाले पत्रकार का संवेदनशील होना बेहद जरूरी है मगर उसे इतना भावुक भी नहीं होना चाहिए कि वो रिपोर्ट तैयार करते समय भावनाओं में बह जाए। सामाजिक आंदोलन की रिर्पोटिंग करने वाले पत्रकार में कुछ विशेष योग्यताएं जरूर होनी चाहिए।

रिपोर्टर को चाहिए कि वह भूगोल के साथ मनुष्य के रिश्तों को भी समझे क्योंकि भूगोल का मनुष्य की संवेदनशीलता से गहरा रिश्ता है । उदाहरणार्थ किसी बांध परियोजना में हिमालय की किसी भीतरी दुर्गम घाटी से जिन गांव वालों को उजाड़ कर तराई भाबर में बसाया जाएगा, विस्थापन को लेकर उनकी पीड़ा उन विस्थापितों से निश्चित रूप से भिन्न होगी जिन्हें टिहरी से उजाड़कर नई टिहरी शहर में बसाया गया है। यानी भूगोल के कारण ही विस्थापन का दर्द तक बदल सकता है। पत्रकार को इस रिश्ते को गम्भीरता से समझने की कोशिश करनी चाहिए।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टो का शीर्षक कैसा होना चाहिए?

प्रश्न 2– सामाजिक आंदोलनों की रिपोर्टिंग के लिए रिपोर्टर की योग्यता क्या होनी चाहिए?

10.8 सामाजिक आन्दोलन की रिपोर्टिंग के प्रकार :

सामाजिक आंदोलन की रिर्पोटिंग मीडिया के अलग–अलग रूपों के लिए अलग–अलग तरह से होती है। मोटे तौर पर इसें दो मुख्य रूपों में बांटा जा सकता है एक प्रिंट मीडिया के लिए और दूसरा इलेक्ट्रानिक मीडिया के लिए। प्रिंट मीडिया में भी दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं के लिए सामाजिक आंदोलनों की रिर्पोटिंग अलग–अलग प्रकार से की जाती है।

दैनिक अखबार :

दैनिक अखबार में प्रतिदिन की सूचनाएं देना रिपोर्टर का दायित्व होता है। अतः दैनिक अखबार के रिपोर्टर को चाहिए कि वो जिस आंदोलन का कवरेज कर रहा है उसकी प्रतिदिन की अधिक से अधिक सूचनाएं एकत्र करे और उन्हें डेस्क या सम्पादक के पास भेजे। आवश्यकतानुसार खबर को प्रभावशाली बनाने हेतु फोटोग्राफ्स का सहारा भी लिया जाना चाहिए।

यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि इस तरह की रिर्पोटिंग में अगले दिन के कार्यक्रम की जानकारी भी जरूर होनी चाहिए। अखबार के 'स्पेस' के अनुसार डेस्क वाले अनावश्यक तत्थ्यों व फोटोग्राफ्स को कम कर सकते हैं।

साप्ताहिक, पाक्षिक व मासिक पत्र –पत्रिकाएं :

ऐसे पत्र – पत्रिकाओं के लिए रिपोर्टर का काफी वक्त मिलता है और आन्दोलन से सम्बन्धित तमाम सूचनाऐं – तत्थ्य देने के साथ साथ वह आन्दोलन की पृष्ठभूमि, उसकी सफलता, असफलता, उसके कारणों आदि पर भी व्यापक प्रकाश डाल सकता है। इस तरह से वह एक शोधपरक आलेख तैयार कर सकता है। रिपोर्ट को आकर्षक बनाने हेतु तस्वीरों, प्रभावशाली शीर्षक और ग्राफिक्स के साथ साथ आन्दोलन से तारतम्य रखने वाली पैंटिंग या रेखाचित्रों का भी इस्तेमाल किया जा सकता है। जहां दैनिक समाचार पत्रों में समयाभाव एवं स्थान के अभाव के कारण खबरों में सिर्फ तत्थ्य (हार्ड न्यूज) दिये जाते है वहीं साप्ताहिक, पाक्षिक व मासिक पत्र पत्रिकाओं में, आन्दोलनों की व्याख्या और विश्लेषण के लिए पर्याप्त समय व स्थान होता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए :

सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टिंग के सन्दर्भ में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया खासकर टेलीविजन की सबसे बड़ी खासियत यह है कि उसमें रिर्पोटर की प्रस्तुति के साथ ही कैमरामैन का दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण होता है। रिपोर्टर अगर स्वयं ही कैमरामैन है तो अच्छी बात है । अगर नहीं है तो यह जरूरी है कि उसके साथ एक सही विजन वाला कैमरामैन हो क्योंकि संवेदनशीलता एवं सही दृष्टिकोण के साथ कैमरे में कैद किये दृश्य अपने आप ही बहुत कुछ बोल देते हैं। टीवी रिर्पोटिंग में दृश्यों के जरिए आंदोलन की पीड़ा की अभिव्यक्ति अधिक आसानी से की जा सकती है लेकिन रिर्पोटर को यहां भी तत्थ्यों के सही होने पर अधिक ध्यान देना जरूरी है।

रेडियो के लिए रिर्पोटिंग करते समय ध्वनियों (एम्बिएंस) का इस्तेमाल जरूर किया जाना चाहिए। मसलन किसी आंदोलन की रिर्पोट की प्रस्तुति में अगर आन्दोलन स्थल पर आन्दोलनकारियों की नारेबाजी, उनके जनगीत आदि भी शामिल कर लिए जाएं तो रिपोर्ट अधिक सजीव लगती है।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1– दैनिक अखबार में सामाजिक आंदोलनों की रिपोर्टिंग के लिए रिपोर्टर को क्या करना चाहिए ?

प्रश्न 2– पत्रिकाओं में सामयिक आंदोलनों की रिपोर्टिंग की क्या खासियत है?

प्रश्न 3– रेडियो की रिपोर्टिंग में एम्बियंस का क्या महत्व है?

10.9 सारांश :

सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, जातीय, क्षेत्रीय और भाषायी आदि अन्तर्द्वन्दों को समझकर किसी भी सामाजिक आन्दोलन की उत्पत्ति, विस्तार और उसके प्रभाव का आंकलन किया जा

सकता है। इसलिए रिपोर्टर को चाहिये कि वह अपने अन्दर विभिन्न सामाजिक पहलुओं और उनके अन्तर्विरोधों को जानने समझने की उत्कृष्ट लालसा को विकसित करे। कहीं न कहीं सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टिंग करने वाला रिपोर्टर पत्रकारिता के साथ ही सामाजिक आन्दोलनों का इतिहास भी लिख रहा होता है। अतः सही सूचनाएं आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाना उसका दायित्व है।

जिससे कि वह और आने वाली पीढ़ियां उन सामाजिक आन्दोलनों के परिप्रेक्ष्य में भविष्य हेतु अपनी रचनात्मक भूमिका तय कर सकें। यह ध्यान दिया जाना चाहिये कि रिर्पोटर को सामाजिक आन्दोलनों की रिर्पोटिंग करते समय बड़े दबावों, प्रलोभनों और स्वार्थो के दबाव में कतई नही आना चाहिए। उसे जनपक्षधरता को सर्वोच्च महत्व देना चाहिए।

10.10 शब्दावली :

जनवादी लोकतंत्र : 1917 की मार्क्सवादी रूसी क्रान्ति और द्वितीय विश्व युद्व के बाद पूर्वी यूरोप में बनी साम्यवादी सरकारों ने खुद को जनवादी लोकतंत्र कहा था और एक प्रकार से उन्होनें भी लोकतंत्र के महत्व को स्वीकार किया था ।

सामाजिक आंदोलन : सामाजिक आंदोलन मनुष्य की गरिमा के साथ खिलवाड़ करने वाली शोषक व्यवस्था के खिलाफ मनुष्य के प्रतिकार का ही दूसरा नाम हैं। समाज के सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सवालों को जब जब सामुहिक रूप से उठाया जाता है तब तब सामाजिक आंदोलन पैदा होते हैं ।

कुली बेगार आंदोलन : यह उत्तराखण्ड का सबसे बड़ा सामाजिक आंदोलन था। मूलतः यह अंग्रेज अधिकारियों के उत्तराखण्ड भ्रमण के दौरान जबरन उनकी सेवा में ग्रामीणों से काम कराए जाने की प्रवृत्ति के खिलाफ उठा आन्दोलन था लेकिन इसी आंदोलन ने उत्तराखण्ड में राष्ट्रीयता की अलख जगाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नशा नहीं रोजगार दो आन्दोलन : अस्सी के दशक का यह आंदोलन उत्तराखण्ड आंदोलन से पहले का उत्तराखण्ड का एक बड़ा आंदोलन था। यह आंदोलन एक ओर शराब जैसी भयानक बुराई के खिलाफ था वहीं पर यह उत्तराखण्ड की युवा शक्ति के लिए रोजगार की भी मांग करता था।

10.11 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर :

उत्तर 10.3

उत्तर 1– लोकतंत्र का उद्भव (एथेन्स) से हुआ।

उत्तर 2– यूरोप की साम्यवादी सरकारें अपने को जनवादी लोकतंत्र कहती थीं।

उत्तर 3– लोकतंत्र की चार प्रमुख सार्वभौमिक संकल्पनाएं है–स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व तथा जनता की प्रभुसत्ता ।

उत्तर 10.4

उत्तर 1– आजादी के बाद भारत के प्रमुख सामाजिक आंदोलनों में राज्य आन्दोलन, भाषा आन्दोलन, महिला आन्दोलन, आपातकाल विरोधी आंदोलन तथा जल, जंगल और जमीन से जुड़े आंदोलन प्रमुख हैं।

उत्तर 2– सामाजिक आंदोलनों की रिर्पोटिंग करने वाले पत्रकार का प्रमुख दायित्व है कि उसे घटना के सभी पहलुओं को जानने समझने की कोशिश करनी चाहिए ताकि खबर की वस्तुनिष्ठता बनी रहे ।

उत्तर 10.5

उत्तर 1– यदि रिर्पोटर किसी वजह से घटना स्थल पर न पहुंच सके तो उसे विभिन्न माध्यमों से प्राप्त सूचनाओं की प्रमाणिकता की बारीक जांच परख करके ही रिर्पोट तैयार करनी चाहिए ।

उत्तर 2– सामाजिक आन्दोलनों की सही रिर्पोटिंग के लिए यह जरूरी है कि रिर्पोटर अधिक से अधिक तत्थ्य एकत्र करें और उनका गंम्भीरता पूर्वक विश्लेषण करें ।

उत्तर 3– सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टों का शीर्षक छोटा होना चाहिए मगर उसके जरिए पूरी बात स्पष्ट भी होनी चाहिए।

उत्तर 10.6

उत्तर 1– सामाजिक आन्दोलनों की रिपोर्टो का शीर्षक छोटा और ऐसा होना चाहिए कि उसमें कहानी की आत्मा प्रकट होती हो ।

उत्तर 2– रिपोर्टर को सामाजिक आंदोलनों की रिपोर्टिंग के लिए आंदोलन की पृष्ठभूमि की जानकारी होनी चाहिए। उस सामाजिक क्षेत्र का भौगोलिक–सांस्कृतिक व अन्य पहलूओं की जानकारी उसे होनी चाहिए।

उत्तर 10.7

उत्तर 1– दैनिक अखबारों में सामाजिक आंदोलनों की रिपोर्टिंग के लिए रिपोर्टर को आंदोलन की प्रतिदिन की गतिविधियां, निर्णय, निष्कर्ष/परिणाम की जानकारी रखनी चाहिए तथा प्रतिदिन अखबार के लिए उन्हें भेजना चाहिए।

उत्तर 2– पत्रिकाओं में दैनिक अखबारों की तुलना में समय एवं स्थान का समान रूप होता है इसलिए इनमें आंदोलनों का अधिक विस्तृत, सजीव और चित्रमय विवरण दिया जा सकता है।

उत्तर 3– रेडियो की रिपोर्टिंग में एम्बियंस का अत्याधिक महत्व है। घटना सील की ध्वनियों के उपयोग से रिपोर्ट अधिक सजीव हो जाती है।

10.11 संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अरविन्द मोहन : पत्रकार और पत्रकारिता प्रशिक्षण, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली ।

2. पाठक, शेखर : सरफरोशी की तमन्ना, पहाड़ नैनीताल, उत्तराखण्ड।

3. मिश्र, अखिलेश : पत्रकारिताः मिशन से मीडिया तक, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

4. वाजपेयी, पुण्य प्रसून : ब्रेकिंग न्यूज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली ।

5. साह, ज्योति : ''शक्ति'' के तीन दशक (उत्तराखण्ड में राष्ट्रवादी, पत्रकारिता का अध्ययन) पहाड़, नैनीताल ।

6. सकलानी, शक्ति प्रसाद : उत्तराखण्ड में पत्रकारिता का इतिहास, रूद्रपुर, उत्तराखण्ड, (2004)।

7. साह, राजीव लोचन : पच्चीस वर्ष का सफर, नैनीताल समाचार का प्रकाशन, नैनीताल।

10.12 सहायक/उपयोगी पाठय सामग्री :

1. पत्रकारिता और समाज, डॉ0 यू0 सी0 गुप्ता, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

2. मास मीडिया एण्ड सोसाइटी, जितेन्द्र सिंह, सुमित इन्द्रप्राइजेज, दरियागंज, नई दिल्ली।

3. धस्माना, योगेश : उत्तराखण्ड में जनजागरण और आन्दोलन का इतिहास, विनसर प्रकाशन, डिस्पेंसरी रोड, देहरादून, उत्तराखण्ड।

10.13 निबन्धात्मक प्रश्न :

प्रश्न 1– 1947 से पूर्व उत्तराखण्ड में चले प्रमुख आन्दोलन कौन से थे ? किन्हीं दो प्रमुख आन्दोलनों पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 2– 1947 के बाद उत्तराखण्ड में चले प्रमुख आन्दोलन कौन से हैं? उत्तराखण्ड आन्दोलन में मीडिया की भूमिका पर एक लेख लिखिए।

प्रश्न 3– उत्तराखण्ड के किसी एक सामाजिक आंदोलन में पत्रकारिता की भूमिका को समझाइये?

प्रश्न 4 – उत्तराखण्ड में सामाजिक आंदोलन और पत्रकारिता के इतिहास पर प्रकाश डालिए ?

प्रश्न 5– उत्तराखण्ड में जनआन्दोलनों को सफल बनाने में किस पत्र–पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका रही है?